सुमेरौ निर्मेरैरपि सपदि जग्मे तरुवरै-
र्ध्रु गव्या दिव्यन्ते सलिलनिधौ चिन्तामणिगणैः । (?)
कलौ काले वीक्ष्यानवधिमभितो याचयगणं
न तस्थौ केनाऽपि स्थिरमभयचन्द्रस्तु विजयी ॥
धैर्यं ते स विलोकतानभय ! यः शैलेन्द्रधैर्योत्मना,
गाम्भीर्यं स तवेक्षतां जलनिधेर्गाम्भीर्यमिच्छुश्च यः ।
भक्तिं देवगुरौ स पश्यतु तव श्रीश्रेणिकं यः स्तुते,
यात्रां तीर्थपतेः स वेत्तु भवतो यः स सांप्रतीं त्रीप्सति ॥

[कलियुग में चौतरफ अनगणित याचकों की फौज को देखकर कल्पद्रुम भाग कर सुमेरु पहाड़ पर चले गये। कामधेनु और चिन्तामणि वगैरा भी अपने-अपने स्थान पहुंच गये। याचक की अधिकता को देखकर सब की स्थिरता जाती रही। परन्तु हमें इस बात को प्रकाशित करते हु महान् हर्ष होता है कि दानवीर विजयी अभयचन्द्र की स्थिरता ज्यों की त्यों रही।]

हे अभयचन्द्र! दर्शकों को आपका धैर्य हिमाचल पहाड़ के समान दिखलाई देता है। जि पुरुष को समुद्र के गाम्भीर्य का ज्ञान है, वही आपके गाम्भीर्य को भली-भांति अनुभव में ला सकत है। देवगुरु की भक्ति करने में आप श्रेणिक महाराज के समान यशस्वी हैं। जो पुरुष प्रियदर्श राजा अशोक के पुत्र महाराज सम्प्रति की तीर्थ-यात्रा का वर्णन जानना चाहता है वह आपके द्वा की गई तीर्थ यात्रा के वर्णन का मर्म समझे।]

इसके बाद सं० १३२८ वैशाख सुदि चतुर्दशी के दिन जालोर में सेठ क्षेमसिंह श्रीचन्द्रप्रभ स्वामी की बड़ी मूर्ति की, मह० पूर्णसिंह ने ऋषभदेव की और मह० श्रीब्रह्मदेव ने श्र महावीर प्रतिमा की प्रतिष्ठा का महोत्सव किया। जेठ वदि ४ को हेमप्रभा को साध्वी बनाया। सं० १३३० वैशाख वदि ६ को प्रबोधमूर्तिगणि को वाचनाचार्य का पद और कल्याण ऋद्धि गणिनी को प्रवर्तिनी का पद दिया। तदनन्तर वैशाख वदि अष्टमी को सुवर्णगिरि में श्र चन्द्रप्रभ स्वामी महाराज की बड़ी प्रतिमा की स्थापना शिखर पर की।

७०. संसार के चित्त को चमत्कृत करने वाले चरित्रों को करते हुए श्रीमहावीर शासन प्रभावना को बढ़ाते हुए, बढ़ती हुई आपदाओं की तरङ्गों से भयानक-संसार रूपी महासमुद्र में डूब हुए प्राणी समूह को बचाने वाले, समस्त प्राणियों के मन में उत्पन्न होने वाले अनेक विध मनोरथ

॥ इति उत्तराध्ययनसूत्र द्वितीय जाग संपूर्ण ॥

हवे उपसंहार करवा पूर्वक शास्त्रनुं माहात्म्य कहे छे.—

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए । छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धियसंमए त्ति बेमि ॥ २६६ ॥

अर्थ—(इइ) आ प्रमाणे (भवसिद्धियसंमए) भवसिद्धिक एटले भव्य जीवोने संमत एवा (छत्तीसं) छत्रीश (उत्तरज्झाए) उत्तर एटले प्रधान एवा अध्ययनोने (पाउकरे) प्रगट करीने–कहीने (बुद्धे) समग्र पदार्थने जाणनार एवा (नायए) ज्ञातपुत्र श्रीवर्धमानस्वामी (परिनिव्वुए) निर्वाण पदने पाम्या–मोक्ष पाम्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. २६६.

इति षट्त्रिंशमध्ययनम्. ३६.

॥ इति उत्तराध्ययनं सूत्रम् ॥

अणुवद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी ।
एएहि कारणेहि, आसुरिअं भावणं कुणइ ॥ २६४ ॥

अर्थ—(अणुवद्धरोसपसरो) निरंतर क्रोधनो प्रचार छे जेने (तह य) तथा (निमित्तम्मि) अतीतादिक निमित्त विषे (पडिसेवी) सेवा करनारा (होइ) जे होय ते (एएहिं कारणेहिं) आ कारणोए करीने (आसुरिअं भावणं) आसुरी भावनाने (कुणइ) करे छे २६४.

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलप्पवेसो अ ।
अणायारभंडसेवा, जम्मणमरणाणि बंधंति ॥ २६५ ॥

अर्थ—(सत्थग्गहणं) जे आत्मघात करवा माटे शस्त्रने ग्रहण करे, (विसभक्खणं च) विषभक्षण करे, (जलणं च) अग्निप्रवेश करे, (जलप्पवेसो अ) जळमां प्रवेश करे, चशब्दथी भृगुपातादिक करे तथा जे (अणायारभंडसेवा) हास्य मोहादिके करीने अनाचार एटले शास्त्रमां नहीं कहेला भांडनी एटले उपकरणनी सेवा करे, ते (जम्मणमरणाणि) जन्म मरणोने एटले अनेक जन्म मरण थाय तेवा कर्मोने (बंधंति) बांधे छे शस्त्रग्रहणादिक संक्लेशनुं कारण होवाथी अनंत भवनुं कारण थाय छे. आम कहेवाथी पांचमी मोह भावना कही. २६५

कामकथानो उपदेश तथा तेनी प्रशंसा करवी ते, काकुच्यै एटले भृकुटि अने नेत्रादिकनी चेष्टावडे अन्यने हसाववुं तथा पक्षी विगेरेनी भाषा बोली अने मुखवडे वाजित्र वगाडी अन्यने हसाववुं ते. (तह) तथा प्रकारना (सील) शीळ, (सहाव) स्वभाव, (हास) हास्य अने (विगहार्हि) विकथावडे (परं) परने (विम्हायंतो अ) विसय पमाडवो ते, आ रीते करतो प्राणी (कंदप्पं भावणं) कंदर्प भावनाने (कुणइ) करे छे. २६१.

मंताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजंति । सायरसइड्ढिहेउं, अभिओगं भावणं कुणइ ॥ २६२ ॥

अर्थ—(मंताजोगं) मंत्र अने योग–चूर्णादिक (काउं) करीने (भूईकम्मं) भूतिकर्म अने रक्षादिकने माटे भस, माटी के दोरा विगेरेवडे जे कर्म करवुं तेने (च) तथा कौतुकादिकने–अंजनातिलकादिने (जे) जेओ (सायरसइड्ढिहेउं) साता, रस अने ऋद्धिने कारणे (पउंजंति) प्रयुंजे छे–करे छे, ते (अभिओगं भावणं) आभियोग्य भावनाने (कुणइ) करे छे. २६२.

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरिअस्स संघसाहूणं । माई अवणवाई, किब्बिसिअं भावणं कुणइ ॥२६३॥

अर्थ—(नाणस्स) ज्ञाननो, (केवलीणं) केवळीनो, (धम्मायरिअस्स) धर्माचार्यनो, (संघसाहूणं) संघ साधुनो (अवणवाई) जे अवर्णवाद बोले तथा (माई) पोताना दोष ढांकवा माटे माया कपट करे ते (किब्बिसिअं) किल्विष (भावणं) भावनाने (कुणइ) करे छे. २६३.

बालमरणाणि बँहुसो, अँकाममरणाणि चेवँ बँहुआणि ।
मँरिहंति ते वॅराया, जिँणवयण जे नँ याणंति ॥ २५६ ॥

अर्थ—(जे) जेओ (जिणवयण) जिनेश्वरना वचनने (न याणंति) जाणता नथी अने उपलक्षणथी जाणता छतां ते प्रमाणे वर्तता नथी, (ते वराया) ते बिचारा (बहुसो) घणीवार (बालमरणाणि) भृगुपातादिक बाळमरणे करी (चेव) तथा (बहुआणि) घणा (अकाममरणाणि) अकाम मरणे करीने (मरिहंति) मरशे–मरे छे. २५६

बहुआगमविण्णाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही। एएण कारणेण, अरिहा आलोअण सोउं ॥२६०॥

अर्थ—(बहुआगमविणाणा) घणा आगमना ज्ञानवाळा, (समाहिउप्पायगा) आलोचकने समाधि उत्पन्न करनारा, (य) अने (गुणगाही) अन्यना छता गुणोने ग्रहण करवाना स्वभाववाळा एवा आचार्यादि होय छे, (एएण कारणेण) आ कारणथी तेओ (आलोअण सोउ) आलोचना सांभळवाने (अरिहा) योग्य छे २६०

आ प्रमाणे अनशनवाळानुं कृत्य बतावी हवे पूर्वे (२५४ मी गाथामां) कहेली कंदर्पादिक पांच अशुभ भावनानुं स्वरूप कहे छे —

कदप्पकुक्कुआइ, तह सीलसहावहासविगहाहिँ । विम्हायंतो अ परं, कदप्प भावणं कुणइ ॥२६१॥

अर्थ—(कदप्पकुक्कुआइ) कंदर्प एटले अट्टहास, मोटेथी बोलवुं, गुर्वादिकनी साथे पण कठोर वचनथी बोलवुं, अने

सम्मदंसणरत्ता, अनिआणा सुक्कलेसमोगाढा। इइ जे मरंति जीवा, सुलभा तेसिं भवे बोही ॥२५६॥

अर्थ—(सम्मदंसणरत्ता) सम्यग् दर्शनमां रक्त, (अनिआणा) नियाणा रहित अने (सुक्कलेसमोगाढा) शुक्ललेश्याथी व्याप्त (इइ) एवा प्रकारना (जे जीवा) जे जीवो (मरंति) मरे छे, (तेसिं) तेमने (बोही) जिनधर्मनी प्राप्ति (सुलभा) सुलभ (भवे) थाय छे. २५६.

मिच्छादंसणरत्ता, सनिआणा कण्हलेसमोगाढा। इअ जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५७॥

अर्थ—(मिच्छादंसणरत्ता) मिथ्यादर्शनमां रक्त, (सनिआणा) नियाणा सहित अने (कण्हलेसमोगाढा) कृष्ण-लेश्याने पामेला (इअ) आवा प्रकारना (जे जीवा) जे जीवो (मरंति) मरे छे, (तेसिं) तेओने (पुण) फरीथी (बोही) जिनधर्मनी प्राप्ति (दुल्लहा) दुर्लभ छे. २५७.

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करिंति भावेणं।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी ॥ २५८ ॥

अर्थ—(जिणवयणे) जिनेश्वरना वचनने विषे (अणुरत्ता) प्रीतिवाळा (जे) जे जीवो (जिणवयणं) जिने- वचनने—आज्ञाने (भावेणं) भावथी (करिंति) करे छे—ते प्रमाणे वर्ते छे (ते) तेओ (अमला) मि- भावमळ रहित अने (असंकिलिट्ठा) रागादिक संक्लेश रहित एवा सता (परित्तसंसारी) परिमित—स- (होंति) थाय छे. २५८.

आ प्रमाणे अनशन कर्या पछी अशुभ भावनानो त्याग कहे छे —

कदंप्पमाभिंओग च, किव्विसिअ मोहमासुरत्त च ।
एआओ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया [10]हुति ॥ २५४ ॥

अर्थ—(कदप्प) कदर्पभावना १, (आभिओग च) आभियोग्य भावना २, (किव्विसिअ) किल्बिषभावना ३, (मोह) मोहभावना ४, (आसुरत्त च) आसुरभावना ५, (एआओ) आ पाच भावनाओ (विराहिया) विराधिका एटले सम्यग् ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिकनो भग करनारी सती (मरणम्मि) मरण समये भावी सती (दुग्गईओ) दुर्गतिने आपनार होवाथी दुर्गतिरूप (हुति) थाय छे एटले के मरण समये तेवी अशुभ भावना भाववाथी दुर्गति प्राप्त थाय छे, अर्थात् शुभ भावना भाववाथी सद्गति पण थाय छे एम सूचववा माटे मरण समये एम कह्यु. २५४ (तेथी अशुभ भावना न भाववी अने शुभ भावना भाववी ए तात्पर्य समजवु)

मिच्छादसणरत्ता, सनिआणा हु हिंसगा । इइ जे मरति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ २५५ ॥

अर्थ—(मिच्छादसणरत्ता) मिथ्यादर्शनमां रागी थयेला, (सनिआणा हु) नियाणा सहित अने (हिंसगा) प्राणीनी हिंसा करनारा (इइ) आवु कार्य करनारा (जे) जे (जीवा) जीवो (मरति) मरे छे, (तेसिं) तेओने (पुण) फरीने परभवमां (बोही) जिनधर्मनी प्राप्ति (दुल्लहा) दुर्लभ थाय छे २५५

एगंतरमायामं, कट्टू संवच्छरे दुवे । तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥ २५१ ॥
तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे । परिमिअं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे ॥२५२॥
कोडीसहिअमायामं, कट्टू संवच्छरे मुणी । मासद्धमासिएणं तु, आहारेणं तवं चरे ॥ २५३ ॥

अर्थ—(दुवे संवच्छरे) त्यारपछी बे वर्ष (एगन्तरं) एकांतर (आयामं) आंबिल एटले एक उपवास अने एक आंबिल ए प्रमाणे (कट्टू) करीने (तओ) त्यारपछी (संवच्छरद्धं तु) अर्ध वर्ष एटले छ मास (नाइविगिट्ठं) नातिविकृष्ट एटले अट्ठम, दशम विगेरे उत्कृष्ट नहीं एवो (तवं) तप (चरे) करे. २५१. (तओ) त्यारपछी (संवच्छरद्धं तु) अर्ध वर्ष (विगिट्ठं तु) उत्कृष्ट एवो ज (तवं चरे) तप करे, परंतु (तम्मि संवच्छरे) ते आखा वर्षमां (परिमिअं चेव) परिमित एटले अल्प ज (आयामं करे) आंबिल करे. बारमा वर्षमां कोटि सहित आंबिल करवानुं छे अने अहीं अग्यारमा वर्षमां उपवासादिकना पारणामां ज आंबिल करवानुं छे, तेथी अहीं परिमित शब्द वापर्यो छे. २५२. त्यारपछी (मुणी) मुनि (संवच्छरे) बारमे वर्षे (कोडीसहिअं आयामं) निरंतर बे आंबिल करवाथी पहेला दिवसनो अंत अने बीजा दिवसनो आरंभ ए बे कोटि-अग्र मळवाथी कोटि सहित आंबिल (कट्टू) करीने छेवट आयुष्यनी समाप्तिने समये (मासद्धमासिएणं तु) मास के अर्ध मासनुं (आहारेणं) सर्व आहारना प्रत्याख्यान वडे (तवं) तप एटले भक्तपरिज्ञादिक अनशन (चरे) करे. २५३.

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (बहूणि) घणा (वासाणि) वर्षो सुधी (सामण्णं) संयमने (अणुपालिआ) पाळीने (मुणी) मुनि (इमेण) आ (कम्मजोगेण) क्रमना व्यापारे करीने-तपना अनुष्ठाने करीने (अप्पाणं) पोताना आत्माने (संलिहे) संलेखना करे एटले द्रव्यथी अने भावथी कृश करे २४८.

क्रमयोगने ज कहे छे —

बारसेव उ वासाइ, संलेहुक्कोसिआ भवे । संवच्छरं मज्झिमिआ, छम्मासे अ जहण्णिआ ॥ २४९ ॥

अर्थ—(उक्कोसिआ) उत्कृष्ट (संलेहा) द्रव्यथी शरीरनी अने भावथी कषायनी कृशतारूप संलेखना (बारसेव उ) बार (वासाइ) वर्षनी (भवे) होय छे. (मज्झिमिआ) मध्यम संलेखना (संवच्छरं) एक वर्षनी छे (अ) अने (जहण्णिआ) जघन्य संलेखना (छम्मासे) छ मासनी छे २४९

हवे उत्कृष्ट संलेखनानो क्रमयोग कहे छे —

पढमे वासचउक्कम्मि, विगईनिज्जूहणं करे । बिइए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे ॥ २५० ॥

अर्थ—(पढमे) पहेला (वासचउक्कम्मि) चार वर्षमां (विगईनिज्जूहणं) विगयनो त्याग (करे) करे (बिइए) बीजा (वासचउक्कम्मि) चार वर्षमां (विचित्तं तु) विचित्र प्रकारनो छट्ठ, अट्ठम विगेरे (तवं चरे) तप करे अहीं पहेला चार वर्ष सुधी विचित्र तप करी पारणे नीवी करे अने बीजा चार वर्ष विचित्र तप करी पारणामां सर्व शुद्ध आहार वापरे एवो संप्रदाय छे २५०

अर्थ—प्रथमनी जेम जाणवो. २४४-२४५.

हवे अजीव तथा जीवनो अधिकार समाप्त करे छे.

संसारत्था य सिद्धा य, इइ जीवा विआहिआ । रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा वि अ ॥२४६॥

अर्थ—(संसारत्था य) संसारमां रहेला-संसारी अने (सिद्धा य) सिद्ध (इइ) ए बे प्रकारना (जीवा) जीवो (विआहिआ) कह्या. तथा (रूविणो चेव) रूपी अने (अरूवी य) अरूपी एम (दुविहा वि अ) बन्ने प्रकारना (अजीवा) अजीवो पण कह्या. २४६.

आ प्रमाणे जीव अने अजीवनुं स्वरूप सांभळीने तथा ते पर श्रद्धा करीने ज कृतार्थपणुं मानवानुं नथी, ते कहे छे.—

इइ जीवमजीवे अ, सुच्चा सद्दहिऊण य । सव्वनयाण अणुमए, रमिज्जा संजमे मुणी ॥२४७॥

अर्थ—(इइ) आ प्रमाणे (जीवं अजीवे अ) जीव तथा अजीवना स्वरूपने (सुच्चा) सांभळीने (सद्दहिऊण य) तथा सद्दहीने (मुणी) साधुए (सव्वनयाण) ज्ञाननय अने क्रियानयनी अंतर्गत रहेला नैगमादिक सर्व नयोने (अणुमए) संमत एवा (संजमे) चारित्रने विषे (रमिज्जा) रमण करवुं. २४७.

संयममां रति करीने शुं करवुं ? ते कहे छे.—

तओ बहूणि वासाणि, सामण्णमणुपालिआ । इमेण कम्मजोगेणं, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥ २४८ ॥

सागरा इक्कतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे। नवमम्मि जहणेण, तीसई सागरोवमा ॥ २४० ॥

अर्थ—नवमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति एकत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति त्रीश सागरोपमनी छे २४०

तेत्तीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे। चउसु पि विजयाईसु, जहन्ना इक्कतीसई ॥ २४१ ॥

अजहण्णमणुक्कोस, तित्तीस सागरोवमा। महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा विआहिआ ॥ २४२ ॥

अर्थ—विजयादिक चार अनुत्तर विमानमां उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एकत्रीश सागरोपमनी छे अने सर्वार्थसिद्ध नामना महाविमानमां उत्कृष्ट अने जघन्य तेत्रीश सागरोपमनी छे २४१–२४२

जा चेव य आउठिई, देवाण तु विआहिआ। सा तेसि कायठिई, जहण्णुक्कोसिआ भवे ॥२४३॥

अर्थ—(जा चेव य) जे ज (देवाण तु) देवोनी (आउठिई) आयुनी स्थिति (विआहिआ) कही छे, (सा) ते (तेसिं) तेमनी (जहण्णुक्कोसिआ) जघन्य तथा उत्कृष्ट (कायठिई) कायस्थिति पण (भवे) होय छे देव मरीने अनतर देव थइ शकतो नथी, तेथी देवोनी जेटली आयुस्थिति छे तेटली ज कायस्थिति पण छे २४३

अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहण्णय। विजढम्मि सए काए, देवाण हुज्ज अतर ॥ २४४ ॥

एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ। सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥२४५॥

अर्थ—त्रीजा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति पचीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति चोवीश सागरोपमनी छे. २३४.

छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई ॥ २३५ ॥

अर्थ—चोथा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति छवीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति पचीश सागरोपमनी छे. २३५.

सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । पंचमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥ २३६ ॥

अर्थ—पांचमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति सतावीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति छवीश सागरोपमनी छे. २३६.

सागरा अट्ठवीसं तु; उक्कोसेण ठिई भवे । छट्ठम्मि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥ २४७ ॥

अर्थ— छठ्ठा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति अठ्ठावीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सत्तावीश सागरोपमनी छे. २३७.

सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । सत्तमम्मि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसई ॥ २३८ ॥

अर्थ—सातमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति ओगणत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति अठ्ठावीश सागरोपमनी छे. २३८.

तीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई ॥ २३९ ॥

अर्थ—आठमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति त्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति ओगणत्रीश सागरोपमनी छे. ॥२३९॥

अर्थ—नवमा आनत देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति ओगणीश सागरोपमनी अने जघन्य अढार सागरोपमनी छे २२८

वीस तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । पाणयम्मि जहण्णेण, सागरा अउणवीसई ॥ २२९ ॥

अर्थ—दशमा प्राणत देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति वीश सागरोपमनी अने जघन्य ओगणीश सागरोपमनी छे २२९

सागरा इक्कवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे । आरणम्मि जहण्णेण, वीसई सागरोवमा ॥ २३० ॥

अर्थ—अग्यारमा आरण देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति एकवीश सागरोपमनी अने जघन्य वीश सागरोपमनी छे २३०

बावीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । अच्चुअम्मि जहण्णेण, सागरा इक्कवीसई ॥ २३१ ॥

अर्थ—बारमा अच्युत देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति बावीश सागरोपमनी अने जघन्य एकवीश सागरोपमनी छ २३१

तेवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । पढमम्मि जहण्णेण, बावीस सागरोवमा ॥ २३२ ॥

अर्थ—पहेला ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति त्रेवीश सागरोपमनी अने जघन्य बावीश सागरोपमनी छे २३२

चउवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । बिईअम्मि जहण्णेण तेवीस सागरोवमा ॥ २३३ ॥

अर्थ—बीजा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति चोवीश सागरोपमनी अने जघन्य त्रेवीश सागरोपमनी छे २३३

पणवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । तइअम्मि जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ॥ २३४ ॥

साहिआ सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे । माहिंदम्मि जहन्नेणं, साहिआ दुन्नि सागरा ॥ २२३ ॥

अर्थ—चोथा माहेंद्र देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति कांइक अधिक सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति कांइक अधिक बे सागरोपमनी कहेली छे. २२३.

दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । बंभलोए जहन्नेणं, सत्त उ सागरोवमा ॥ २२४ ॥

अर्थ—पांचमा ब्रह्म देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपमनी छे अने जघन्य स्थिति सात सागरोपमनी छे. २२४.

चउद्दस उ सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । लंतगम्मि जहन्नेणं, दस उ सागरोवमा ॥ २२५ ॥

अर्थ—छट्ठा लांतक देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति चौद सागरोपमनी छे अने जघन्य स्थिति दश सागरोपमनी छे. २२५.

सत्तरस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । महासुक्के जहन्नेणं, चउद्दस सागरोपमा ॥ २२६ ॥

अर्थ—सातमा महाशुक्र देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति सत्तर सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति चौद सागरोपनी छे. २२६.

अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । सहस्सारे जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥ २२७ ॥

अर्थ—आठमा सहस्रार देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति अढार सागरोपनी अने जघन्य स्थिति सत्तर सागरोपमनी छे. २२७.

सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । आणयम्मि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा ॥ २२८ ॥

पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । वंतराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिआ ॥ २१८ ॥
पलिओवमं तु एगं, वासलक्खेण साहिअं । पलिओवमट्ठभागो, जोईसेसु जहन्निआ ॥ २१९ ॥

अर्थ—बे गाथानो पूर्ववत्–पछी भूमिमां रहेला भुवनवासीओनी स्थिति उत्कृष्टी एक सागरोपम झाझेरी जाणवी अने तेमनी जघन्य दश हजार वर्षनी जाणवी व्यंतरोनी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपमनी जाणवी अने जघन्य दश हजार वर्षनी जाणवी ज्योतिषीनी लाख वर्ष अधिक एक पल्योपमनी उत्कृष्ट स्थिति जाणवी, ते चन्द्रविमानना देवोनी छे अने जघन्य स्थिति पल्योपमना आठमा भागनी छे, ते ताराविमानना देवोनी जाणवी २१५–२१६

दो चेव सागराइं, उक्कोसेण विआहिआ । सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥ २२० ॥

अर्थ—सौधर्म देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एक पल्योपमनी कही छे २२०

सागरा साहिआ दुन्नि, उक्कोसेण विआहिआ । ईसाणम्मि जहन्नेणं, साहिअं पलिओवमं ॥ २२१ ॥

अर्थ—ईशान देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति कांइक अधिक एवा बे सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति कांइक अधिक एवा एक पल्योपमनी कहेली छे. २२१

सागराणि अ सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे । सणकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥ २२२ ॥

अर्थ—त्रीजा सनत्कुमार देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति बे सागरोपमनी कहेली छे २२२

अर्थ—अहीं नव ग्रैवेयकना त्रण विभाग पाडवाथी त्रण त्रिक थाय छे. तेथी ते नवनी संज्ञा आ प्रमाणे छे.— (हिट्ठिमा हिट्ठिमा चेव) नीचला त्रिकमां नीचेना १, (हिट्ठिमा मज्झिमा) नीचला त्रिकमां मध्यमना २, (तहा) तथा (हिट्ठिमा उवरिमा चेव) नीचला त्रिकमां उपरना ३, (मज्झिमा हिट्ठिमा) वचला त्रिकमां नीचेना ४, (तहा) तथा (मज्झिमा मज्झिमा चेव) वचला त्रिकमां मध्यना ५, (मज्झिमा उवरिमा) वचला त्रिकमां उपरना ६, (तहा) तथा (उवरिमा हिट्ठिमा चेव) उपला त्रिकमां नीचेना ७, (उवरिमा मज्झिमा) उपला त्रिकमां मध्यना ८, (तहा) तथा (उवरिमा उवरिमा चेव) उपला त्रिकमां उपरना ९, (इइ) आ प्रमाणे (गेविज्जगा सुरा) नव ग्रैवेयकमां रहेला देवो जाणवा. तथा (विजया) विजय १, (वेजयंता य) वैजयंत २, (जयंता) जयंत ३, (अपराजिआ) अपराजित ४, (सव्वट्ठसिद्धिगा चेव) तथा सर्वार्थसिद्ध ५ आ पांचमां रहेला (पंचहा) पांच प्रकारना (अणुत्तरा सुरा) अनुत्तर देवो जाणवा. (इइ) आ प्रमाणे (एए वेमाणिआ) आ वैमानिक देवो (एवमायओ) ए विगेरे (अणेगहा) अनेक प्रकारना जाणवा. २११–२१४.

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे परिकित्तिआ । इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥ २१५ ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआवि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआवि अ ॥ २१६ ॥

साहिअं सायरं इक्कं उक्कोसेण ठिई भवे । भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिआ ॥ २१७ ॥

कप्पातीता उ जे देवा, दुविहा ते विआहिआ । गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥ २१० ॥

अर्थ—(जे देवा) जे देवो (कप्पातीता उ) कल्पातीत छे, स्वामी सेवक भाव रहित–अहमिंद्र छे (ते) तेओ (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे ते आ प्रमाणे.—(गेविज्ज अणुत्तरा चेव) ग्रैवेयक अने अनुत्तर (तहिं) तेमां (गेविज्जा) ग्रैवेयक (नवविहा) नव प्रकारना कह्या छे २१०

हिट्ठिमा हिट्ठिमा १ चेव, हिट्ठिमा मज्झिमा २ तहा ।
हिट्ठिमा उवरिमा ३ चेव, मज्झिमा हिट्ठिमा ४ तहा ॥ २११ ॥
मज्झिमा मज्झिमा ५ चेव, मज्झिमा उवरिमा ६ तहा ।
उवरिमा हिट्ठिमा ७ चेव, उवरिमा मज्झिमा ८ तहा ॥ २१२ ॥
उवरिमा उवरिमा ९ चेव, इइ गेविज्जगा सुरा ।
विजया १ वेजयता २ य, जयता ३ अपराजिआ ४ ॥ २१३ ॥
सव्वट्ठसिद्धिगा ५ चेव, पचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिआ एए, णेगहा एवमायओ ॥ २१४ ॥

कह्या छे. ते आ प्रमाणे—(कप्पोवगा य) कल्पोपग एटले सौधर्मादिक कल्पने पामनारा (तहेव य) तथा वळी (कप्पातीता) कल्पातीत एटले कल्पने ओळंगी गयेला अर्थात् नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर देवलोकने पामनारा (बोधव्वा) जाणवा. २०७.

> **कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मी १ साणगा २ तहा ।**
> **सणंकुमारा ३ माहिंदा ४, बंभलोगा य ५ लंतगा ६ ॥ २०८ ॥**
> **महासुक्का ७ सहस्सारा८, आणया ९ पाणया १० तहा ।**
> **आरणा ११ अच्चुआ १२ चेव, इति कप्पोवगा सुरा ॥ २०९ ॥**

अर्थ—(कप्पोवगा) कल्पोपग देव (बारसहा) बार प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—(सोहम्म) सौधर्म १, (ईसाणगा) ईशान २, (तहा) तथा (सणंकुमारा) सनत्कुमार ३, (माहिंदा) माहेंद्र ४, (बंभलोगा य) ब्रह्मलोक ५, (लंतगा) लांतक ६, (महासुक्का) महाशुक्र ७, (सहस्सारा) सहस्रार ८, (आणया) आनत ९, (पाणया) प्राणत १०, (तहा) तथा (आरणा) आरण ११, (अच्चुआ चेव) तथा अच्युत १२, (इति) आ प्रमाणे (कप्पोवगा) कल्पोपग (सुरा) देवो छे. अहीं सौधर्म विगेरे देवलोकनां नाम गणाव्यां छे, तेमां रहेनारा देव पण सौधर्म विगेरे नामना ज जाणवा. २०८-२०९. (आ देवो स्वामी सेवक भाव विगेरे कल्प–आचार तेने पाळनारा छे तेथी ते कल्पोपपन्न कहेवाय छे.)

पिसाय १ भूआ २ जक्खा य ३, रक्खसा ४ किन्नरा य ५ किंपुरिसा ६ ।
महोरगा य ७ गंधव्वा ८, अट्ठविहा वाणमंतरा ॥ २०५ ॥

अर्थ—(पिसाय) पिशाच १, (भूआ) भूत २, (जक्खा य) यक्ष ३, (रक्खसा) राक्षस ४, (किन्नरा य) किन्नर ५, (किंपुरिसा) किंपुरुष ६, (महोरगा य) महोरग ७, अने (गंधव्वा) गंधर्व ८, (अट्ठविहा) आठ प्रकारना (वाणमंतरा) वाणव्यंतर कह्या छे अहीं अणपन्नी, पणपन्नी विगेरे बीजा पण आठ प्रकार कहेवाय छे, तेमनो समावेश आ आठमां ज थाय छे तेथी जूदा कह्या नथी २०५

चंदा १ सूरा य २ नक्खत्ता ३, गहा ४ तारागणा ५ तहा ।
ठिआ विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥ २०६ ॥

अर्थ—(चंदा) चंद्र १, (सूरा य) सूर्य २, (नक्खत्ता) नक्षत्र ३, (गहा) ग्रह ४ (तहा) तथा (तारागणा) ताराना समूह ५, (पंचहा) ए पांच प्रकारे (जोइसालया) ज्योतिषी देव (ठिआ) अढी द्वीपनी बहार स्थिर रहेला छे (चेव) अने (विचारिणो) अढी द्वीपनी अंदर विशेषे करीने एटले मेरुने प्रदक्षिणा दइने चालवावाळा छे २०६

वेमाणिआ उ जे देवा, दुविहा ते विआहिआ । कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पातीता तहेव य ॥२०७॥

अर्थ—(जे देवा) जे देवो (वेमाणिआ उ) वैमानिक छे, (ते) तेओ (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ)

(तह) तथा (वेमाणिश्रा) वैमानिक. २०२.

देवोना उत्तर भेद बतावे छे.—

दसहा भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो । पंचविहा जोइसिश्रा, दुविहा वेमाणिआ तहा ॥ २०३ ॥

अर्थ—(दसहा भवणवासी) भवनवासी देव दश प्रकारना छे, (अट्ठहा वणचारिणो) वाणव्यंतर आठ प्रकारना छे, (पंचविहा जोइसिश्रा) ज्योतिषी देव पांच प्रकारना छे, (तहा) तथा (दुविहा वेमाणिश्रा) वैमानिक देव बे प्रकारना छे. २०३.

तेमनां नाम कहे छे.—

असुरा १ नाग २ सुवण्णा ३, विज्जू ४ अग्गी अ ५ आहिआ ।
दीवो ६ दहि ७ दिसा ८ वाया ९, थणिआ १० भवणवासिणो ॥ २०४ ॥

अर्थ—(असुरा) असुरकुमार १, (नाग) नागकुमार २, (सुवण्णा) सुवर्णकुमार ३, (विज्जू) विद्युत्कुमार ४, (अग्गी अ) अग्निकुमार ५, (दीव) द्वीपकुमार ६, (उदहि) उदधिकुमार ७, (दिसा) दिक्कुमार ८, (वाया) वायुकुमार ९, तथा (थणिआ) स्तनितकुमार १० आ दश (भवणवासिणो) भवनवासी (आहिआ) कह्या छे. कुमारनी जेम क्रीडा करवामां प्रीतिवाळा होवाथी आ सर्व कुमार कहेवाय छे. २०४. (सुवर्ण—गरुड. स्तनित—मेघ).

अर्थ—(मणुआण) मनुष्यनी (आऊठिई) आयु स्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (तिण्णि उ) त्रण (पलिओवमाइ) पल्योपमनी (विआहिआ) कही छे अने (जहण्णिआ) जघन्य आयुस्थिति (अंतोमुहुत्त) अंतर्मुहूर्तनी कही छे एटले के त्रण पल्योपमनु आयुष्य युगलियानु होय छे समूर्छिम मनुष्यनु तो उत्कृष्ट आयुष्य पण अंतर्मुहूर्त्तनु ज होय छे १९८

पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण विआहिआ। पुव्वकोडीपुहुत्तेण, अंतोमुहुत्त जहण्णगा ॥१९९॥
कायठिई मणुआण—

अर्थ—त्रण पल्योपम अने पूर्वकोटि पृथक्त्व एटले सात पूर्वकोटि एटली अधिक उत्कृष्ट कायस्थिति मनुष्योनी कही छे, अने जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी कही छे १९९

अंतर तेसिम भवे। अणंतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहण्णग ॥ २०० ॥
एएसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ। संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ २०१ ॥

अर्थ पूर्ववत् २००-२०१ हवे देवो विषे कहे छे—

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण। भोमेज्जवाणमंतर—जोइसवेमाणिआ तह ॥२०२॥

अर्थ—(देवा) देवो (चउव्विहा) चार प्रकारना (वुत्ता) कह्या छे (ते) तेमने (मे कित्तयओ) कहेता एवा मारा थकी (सुण) तु सांभळ (भोमेज्ज) भौमेय एटले भवनपति, (वाणमंतर) वाणव्यंतर, (जोइस) ज्योतिषी,

गजमुख ४. चोथामां अश्वमुख १, हस्तिमुख २, सिंहमुख ३ अने व्याघ्रमुख ४. पांचमामां अश्वकर्ण १, सिंहकर्ण २, गजकर्ण ३ अने कर्णप्रावरण ४. छठ्ठामां उल्कामुख १, विद्युन्मुख २, जिव्हामुख ३ अने मेघमुख ४. सातमामां घनदंत १, गूढदंत २, श्रेष्ठदंत ३ अने शुद्धदंत ४. आ सर्व द्वीपोमां द्वीपनी जेवा ज नामवाळा युगलिया वसे छे. आ ज रीते एवा ज नाम विगेरेवाळा शिखरीपर्वतना पण बीजा अठ्ठावीश अंतरद्वीप छे, ते सर्व पूर्वना अठ्ठावीश सदृश नाम विगेरे हकीकतवाळा होवाथी अभेदनी विवक्षाए जुदा कह्या नथी. एटले अठ्ठावीश कहेवामां दोष नथी. (बाकी कुल मळीने ५६ छे.) १९५.

समुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ आहिओ । लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेऽवि विआहिआ ॥१९६॥

अर्थ (समुच्छिमाण) संमूर्छिम मनुष्यना पण (एसेव) ए ज (भेओ) भेदो (आहिओ) कहेला (होइ) छे, एटले के गर्भज मनुष्यना जे भेद उपर कह्या ते ज भेद संमूर्छिम मनुष्यना पण जाणवा. कारण के गर्भज मनुष्यना वात पित्तादिकने विषे ज तेओ उत्पन्न थाय छे. तथा (ते सव्वे वि) ते सर्वे संमूर्छिम मनुष्यो (लोगस्स) लोकना (एगदेसम्मि) एक देशने विषे (विआहिआ) कहेला छे. एटले लोकना एक भागमां रहेला छे एम जाणवुं. १९६.

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १९७ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १९७

पलिओवमाइं तिन्नि उ, उक्कोसेण विआहिआ । आउठिई मणुआणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥१९८॥

अर्थ—(तेसिं) तेमनी (सखा उ) सख्या (कमसो) अनुक्रमे (इइ) आ प्रमाणे (एसा) आ (विआहिआ) कही छे – (पणरसतीसईविहा) कर्मभूमिना पदर प्रकार, अकर्मभूमिना त्रीश प्रकार, (य) अने अतरद्वीपना (अट्ठावीसई) अट्ठावीश (भेआ) भेद छे अहीं पांच भरत, पाच ऐरवत अने पांच महाविदेहना मळी पदर भेद कर्मभूमिना छे हैमवत, हरिवर्ष, रम्यक, हैरण्यवत, देवकुरु अने उत्तरकुरु ए छ अकर्मभूमि प्रत्येके पांच पांच होवाथी त्रीश थाय छे. जो के अहीं अनुक्रम लेता तो प्रथम अकर्मभूमिना कहेवा जोइए तोपण कर्मभूमिना मनुष्योने मुक्तिनु साधन होवाथी तेमनु प्रधानपणु जणाववा माटे तेमनी सख्या प्रथम गणावी छे तथा अट्ठावीश अतरद्वीपो आ प्रमाणे छे –हिमवान पर्वतना पूर्व पश्चिमने छेडे जबूद्वीपनी वेदिकानी बहार बबे दाढाओ विदिशा तरफ नीकळेली छे, तेमां पूर्वनी बे दाढाओमाथी एक ईशान तरफ अने बीजी अग्निखूण तरफ लांबी जाय छे, अने पश्चिमनी बे दाढामांथी एक नैर्ऋत्य तरफ अने बीजी वायव्य तरफ जाय छे ते दरेक दाढामा जगतीना कोटथी त्रणसो त्रणसो योजन जइए त्यारे त्यां त्रणसो त्रणसो योजन लाबा अने पहोळा एकेक एटले कुल चार अतरद्वीपो आवे छे, त्यारपछी त्यांथी चारसो चारसो योजन जइए त्यारे चारसो चारसो योजन लांबा पहोळा बीजा चार अतरद्वीपो आवे छे, ए प्रमाणे सो सो योजननी वृद्धि करतां तेटला ज योजनना लांबा पहोळा चार चार अतरद्वीपो आवे छे एवी रीते दरेक दाढा उपर सात सात अतरद्वीपो होवाथी कुल अट्ठावीश अतरद्वीपो छे तेमना नाम प्रदक्षिणाने क्रमे आ प्रमाणे छे –पहेला चतुष्कमा एकोरुक १, आभाषिक २, वैषाणिक ३ अने लांगुलिक ४ बीजामा हयकर्ण १, गजकर्ण २, गोकर्ण ३ अने शष्कुलीकर्ण ४ त्रीजामा आदर्शमुख १, मेषमुख २, हयमुख ३ अने

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१६२॥

अर्थ—पूर्ववत्. १६२.

हवे मनुष्योना भेद कहे छे.—

मणुआ दुविहभेआ उ, ते मे कित्तयओ सुण । संमुच्छिममणुस्सा य, गब्भवक्कंतिआ तहा ॥१६३॥

अर्थ—(मणुआ) मनुष्य (दुविहभेआ उ) बे प्रकारना छे, (ते) तेने (कित्तयओ) कहेता एवा (मे) मारी पासे (सुण) सांभळो.-(संमुच्छिममणुस्सा य) संमूर्छिम मनुष्य (तहा) तथा (गब्भवक्कंतिआ) गर्भव्युत्क्रांत एटले गर्भज. अहीं जे मन रहित अने गर्भज मनुष्यना वांतादिकमां उत्पन्न थइ अंतर्मुहूर्त्तना आयुष्यवाळा अपर्याप्ता सता ज मरण पामे छे ते संमूर्छिम मनुष्य जाणवा. १६३.

गब्भवक्कंतिआ जे उ, तिविहा ते विआहिआ । अकम्मकम्मभूमा य, अंतरद्दीवया तहा ॥ १९४ ॥

अर्थ—(जे उ) जे (गब्भवक्कंतिआ) गर्भज मनुष्यो छे, (ते) ते (तिविहा) त्रण प्रकारना (विआहिआ) कहेला छे. ते आ प्रमाणे-(अकम्मकम्मभूमा य) अकर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला एटले युगलीया, कर्मभूमिमां एटले भरतादिक क्षेत्रमां उत्पन्न थयेला, (तहा) तथा (अंतरद्दीवया) अंतरद्वीपमां उत्पन्न थयेला युगलिक मनुष्यो. १६४.

पंणरसतीसईविहा, भेआ य अट्ठवीसई । संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा विआहिआ ॥१९५॥

अर्थ—पूर्ववत् १८८

पलिओवमस्स भागो, असंखिज्जइमो भवे । आउठिई खहयराण, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १८९ ॥

अर्थ—(खहयराण) खेचरोनी (आउठिई) आयुस्थिति उत्कृष्टथी (पलिओवमस्स) पल्योपमना (असंखिज्जइमो) असंख्यातमो (भागो) भाग (भवे) छे, अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्त) अंतर्मुहूर्त्तनी छे अहीं पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं आयुष्य युगलिक पक्षीनुं जाणवुं ते सिवाय बीजा गर्भज पक्षीओनुं आयुष्य पूर्वकोटि प्रमाण छे, अने समूर्छिमनुं बहोंतेर हजार वर्षनुं छे १८९

असंखभागो पलिअस्स, उक्कोसेण उ साहिआ । पुव्वकोडिपुहुत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥१९०॥

कायठिई खहयराण, अंतरं तेसिमं भवे । कालमणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णगं ॥ १९१ ॥

अर्थ—(खहयराण) खेचरोनी (कायठिई) कायस्थिति (उक्कोसेण उ) उत्कृष्टथी (पलिअस्स) पल्योपमनो (असंखभागो) असंख्यातमो भाग अने (पुव्वकोडिपुहुत्तेण) पूर्वकोटि पृथक्त्व छे, तथा (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्त) अंतर्मुहूर्त्तनी (साहिआ) कही छे तथा (तेसिं) तेमनुं (अंतर) आंतरुं (इमं) आ प्रमाणे (भवे) छे —(उक्कोसं) उत्कृष्टथी (अणंत) अनंत (काल) काळ अने (जहण्णगं) जघन्य (अंतोमुहुत्त) अंतर्मुहूर्त्तनुं छे १९०–१९१

विजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अंतरं ।

अर्थ—(सए काए) पोतानो काय-देह (विजढम्मि) त्याग करे सते (थलयराणं तु) स्थळचरोनु (अंतरं) आ उपर कह्युं ते आंतरुं जाणवुं.

हवे खेचरोने कहे छे.—

चम्मे उ लोमपक्खी अ तइआ समुग्गपक्खी अ ॥ १८६ ॥
विततपक्खी अ बोधव्वा, पक्खिणो उ चउव्विहा । लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विआहिआ ॥१८७॥

अर्थ—(चम्मे उ) चर्ममय पांखवाळा चामचीडीया विगेरे अने (लोमपक्खी अ) रोममय एटले पींछावाळी पांखोवाळा, तथा (तइआ) त्रीजा (समुग्गपक्खी अ) दाभडाना आकार जेवी पांखोवाळा, तथा (विततपक्खी अ) विततपक्षी एटले जेओ निरंतर पांखोने पहोळी करीने रहेनारा. आमां समुग्गपक्खी अने विततपक्खी ए बे जातना पक्षीओ मानुषोत्तर पर्वतनी बहार होय छे. (पक्खिणो उ) आ रीते पक्षीओ (चउव्विहा) चार प्रकारना (बोधव्वा) जाणवा. (लोएगदेसे) लोकना एक देशमां (ते सव्वे) ते सर्वे रहेला छे, (सव्वत्थ) सर्व लोकने विषे (न विआहिआ) कहेला नथी. १८६-१८७

सतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ सपज्जवसिआ वि अ ॥ १८८ ॥

माइ) पल्योपमनी (विआहिआ) कही छे, (जहणिआ) जघन्य स्थिति (अतोमुहुत्त) अतर्मुहूर्त्तनी कही छे अहीं विशेष ए छे जे—गर्भज भुजपरिसर्प अने उरपारिसर्पनु उत्कृष्ट आयुष्य पूर्वकोटिनु छे, अने समूर्छिम एवा ते बन्नेनु अनुक्रमे बत्रीश हजार अने त्रेपन हजार वर्षनु छे तथा समूर्छिम स्थळचरनु आयुष्य चोराशी हजार वर्षनु छे १८३

पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण विआहिआ । पुव्वकोडीपुहुत्तेण, अतोमुहुत्त जहन्निआ ॥१८४॥

अर्थ—स्थळचरनी कायस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (पुव्वकोडीपुहुत्तेण) पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक (तिण्णि उ) त्रण (पलिओवमाइ) पल्योपमनी (विआहिआ) कहेली छे तथा (जहन्निआ) जघन्य कायस्थिति (अतोमुहुत्त) अतर्मुहूर्त्तनी छे अहीं कोइ जीव स्थळचर तिर्यचने विषे पूर्वकोटिना आयुष्यवाळा सात भव करी पछी आठमो भव युगलिक स्थलचरने विषे त्रण पल्योपमना आयुष्यवाळो करे, तेथी उपर कहेलु कायस्थितिनु उत्कृष्ट प्रमाण थाय छे कारण के तिर्यच अने मनुष्यने विषे उत्कृष्टथी निरतर आठ भव ज थइ शके छे १८४

कायठिई थलयराण, अतर तेसिमं भवे । काल अणतमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नग ॥ १८५ ॥

अर्थ—(थलयराण) स्थळचरनी (कायठिई) कायस्थिति उपर प्रमाणे कही हवे (तेसिं) तेमनु (अतर) आंतरु (इम) आ प्रमाणे (भवे) छे —(उक्कोस) उत्कृष्टथी (अणत) अनत (काल) काळनु अने (जहन्नग) जघन्यथी (अतोमुहुत्त) अतर्मुहूर्त्तनु छे १८५

तेमां (हयमाई) अश्वादिक एक खरीवाळा छे, (गोणमाई) बळद विगेरे बे खरीवाळा छे, (गयमाई) हाथी विगेरे गंडीपद छे, अने (सीहमाइणो) सिंहादिक सनख पद—नख सहित पगवाळा छे. १७९.

हवे परिसर्पने कहे छे.—

भुओरपरिसप्पा उ, परिसप्पा दुविहा भवे । गोहाई अहिमाई अ, एकेक्काऽणेगहा भवे ॥१८०॥

अर्थ—(भुओरपरिसप्पा उ) भुजपरिसर्प अने उरपरिसर्प एम (परिसप्पा) परिसर्प (दुविहा) बे प्रकारना (भवे) छे. तेमां (गोहाई) गोधा-गरोळी विगेरे भुजपरिसर्प एटले भुजावडे गमन करनारा होय छे अने (अहिमाई अ) सर्प विगेरे उरपरिसर्प एटले उरवडे गमन करनारा होय छे. तेमां (एकेका) ते दरेक (अणेगहा) अनेक प्रकारना (भवे) छे. १८०

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ सआहिआ । एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१८१॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १८२ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १८१–१८२.

पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण विआहिआ । आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिआ ॥१८३॥

अर्थ—(थलयराणं) स्थळचरनी (आउठिई) आयुस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (तिण्णि उ) त्रण (पलिओव-

पृथक्त्व एटले बेथी नव पूर्वकोटिनी (विश्राहिश्रा) कहेली छे, अने (जहन्नय) जघन्य स्थिति (अतोमुहुत्त) अतर्मुहूर्त्तनी कही छ अहीं जळचरोनी उत्कृष्ट कायस्थिति आठ पूर्वकोटिनी होय छे, ते आ प्रमाणे थइ शके छे –पचेंद्रिय तिर्यंच जळचर आंतरा रहित उत्कृष्टथी आठ भव करे छे, ते आठेनु आयुष्य मेळववाथी आठ पूर्वकोटि ज थाय छे आमां जळचर युगळिया थता न होवाथी युगलियानो भव आवतो नथी तेथी ते प्रमाणमां कांइ पण विरोध आवतो नथी १७६

अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नग। विजढम्मि सए काए, जलयराण तु अतर ॥ १७७ ॥

अर्थ—पूर्ववत् १७७

स्थळचरो विषे कहे छे —

चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे। चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयतो सुण ॥१७८॥

एगखुरा दुखुरा चेव, गडीपय सणप्पया। हयमाई गोणमाई, गयमाई सीहमाइणो ॥ १७९ ॥

अर्थ—(चउप्पया) चारपगवाळा (य) अने (परिसप्पा) परिसर्प एम (दुविहा) बे प्रकारना (थलयरा) स्थळचर (भवे) होय छे तेमां (चउप्पया) चार पगवाळा स्थळचर (चउविहा) चार प्रकारना छे, (ते) तेमने (कित्तयतो) कहेता एवा (मे) मारी पासे (सुण) साभळ १७८ –(एगखुरा) एक खरीवाळा, (दुखुरा चेव) बे खरीवाळा, (गडीपय) गडीपद–गडी एटले कमळनी कर्णिका तेनी जेवा गोळ पगवाळा, तथा (सणप्पया) नख सहित पगवाळा,

मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा । सुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलचराहिआ ॥१७२॥

अर्थ—(मच्छा य) मत्स्य, (कच्छभा य) काचवा, (गाहा य) ग्राह–झुंड, (मगरा) मगर, (तहा) तथा (सुंसुमारा य) सुंसुमार ए (पंचहा) पांच प्रकारना (जलचरा आहिआ) जळचरो कह्या छे एम (बोधव्वा) जाणवुं. १७२.

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विआहिआ । एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१७३॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १७४ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १७३–१७४.

एगा य पुव्वकोडी उ, उक्कोसेण विआहिआ । आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥१७५॥

अर्थ—(जलयराणं) संमूर्छिम अने गर्भज जळचरोनी (आउठिई) आयुष्यस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (एगा य) एक (पुव्वकोडी उ) पूर्वकोटि वर्षनी (विआहिआ) कही छे, अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी कही छे. १७५.

पुव्वकोडिपुहुत्तं तु, उक्कोसेण विआहिआ । कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ १७६ ॥

अर्थ—(जलयराणं) जळचरोनी (कायठिई) कायस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (पुव्वकोडिपुहुत्तं तु) पूर्वकोटि

अर्थ—तनु उत्कृष्ट अतर अनत काळनु छे अने जघन्य अतर कोइ जीव नरकमांथी उद्धरी गर्भज पर्याप्त मत्स्यने विषे उत्पन्न थइ अतर्मुहूर्तनु आयुष्य पूर्ण करी क्लिष्ट अध्यवसायने लीधे नरकमा ज उत्पन्न थाय त्यारे अतर्मुहूर्त्तनु पडे छे १६८

एएसि वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ। सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१६९॥

अर्थ—पूर्ववत् १६९ हवे तिर्यंचनी प्ररूपणा करे छे —

पचिंदिअतिरिक्खा उ, दुविहा ते विआहिआ । समुच्छिमतिरिक्खा य, गब्भवक्कतिआ तहा ॥१७०॥

अर्थ—(पचिंदिअतिरिक्खा उ) जे पचेंद्रिय तिर्यचो छ, (ते) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे ते आ प्रमाणे –(समुच्छिमतिरिक्खा य) समूर्छिम तिर्यंच (गब्भवक्कतिआ तहा) तथा गर्भने विषे व्युत्क्रांति एटले उत्पत्ति छे जेनी एवा अर्थात् गर्भज तिर्यंच १७०

दुविहा वि ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा। खहयरा य बोधव्वा, तेसि भेए सुणेह मे ॥१७१॥

अर्थ—(दुविहा वि) बे प्रकारना एवा पण (ते) ते (तिविहा) त्रण त्रण प्रकारना (भवे) होय छे. ते आ प्रमाणे –(जलयरा) जळचर, (थलयरा) स्थळचर, (तहा) तथा (खहयरा य) खेचर, ए त्रण प्रकारना (बोधव्वा) जाणवा (तेसिं) तेमना (भेए) भेदो (मे) मारी पासे (सुणेह) साभळो १७१

प्रथम जळचर जीवोना भेद कहे छे —

सत्तरसं सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव उ सागरोवमा ॥ १६४ ॥

अर्थ—(पंचमाए) पांचमी पृथ्वीमां (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (सत्तरस) सतर (सागराऊ) सागरोपमनुं आयुष्य अने (जहन्नेणं) जघन्यथी (दस चेव उ) दश ज (सागरोवमा) सागरोपमनुं आयुष्य अथवा स्थिति (विआहिआ) कही छे. १६४.

बावीस सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥ १६५ ॥

तेत्तीस सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥ १६६ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के—छट्ठी पृथ्वीमां उत्कृष्ट आयुष्य बावीश सागरोपमनुं छे. तथा जघन्य सत्तर सागरोपमनुं छे. तथा सातमीमां उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनुं अने जघन्य बावीश सागरोपमनुं कह्युं छे. १६५–१६६.

जा चेव उ आउठिई, नेरईआणं विआहिआ । सा तेसिं कायठिई, जहण्णुक्कोसिआ भवे ॥१६७॥

अर्थ—(नेरईआण) नारकीओनी (जा चेव उ) जे (आउठिई) आयुष्यनी स्थिति (विआहिआ) कही छे, (सा) ते ज (तेसिं) तेमनी (जहण्णुक्कोसिआ) जघन्य अने उत्कृष्ट (कायठिई) कायास्थिति पण (भवे) होय छे. कारण के नारकी मरीने अनंतर नारकी थइ शकतो नथी. १६७.

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, नेरइआणं तु अंतरं ॥१६८॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेणे विआहिआ । पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिआ ॥ १६० ॥

अर्थ—पूर्ववत् १५८-१५६ (पढमाए) पहेली नरक पृथ्वीमां नारकीनी स्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (सागरोवममेगं तु) एक सागरोपमनी अने (जहण्णेण) जघन्यथी (दसवाससहस्सिआ) दश हजार वर्षनी (विआहिआ) कही छे १६०

तिण्णेव सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । दोच्चाए जहण्णेणं, एगं तु सागरोवमं ॥ १६१ ॥

सत्तेव सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । तइआए जहन्नेणं, तिण्णेव उ सागरोवमा ॥ १६२ ॥

अर्थ—(दोच्चाए) बीजी पृथ्वीमा (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (तिण्णेव) त्रण ज (सागराऊ) सागरोपमनु आयुष्य अथवा स्थिति (विआहिआ) कही छे अने (जहण्णेण) जघन्यथी (एगं तु) एक (सागरोवमं) सागरोपमनी कही छे १६१ (तइआए) त्रीजी पृथ्वीमां (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (सत्तेव) सात ज (सागराऊ) सागरोपमनु आयुष्य अने (जहन्नेण) जघन्यथी (तिण्णेव उ) त्रण ज (सागरोवमा) सागरोपमनु आयुष्य अथवा स्थिति विआहिआ कही छे १६२

दस सागरोवमाऊ, उक्कोसेण विआहिआ । चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव उ सागरोवमा ॥ १६३ ॥

अर्थ—(चउत्थीए) चोथी पृथ्वीमां (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (दस) दश (सागरोवमाऊ) सागरोपमनु आयुष्य तथा (जहन्नेण) जघन्यथी (सत्तेव उ) सात ज (सागरोवमा) सागरोपमनु आयुष्य अथवा स्थिति (विआहिआ) कही छे १६३

छे. ते आ प्रमाणे.—(नेरइआ) नारकी, (तिरिक्खा य) तिर्यंच, (मणुआ) मनुष्य, (देवा य) अने देव (आहिआ) कह्या छे. १५५.

हवे प्रथम नारकीना भेद कहे छे —

नेरईआ सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसू भवे । रयणाभसक्कराभा, वालुआभा य आहिआ ॥ १५६ ॥
पंकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा । इति नेरइआ एते, सत्तहा परिकित्तिआ ॥ १५७ ॥

अर्थ—(नेरईआ) नारकीओ (सत्तविहा) सात प्रकारना छे. कारण के ते (सत्तसू) सात जुदी जुदी–उपर नीचे रहेली (पुढवीसु) पृथ्वीने विषे (भवे) होय छे. तेथी ते पृथ्वीना सात भेदथी नारकीना पण सात भेद छे. ते सात पृथ्वीनां नाम आ प्रमाणे.—(रयणाभ) रत्नप्रभा १, (सकराभा) शर्कराप्रभा २, (वालुआभा य) तथा त्रीजी वालुकाप्रभा ३ (आहिआ) कही छे. तथा (पंकाभा) पंकप्रभा ४, (धूमाभा) धूमप्रभा ५, (तमा) एटले तमप्रभा ६, (तमतमा तहा) तथा तमतमा एटले तमतमप्रभा ७, (इति) आ प्रमाणे पृथ्वीना नामवाळा (एते) आ (नेरइआ) नारकी (सत्तहा) सात प्रकारना (परिकित्तिआ) कह्या छे. १५६–१५७.

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ विआहिआ। इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१५८॥
संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १५९ ॥

(माहए) मागध, (अच्छिरोडए) अचीरोटक, (चित्तपत्तए) चित्रपत्रक, (ओहिंजलिआ) उपधिजलिक, (जलकारि अ) जळकारी, (नीआ) नीचक, (तंबगा वि अ) तथा ताम्रक १४६–१४८ (आमां घणा नाम समजाता नथी)

चउरिंदिआ एए,ऽणेगहा एवमायओ । लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे परिकित्तिआ ॥ १४९ ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १५० ॥

छच्चेव य मासाऊ, उक्कोसेण विआहिआ । चउरिंदिअआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहण्णिआ ॥ १५१ ॥

संखेज्जकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । चउरिंदिअकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १५२ ॥

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । चउरिंदियाण जीवाण, अंतरेअं विआहिअं ॥ १५३ ॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १५४ ॥

अर्थ—पूर्ववत् १४९–१५४

हवे पचेंद्रिय कहे छे —

पंचेंदिआ उ जे जीवा, चउव्विहा ते विआहिआ । नेरइआ तिरिक्खा य, मणुआ देवा य आहिआ ॥१५५॥

अर्थ—(जे जीवा) जे जीवो (पंचेंदिआ उ) पंचेंद्रिय छे, (ते) ते (चउव्विहा) चार प्रकारना (विआहिआ) कह्या

१ छ मासनी उत्कृष्टस्थिति (आयु) छे

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १४४ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १४०–१४४.

हवे चतुरिंद्रिय कहे छे.—

चउरिंदिआ उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिआ । पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १४५ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १४५.

अंधिआ पोत्तिआ चेव, मच्छिआ मसगा तहा । भमरे कीडपयंगे अ, ढिंकुणे कुंकुणे तहा ॥१४६॥
कुकुडे सिंगिरीडी अ, नंदावत्ते अ विच्छिए । डोले भिंगिरीडी अ, विरिली अच्छिवेधए ॥१४७॥
अच्छिले माहए अच्छि–रोडए चित्तपत्तए । ओहिंजलिआ जलकारि अ नीआ तंबगा वि अ ॥१४८॥

अर्थ—(अंधिआ) अंधिक जातिना जीव, (पोत्तिआ चेव) पौतिक, (मच्छिआ) मक्षिका, (मसगा) मशक–मच्छर, (तहा) तथा (भमरे) भ्रमर, (कीडपयंगे) कीट, पतंगीयुं, (अ) तथा (ढिंकुणे) ढिंकुण–वगाइ, (कुंकुणे) कुंकण, (तहा) तथा (कुकुडे) कुर्कुट, (सिंगिरीडी अ) शृंगरीटी, (नंदावत्ते अ) नंदावर्त, (विच्छिए) वींछी, (डोले) डोल–खडमाकडी, (भिंगिरीडी अ) भृंगरीटक, (विरिली) विरली, (अच्छिवेधए) अक्षीवेधक, (अच्छिले) अक्षिल,

कप्पासट्ठिमिजा य, तिंदुगा तउसमिंजगा । सदावरी अ गुम्मी अ, बोधव्वा इदकाइआ ॥१३८॥
इदगोवगमाईआ, णेगहा एवमायओ । लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विआहिआ ॥ १३९ ॥

अर्थ—(कुंथू) कुंथुवा, (पिपीलि) कीडी, (उद्दसा) उद्दश, (उक्कलुदेहिआ) उत्कालिक, उद्देहीका–उधी (तहा) तथा (तणहार) तृणहार, (कट्ठहारा) काष्ठहार, (मालुगा) मालूक, (पत्तहारगा) पत्रहारक (कप्पासिट्ठिमिंजा य) कपासना कपासीयामांथी उत्पन्न थता, (तिंदुगा) तिंदुक, (तउसमिंजगा) तंसमिनक, (सदावरी अ) सदावरी, (गुम्मी अ) गुम्मी एटले कानखजुरा, (इदकाइआ) इंद्रकायिक, (बोधव्वा) जाणवा. तथा (इदगोवमाईआ) इद्रगोप—इद्र राजानी गाय आदि त्रींद्रिय जाणवा (एवमायओ) ए आदि (अणेगहा) अनेक प्रकारना जाणवा (ते सव्वे) ते सर्व (लोएगदेसे) लोकना एक देशमां रहेला छे (सव्वत्थ) सर्वत्र (न विआहिआ) रहेला कह्या नथी १३७–१३९

संतइ पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइ पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १४० ॥
एगूणपण्ण होरत्ता, उक्कोसेण विआहिआ । तेइंदिअ आउठिई, अंतोमुहुत्त जहण्णिआ ॥ १४१ ॥
संखेज्जकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्त जहन्निआ । तेइंदिअकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥ १४२ ॥
अणंतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नग । तेइंदिअजीवाण, अंतरेअ विआहिअ ॥ १४३ ॥

१ ओगणपचास अहोरात्र–रात्रिदिवसनी तेमनी उत्कृष्टी स्थिति (आयु) छे २ आ आंतरु

इइ वेइंदिश्रा एए, णेगहा एवमायश्रो । लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विश्राहिश्रा ॥ १३० ॥
संतइं पप्पऽणाईश्रा, श्रपज्जवसिश्रा वि श्र । ठिइं पडुच्च साईश्रा, सपज्जवसिश्रा वि श्र ॥१३१॥
[1]वासाइं वारसेव उ, उक्कोसेण विश्राहिश्रा । वेइंदिश्रश्राउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निश्रा ॥ १३२ ॥
[2]संखेज्जकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निश्रा । वेइंदिश्रकायठिई, तं कायं तु श्रमुंचश्रो ॥ १३३ ॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णयं । वेइंदिश्राण जीवाणं, अंतरेश्रं विश्राहिअं ॥ १३४ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधश्रो रसफासश्रो । संठाणादेसश्रो वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १३५ ॥

श्रर्थ—पूर्ववत्. १३०–१३५.

हवे त्रींद्रिय जीवोनी प्ररूपणा करे छे.—

तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिश्रा । पज्जत्तमपज्जता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १३६ ॥

श्रर्थ—पूर्ववत्. १३६.

कुंथू पिपीलि उद्दंसा, उक्कलुदेहिश्रा तहा । तणहारकट्ठहारा, मालुगा पत्तहारगा ॥ १३७ ॥

---

१ वार वरसनी तेमनी उत्कृष्ठ स्थिति (आयु) कहेल छे, २ एमनी कायस्थिति उत्कृष्टी सख्याता काळनी कही छे.

(पकित्तिश्रा) कहेला छे ते आ प्रमाणे —(बेइदिश्र) द्वींद्रिय १, (तेइदिश्र) त्रींद्रिय २, (चउरो) चतुरिंद्रिय ३, (पचिंदिश्रा चेव) तथा पचेंद्रिय ४ १२६

प्रथम द्वींद्रियने कहे छे —

बेइदिश्रा उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिश्रा । पज्जत्तमज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १२७ ॥

अर्थ—बेइद्रियजीवो पर्याप्त अने अपर्याप्त एम बे प्रकारना कह्या छे तेना पाछा अवांतर बीजा भेदो छे ते सांभळो १२७

किमिणो मगला* जेव, अलसा माइवाहया । वासीमुहा य सिप्पीश्रा, सखा सखणया तहा ॥१२८॥

पलोगाणुलया चेव, तहेव य वेराडगा । जलूगा जालगा चेव, चदणा य तहेव य ॥ १२९ ॥

अर्थ—(किमिणो) कृमिश्रा १, (मगला चेव) मगल अथवा सोमगल नामना जीव विशेष २, (अलसा) अण सीया–वर्षाऋतुमां थाय छे ते ३, (माइवाहया) मातृवाहक एटले चूडेल जातिना जीव ४, (वासीमुहा) वासीमुख एटले वांसलानी जेवा मुखवाळा जीवविशेष ५, (य) तथा (सिप्पीश्रा) शुक्ति–छीपलीश्रो ६, (सखा) शख ७, (सखणया) शखनक–नाना शख ८, (तहा) तथा (पलोगाणुलया चेव) पल्लुका नामना जीव ९, नाना पल्लुका १०, (तहेव य) तथा (वराडगा) वराटक ते काडाने कोडी ११, (जलूगा) जळो १२, (जालगा चेव) जालक जातिना जीव १३, (तहेव य) तथा (चदणा य) चदनक एटले अद्य, जे स्थापनाचार्यमां काम लागे छे ते १४ १२८–१२९

* ' सोमगला ' इति प्रत्यंतरम्,

तेवो वायु, (एवमायश्रो) ए विगेरे (योगहा) अनेक प्रकार वायुकायजीवोना छे. अने नाना प्रकार न होवाथी सूक्ष्म वायुकाय जीवो एक ज प्रकारना छे. ११९.

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा । एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१२०॥
संतइं पप्पऽणाईआ, अप्पज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सप्पज्जवसिआ वि अ ॥ १२१ ॥
तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिआ भवे । आऊठिई वाऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ १२२ ॥
असंखकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ । कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १२३ ॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढम्मि सए काए, वाउजीवाण अंतरं ॥ १२४ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १२५ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १२०–१२५ हवे उदार–स्थूळ त्रसने कहे छे.—

उराला[1] य तसा[2] जे उ, चउहा[3] ते पकित्तिआ । बेइंदिअ तेइंदिअ, चउरो पंचिंदिआ चेव ॥१२६॥

अर्थ—(जे उ) वळी जे (उराला य) उदार एटले स्थूळ (तसा) त्रसो छे (ते) ते (चउहा) चार प्रकारना

१ पवननी त्रण हजार वर्षनी उत्कृष्ट स्थिति (आयु)छे.

असखकालमुक्कोसा अतोमुहुत्त जहन्नगा । कायठिई तेऊण, त काय तु अमुचओ ॥ ११४ ॥
अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नग । विजढम्मि सए काए, तेऊजीवाण अतर ॥ ११५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ ११६ ॥

अर्थ—पूर्ववत् १११–११६ एटलु विशेष के एनु उत्कृष्ट आयुष्य त्रण अहोरात्रीनु जाणवु

हवे वायुकाय कहे छे —

दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ११७ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पचहा ते पकित्तिआ। उक्कलिया मडलिआ, घण गुजा सुद्धवाया य ॥११८॥

अर्थ—पूर्ववत् विशेष–(पचहा) पांच प्रकारे बादर पर्याप्त वायुकाय कह्या छे ते आ प्रमाणे –(उक्कलिआ) उत्कलिका एटले जे रही रहीने वाय तेवो वायु १, (मडलिआ) मडलिक एटले वींटोळीओ २, (घण) रत्नप्रभादिकना आधाररूप घनवात ३, (गुजा) गुजारव करता वाय ते ४, (सुद्धवाया य) स्वाभाविक धीमे धीम वाय ते वायु ५. ११७–११८

सवट्टगवाए अ, णेगहा एवमायओ । एगविहमनाणत्ता, सुहुमा ते विआहिआ ॥ ११९ ॥

अर्थ—(सवट्टगवाए अ) तथा सवर्तकवात एटले दूर रहेला तृणादिकने पण उपाडी अमुक प्रदेशमां लावी नांखे

दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ १०८ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते पकित्तिआ । अंगारे मुम्मुरे अगणी, अच्ची जाला तहेव य ॥१०९॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के बादर पर्याप्ताना अनेक भेद आ प्रमाणे छे.—(अंगारे) धूमाडा विनाना बळता अंगारा १, (मुम्मुरे) राख मिश्रित अग्निना तणखा २, (अगणी) आ बे सिवायनो शुद्ध अग्नि ३, (अच्ची) बळता काष्ठनी साथे रहेली ज्वाळा ४, (तहेव य) तथा (जाला) तूटक थइने उंची गयेली ज्वाळा. ५. १०८–१०९.

उक्का विज्जुअ बोधव्वा, णेगहा एवमाइओ । एगविहमनाणत्ता, सुहुमा ते विआहिआ ॥ ११० ॥

अर्थ—(उक्का) आकाशमां उल्कापात थाय छे ते ६, (विज्जुअ) तथा वीजळी ७, (एवमाइओ) ए विगेरे (णेगहा) अनेक प्रकारे तेजस्कायना भेदो (बोधव्वा) जाणवा. बाकीनो अर्थ पूर्ववत् करवो. ११०.

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा । एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥ १११ ॥
संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ ११२ ॥
तिण्णेव[1] अहोरत्ता[2], उक्कोसेण विआहिआ । आउठिई उ तेऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ ११३ ॥

१ त्रण ज. २ रात्रिदिवस

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १०५ ॥

अर्थ—पूर्ववत् १०५

इच्चेते थावरा तिविहा, समासेण विआहिआ । एत्तो उ तसे तिविहे, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १०६ ॥

अर्थ—(इच्चेते) आ प्रमाणे आ (तिविहा) त्रण प्रकारना (थावरा) स्थावरो (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिआ) कह्या. (एत्तो उ) हवे पछी (तिविहे) त्रण प्रकारना (तसे) त्रसने (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (वोच्छामि) हु कहीश १०६

तेउ वाऊ अ वोधव्वा, उराला य तसा तहा । इच्चेते तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १०७ ॥

अर्थ—(तेउ) तेजस्काय, (वाऊ अ) वायुकाय, (उराला य) अने उदार एटले स्थूळ एवा द्वींद्रियादिक ते त्रणे (तसा) त्रस (बोधव्वा) जाणवा, (तहा) तथा (इच्चेते) ए रीते आ (तसा) त्रसो (तिविहा) त्रण प्रकारना छे, (तेसिं) तेमना (भेए) भेदो (मे) मारी पासे (सुणेह) सांभळो अहीं त्रस एटले गति करनार एवो अर्थ थाय छे तेमां तेज अने वायु स्थावर नामकर्मनो उदय छतां पण गमननी अपेक्षाए त्रस कहेवाय छे, अने द्वींद्रियादिक तो त्रस नामकर्मना उदयथी तथा गति करनार होवाथी त्रस कहेवाय छे १०७

तेमां प्रथम तेजस्काय कहे छे —

मुहूर्त्तनुं छे. तेमां उत्कृष्ट आयुष्य प्रत्येक शरीरवाळा पर्याप्त बादर वनस्पतिकायनुं ज होय छे, अने अपर्याप्तनुं जघन्य ज होय छे. सूक्ष्म अने साधारणनुं पर्याप्त अपर्याप्त बंनेनुं अंतर्मुहूर्त्तनुं ज होय छे. ए ज प्रमाणे पूर्वे कहेला पृथ्वीकाय अने अप्कायमां तथा आगळ कहेशे एवा तेजस्काय अने वायुकायमां पण पर्याप्त बादरने ज उत्कृष्ट आयुष्य होय एम जाणवुं. १००–१०२.

अणंतकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्नगा । कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १०३ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के पनक (सूक्ष्म) वनस्पतिकायनी उत्कृष्ट कायस्थिति अनंतकाळनी छे. ते सामान्य रीते सूक्ष्म वनस्पतिना जीवोने अथवा सूक्ष्म निगोदना जीवोने आश्रीने कही छे. विशेष विवक्षा करतां तो प्रत्येक वनस्पति अने बादर निगोद ते साधारण वनस्पति–तेनी तो उत्कृष्ट कायस्थिति सीत्तेर कोटाकोटि सागरोपमनी छे, अने जेणे व्यवहार राशिनो कोइ वखत पण स्पर्श कर्यो छे अर्थात् व्यवहार राशिमां आवी गयेल छे एवा सूक्ष्म निगोदनी कायस्थितिनुं प्रमाण असंख्यात काळनुं छे. १०३.

असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अंतरं ॥ १०४ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के—कोइ जीव वनस्पतिथी नीकळी पृथ्व्यादिकने विषे भ्रमण करी पाछो फरीथी वनस्पतिमां आवे तो उत्कृष्टथी असंख्यात काळे आवे. केमके वनस्पति सिवाय बीजा सर्वनी कायस्थिति असंख्यात काळनी ज छे, तेथी वनस्पतिकायनुं उत्कृष्ट आंतरुं असंख्यात काळनुं ज कह्युं छे. १०४.

अर्थ—(साहारणसरीरा उ) जे साधारण शरीरी छे (ते) ते (णेगहा) अनेक प्रकारनां (पकित्तिआ) कहेला छे ते आ प्रमाणे—(आलूए) आलु-पिंडालु नामनो कंद १, (मूलए चेव) मूळो २, (सिंगबेरे) शृंगबेर-आदु ३, (तहेव य) तथा वळी (हिरिली) हिरिली नामनो कंद ४, (सिरिली) सिरिली नामनो कंद ५, (सिस्सिरिली) सिस्सिरिली नामनो कंद ६, (जावईके अ) यावतीक नामनो कंद ७, (कदली) कदली नामनो कंद ८, (पलंडू) पलांडु-डुगळी ९, (लसण कंदे) लसण कंद १०, (कदली अ) कदली कंद ११, (कुहुव्वए) कुहुव्रत कंद १२, (लोहणी) लोहिनी कंद १३, (हूअ) हूत कंद १४, (थीहू अ) थीहू कंद १५, (कुहगा य) कुहक कंद १६, (तहेव य) तथा वळी (कण्हे अ) कृष्ण कंद १७, (वज्जकंदे अ) वज्र कंद १८, (कंदे सूरणए) सूरण कंद १९, (तहा) तथा (अस्सकण्णी अ) अश्वकर्णी कंद २०, (सीहकण्णी) सिंहकर्णी कंद २१, (तहेव य) तथा वळी (मुसुंढी अ) मुसंढी कंद २२, (हलिद्दा य) अने हरिद्रा कंद २३ (एवमायओ) ए विगेरे मुख्य ३२ प्रकारे तेम ज (णेगहा) अनेक प्रकारे (बोधव्वा) जाणवा ९६-९९

एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ । सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा ॥ १०० ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १०१ ॥

दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिअ भवे । वणस्सईण आउ तु, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं ॥ १०२ ॥

अर्थ—अर्थ पूर्ववत् जाणवो विशेष ए के—वनस्पतिकायनु उत्कृष्ट आयुष्य दश हजार वर्षनु अने जघन्य अंत

गुल्म ३, (लया) चंपकादिक लता ४, (वल्ली) चीभडा विगेरेना वेला ५, (तणा तहा) तथा दर्भ विगेरे तृण ६. ९४.

वलयलया पव्वगा कुहणा, जलरुहा ओसही तहा। हरिअकाया य बोधव्वा, पत्तेआ इति आहिया ॥९५॥

अर्थ—(वलयलया) नाळीयेरी, केळ विगेरे लतावलय, तेमने बीजी शाखा न होवाथी तेओ लता कहेवाय छे, अने तेमनो वलय जेवो आकार छे तेथी ते लतावलय कहेवाय छे ७, (पव्वगा) शेरडी विगेरे पर्वज–पर्वथी उत्पन्न थयेला ८, (कुहणा) छत्रने आकारे भूमिफोडा थाय छे ते कुहण कहेवाय छे ९, (जलरुहा) कमळ विगेरे जळरुह १०, (ओसही) फळपाकवाळी शाळी विगेरे ओषधि–धान्यो ११, (तहा) तथा (हरिअकाया य) तांदळीयानी भाजी विगेरे हरितकाय १२, चशब्द छे तेथी पोतपोतामां रहेला अनेक भेदो जाणवा. (इति आहिआ) आ प्रमाणे कहेला (पत्तेआ) प्रत्येकशरीरी (बोधव्वा) जाणवा. ९५.

हवे साधारणशरीरी कहे छे.—

साहारणसरीरा उ, णेगहा ते पकित्तिआ। आलूए मूलए चेव, सिंगवेरे तहेव य ॥ ९६ ॥

हिरिली सिरिली सिस्सिरिली जावईके अ कंदली। पलंडू लसण कंदे, कंदली अ कुहुव्वए ॥९७॥

लोहणी हूअ थीहू अ, कुहगा य तहेव य। कण्हे अ वज्जकंदे अ, कंदे सूरणए तहा ॥ ९८ ॥

अस्सकण्णी अ बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य। मुसुंढी अ हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ॥९९॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ९१ ॥
अर्थ—प्रथमनी जेम करवो ८६-९१
हवे वनस्पतिकाय विषे कहे छे —
दुविहा वणप्फईजीवा, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ९२ ॥
अर्थ—(वणप्फईजीवा) वनस्पतिकायना जीवो बे प्रकारना छे सूक्ष्म ने बादर ते बन्ने पाछा पर्याप्त ने अपर्याप्त एम बे बे प्रकारना छे ९२
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते विआहिआ । साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥ ९३ ॥
अर्थ—(जे उ) जे (बायरा) बादर (पज्जत्ता) पर्याप्ता छे, (त) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कहेला छे ते आ प्रमाणे —(साहारणसरीरा य) साधारण शरीरवाळा एटले अनंत जीवोनु एक ज शरीर होय ते, (तहेव य) तथा वळी (पत्तेगा य) प्रत्येक शरीर एटले एक एक जीवनु एक एक शरीर होय ते ९३
पत्तेअसरीरा उ, णेगहा ते पकित्तिआ । रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥ ९४ ॥
अर्थ—(पत्तेअसरीरा उ) तेमां जे प्रत्येक शरीरी छे, (ते) ते (णेगहा) अनेक प्रकारना (पकित्तिआ) कह्या छे ते आ प्रमाणे —(रुक्खा) आम्र विगेरे वृक्षो १, (गुच्छा य) वृन्ताक विगेरे गुच्छा २, (गुम्मा य) नवमालिका विगेरे

बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिआ । सुद्धोदए अ उस्से, हरतणू महिआहिमे ॥ ८५ ॥

अर्थ—(जे उ) जे (बायरा) बादर (पज्जत्ता) पर्याप्ता छे, (ते) ते (पंचहा) पांच प्रकारना (पकित्तिआ) कह्या छे. ते आ प्रमाणे—(सुद्धोदए अ) शुद्ध मेघनुं जळ १, (उस्से) अवश्याय—शरदऋतुमां प्रातःकाळे झाकळ पडे छे ते २, (हरतणू) हरतनु—प्रातःकाळे आर्द्र पृथ्वीमांथी नीकळी तृणना अग्रभागपर जळना बिंदुओ लागे छे ते ३, (महिआ) महिका—चोमासानी ऋतु पहेलां सूक्ष्म वृष्टि पडे छे ते के जेने धूमर कहेवामां आवे छे ४, तथा (हिमे) हिम एटले जेने ठार कहेवामां आवे छे ते ५. ८५.

एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ । सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा ॥ ८६ ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ ८७ ॥

सत्तेव सहस्साइं. वासाणुक्कोसिआ भवे । आउठिई[1] आऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ ८८ ॥

असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ । कायठिई आऊणं[2], तं कायं तु अमुंचओ ॥ ८९ ॥

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, आऊजीवाण[3] अंतरं ॥ ९० ॥

---

१ अप्कायनी उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति सात हजार वर्षनी छे. २ अप्कायनी ३ अप्कायना जीवोनुं.

अर्थ—(पुढवीजीवाण) पृथ्वीकायना जीवोने (सए काए) पोतानी काय (विजढम्मि) तज्या पछी (उक्कोस) उत्कृष्टथी (अणतकाल) असख्याता पुद्गल परावर्तनरूप अनतकाळनु अने (जहन्नग) जघन्यथी (अतोमुहुत्त) अत मुहूर्त्तनु (अतर) आंतरु होय छे तेटलो काळ अन्य जातिमां भमीने त्यारपछी पृथ्वीकायने विषे फरीथी आवे छे (जो मोक्षमां न जाय तो एम सर्वत्र जाणवु) ८२

हवे भावथी पृथ्वीकायनी प्ररूपणा करे छे —

एएसि वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥८३॥

अर्थ—(एएसिं) ते पृथ्वीकाय जीवोना (वण्णओ चेव) वर्णथी, (गधओ) गधथी, (रसफासओ) रसथी, स्पर्शथी, (वावि) तथा वळी (सठाणादेसओ) सस्थानना प्रकारथी (सहस्ससो) हजारो (विहाणाइ) भेदो छे अर्थात् वर्णादिकनी तरतमताथी असख्य भेदो थाय छे ८३

हवे अप्काय विषे कहे छे —

दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ८४ ॥

अर्थ—(आउजीवा उ) अप्कायना जीवो (दुविहा) बे प्रकारना छे सूक्ष्म तेम ज बादर अने ए बन्ने पाछा पर्याप्त अने अपर्याप्त एम बे प्रकारना छे ८४

अर्थ—पृथ्वीकायना जीवो (संतइं) संततिने–प्रवाहने (पप्प) आश्रीने (अणाईआ) अनादि (अपज्जवसिआ वि अ) तथा अनत छे. अने (ठिइं) भवस्थिति अने कायस्थितिने (पडुच्च) आश्रीने (साईआ) सादि (सपज्जवसिआ वि अ) तथा सांत छे ७९.

बावीस सहस्साइं, वासाणुक्कोसिआ भवे । आउठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं ॥ ८० ॥

अर्थ—(पुढवीण) पृथ्वीकाय जीवोनी (आउठिई) आयुष्यनी स्थिति (उक्कोसिआ) उत्कृष्टी (बावीस) बावीश (सहस्साइं) हजार (वासाण) वरसोनी (भवे) छे, अने (जहन्नगं) जघन्य (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी छे. ८०.

असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगा । कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥८१॥

अर्थ—(तं कायं तु) ते कायने (अमुंचओ) नहीं मूकता एटले फरी फरीने ते ज कायमां उत्पन्न थता एवा (पुढवीणं) पृथ्वीकायजीवोनी (कायठिई) कायस्थिति (उक्कोसं) उत्कृष्टथी (असंखकालं) असंख्यकाळ एटले लोकाकाशना जेटला असख्याता प्रदेशो छे तेटली उत्सर्पिणी अवसर्पिणीनी छे, तथा (जहन्नगा) जघन्यथी (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त काळनी छे. ८१.

काळमां अंतर्गत रहेलुं आंतरुं कहे छे.—

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, पुढवीजीवाण अंतरं ॥ ८२ ॥

चौद जाति जाणवी ७५–७६

बादर पृथ्वीकायनो विषय पूर्ण करवा पूर्वक सूक्ष्म पृथ्वीकायने कहे छे—

एते खरपुढवीए, भेआ छत्तीसमाहिआ । एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ ॥ ७७ ॥

अर्थ—(एते) आ (खरपुढवीए) खर पृथ्वीना (छत्तीस) छत्रीश (भेओ) भेदो (आहिआ) कह्या (तत्थ) ते पृथ्वीकायने विषे (सुहुमा) सूक्ष्म जीवो (एगविह) एक ज प्रकारना एटले (अनाणत्ता) नाना प्रकार रहित (विआहिआ) कह्या छे ७७

हवे क्षेत्रथी पृथ्वीकायने कहे छे—

सुहूमा य सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा । एत्तो कालविभाग तु, तेसिं वोच्छं चउव्विह ॥७८॥

अर्थ—(सुहूमा य) सूक्ष्म पृथ्वीकाय जीवो (सव्वलोगम्मि) सर्व लोकमां रहेला छे, (अ) अने (बायरा) बादर पृथ्वीकाय जीवो (लोगदेस) लोकना एक देशमा एटले रत्नप्रभादिक पृथ्वी विगेरेमां रहेला छे (एत्तो) हवे पछी (तेसिं) ते पृथ्वीकाय जीवोना (चउव्विह) चार प्रकारना (कालविभाग तु) काळना विभागने (वोच्छ) हु कहीश–कहु छु. ७८

सतइ पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइ पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ ७९ ॥

(मणिविहाणा) मणिनां नामो पण बादर पृथ्वीकायमां ज छे. ७४.

मणिना ज भेदो कहे छे—

गोमेज्जए अ रुअगे, अंके फलिहे अ लोहिअक्खे अ ।
मरगय–मसारगल्ले, भुअमोअग इंदनीले अ ॥ ७५ ॥
चंदण गेरुय हंसगब्भ–पुलए सोगंधिए अ बोधव्वे ।
चंदप्पभ वेरुलिए, जलकंते सूरकंते अ ॥ ७६ ॥

अर्थ—(गोमेज्जए अ) गोमेयक–गोमेदक नामना मणि २३, (रुअगे) रुचकमणि २४, (अंके) अंक रत्न २५, (फलिहे अ) स्फटिकरत्न २६, (लोहिअक्खे अ) लोहित नामना मणि २७, (मरगय) मरकत मणि २८, (मसारगल्ले) मसारगल्लमणि २९, (भुअमोअग) भुजमोचकमणि ३०, (इंदनीले अ) इंद्रनीलमणि ३१, (चंदण) चंदनमणि ३२, (गेरुय) गैरिकमणि ३३, (हंसगब्भ) हंसगर्भमणि ३४, (पुलए) पुलकमणि ३५, (सोगंधिए अ) सौगंधिकमणि ३६, (चंदप्पभ) चंद्रप्रभमणि ३७, (वेरुलिए) वैडूर्यमणि ३८, (जलकंते) जळकांतमणि ३९, (सूरकंते अ) सूर्यकांतमणि ४०. (बोधव्वे) आ मणिनां नाम जाणवां. अहीं मणिओनी १६ जातिमांथी कोइ पण चार जातिने बीजा मणिनी जातिमां समावेश करीने ४० ने बदले छत्रीशनी संख्या करवी. अर्थात् मणिनी अढार जाति गणावी छे तेने बदले

विहा) छत्रीश प्रकारनी छे ७२

ते ज छत्रीश प्रकार बतावे छे —

पुढवी अ सक्करा वालुगा य उवले सिला य लोणूसे।
अय–तव–तउव–सीसग–रुप्प–सुवण्णे अ वइरे अ ॥ ७३ ॥

अर्थ—(पुढवी अ) शुद्ध पृथ्वी १, (सक्करा) शर्करा–कांकरा २, (वालुगा य) वालुका–वेळु ३, (उवले) उपल गोळ आकारना पत्थर ४, (सिला य) शिला–छीपर ५, (लोण ऊसे) लवण–समुद्रादिकनु मीठु ६, ऊस–खारी माटी एटले खारो विगेरे ७, (अय) लोढु ८, (तव) तांबु ९, (तउव) त्रपु–तरवु एटले कलइ १०, (सीसग) सीसु ११, (रुप्प) रुपु १२, (सुवण्णे अ) सुवर्ण १३, (वइरे अ) वज्ररत्न एटले हीरा १४ ७३

हरिआले हिंगुलए, मणोसिला सीसगंजणपवाले।
अब्भपडलब्भवालुअ, बायरकाए मणिविहाणा ॥ ७४ ॥

अर्थ—(हरिआले) हडताल १५, (हिंगुलए) हींगळोक १६, (मणोसिला) मणशील १७, (सीसग) सीसक नामनी धातु एटले जसत १८, (अंजण) अंजन १९, (पवाले) परवाळा २०, (अब्भपडल) अभ्रपटल–अबरख २१, (अब्भवालुअ) अभ्रवालुका–अबरख मिश्र वालुका २२, (बायरकाए) बादर पृथ्वीकायना विषे आ भेदो जाणवा तथा

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते विआहिआ । सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७१॥

अर्थ—(जे उ) जेओ (बायरा) बादर (पज्जत्ता) पर्याप्त छे, (ते) तेओ (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे.—(सण्हा) श्लक्ष्ण एटले चूर्ण करेला ढेफा जेवी कोमळ पृथ्वी. ते पृथ्वीरूप जीव पण उपचारथी श्लक्ष्ण कहेवाय छे. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. (खरा य) अने बीजा कठण (बोधव्वा) जाणवा. (तहिं) तेमां (सण्हा) श्लक्ष्ण बादर पर्याप्त (सत्तविहा) सात प्रकारना छे. ७१.

ते सात प्रकार कहे छे.—

किण्हा १ नीला २ य रुहिरा ३ य, हालिद्दा ४ सुक्किला ५ तहा ।
पंडू ६ पणगमट्टीआ ७, खरा छत्तीसईविहा ॥ ७२ ॥

अर्थ—(किण्हा) काळी १, (नीला य) नीली २, (रुहिरा य) राती ३, (हालिद्दा) हारिद्रा–पीळी ४, (सुक्किला) शुक्ला–धोळी ५, (तहा) तथा (पंडू) पांडुर एटले कांइक धोळी ६, आ प्रमाणे वर्णने आश्रीने छ भेद बताव्या. तेमां पांडुर वर्ण लख्यो छे, तेथी कृष्णादिक भेदोमां पण पोतपोताना वर्णना बीजा भेदो जाणवा. तथा सातमी (पणगमट्टिआ) पनक एटले अत्यंत सूक्ष्म रज, ते रूप मृत्तिका ते पनकमृत्तिका कहेवाय छे, ते रज आकाशमां होय छे तेथी लोकमां ते पृथ्वीपणे रूढ नथी, तेथी आ भेद जूदो बताव्यो छे. ७. हवे (खरा) खर–कठण पृथ्वी (छत्तीसई-

कह्या छे ते आ प्रमाणे —(तसा य) त्रस अने (थावरा चेव) स्थावर (तहिं) तेमां (थावरा) स्थावर (तिविहा) त्रण प्रकारना छे ६८

स्थावरना त्रण प्रकार कहे छे —

पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई । इच्चेते थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ ६९ ॥

अर्थ—(पुढवी) पृथ्वीकाय, (आउजीवा य) तथा अपकायना जीव, (तहेव य) तथा वळी (वणस्सई) वनस्पतिकाय, (इचेते) ए प्रमाणे आ (थावरा) स्थावरो (तिविहा) त्रण प्रकारना छे (तेसिं) तेमना (भेए) भेदोने (मे) मारी पासे (सुणेह) तमे सांभळो अहीं तेजस्काय अने वायुकाय गतित्रस होवाथी तेमने स्थावर मध्ये गण्या नथी ६९

हवे पृथ्वीकायने कहे छे

दुविहा पुढवीजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ७० ॥

अर्थ—(पुढवीजीवा उ) पृथ्वीकाय जीवो (दुविहा) बे प्रकारना छे.—(सुहुमा) सूक्ष्मनामकर्मना उदयने लीधे सूक्ष्म, (बायरा तहा) तथा बादरनामकर्मना उदयने लीधे बादर (पुणो) तेमां पण फरीथी (पज्जत्तमपज्जत्ता) पर्याप्त अने अपर्याप्त (एव) ए प्रमाणे (एए) सूक्ष्म अने बादर ए बन्ने (दुहा) बब्ब प्रकारना छे ७०

हवे तेमना ज उत्तर भेद कहे छे

(जस्स) जे सुखनी (उवमा) उपमा ज (नत्थि उ) नथी. ६६.

फरीथी वधारे स्पष्ट करवा माटे ते सिद्धोनुं ज क्षेत्र अने स्वरूप कहे छे.—

लोएगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निआ । संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६७ ॥

अर्थ—(ते सव्वे) ते सर्वे सिद्धना जीवो (लोएगदेसे) लोकना एक देशमां रहेला छे, आ प्रमाणे कहेवाथी 'मुक्त सर्वत्र व्यापीने रह्या छे' ए मत दूर कर्यो, तथा (नाणदंसणसन्निआ) ज्ञान अने दर्शननी संज्ञावाळा छे. आम कहेवाथी 'ज्ञानना नाश थवाथी ज मोक्ष छे.' एवो कोइनो मत छे ते दूर कर्यो. तथा (संसारपारनित्थिण्णा) संसारना पारने पाम्या छे एटले फरीथी तेमने कदापि संसारमां आववानुं नथी. आम कहेवाथी "धर्मतीर्थने प्रवर्तावी मोक्षपदने पामी फरीथी तीर्थना उच्छेद वखते संसारमां आवी अधर्मनो नाश करे छे." इत्यादि मतने दूर कर्यो. तथा (सिद्धिं) सिद्धि नामनी (वरगइं) श्रेष्ठ गतिने (गया) पामेला छे. आम कहेवाथी एम जणाव्युं के कर्मनो क्षय थयो छतां पण स्वभावे करीने ज उत्पत्ति समये लोकाग्रे पहोंचे त्यांसुधी ते क्रिया सहित पण छे. ६७.

आ प्रमाणे सिद्धोनुं स्वरूप कह्युं. हवे संसारी जीवोनुं स्वरूप कहे छे.—

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते विआहिआ । तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६८॥

अर्थ—(संसारत्था उ) संसारमां रहेला (जे जीवा) जे जीवो छे, (ते) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ)

सिद्धोनी अवगाहना (भवे) होय छे अर्थात् शरीरना अवयवोना आंतरायो पुरवामां त्रीजो भाग ओछो थाय छे, तेथी ⅔ भागनी अवगाहना रहे छे ६४

ते सिद्धोनी काळथी प्ररूपणा करे छे —

एगत्तेण साईआ, अपज्जवसिआ वि अ । पुहत्तेण अणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ ॥ ६५ ॥

अर्थ—(एगत्तेण) एक एक सिद्धने आश्रीने कहीए तो ते (साईआ) सादि छे एटले जे काळे त सिद्ध थया ते काळ तेनो आदि छे. अने (अपज्जवसिआ वि अ) त्यांथी कदापि चववानु न होवाथी अपर्यवसित एटले अनत छे तथा (पुहत्तेण) बहुपणाए एटले समग्र सिद्धनी अपेक्षाए सिद्धो (अणाईआ) अनादि अने (अपज्जवसिआ वि अ) अनत छे केमके सिद्धो नहोता, नथी के नहीं हशे एवो कोइ पण काळ नथी तेथी अनादि अनत छे ६५

ते सिद्धोनु ज विशेष स्वरूप कहे छे —

अरूविणो जीवघणा, नाणदसणसन्निआ । अउल सुहसपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ ॥ ६६ ॥

अर्थ—(अरूविणो) ते सिद्धो अरूपी छे, (जीवघणा) निरतर उपयोगयुक्त होवाथी जीवरूप अने पोला भागने पूर्ण करी निचित-गाढ प्रदेशवाळा होवाथी घन छे, (नाणदसणसन्निआ) ज्ञान अने दर्शननी ज सज्ञावाळा छे एटले ज्ञान अने दर्शनना उपयोग विना तेमनु बीजु काइ पण स्वरूप नथी, (अउल सुहसपत्ता) अतुल सुखने पामेला छे, के

अर्थ—(तस्स) ते (जोअणस्स उ) योजननो (जो) जे (उवरिमो) उपरनो (कोसो) एक कोश (भवे) छे, (तस्स कोसस्स) ते कोशना (छब्भाए) छठ्ठा भागने विषे (सिद्धाण ओगाहणा) सिद्धोनी अवगाहना–स्थिति (भवे) छे. एटले ३३३ धनुष्य ने ३२ अंगुळ प्रमाण सिद्धस्थान छे. ६२.

सिद्धोनुं ज स्वरूप कहे छे.—

तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गम्मि पइट्ठिआ । भवप्पवंचउम्मुक्का. सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६३ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां एटले ते छठ्ठा भागमां (सिद्धिं) सिद्धि नामनी (वरगइं) उत्तम गतिने (गया) पामेला अने (महाभागा) महाभागवंत एवा (सिद्धा) सिद्धो (भवप्पवचउम्मुक्का) नारकादिक संसारना प्रपंचथी–विस्तारथी मुक्त थया सता (लोगग्गम्मि) लोकाग्रने विषे (पइट्ठिआ) स्थिर रहेला छे, अर्थात् हालवा चालवाना स्वभाव रहित–स्थिर रहेला छे. ६२.

हवे सिद्धोनी अवगाहना कहे छे.—

उस्सेहो जस्स जो होई, भवम्मि चरिमम्मि अ । तिभागहीणा तत्तो अ, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६४॥

अर्थ—(जस्स) जे सिद्धनो (चरिमम्मि अ) पोताना छेल्ला (भवम्मि) भवने विषे (जो) जे (उस्सेहो) उत्सेध–उंचपणु (होइ) होय छे, (तत्तो अ) तेनाथी (तिभागहीणा) त्रीजो भाग ओछी (सिद्धाण ओगाहणा)

(विआहिआ) कही छे, त्यारपछी (परिहायती) चोतरफथी अनुक्रमे हानि पामती पामती एटले पातळी थती थती (चरिमंते) छेवट अंते (मच्छिअपत्ताओ) माखीनी पांख करतां पण (तणुअतरी) अति सूक्ष्म-पातळी छे अहीं दरेक योजने अंगुल पृथक्त्वनी-बेथी नव अंगुल सुधीनी हानि जाणवी ५९

अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगछत्तसंठिया य, भणिआ जिणवरेहिं ॥ ६० ॥

अर्थ—(सा पुढवी) ते पृथ्वी (सहावेण) स्वभावथी ज (निम्मला) निर्मळ, (अज्जुणसुवण्णगमई) श्वेत सुवर्णमय, (उत्ताणगछत्तसंठिआ य) तथा चत्ता राखेल छत्रना जेवा आकारवाळी (जिणवरहिं) जिनेश्वरोए (भणिओ) कहेली छे ६०

सखंककुंदसंकासा, पंडुरा निम्मला सुभा । सीआए जोअणे तत्तो, लोअंतो उ विआहिओ ॥६१॥

अर्थ—ते पृथ्वी (सखंककुंदसंकासा) शंख, अंकरत्न अने कुंदपुष्पनी जेवी (पंडुरा) श्वेत, (निम्मला) निर्मळ अने (सुभा) शुभ छे, ते सिद्धशिला पृथ्वीनुं बीजुं नाम शीता छे (तत्तो सिआए) ते शीता पृथ्वीथी (जोअणे) उत्सेधांगुले एक योजन उपर (लोअंतो उ) लोकांत (विआहिओ) कह्यो छे ६१

ज्यारे एक योजनने छेडे लोकांत छे तो ते योजनमां सर्वत्र सिद्धो रहेला छे के नहीं ? ते उपर कहे छे —

जोअणस्स उ जो तस्स, कोसो उवरिमो भवे । तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६२॥

बारसहिं जोअणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे । ईसीपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसंठिआ ॥ ५७ ॥

अर्थ—(सव्वट्ठस्स उवरिं) सर्वार्थसिद्ध विमाननी उपर (बारसहिं) बार (जोअणेहिं) योजन जइए त्यारे (छत्तसंठिआ) छत्रना संस्थानवाळी—छत्राकार (ईसीपब्भारनामा उ) ईषत्प्राग्भार नामनी (पुढवी) पृथ्वी (भवे) छे. ५७.

पणयालसयसहस्सा, जोअणाणं तु आयया ।
तावइअं चेव विच्छिणा, तिगुणा तस्सेव परिरओ ॥ ५८ ॥

अर्थ—ते पृथ्वी (पणयालसयसहस्सा) पीस्ताळीश लाख (जोअणाणं तु) योजन (आयया) लांबी छे, (तावइअं चेव) अने तेटली ज एटले पीस्ताळीश लाख योजन (विच्छिणा) पहोळी छे, तेथी (तस्सेव) तेनो (परिरओ) परिरय-परिधि (तिगुणो) त्रण गुणो एटले त्रण गुणाथी अधिक छे. अर्थात् एक करोड बेंताळीश लाख त्रीश हजार बसो ने ओगणपचास योजन छे. ५८.

अट्ठजोअणबाहल्ला, सा मज्झम्मि विआहिआ ।
परिहायंती चरिमंते, मच्छिपत्ताओ तणुअतरी ॥ ५९ ॥

अर्थ—(सा) ते पृथ्वी (मज्झम्मि) मध्यभागे (अट्ठजोअणबाहल्ला) आठ योजन बाहल्यवाळी एटले जाडी

कहिं पडिहया सिद्धा, कहि सिद्धा पइट्ठिआ । कहिं बोंदि चइत्ता ण, कत्थ गतूण सिज्झई ॥५५॥

अर्थ—(सिद्धा) सिद्धो (कहिं) क्यां (पडिहया) स्खलना पाम्या सता ? (सिद्धा) सिद्धो (कहिं) क्यां (पइट्ठिआ) सादि अनत काळ सुधी रह्या सता ? (कहिं) क्यां (बोंदि) शरीरने (चइत्ता ण) तजीने ? तथा (कत्थ) क्यां (गतूण) जइने (सिज्झई) सिद्ध थाय छे ? ५५.

उपरना प्रश्नोनो उत्तर आपे छे —

अलोए पडिहया सिद्धा, लोअग्गे अ पइट्ठिआ । इह बोंदिं चइत्ता ण, तत्थ गतूण सिज्झई ॥५६॥

अर्थ—(सिद्धा) सिद्धो (अलोए) अलोकने विषे (पडिहया) स्खलना पाम्या सता, (लोअग्गे अ) लोकना अग्रभागने विषे (पइट्ठिआ) रह्या सता (इह) आ लोकने विषे (बोंदिं) शरीरने (चइत्ता ण) तजीने (तत्थ) ते लोकना अग्रभागने विष (गतूण) जइने (सिज्झई) सिद्ध थाय छे अलोकमां धर्मास्तिकाय विगेर नहीं होवाथी तेमां गति थइ शकती नथी तेथी लोकने छेडे रहेला छे नीचे के तिरछु गमन करवु ते कर्मने आधीन छे अने सिद्धने कर्म होता नथी तेथी उची ज गति होय छे वळी जे समये अहीं शरीरनो त्याग करे छे ते ज समये लोकना अग्रभागे पहोंचे छे, इत्यादि समजवु ५६

हवे लोकाग्रनु अने सिद्धनु स्वरूप कहे छे —

रसओ महुरे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३३॥
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३४॥
फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३५॥
फासओ गरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३६॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३७॥
फासओ सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३८॥
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३९॥
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥४०॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥४१॥
परिमंडलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि अ ॥ ४२ ॥
संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि अ ॥४३॥

अर्थ जाणी लेवो, तेमा कृष्णने बदले नील विगेरे शब्दो आवे तेनो अर्थ पण प्रसिद्ध छे, तेथी लखशु नहीं. २७

वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गधओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥२३॥
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गधओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥२४॥
वण्णओ पीअए जे उ, भइए से उ गधओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥२५॥
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गधओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥२६॥
गधओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥२७॥
गधओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥२८॥
रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥२९॥
रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥३०॥
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥३१॥
रसओ अंबिले जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि अ ॥३२॥

वैण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गंधओ। रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओऽवि अ ॥२२॥

अर्थ—(जे) जे स्कंधादिक (वण्णओ) वर्णे करीने (किण्हे) कालो (भवे) होय, (से उ) ते (गंधओ) गंधवडे (भइए) भजना करवा लायक छे एटले के कृष्णवर्णवालो कोइक स्कंधादिक सुरभिगंधवालो पण होय छे अने कोइक दुरभिगंधवालो पण होय छे. ए ज प्रमाणे (रसओ) रसथी, (फासओ चेव) स्पर्शथी अने (संठाणओऽवि अ) संस्थानथी पण (भइए) भजना करवा लायक छे, एटले के ते ज कृष्णवर्णवालो सुरभि के दुरभिगंधवालो स्कंधादिक कोइक रसवडे तिक्त होय, कोइक कटुक होय, कोइक कषायलो होय, कोइक खाटो होय अने कोइक मधुर होय. एज रीते ते ज कृष्णवर्णवालो स्कंधादिक आठमांथी कोइ पण स्पर्शवालो होय अने ए ज रीते पांच संस्थानमांथी कोइ पण संस्थानवालो होय, तेथी एक कृष्णवर्णवालो स्कंधादिक बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श अने पांच संस्थान मळी वीश प्रकारनो होय छे. ए ज रीते बीजा चारे वर्णोना वीश वीश प्रकार गणतां कुल सो भंग वर्णने आश्री थाय छे. हवे गंधने आश्रीने भंग करीए तो पांच वर्ण, पांच रस, आठ स्पर्श अने पांच संस्थान मळी २३ भंग एक सुरभि गंधना थाय, तेटला ज दुरभिगंधना थवाथी कुल ४६ थाय छे. ए ज रीते पांच रसने आश्री गणीए तो बे गंध, पांच वर्ण, आठ स्पर्श अने पांच संस्थान मळी वीश थाय अने पांचे रसना मळी कुल सो थाय छे. ए ज रीते स्पर्शने आश्री गणीए तो पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने पांच संस्थान मळी सत्तर थाय अने आठे स्पर्शना मळी १३६ थाय छे. ए ज रीते पांच संस्थानना वीश वीश भंग होवाथी तेने आश्री कुल १०० थाय छे. सर्वना भंग एकत्र करीए त्यारे कुल ४८२ थाय छे. आ गाथाना अर्थ प्रमाणे ज सर्व नीचेनी गाथाओनो

अर्थ—(फासओ) स्पर्शथी (जे उ) जे स्कधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (अट्ठहा) आठ प्रका
रना (पकित्तिआ) कह्या छे, ते आ प्रमाणे —(कक्खडा) पथ्थर विगेरे जेवा कर्कश—कठण १, (मउआ चेव) मृदु
–माखण विगेर जेवा कोमळ–पोचा २, (गरुआ) गुरु–हीरा विगेरे जेवा तोलमा भारे ३, (लहुआ) लघु–आकडाना
रु विगेरे जेवा हळवा ४, (तहा) तथा (सीआ) जळादिक जेवा शीतळ ५, (उण्हा य) अग्नि आदिक जेवा उष्ण
६, (निद्धा य) स्निग्ध–घी विगेरे जेवा चीकाशवाळा ७, (तहा) तथा (लुक्खा य) रूक्ष–राख विगेरे जेवा लूखा सूका
–कोरा ८ (आहिआ) कह्या छे (इति) आ प्रमाणे (फासपरिणया) स्पर्शथी परिणाम पामेला (एए) आ
(पुग्गला) पुद्गळो (समुदाहिआ) कहेला छे १६ २०

सठाणपरिणया जे उ, पचहा ते पकित्तिआ। परिमडला य१ वट्टा२, तसा३ चउरस४ मायया५ ॥ २१ ॥

अर्थ—(जे उ) जे स्कधादिक (सठाणपरिणया) सस्थानवडे परिणाम पाम्या होय (ते) ते (पचहा) पांच
प्रकारना (पकित्तिआ) कहेला छे, ते आ प्रमाणे–(परिमडला य) परिमडळ–वच्चे पोलु अने वलयने आकारे गोळ १,
(वट्टा) वच्चे पोलाण रहित झालरने आकारे अथवा लाडुने आकारे गोळ, २ (तसा) भृगाटकनी जेम त्रण खूणा
वाळु ३, (चउरस) पाटनी जेम चार खूणावाळु ४, तथा (आयया) आयत एटले लाकडीनी जेम लांबु, ५ २१

हवे ते स्कधादिकना वर्ण रस विगेरेनो परस्पर सबंध–मिश्रता कहे छे —

अर्थ—(गंधओ) गंधथी (जे उ) जे स्कंधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे. तेमां एक (सुब्भिगंधपरिणामा) चंदन जेवा सुरभि गंधना परिणामवाळा (तहेव य) तथा बीजा (दुब्भिगंधा) लसण जेवा दुरभि गंधना परिणामवाळा. १७.

रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिआ । तित्तकडुअकसाया, अंबिला महुरा तहा ॥१८॥

अर्थ—(रसओ) रसथी (जे उ) जे स्कंधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (पंचहा) पांच प्रकारना (पकित्तिआ) कह्या छे, ते आ प्रमाणे.—(तित्त) लींबडादिकनी जेवा तिक्त—कडवा १, (कडुअ) सुंठ विगेरेनी जेवा कटुक—तीखा २, (कसाया) बावळ विगेरेनी जेवा कषायला—तुरा ३, (अंबीला) आंबली जेवा खाटा ४, (तहा) तथा (महुरा) साकर जेवा मधुर—मीठा. ५. १८.

फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिआ ।
कक्खडा१ मउआ२ चेव, गरुआ३ लहुआ४ तहा ॥ १९ ॥
सीआ५ उण्हा६ य निध्धा७ य, तहा लुक्खा य८ आहिआ ।
इति फासपरिणाया, एए पुग्गला समुदाहिआ ॥ २० ॥

आटलु (अजीवाण य) अजीव (रूवीण) रूपी द्रव्यनु (अतर) आंतरु (विआहिअ) कहेलु छे एक क्षेत्रथी बीजा क्षेत्रमां गया पछी फरीथी ते ज प्रथमना क्षेत्रमां आवतां आटलु जघन्य अने उत्कृष्ट आंतरु पडे छे. १४

हवे भावथी स्कध अने परमाणुने कहे छे —

वण्णओ गधओ चेव, रसओ फासओ तहा । सठाणओ अ विण्णेओ, परिणामो तेसि पचहा ॥१५॥

अर्थ—(वण्णओ) वर्णथी, (गधओ चेव) गधथी, (रसओ) रसथी, (फासओ) स्पर्शथी (तहा) तथा (सठाणओ अ) सस्थानथी, आ रीते (तेसि) ते स्कध अने परमाणुनो (पचहा) पांच प्रकारनो (परिणामो) परिणाम (विण्णेओ) जाणवो पोताना स्वरूपमां रह्या थका पण जेमनो वर्णादिक बदलाइ जाय, ते परिणाम कहेवाय छे १५

हवे ते वर्णादिकना उत्तर भेदो कहे छे —

वण्णओ परिणया जे उ, पचहा ते पकित्तिआ । किण्हा नीला य लोहिआ, हालिद्दा सुक्किला तहा ॥१६॥

अर्थ—(वण्णओ) वर्णथी (जे उ) जे स्कधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (पचहा) पांच प्रकारे (पकित्तिआ) कहेला छे ते आ प्रमाणे –(किण्हा) काजळ विगेरे जेवा काळा, (नीला य) लीला घास जेवा नील, (लोहिआ) हींगळोक जेवा राता, (हालिद्दा) हळदर जवा पीळा, (सुक्किला तहा) तथा शख जेवा धोळा. १६

गधओ परिणया जे उ, दुविहा ते विआहिआ । सुब्भिगधपरिणामा, दुब्भिगधा तहेव य ॥ १७ ॥

अर्थ—(संतइं) सततिने एटले परंपराने (पप्प) आश्री (ते) ते स्कंध अने परमाणुओ (अणाई) अनादि अने (अपज्जवसिआवि अ) अपर्यवसित एटले अनंत पण छे, एटले के प्रवाहनी अपेक्षाए स्कंध अने परमाणु रहित कदापि जगत हतुं नहीं, छे नही अने थशे पण नही तथा (ठिइ) नियमित क्षेत्रमां रहेवारूप स्थितिने (पडुच्च) आश्रीने (साईआ) सादि अने (सपज्जवसिआऽवि अ) सपर्यवसित एटले सांत होय छे. कारण के स्कंधो अने परमाणुओ काळांतरे नवा नवा क्षेत्रमां जाय छे तेथी तेनी स्थिति सादिसांत छे. १२.

सादि सांत छतां पण तेमनी स्थिति केटला काळ सुधीनी होय छे ? ते कहे छे.—

असंखकालमुक्कोसं, एगं समयं जहन्नयं । अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा विआहिआ ॥१३॥

अर्थ—(अजीवाण य) अजीव (रूवीणं) रूपी द्रव्योनी (एसा) आ (उक्कोसं) उत्कृष्टी (असंखकालं) असंख्यात काळनी अने (जहन्नयं) जघन्य (एगं समयं) एक समयनी (ठिई) स्थिति (विआहिआ) कहेली छे. ते स्कंध अने परमाणुओ जघन्य एक समय पछी अने उत्कृष्ट असंख्यात काळ पछी एक क्षेत्रथी बीजा क्षेत्रमां अवश्य जाय छे. १३.

आ प्रमाणे काळने आश्री स्थिति कही. हवे तेनी अंदर रहेलुं आंतरुं कहे छे.—

अणंतकालमुक्कोसं, एगं समयं जहन्नयं । अजीवाण य रूवीणं, अंतरेअं विआहिअं ॥ १४ ॥

अर्थ—(उक्कोसं) उत्कृष्टथी (अणंतकालं) अनंत काळ अने (जहन्नयं) जघन्यथी (एगं समयं) एक समय (एअं)

अर्थ—(खधा य) स्कधो अने (परमाणुणो) परमाणुआ (एगत्तेण) एकपणाए करीने एटले व, त्रण, चार आदि परमाणुना सघातथी द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, चतु'प्रदेशिक विगेरे सरखा परिणामे करीन तथा (पुहत्तेण) पृथक्त्वे करीने एटले जूदापणाए करीने अर्थात् बीजा परमाणुओनी साथे नहीं मळवाए करीने जणाय छे. एटले के एकत्व अने पृथक्त्व ए स्कध अने परमाणुनु लक्षण छे–छुटा रहे ते परमाणु कहेवाय छे ने भेगा मळ ते स्कध कहेवाय छ हव तेने ज क्षेत्रथी कहे छे—(ते उ) त एटले स्कध अने परमाणुओ (खेत्तओ) क्षेत्रथी (लोएगदेसे) लोकना एक देशने विषे (लोए अ) अने लोकने विषे (भइअव्वा) भजनाए करीने जाणवा लायक छे अहीं सामान्य रीते कह्यु छे तो पण परमाणुओ एक एक ज आकाशप्रदेशमां रहेला होय छे तेथी स्कधने विषे ज अवगाहनानी भजना जाणवी कारण के स्कधो विचित्र परिणामवाळा होवाथी घणा प्रदेशोवडे वृद्धि पामेला होय तोपण केटलाक एक आकाशप्रदेशमां ज रहे छ, अने वधता वधता केटलाक सख्याता प्रदेशमां रहे छे, केटलाक असख्यात प्रदेशमां रहे छे, यावत् केटलाक तथाप्रकारना अचित्त महास्कधनी जेम समग्र लोकने व्यापीने पण रहे छे तेथी स्कधने आश्रीने भजना जाणवी (इत्तो) हवे एटले क्षेत्रनी प्ररूपणा कर्या पछी (तसिं) ते स्कध अने परमाणुओना (चउव्विह) चार प्रकारना (कालविभाग तु) काळ विभागने (वोच्छं) हु कहीश (आ गाथाछ छ पादवाळ छे) ११

ते ज चार प्रकार कहे छे —

सतइ पप्प तेऽणाई अपज्जवसिआवि अ । ठिइ पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआऽवि अ ॥१२॥

(साईए) सादि अने (सपज्जवसिएऽविअ) सपर्यवसित एटले सांत पण कह्यो छे. ९.

हवे तेने ज भावथी कहेवानो अवसर छे, परंतु ते अमूर्त्त होवाथी तेना पर्यायो कह्या छतां पण जाणी शकाय तेवा नथी. तेथी तेनी प्ररूपणा नहीं करतां द्रव्यथी रूपी पदार्थनी प्ररूपणा करे छे.—

खंधा य १ खंधदेसा य २, तप्पएसा ३ तहेव य । परमाणुणो अ बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥

अर्थ—(खंधा य) पुद्गलोनो उपचय-वृद्धि अने अपचय-हानिरूप जे स्तंभादिक ते स्कंध कहेवाय छे. १. (खंधदेसा य) ते ज स्तंभादिकनो बीजो, त्रीजो इत्यादि जे भाग ते स्कंधदेश कहेवाय छे, २. (तप्पएसा) ते ज स्तंभादिकना जेना बे भाग न थइ शके तेवा जे अंशो ते तत्प्रदेश एटले स्कंधप्रदेश कहेवाय छे, ३. (तहेव य) तथा (परमाणुणो अ) जेना अंश न थइ शके ते छुटा रहेला-स्कंध साथे नहीं मळेला होय ते परमाणु कहेवाय छे. ४. आ रीते (रूविणो य) रूपी पदार्थ (चउव्विहा) चार प्रकारना (बोधव्वा) जाणवा. १०.

अहीं देश अने प्रदेशनो स्कंधने विषे ज समावेश थाय छे. तेथी संक्षेप करीने स्कंध अने परमाणु ए बे ज रूपी द्रव्यना भेद कही शकाय छे. ते बन्नेनुं लक्षण कहे छे.—

**[3]एगत्तेण [4]पुहत्तेणं, [1]खंधा य [2]परमाणुणो । लोएगदेसे लोए अ, भइअव्वा [5]ते उ [6]खेत्तओ ॥
[10]इत्तो [13]कालविभागं तु, तेसिं[11] वोच्छं[14] [12]चउव्विहं ॥११॥**

धम्माधम्मे अ दोवेए, लोगमेत्ता विआहिआ । लोआलोए अ आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥

अर्थ—(धम्माधम्मे अ) धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय (दोवेए) आ बे द्रव्य (लोगमेत्ता) लोक प्रमाण (विआहिआ) कह्या छे एटले आखा लोकने व्यापीने रह्या छ (लोआलोए अ) अने लोक तथा अलोक बन्नेने व्यापीने (आगासे) आकाशास्तिकाय रहेलो छे तथा (समए) अद्धासमय (समयखेत्तिए) समयक्षेत्रिक एटले अढीद्वीप अने बे समुद्ररूप समयक्षेत्रना विषयवाळो छे अर्थात् काळद्रव्य अढीद्वीप अने बे समुद्रमा ज छे ७

हवे तेने ज काळथी कहे छे —

धम्माधम्मागासा, तिण्णि वि एए अणाइआ । अपज्जवसिआ चेव, सव्वद्ध तु विआहिआ ॥८॥

अर्थ—(धम्माधम्मागासा) धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय (एए तिण्णि वि) आ त्रणे (अणाइआ) अनादि (अपज्जवसिआ चेव) तेमज अपर्यवसित एटले अनत छे अने ते (सव्वद्ध तु) सर्वकाळे पोतानु स्वरूप त्याग नहीं करवाथी नित्य छे एम (विआहिआ) कह्यु छे ८

समएऽवि सतइ पप्प, एवमेव विआहिए । आएस पप्प साईए, सपज्जवसिएऽविअ ॥ ९ ॥

अर्थ—(समएऽवि) समय पण (सतइ) प्रवाहरूप सततिने (पप्प) आश्रीने (एवमेव) ए ज प्रमाणे एटले अनादि अनत ज (विआहिए) कह्यो छे, अने (आएस) आदेशने एटले नियमित व्यक्तिरूप विशेषने (पप्प) आश्रीने

सहायक एवो जे अस्तिकाय-प्रदेशसमूह ते धर्मास्तिकाय कहेवाय छे. १. (तद्देसे) ते धर्मास्तिकायनो देश एटले त्रीजो, चोथो विगेरे भाग ते धर्मास्तिकाय देश. २. अने (तप्पएसे अ) ते धर्मास्तिकायनो प्रदेश एटले जेनो विभाग न थाय एवो भाग ते धर्मास्तिकाय प्रदेश (आहिए) कह्यो छे. ३. (अधम्मे) जीव अने पुद्गळोने गतिना परिणामने विषे धारण न करे अर्थात् स्थितिमां सहाय आपे ते अधर्म कहेवाय छे, ते अधर्मरूपी जे अस्तिकाय ते अधर्मास्तिकाय कहेवाय छे. ४. (तस्स देसे अ) ते अधर्मास्तिकायनो देश. ५. अने (तप्पएसे अ) ते अधर्मास्तिकायनो प्रदेश-एम तेना त्रण भेद (आहिए) कह्या छे. ६. ५.

आगासे तस्स देसे अ. तप्पएसे अ आहिए। अध्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥

अर्थ—(आगासे) 'आ' एटले पोताना स्वरूपनो त्याग नहीं करवारूप मर्यादाए करीने पदार्थो जेने विषे 'काशन्ते' एटले भासे छे ते आकाश कहेवाय छे, ते रूपी जे अस्तिकाय-प्रदेशसमूह ते आकाशास्तिकाय अर्थात् जीव अने पुद्गळने अवकाश आपे ते. ७. अने (तस्स देसे अ) ते आकाशास्तिकायनो अमुक विभाग ते देश. ८. तथा (तप्पएसे अ) ते आकाशास्तिकायनो निर्विभाग भाग ते प्रदेश (आहिए) कह्यो छे. ९. तथा (अद्धा समए चेव) काळरूप जे समय ते अद्धासमय कहेवाय छे. १०. समयनो निर्विभाग भाग होइ शकतो नथी तेथी तेना देश अने प्रदेशनो संभव नथी. परंतु आवलिका विगेरे जे काळना भेदो छे ते मात्र व्यवहारथी ज कहेवाय छे, तेथी तेनी अही विवक्षा करी नथी. आ प्रमाणे (अरूवी) अरूपी पदार्थ (दसहा भवे) दश प्रकारना छे. ६. हवे ते द्रव्योने क्षेत्रथी कहे छे.—

जीव अने अजीवनी प्ररूपणा करवाथी ज तेमनो विभाग थइ शक छे, तेथी तेमनी प्ररूपणान ज कहे छे —

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । परूवणा तेसिं भवे, जीवाण अजीवाण य ॥३॥

अर्थ—(तेसि) ते (जीवाण) जीवोनी (अजीवाण य) अने अजीवोनी (परूवणा) प्ररूपणा (दव्वओ) द्रव्यथी, (खेत्तओ चेव) क्षेत्रथी, (कालओ) काळथी (तहा) तथा (भावओ) भावथी (भवे) थाय छे ३

तेमां प्रथम थोडु कहेवानु होवाथी द्रव्यथी अजीवनी प्ररूपणा करे छे —

रूविणो चेवऽरूवी अ अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणोऽवि चउव्विहा ॥४॥

अर्थ—(रुविणा) रूपी (चेव) तथा (अरूवी अ) अरूपी ए रीते (अजीवा) अजीव (दुविहा) बे प्रकारना (भव) छे तेमां (अरूवी) अरूपी (दसहा) दश प्रकारना (वुत्ता) कह्या छ, (रूविणोऽवि) अने वळी रूपी (चउव्विहा) चार प्रकारना कह्या छे अहीं पण थोडु कहेवानु होवाथी अरूपीना भेद प्रथम बताव्या छे ४

अरूपीना दश भेदो कहे छे —

धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे अ आहिए । अधम्मे तस्स देसे अ, तप्पएसे अ आहिए ॥५॥

अर्थ—(धम्मत्थिकाए) गतिना परिणामवाळा जीव अने पुद्गळोने तेवा स्वभावे करीने धारी राखे एटले गतिमां सहाय आपे ते धर्म कहेवाय छे अस्ति एटले प्रदेशो, तेनो ज काय एटले समूह त अस्तिकाय कहेवाय छे धर्म एटले गति

अथ जीवाजीव विभक्ति नामनुं छत्रीशमुं अध्ययन. ३६.

पांत्रीशमा अध्ययनमां साधुना गुण कह्या. ते गुणो जीव अने अजीवनुं स्वरूप जाणवाथी ज सेवी शकाय छे, तेथी आ अध्ययनमां जीवाजीवनुं स्वरूप कहे छे.—

जीवाजीवविभत्तिं, सुणेह मे एगमणा इओ । जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे ॥१॥

अर्थ—(इओ) हवे हे शिष्यो ! (एगमणा) तमे एकाग्र मनवाळा सता (मे) मारी पासे (जीवाजीवविभत्तिं) जीव अने अजीवना विभागने (सुणेह) सांभळो, के (जं) जे विभागने (जाणिऊण) जाणीने (भिक्खू) साधु (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (संजमे) संयमने विषे (जयइ) यत्न करे छे-करी शके छे. १.

जीवाजीव विभागना प्रसंगने लीधे ज प्रथम लोकालोकना विभागने कहे छे.—

जीवा चेव अजीवा य, एस लोए विआहिए । अजीवदेसे आगासे, अलोए से विआहिए ॥२॥

अर्थ—(जीवा चेव) जीव अने (अजीवा य) अजीव (एस) ए (लोए) लोक (विआहिए) तीर्थंकरादिके कह्यो छे. तथा (अजीवदेसे) धर्मास्तिकायादिक अजीवनो देश एटले अंशरूप जे एक मात्र (आगासे) आकाश, (से) ते (अलोए) अलोक (विआहिए) कह्यो छे. अर्थात् धर्मास्तिकायादिक रहित एवुं जे आकाश ते ज अलोक छे. अर्थात् अलोकमां मात्र आकाश ज छे.

(पज्जओ) पर्याय आवे त्या सुधी एटले जावज्जीव (विहरज्जा) अप्रतिबद्ध विहार करे १९

त्यारपछी अतकाळे शु करीने शु पामे ? ते कहे छे —

निज्जूहिऊण आहार, कालधम्मे उवट्ठिए । जहिऊण माणुस बोंदिं, पभू दुक्खे विमुच्चइ ॥२०॥

अर्थ—(कालधम्मे) आयुष्यना क्षयरूप काळधर्म–मरण समय (उवट्ठिए) प्राप्त थये सते (आहार) सलेखनादिकना अनुक्रमे चतुर्विध आहारनो (निज्जूहिऊण) त्याग करी (माणुस बोंदिं) आ मनुष्य सबधी शरीरने (जहिऊण) तजीने (पभू) विशेष सामर्थ्यवाळो सतो (दुक्खे विमुच्चइ) सर्व दु खथी मूकाय छे २०

केवो सतो दु खथी मूकाय छे ? ते कहे छे —

निम्ममे निरहकारे, वीयरागे अणासवे । सपत्ते केवल नाण, सासय परिनिव्वुडे ॥ त्ति बेमि ॥२१॥

अर्थ—(निम्ममे) ममता रहित, (निरहकारे) अहकार रहित, (वीअरागे) राग रहित, उपलक्षणथी द्वेष रहित, (अणासवे) आश्रव रहित थयो सतो तथा (सासय) शाश्वता (केवल नाण) केवळज्ञानने (सपत्ते) पाम्यो सतो (परिनिव्वुडे) सर्वथा प्रकारे स्वस्थ थाय छे अर्थात् सिद्धिस्थानने पामे छे (त्ति बेमि) एम हु कहु छु ए प्रमाणे सुधर्मा स्वामीए जबूस्वामीने कह्यु २१

इति पञ्चत्रिंशमध्ययनम् ३५

अर्थ—(अलोले) रसवाळो आहार मळ्यो होय तोपण तेमां लोलता–चपळता रहित, (रसे) प्राप्त न थयेला रसना विषयमां (न गिद्धे) गृद्धि रहित, (जिब्भादंते) जिव्हा इंद्रियने दमन करनार अने (अमुच्छिए) आहारने राखी मूकवारूप सांनिधि नहीं करवाथी मूर्छा रहित एवो (महागुणी) महामुनि (रसट्ठाए) रसने माटे एटले शरीरनी धातु पुष्ट करवा माटे (न भुंजिज्जा) न जमे. परतु (जवणट्ठाए) यापनाने माटे एटले संयमना निर्वाहने माटे ज आहार करे. १७.

अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूअणं तहा । इड्ढीसक्कारसम्माणं, मणसाऽवि न पत्थए ॥ १८ ॥

अर्थ—वळी मुनि श्रावकथी कराती (अच्चणं) पुष्पादिकनी पूजा, (रयणं चेव) आसनादिकनी रचना, (वंदणं) शरीरथी वंदना, (पूअणं) वस्त्रादिकवडे पूजा, (तहा) तथा (इड्ढीसक्कारसम्माणं) ऋद्धि–श्रावकरूपी संपदा अथवा वस्त्र, पात्रादिक संपदा, सत्कार–गुणकीर्तनरूप सत्कार अने अभ्युत्थानादिक सन्मान, ए सर्वने (मणसाऽवि) मनवडे पण (न पत्थए) प्रार्थना न करे–इच्छे नहीं. १८.

त्यारे शुं करे ? ते कहे छे.—

सुक्कं झाणं झिआएज्जा, अनिआणे अकिंचणे । वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

अर्थ—(सुक्कं झाण) शुक्ल ध्यानने (झिआएज्जा) ध्यावे, तथा (अनिआणे) नियाणा रहित, (अकिंचणे) परिग्रह रहित अने (वोसट्ठकाए) शरीरपर पण ममता रहित एवो सतो साधु (जाव) ज्यां सुधी (कालस) मरणनो

त्यारे शु करवु ? ते कहे छे

भिंक्खिअव्व नें केअव्व, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा । कयविक्कओ महाँदोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥

अर्थ—(भिक्खवत्तिणा) भिक्षानी वृत्तिवाळा भिक्षाथी आजीविकावाळा (भिक्खुणा) साधुए (भिक्खिअव्व) भिक्षा मागवी, परतु (न केअव्व) खरीद करवु नहीं, अने उपलक्षणथी वेचवु पण नहीं कारण के (कयविक्कओ) क्रय विक्रय करवामा (महादोसो) मोटो दोष छे अने (भिक्खावित्ती) भिक्षावृत्ति (सुहावहा) सुखकारक छे १५

भिक्षा मागवानु एक ज कुळमां पण होइ शके तेथी कहे छे के—

समुंआण उर्छमेसिज्जा, जहासुत्तमणिंदिअं । लाभालाभम्मि संतुट्ठे, पिंडवायं चरे मुणी ॥ १६ ॥

अर्थ—(मुणी) साधु (जहासुत्त) शास्त्रमा कह्या प्रमाणे (अणिंदिअ) निंदा रहित-निर्दोष अने (उछ) उछना जेवी उछ एटले जूदा जूदा घरथी थोडु थोडु लेवारूप (समुआण) भिक्षानी (एसिज्जा) गवेषणा करे तथा (लाभा लाभम्मि) भिक्षाना लाभमा के अलाभमां पण (सतुट्ठे) सतोषवाळो सतो (पिंडवाय) जेमां पात्रने विषे पिंडनु पडवु थाय छे एवा पिंडपातने एटले भिक्षाटनने (चरे) सेव करे १६

आ रीते पिंडने पामीने शी रीते आहार करे ? ते कहे छे —

अलोले नं रसे गिद्धे, जिब्भादंते अमुच्छिए । नं रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुंणी ॥ १७ ॥

णिविणासणे) घणा जीवोनो विनाश करनारुं (जोइसमे) अग्निना जेवुं बीजु कोइ पण (सत्थे) शस्त्र (नत्थि) नथी. (तम्हा) तेथी करीने (जोइं) अग्निने (न दीवए) साधु सळगावे नहीं. १२

अहीं कोइने शंका थाय के-" रांधवा अने रंधाववामां जीववध थाय छे, परंतु क्रयविक्रय करवामां जीववध नथी, माटे क्रयविक्रयवडे ज साधुए निर्वाह करवो योग्य छे. " आवी शंकावाळाने उत्तर आपे छे—

हिरण्णं जायरूवं च, मणसाऽवि न पत्थए। समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥ १३ ॥

अर्थ—(समलेट्ठुकंचणे) कोइ पण ठेकाणे प्रतिबंध नहीं होवाथी समान छे लेष्टु-पथ्थर अने कांचन-सुवर्ण जेने एवा (भिक्खू) साधु (कयविक्कए) क्रयविक्रयने विषे-क्रयविक्रयथी (विरए) विरम्या छे--तेनाथी निवृत्त थया छे, तेथी (हिरण्णं) सुवर्ण, (जायरूवं च) रूपुं अने चशब्दथी समग्र धन धान्यादिकने (मणसाऽवि) मनवडे पण (न पत्थए) प्रार्थना न करे--इच्छे नहीं. १३.

किणंतो कइओ होइ, विकिणंतो अ वाणिओ। कयविक्कयम्मि वट्टंतो, भिक्खू हवइ न तारिसो ॥१४॥

अर्थ—कारण के साधु (किणंतो) खरीद करतो सतो (कइओ होइ) अन्य मनुष्योनी जेम खरीद करनारो थाय छे, अने (विकिणंतो अ) वेचतो सतो (वाणिओ) वणिक एटले वेपारी थाय छे, तेथी करीने (कयविक्कयम्मि) क्रयविक्रयने विषे (वट्टंतो) प्रवर्ततो (भिक्खू) साधु (तारिसो न हवइ) जेवो शास्त्रमां कह्यो छे तेवो थइ शकतो नथी. १४.

य) बादर जीवोनो वध थाय छे, तेथी (संजओ) साधु (गिहकम्मसमारंभ) गृहकर्मना समारंभने (परिवज्जए) वर्जे ९

तहेव भत्तपाणेसु, पयणपयावणेसु अ । पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ॥ १० ॥

अर्थ—(तहेव) तेमज वळी (भत्तपाणेसु) भातपाणीने विषे (पयणपयावणेसु अ) रांधवा के रंधाववामां पण जीववध जोवामां आवे छे, तेथी (पाणभूयदयट्ठाए) प्राण एटले त्रसजीवो अने भूत एटले पृथिव्यादिक स्थावर जीवोनी दयाने अर्थे (न पए) साधु रांधे नहीं तथा (न पयावए) रंधावे पण नहीं १०.

ए ज हकिकत स्पष्ट रीते कहे छे—

जलधन्ननिस्सिआ पाणा, पुढविकट्ठनिस्सिआ । हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥

अर्थ—(भत्तपाणेसु) भातपाणी रंधाते सते (जलधन्ननिस्सिआ) जळ अने धान्यमां निश्रित थयेला एटले तेमां ज उत्पन्न थयेला अने अन्य स्थळे उत्पन्न थइ तेनी निश्राए रहेला एवा तथा (पुढविकट्ठनिस्सिआ) पृथ्वी अने काष्ठनी निश्राए रहेला एवा (पाणा) जीवो (हम्मंति) हणाय छे, (तम्हा) तथी करीने (भिक्खू) साधु (न पयावए) रंधावे पण नहीं, तो पछी रांधे तो केम ? उपलक्षणथी अनुमोदना पण न करे ११

विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणविणासणे । नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइ न दीवए ॥ १२ ॥

अर्थ—(विसप्पे) अल्प छतां पण बहु व्यापवाना स्वभाववाळु, (सव्वओ धारे) चोतरफ धारवाळु अने (बहुपा-

(तत्थ) ते उपर कहेला सशानादिकने विषे (परमसंजए) मोक्षने माटे संयमने धारण करनारा (भिक्खू) साधु (वासं) निवासने (संकप्पए) करे. उपरना श्लोकमां 'तेवा स्थानने विषे साधु निवासने पसंद करे.' एम कह्युं हतुं, तेथी कोइक मात्र रुचि ज करे पण रहे नहीं, तेटला माटे आ श्लोकमां रहेवानुं कह्युं. ७.

अहीं कोइ शंका करे के—" बीजाए पोताने माटे करेला स्थानमां साधुए रहेवानुं पसंद करवुं." एम शा माटे कह्युं? ते उपर कहे छे.—

न सयं गिहाइँ कुव्विज्जा, नेव अन्नेहिं कारए । गिहकम्मसमारंभे, भूआणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥

अर्थ—साधु (सयं) पोते (गिहाइं) गृहादिक (न कुव्विज्जा) करे नहीं, तथा (अन्नेहिं) बीजा पासे गृहादिक (नेव कारए) करावे नहीं, तथा उपलक्षणथी गृहादिक करता एवा अन्यने अनुमोदे नहीं. कारण के (गिहकम्मसमारंभे) गृहकार्यना आरंभमां एटले माटी, इंट विगेरे लाववा–करवामां (भूआणं) अनेक प्राणीओनो (वहो) वध (दिस्सए) देखाय छे. ८. कया प्राणीओनो वध थाय छे? ते कहे छे.—

तसाणं थावराणं च, सुहुमाणं बायराण य । गिहकम्मसमारंभं, संजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥

अर्थ—गृहादिकना आरंभ करवामां (तसाणं) त्रस, (थावराणं च) स्थावर, (सुहुमाणं) सूक्ष्म[1] अने (बायराण

---

१ आ सूक्ष्म एकेंद्रिय न समजवा. केमके तेनी विराधना थइ शकती नथी.

आवो उपदेश आपवानु कारण कहे छे —

इंदिआणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए । दुक्कराइ निवारेउ, कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥

अर्थ—(उ) कारण के (तारिसम्मि) तेवा प्रकारना (कामरागविवड्ढणे) कामरागनी वृद्धि करनारा (उवस्सए) उपाश्रयमा वसवाथी (भिक्खुस्स) साधुने (इंदिआणि) पोतपोताना विषयमां प्रवर्तती इंद्रियोने (निवारेउ) निवारवाने (दुक्कराइ) दुष्कर थइ पडे छे ५

त्यारे क्यां-केवा स्थानमां रहेवु ? ते कहे छे —

सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले वा एगगो । पइरिक्के परकडे वा, वास तत्थाभिरोयए ॥ ६ ॥

अर्थ—(सुसाणे) समशानमां, (सुन्नगारे वा) शून्य घरमां, (रुक्खमूले वा) वृक्षनी नीचे, अथवा (परकडे वा) बीजाए एटले गृहस्थीए पोताने माटे करेला अने (पइरिक्के) प्रतिरिक्त एटले स्त्री आदिकथी रहित (तत्थ) तेवा स्थानमां साधु (एगगो) एकला एटले कोइनी सहाय विना (वास) निवासने (अभिरोअए) पसद करे ६.

फासुअम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए । तत्थ संकप्पए वास, भिक्खू परमसजए ॥ ७ ॥

अर्थ—(फासुअम्मि) प्रासुक एटले अचित्त पृथ्वीवाळा, (अणाबाहे) कोइनी बाधा-पीडा जेमां न होय एवा अने (इत्थीहिं) स्त्रीओ तथा उपलक्षणथी पडकादिक वडे (अणभिद्दुए) उपद्रव नहीं पामेला एटले दोष नहीं पामेला एवा

गिहवासं परिच्चेज्ज, पव्वज्जं अस्सिए मुणी । इमे संगे विआणेज्जा, जेहिं सज्जंति माणवा ॥ २ ॥

अर्थ—(गिहवासं) गृहवासनो (परिच्चज) त्याग करीने (पव्वज्जं) प्रव्रज्याने (अस्सिए) आश्रित थयेलो (मुणी) साधु (जेहिं) जेनावडे (माणवा) मनुष्यो (सज्जंति) आसक्त थाय छे, एवा (इमे) आ (संगे) पुत्र, स्त्री विगेरे संगोने (विआणेज्जा) जाणे एटले के आ स्त्री, पुत्र विगेरे भवना हेतु छे एम विशेषे करीने जाणे अने जाणीने ज्ञाननुं फळ विरति होवाथी प्रत्याख्यान करे–तेनो त्याग करे. २.

तहेव हिंसं अलिअं, चोज्जं अब्बंभसेवणं । इच्छाकामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥

अर्थ—(तहेव) तथा (हिंसं) जीवहिंसाने, (अलिअ) मृषावादने, (चोज्जं) चोरीने, (अब्बंभसेवणं) मैथुनना सेवनने, (इच्छाकामं च) इच्छारूप कामने एटले अप्राप्त वस्तुना अभिलापने अने (लोभं च) लोभने एटले प्राप्त थयेली वस्तुपरनी गृद्धिने अर्थात् आ बे शब्दवडे परिग्रह कह्यो छे तेथी तेने (संजओ) साधु (परिवज्जए) वर्जे. ३.

मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासिअं । सकवाडं पंडुरुल्लोअं, मणसाऽवि न पत्थए ॥ ४ ॥

अर्थ—(मणोहरं) मनोहर, (मल्लधूवेण) माल्य एटले पुष्पनी माळा अने दशांगादिक धूपवडे (वासिअं) वासित, (सकवाडं) कमाड सहित तथा (पंडुरुल्लोअं) उज्वळ उल्लोचवाळा तथा (चित्तघर) चित्रवाळा घरने साधु (मणसाऽवि) मनवडे पण (न पत्थए) प्रार्थना न करे–न इच्छे, तो पछी वचनवडे तो प्रार्थना न ज करे, तेम ज तेमां रहे पण नहीं. ४.

अर्थ—(तम्हा) तेथी करीने (एआण लेसाण) आ लेश्याओना (अणुभावे) अनुभावने–प्रभावने (विआणिआ) जाणीने तेमांथी (अप्पसत्था उ) अप्रशस्त लेश्याओने (वज्जित्ता) वर्जीने (पसत्था उ) प्रशस्त लेश्याने (अहिट्ठिज्जासि) अंगीकार करवी (त्ति बेमि) एम हु कहु छु ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्यु ६१

॥ इति चतुस्त्रिंशत्तममध्ययनम् ॥ ३४

अथ अनगारमार्गगति नामनु पात्रीशमु अध्ययन ३५

गया अध्ययनमां अप्रशस्त लेश्यानो त्याग करी प्रशस्त लेश्या स्वीकारवानु कह्यु, ते गुणवान साधु ज करी शके छे, तेथी आ अध्ययनमा साधुना गुणोने कहे छे —

सुणेह मेगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहिं देसिअं । जमायरंतो भिक्खू, दुक्खाणंतकरो भवे ॥ १ ॥

अर्थ—हे शिष्यो! (बुद्धेहिं) तीर्थंकरादिक पंडितोए (देसिअं) कहेला (मग्ग) मुक्तिमार्गने (मेगग्गमणा) मारी पासेथी एकाग्रचित्तवाळा थइने (सुणेह) तमे सांभळो (ज) के जेने (आयरतो) आचरतो–सेवतो (भिक्खू) साधु (दुक्खाण) कर्मना क्षयथी दुःखोनो (अंतकरो) अंत करनार (भवे) थाय छे ॰

वाओ) उत्पत्ति (न हु होइ) थती नथी. ५८.

लेसाहिं सव्वाहिं, चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु। न हु कस्स वि उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के (चरमे समयम्मि) ते लेश्यानो छेल्ला समये पण उत्पत्ति थती नथी एम जाणवुं. ५९.

त्यारे शी रीते छे ? ते कहे छे.

अंतमुहुत्तम्मि गए, अंतमुहुत्तम्मि सेसए चेव। लेसाहिं परिणयाहिं. जीवा गच्छंति परलोगं ॥६०॥

अर्थ—(परिणयाहिं) परिणमेली (लेसाहिं) लेश्यावडे युक्त एवा (जीवा) जीवो (अंतमुहुत्तम्मि गए) अंतर्मुहूर्त गये सते (चेव) तथा (अंतमुहुत्तम्मि) अंतर्मुहूर्त (सेसए) बाकी रहे सते (परलोगं) परलोकमां (गच्छंति) जाय छे. अर्थात् तिर्यंच अने मनुष्यने पोतानुं आयुष्य अंतर्मुहूर्त बाकी रहे त्यारे परभवनी लेश्यानो परिणाम थाय छे एम सिद्ध थयुं एटले तिर्यंच अने मनुष्य आवता भवनी लेश्यानो अंतर्मुहूर्त गये सते परलोकमां जाय छे अने देव तथा नारकी पोताना भवनी लेश्यानो अंतर्मुहूर्त बाकी रहे सते ते लेश्या सहित परलोकमां जाय छे. ६०.

हवे आ अध्ययनने समाप्त करवापूर्वक उपदेश आपे छे.—

तम्हा एआण लेसाणं, अणुभावे विआणिआ।
अप्पसत्था उ वज्जित्ता, पसत्था अहिट्ठिज्जासि त्ति बेमि ॥ ६१ ॥

किण्हा नीला काऊ, तिण्णि वि एआ उ अहमलेसाओ। एआहि तिहिं वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५६॥

अर्थ—(किण्हा) कृष्ण, (नीला) नील अने (काऊ) कापोत (एआ उ) आ (तिण्णि वि) त्रणे पण (अहमलेसाओ) अधम-अप्रशस्त लेश्याओ छे (एआहिं) आ (तिहिं वि) त्रणे वडे (जीवो) जीव (दुग्गइ) दुर्गतिने (उववज्जइ) पामे छे ५६

तेऊ पम्हा सुक्का, तिण्णि वि एआ उ धम्मलेसाओ। एआहि तिहिं वि जीवो, सुग्गइ उववज्जइ ॥५७॥

अर्थ—(तेऊ) तेजस (पम्हा) पद्म अने (सुक्का) शुक्ल (एआ उ) आ (तिण्णि वि) त्रणे पण (धम्मलेसाओ) धर्म-प्रशस्त लेश्याओ छे (एआहिं तिहिं वि) आ त्रणे वडे (जीवा) जीव (सुग्गइ) सुगतिने (उववज्जइ) पामे छे ५७

हवे आयुष्य द्वारनो अवसर छे तेमां अवश्य जीव जे लेश्यामां आगामी भवे उत्पन्न थवानो होय ते ज लेश्यावाळो आ भवमां मरे छे तेमा जन्मांतरमा जे लेश्या थवानी होय ते लेश्याना पहेला समये परभवना आयुष्यनो उदय थाय छे? के चरम-छेल्ला समये थाय छे? के अन्यथा प्रकारे छे? ए शंकाने दूर करवा माटे कहे छे

लेसाहि सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहि तु। न हु कस्स वि उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५८॥

अर्थ—(परिणयाहिं तु) परिणमेली एटले आत्मस्वरूपे उत्पन्न थयेली (सव्वाहिं) सर्वे कोइ (लेसाहिं) लेश्यावडे युक्त एवा (कस्स वि) कोइ पण (जीवस्स) जीवनी (पढमे समयम्मि) पहला समये (परे भवे) परभवने विषे (उव

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिआ।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहिआइं उक्कोसा ॥ ५४ ॥

अर्थ—(खलु) निश्चे (तेऊए) तेजो लेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति कही छे, (सा उ) ते ज (समयमब्भहिआ) एक समय अधिक (जहन्नेणं) जघन्ये करीने (पम्हाए) पद्मलेश्यानी स्थिति जाणवी. अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (मुहुत्ताहिआइं) पूर्वोत्तर भवनी अपेक्षाए बे अंतर्मुहूर्त अधिक एवा (दस उ) दश सागरोपमनी जाणवी. ५४. आ जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति तेटला आयुष्यवाळा देवोने समजवी.

जा पम्हाई ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिआ।
जहन्नेण सुक्काए, तित्तीसं मुहुत्तमब्भहिआ ॥ ५५ ॥

अर्थ—(खलु) निश्चे (पम्हाई) पद्मलेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति कही छे, (सा उ) ते ज (समयमब्भहिआ) एक समय अधिक (जहन्नेण) जघन्ये करीने (सुक्काए) शुक्ललेश्यानी स्थिति छे. तथा तेनी उत्कृष्ट स्थिति (मुहुत्तमब्भहिआ) बे अंतर्मुहूर्त अधिक (तित्तीस) तेत्रीश सागरोपमनी छे. आनी जघन्य स्थिति लांतकमां अने उत्कृष्ट स्थिति अनुत्तर विमानमां छे ५५.

स्थितिद्वार पूर्ण थयुं. हवे लेश्यानुं गतिद्वार कहे छे—

पॅलिओवम जहन्नॉ, उॅक्कोसा सॉगरा उ दुॅवणहिआ । पॅलिअमसखिज्जेण, होई भागेण तेऊए ॥५२॥

अर्थ—(तेऊए) तेजोलेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (पलिओवम) एक पल्योपमनी छे, अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (पलिअमसखिज्जेण) पल्योपमना असख्यातमा (भागेण) भागे करी (अहिआ) अधिक एवा (दुण सागरा उ) बे सागरोपमनी (होई) छे आ स्थिति वैमानिकने आश्रीने ज जाणवी तेमां जघन्य स्थिति सौधर्ममां अने उत्कृष्ट स्थिति ईशान देवलोकमां छे उपलक्षणथी भवनपति अने व्यतरनी तेजोलेश्यानी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी, व्यतरनी उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमनी अने भवनपतिनी उत्कृष्ट स्थिति कांइक अधिक सागरोपमनी जाणवी ज्योतिषीनी जघन्य स्थिति पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट स्थिति लाख वर्ष अधिक एक पल्योपमनी जाणवी ५२

दसवाससहस्साइ, तेऊइ ठिई जहन्निआ होइ । दुण्णुदही पलिओवम–असखभाग च उक्कोसा ॥५३॥

अर्थ—(दसवाससहस्साइ) दश हजार वर्ष प्रमाण (तेऊइ) तेजोलेश्यानी (जहन्निआ ठिई) जघन्य स्थिति (होइ) छे (च) अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (दुण्णुदही) बे सागरोपम उपर (पलिओवमअसखभाग) पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे अहीं प्रकरणने अनुसरीने तो जे कापोतलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति होय ते ज एक समय अधिक तेजोलेश्यानी जघन्य स्थिति होवी जोइए परतु अहीं तेम कहेल नथी तेनु कारण ज्ञानीगम्य छे ५३ आटली स्थिति कया देवोने होय ते उपरनी गाथाना अर्थमां कहेल छे

(आउ) निश्चे कही छे.

तेज एटले पल्योपमनो असंख्यातमो भाग (समयमब्भहिआ) एक समय अधिक (नीलाए) नीललेश्यानी (जहणेणं) जघन्य स्थिति जाणवी. तथा (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (पलिअमसंखेज्ज) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग जाणवी. आ पल्योपमनो असंख्यातमो भाग पूर्वना करतां मोटो जाणवो. ते पण भवनपति ने व्यंतरमां ज जाणवी. ४९.

जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा उ समयमब्भहिआ ।
जइन्नेणं काऊए, पलिअमसंखं च उक्कोसा ॥ ५० ॥

अर्थ—(नीलाए) नील लेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा उ) उत्कृष्ट (ठिई खलु) स्थिति निश्चे कही छे. ते (समयमब्भहिआ) एक समय अधिक एवी (जहन्नेणं) जघन्ये करीने (काऊए) कापोत लेश्यानी स्थिति छे. (च) अने तेनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (पलिअमसंखं) पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण जाणवी. अहीं पण पूर्वना पल्योपमना असंख्यातमा भाग करतां आ असंख्यातमो भाग मोटो जाणवो. ते पण भवनपतिने व्यंतरमां ज जाणवी. ५०.

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाणं । भवणवइवाणमंतर—जोइसवेमाणिआणं च ॥५१॥

अर्थ—(तेण परं) त्यारपछी–हवे (भवणवइ) भवनपति, (वाणमंतर) वाणव्यंतर, (जोइस) ज्योतिषी (वेमाणिआणं च) अने वैमानिक (सुरगणाणं) देवसमूहनी (जहा) जे प्रकारे (तेऊलेसा) तेजोलेश्या छे ते प्रकारे (वोच्छामि) हुं कहीश–कहुं छुं. ५१.

एसा तिरिअनराण, लेसाण ठिई उ वणिआ होई ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाण ॥ ४७ ॥

अर्थ—(एसा) आ (तिरिअनराण) तिर्यंच मनुष्यनी (लेसाण ठिई उ) लेश्यानी स्थिति (वणिआ होई) वर्णन करेली छे, (तेण परं) त्यारपछी-हव (देवाण) देवोनी (लेसाण ठिई उ) लेश्यानी स्थितिने(वोच्छामि) हु कहीश ४७

दसवाससहस्साइ, किण्हाए ठिई जहण्णिआ होई। पलिअमसंखिज्जइमो, उक्कोसा होइ किण्हाए ॥४८॥

अर्थ—देवोमां (दसवाससहस्साइ) दश हजार वर्ष प्रमाण (किण्हाए) कृष्णलेश्यानी (ठिई जहण्णिआ) जघन्य स्थिति (होई) छे तथा (पलिअमसंखिज्जइमो) पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटली (किण्हाए) कृष्ण लेश्यानी (उक्कोसा होइ) उत्कृष्ट स्थिति छे आ स्थिति तेटला ज आयुष्यवाळा भवनपति अने व्यंतरोनी जाणवी, ए ज प्रमाणे नील अने कापोत लेश्यामां पण जाणवु ४८

जा किण्हाइ ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिआ ।
जहण्णेण नीलाए, पलिअमसंखेज्ज उक्कोसा ॥ ४९ ॥

अर्थ—(किण्हाइ) कृष्ण लेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति (खलु) निश्चे कही छे, (सा उ)

अर्थ—(तिरियाण) तिर्यंच (नराणं वा) अने मनुष्यमां (जहिं जहिं) ज्यां ज्यां एटले जे जे पृथिव्यादिकने विषे के संमूर्छिम मनुष्यादिकने विषे (केवलं लेसं) एक शुक्ल लेश्याने (वज्जित्ता) वर्जीने बीजी (जा उ) जे कृष्णादिक लेश्या संभवे छे, ते (लेसाण) लेश्याओनी (ठिई) जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति (अंतोमुहुत्तमद्धं) अंतर्मुहूर्तकाळनी ज छे. तेमां पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकायने विषे पहेली चार लेश्याओ संभवे छे, तेउरकाय, वायुकाय, विकलेंद्रिय अने संमूर्छिमने विषे पहेली त्रण लेश्याओ संभवे छे अने बीजाने विषे छए लेश्या संभवे छे. तेथी करीने आ छए लेश्यानी स्थिति तिर्यंच अने मनुष्यने विषे अंतर्मुहूर्तकाळनी ज प्राप्त थइ. तेमां एक शुक्ल लेश्याने वाद करी छे. ४५.

हवे शुक्ल लेश्यानी स्थिति कहे छे.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ । नवहिं वरिसेहिं ऊणा नायव्वा सुक्कलेसाए ॥४६॥

अर्थ—(सुक्कलेसाए) शुक्ल लेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (मुहुत्तद्धं तु) अंतर्मुहूर्तनी छे. अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (नवहिं वरिसेहिं ऊणा) नव वर्ष ओछा एवा (पुव्वकोडी उ) पूर्वकोटी–करोड पूर्व वर्षनी (होइ) छे. एम (नायव्वा) जाणवुं. कोइ पूर्वकोटिना आयुष्यवाळो मनुष्य आठमे वर्षे चारित्र ग्रहण करे, ते ओछामां ओछो एक वर्षनो चारित्र पर्याय थाय त्यारे तेने शुक्ल लेश्यानो अने केवलज्ञान पामवानो संभव छे, पछी जीवित पर्यंत ते लेश्या रहे छे. तेथी नव वर्ष ओछा पूर्वकोटि वर्ष कह्या छे. ४६.

वमअसखभाग च) पल्योपमनो असख्यातमो भाग एटली नील लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति छे, ते धूमप्रभाना पहेले पाथडे समजवी ४२

दस उदही पलिअमसखभाग जहन्निआ होई । तेत्तीस सागराइ, उक्कोसा होइ किण्हाए ॥ ४३ ॥

अर्थ—(दस उदही) दश सागरोपम अने (पलिअमसखभाग) पल्योपमनो असख्यातमो भाग एटली (जहन्निआ होई) कृष्णलेश्यानी जघन्य स्थिति छे, ते धूमप्रभामां समजवी. अने (तेत्तीस सागराइ) तेत्रीश सागरोपमनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (किण्हाए होइ) कृष्णलेश्यानी छे, ते तमस्तमा पृथ्वीने विषे समजवी आ अने आगळ देवतानी कहेशे ते सर्व द्रव्यलेश्यानी स्थिति जाणवी तेमनी भावलेश्यानी स्थिति तो फरती होवाथी अन्यथा प्रकारे पण समवे छे एटले के भाव लेश्या तो देव नारकी सर्वने छए समवे छे ४३

एसा नेरइआण, लेसाण ठिई उ वणिआ होई । तेण पर वोच्छामि, तिरिअमणुस्साण देवाण ॥४४॥

अर्थ—(एसा) आ (नेरइआण) नारकीनी (लेसाण) लेश्यानी (ठिई उ) स्थिति (वणिआ होई) वर्णन करेली छे (तेण पर) त्यारपछी–हवे (तिरिअमणुस्साण देवाण) तिर्यंच, मनुष्य अने देवनी लेश्यानी स्थितिने (वोच्छामि) हु कहीश–कहु छु ४४

अतोमुहुत्तमद्ध, लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ । तिरियाण नराण वा, वज्जित्ता केवल लेस ॥४५॥

अर्थ—(एसा) आ (खलु) निश्चे (लेसाणं) लेश्यानी (ओहेण) ओघे करीने एटले सामान्य रीते (ठिई उ) स्थिति (वण्णिआ होई) वर्णन करी छे. (एत्तो) हवे पछी (चउसु वि गईसु) चारे गतिने विषे (लेसाण ठिइं तु) लेश्यानी स्थितिने (वोच्छामि) हुं कहीश. ४०.

ते ज कहे छे—

दसवाससहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निआ होई। तिण्णुदही पलिओवम–असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥

अर्थ—(दसवाससहस्साइं) दश हजार वर्ष (काऊए ठिई) कापोतलेश्यानी स्थिति (जहन्निआ होई) जघन्य छे, तथा (तिण्णुदही) त्रण सागरोपम अने (पलिओवमअसंखभागं च) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति छे. तेमां रत्नप्रभाना उपरना पाथडामां रहेला नारकीओनी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे तेथी त्यां जघन्य स्थिति अने वालुकाप्रभाना पहेला पाथडामां रहेला नारकीओनी त्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली उत्कृष्ट स्थिति छे तेथी त्यां कापोतलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति होय एम सर्वत्र जाणवुं. ४१.

तिण्णुदही पलिअमसंखभागो उ जहन्ननीलठिई। दस उदही पलिओवम–असंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥

अर्थ—(तिण्णुदही) त्रण सागरोपम अने (पलिअमसंखभागो उ) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली (जहन्न-नीलठिई) नील लेश्यानी जघन्य स्थिति छे, ते वालुकाप्रभामां समजवी. अने (दस उदही) दश सागरोपमने (पलिओ-

अर्थ—कापोत लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली जाणवी शेष अर्थ पूर्ववत् आटली स्थिति वालुकाप्रभाना उपरना पाथडे जाणवी ३६.

मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, दुण्णुदही पलिअमसंखभागमब्भहिआ ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥

अर्थ—तेजोलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली जाणवी आटली स्थिति ईशान देवलोकमां होय छे ३७

मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, दस होंती सागरा मुहुत्तहिआ । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥

अर्थ—पद्मलेश्यानी अंतर्मुहूर्त अधिक दश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे ते ब्रह्मदेवलोकने विषे जाणवी ३८

मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, तेत्तीस सागरा मुहुत्तहिआ । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥

अर्थ—शुक्ललेश्यानी तेत्रीश सागरोपम अंतर्मुहूर्ताधिक उत्कृष्ट स्थिति छे ते अनुत्तरविमानमां जाणवी ३९

हवे लेश्यानी स्थितिने समाप्त करवा पूर्वक लेश्या संबंधी बीजी हकीकतनो आरंभ करे छे.—

एसा खलु लेसाण, ओहेण ठिई उ वण्णिआ होई । चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइ तु वोच्छामि।४०।

अर्थ—(किण्हलेसाए) कृष्णलेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (मुहुत्तद्धं तु) मुहूर्तार्ध एटले अंतर्मुहूर्तनी छे अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति (मुहुत्तहिआ) अंतर्मुहूर्त अधिक एवा (तेत्तीसं सागरा) तेत्रीश सागरोपमनी (होइ) छे एम (नायव्वा) जाणवुं. आ उत्कृष्ट स्थिति सातमी नरक पृथ्वी आश्री जाणवी. तेमां अंतर्मुहूर्ते करीने पूर्व तथा पछीना भवने आश्रीने बे अंतर्मुहूर्त जाणवां. एम सर्वत्र जाणी लेवुं. सर्व लेश्यानी जघन्य स्थिति जे कही छे ते तिर्यंच अने मनुष्यने विषे ज जाणवी. ३४.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलिअमसंखभागमब्भहिआ ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥

अर्थ—(नीललेसाए) नीललेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (मुहुत्तद्धं तु) अंतर्मुहूर्तनी ज छे तथा (उक्कोसा ठिई) उत्कृष्ट स्थिति (दस उदही) दश सागरोपम अने (पलियं असंखभागं अब्भहिआ) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक (होइ) छे एम (नायव्वा) जाणवुं. अहीं पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक कह्यो, तेनी अंदर पूर्वोत्तर भवना बे अंतर्मुहूर्त पण जाणी लेवा. ए ज प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. ३५. आ स्थिति धूमप्रभाने पहेले पाथडे समजवी.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिपणुदही पलिअमसंखभागमब्भहिआ ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥

जे पांच समितिवाळो होय, (गुत्ते य गुत्तिसु) जे त्रण गुप्तिवडे गुप्त होय, (सरागे वीअरागे वा) जे सराग के वीतराग सयमवाळो होय, (उवसंते) जे शांत आकारवाळो होय तथा (जिइंदिए) जे जितेंद्रिय होय, (एअजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारवडे जे युक्त होय ते मनुष्य (सुक्कलेसं तु परिणमे) शुक्ललेश्याने ज परिणमे छे अर्थात् तेवो जीव शुक्ललेश्या वाळो छे एम समजवु विशिष्ट लश्यानी।अपेक्षाए आ लक्षणो कह्यां छे, तेथी देवादिकमां तेवां लक्षणो कदाच जोवामां न आवे तोपण तेमां दोष नथी एम जाणवु ३१-३२

हवे लेश्यानु स्थान कहे छे —

असंखेज्जाणोसप्पिणीण ओसप्पिणीण जे समया । संखाईआ लोगा, लेसाण हुंति ठाणाइं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(असंखेज्जाणोसप्पिणीण) असंख्याती अवसर्पिणी अने (ओसप्पिणीण) उत्सर्पिणीना (जे समया) जेटला समयो अथवा (संखाईआ लोगा) असंख्याता लोकाकाशना जेटला प्रदेश तेटला (लेसाण) दरेक लेश्यानां (ठाणाइं हुंति) अध्यवसाय स्थानको छे एटले के अशुभ लेश्याना उंचा-नीचा संक्लेशनां स्थानो अने शुभलेश्यानां उंचा नीचा विशुद्धिना स्थानो असंख्याता छे. ३३

हवे लेश्यानी स्थिति कहे छे —

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिआ । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥३४॥

दृढ, (अवज्जभीरू) पापथी भय पामनार तथा (हिएसए) हितैषक एटले मोक्षने इच्छनार (एयजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारे करीने युक्त एवो मनुष्य (तेउलेसं तु परिणमे) तेजोलेश्याने परिणमे छे-तेजोलेश्यावाळो थाय छे. २७-२८.

पयणुकोहमाणे अ, मायालोभे अ पयणुए । पसंतचित्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥ २९ ॥

तहा पयणुवाई अ, उवसंते जिइंदिए । एयजोगसमाउत्ते, पम्हलेसं तु परिणमे ॥ ३० ॥

अर्थ—(पयणुकोहमाणे अ) जेने क्रोध अने मान अल्प होय, (मायालोभे अ) माया तथा लोभ (पयणुए) जेने अल्प होय, (पसंतचित्ते) जेनुं चित्त प्रशांत होय, (दंतप्पा) जे आत्माने दमनार होय, (जोगवं) जे योग वहन करनार होय, (उवहाणवं) जे उपधानवाळो होय, (तहा) तथा (पयणुवाई अ) थोडुं बोलनार, (उवसंते) शांत आकारवाळो अने (जिइंदिए) जितेंद्रिय (एयजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारे करीने युक्त एवो मनुष्य (पम्हलेसं तु परिणमे) पद्मलेश्याने ज परिणमे छे-पद्मलेश्यावाळो थाय छे. २९-३०.

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए । पसंतचित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३१॥

सरागे वीअरागे वा, उवसंते जिइंदिए । एअजोगसमाउत्ते, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥ ३२ ॥

अर्थ—(अट्टरुद्दाणि) आर्तध्यान अने रौद्रध्याननो (वज्जित्ता) त्याग करी (धम्मसुक्काणि) धर्मध्यान अने शुक्लध्याननुं (झायए) जे ध्यान करे, (पसंतचित्ते) जेनुं चित्त प्रशांत होय, (दंतप्पा) जेणे आत्मानुं दमन कर्युं होय, (समिए)

उप्फालगदुट्ठवाई अ, तेणे आवि अ मच्छरी। एअजोगसमाउत्ते, काऊलेस तु परिणमे ॥२६॥

अर्थ—(वक) वचन बोलवामां वक्र, (वकसमायारे) वक्र क्रिया करनार, (निअडिल्ले) मनमा मायावाळो, (अणुज्जुए) सरळ न करी शकाय तेवो, (पलिउंचग) परिकुंचन एटले पोताना दोष ढाकनार, (ओवहिए) औपधिक एटले सर्वत्र कपटथी ज प्रवृत्ति करनार, (मिच्छदिट्ठी) मिथ्यादृष्टि, (अणारिए) अनार्य, (उप्फालगदुट्ठवाई अ) उत्प्रासुक एटले बीजाने त्रास उपजे तेवु अने दुष्ट एटले रागादिक दोषवाळु बोलनार, (तेणे आवि अ) चोर, तथा वळी (मच्छरी) मत्सरवाळो एटले बीजानी संपदा जोई न शके तेवो (एअजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारथी युक्त एवो मनुष्य (काऊलेस तु परिणमे) कापोतलेश्याने ज परिणमे छे कापोतलेश्यावाळो थाय छे २५–२६

नीआवित्ती अचवले, अमाई अकुतूहले। विणीयविणए दंते, जोगव उवहाणव ॥ २७ ॥

पियधम्मे दढधम्मे, वज्जभीरू हिएसए। एयजोगसमाउत्ते, तेउलेस तु परिणमे ॥ २८ ॥

अर्थ—(नीआवित्ती) नम्र वृत्तिवाळो एटले मन, वचन अने कायाथी अनुद्धत, (अचवले) चपळता रहित, (अमाई) माया रहित, (अकुतूहले) कुतूहळ रहित, (विणीयविणए) विनीतविनय एटले गुर्वादिकनु उचित करवामा प्रवृत्तिवाळो, (दंते) दांत–इंद्रियोनु दमन करनार, (जोगव) योगवान एटले स्वाध्यायादिना व्यापारवाळो, (उवहाणव) उपधानवाळो एटले शास्त्रनो उपचार करनार अर्थात् उपधान वहन करनार, (पियधम्मे) धर्मने विषे प्रीतिवाळो, (दढधम्मे) धर्मने विषे

(परिणमे) परिणमे छे-पामे छे. एटले तेवा प्रकारना परमाणुद्रव्यनी सहायथी स्फटिकनी जेवो आत्मा पण तेवा रूपने पामे छे-तेवी लेश्यावाळो थाय छे. कह्युं छे के-" कृष्णादिक द्रव्यनी सहायथी स्फटिकनी जेम आत्माना जे परिणाम ते लेश्या कहेवाय छे." २१-२२.

इस्सा अमरिस अतवो, अविज्ज माया अहीरिया। गेही पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए ॥२३॥
सायगवेसए अ आरंभाविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो। एअजोगसमाउत्तो,नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥

अर्थ—(इस्सा अमरिस अतवो) इर्ष्या एटले परना गुण सहन न करवा ते, अमर्ष एटले अत्यंत क्रोध अने अतप एटले तपस्या रहितपणुं, (अविज्ज) अविद्या एटले कुशास्त्रनी विद्या, (माया) माया, (अहीरिया) दुराचार सेववामां अह्रीकता-निर्लज्जपणुं, (गेही) गृद्धि-विषयने विषे लंपटता, अने (पओसे य) प्रद्वेष. अहीं सर्वत्र अभेद उपचारथी ईर्ष्यावाळो, अमर्षवाळो इत्यादिक जाणवुं. तथा (सढे) शठ-धिठो, (पमत्ते) जातिमदादिकवडे मदोन्मत्त, (रसलोलुए) रसने विषे लुब्ध, (सायगवेसए अ) साता सुखनी गवेषणा करनार-इच्छनार, (आरंभाविरओ) जीवोपमर्दादिक आरंभथी निवृत्ति नहीं पामेलो, (खुद्दो) क्षुद्र अने (साहस्सिओ) साहसिक एवो (नरो) पुरुष के स्त्री (एअजोगसमाउत्तो) आवा व्यापारे करीने युक्त सतो (नीललेसं तु परिणमे) नीललेश्याने ज परिणमे छे-नीललेश्यावाळो थाय छे. २३-२४.

वंके वंकसमायारे, निअडिल्ले अणुज्जुए। पलिउंचग ओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥

लक्षणथी घणा घणा प्रकारनो (लेसाण) लश्याओनो (परिणामो) परिणाम (होइ) होय छे तेमां दरेक लेश्यामां जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट भेदे करीने त्रण प्रकारनो परिणाम जाणवो ज्यारे आ जघन्यादिक त्रण प्रकारमां पण पोतपोताने स्थाने तरतमतानो–न्यूनाधिक्यनो विचार करीए त्यारे ते त्रणेने फरीथी जघन्यादिक त्रणे गुणवा एटले नव प्रकारनो थाय छे, ए ज रीते वारवार त्रणे गुणतां सतावीश, एकाशी विगेरे प्रकारनो परिणाम थाय छे २०

हवे लेश्यानु लक्षण कहे छे

पचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ अ। तिव्वारंभपरिणओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो ॥२१॥
निद्धंधसपरिणामो, निस्संसो अजिइंदिओ। एअजोगसमाउत्तो, कण्हलेसं तु परिणमे ॥ २२ ॥

अर्थ—(पचासवप्पवत्तो) हिंसादिक पांच आश्रवने विषे प्रवृत्तिवाळो, (तीहिं अगुत्तो) मन, वचन अने काय ए त्रण गुप्ति रहित, (छसु अविरओ अ) छ जीवनिकायने विषे विरति रहित, (तिव्वारंभपरिणओ) तीव्र आरंभना परिणामवाळो (खुद्दो) क्षुद्र एटले सर्वनु अहित इच्छनार, (साहस्सिओ) विचार्या विना सहसा कार्य करनार एवो (नरो) नर अथवा उपलक्षणथी नारी होय तथा वळी (निद्धंधसपरिणामो) निध्वंस परिणामवाळो एटले आ लोक अने परलोकना कष्टनी शंका रहित, (निस्संसो) निस्त्रिंश एटले जीवोनी हिंसा करतां जरा पण शंका न करे तेवो तथा (अजिइंदिओ) अजितेंद्रिय, (एअजोगसमाउत्तो) आ उपर कहेला व्यापार करीने युक्त एवो पुरुष के स्त्री (कण्हलेसं तु) कृष्णलेश्याने ज

अर्थ—(जह) जेवो (करगयस्स) करवतनो (फासो) स्पर्श छे, अथवा (गोजिब्भाए) गायनी जिव्हानो स्पर्श छे, (व) अथवा (सागपत्ताणं) शाक नामना वृक्षना पांदडानो जेवो कर्कश स्पर्श छे. (एत्तोऽवि अणंतगुणो) एनाथी पण अनंतगुणो कर्कश स्पर्श (लेसाणं अप्पसत्थाणं) अप्रशस्त त्रण लेश्यानो छे. १८.

जह बूरस्स व फासो, नवणीअस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥ १९ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (बूरस्स व) बूर नामनी वनस्पतिनो (फासो) कोमळ स्पर्श छे, अथवा (नवणीअस्स व) माखणनो अथवा (सिरीसकुसुमाणं) शिरीषना पुष्पनो स्पर्श जेवो कोमळ छे, (एत्तोऽवि अणंतगुणो) एनाथी पण अनंतगुणो कोमळ (पसत्थलेसाण तिण्हं पि) त्रणे प्रशस्त लेश्यानो स्पर्श छे. १९.

हवे लेश्यानो परिणाम कहे छे.—

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहिक्कसीओ वा ।
दुसओ तेआलो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥ २० ॥

अर्थ—(तिविहो व) त्रण प्रकारनो अथवा (नवविहो वा) नव प्रकारनो अथवा (सत्तावीसइविहो) सत्तावीश प्रकारनो अथवा (इक्कसीओ वा) एकाशी प्रकारनो अथवा (दुसओ तेआलो वा) बसो ने त्रेंताळीश प्रकारनो अथवा उप-

जह गोमडस्स गधो, सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स ।
एत्तोऽवि अणतगुणा, लेस ण अप्पसत्थाण ॥ १६ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (गोमडस्स) गायना शबना (गधो) गध छे, अथवा (सुणगमडस्स)कूतराना शबनो (व) अथवा (जहा) जेवो (अहिमडस्स) सर्पना शबना गध छे (एत्तोऽवि) एनाथी पण (अणतगुणो) अनतगुणो (अप्पसत्थाण) अप्रशस्त एटले अशुभ (लेसाण) कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेश्याओनो गध छे १६

जह सुरहिकुसुमगधो, गधवासाण पिस्समाणाण ।
एत्तोऽवि अणतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्ह पि ॥ १७ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (सुरहिकुसुमगधो) सुगधी पुष्पानो गध छे, अथवा (पिस्समाणाण) पीसाता एवा (गधवासाण) कोष्ठपुटपाकथी उत्पन्न थयेला गधद्रव्यनो अने बीजा सुवासित द्रव्योनो जवो गध छे, (एत्तोऽवि) एनाथी पण (अणतगुणो) अनतगुणो शुभगध (पसत्थलेसाण तिण्ह पि) तेजस्, पद्म अने शुक्ल ए त्रणे प्रशस्त लेश्यानो छे अहीं अशुभ तथा शुभ सर्व लेश्यानो गध परस्पर-अदर अदर ओछो वधतो कह्यो नथी ते स्वयमेव जाणी लेवो १७

हवे लेश्याओनो स्पर्श कहे छे —

जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए व सागपत्ताण । एत्तोऽवि अणतगुणो, लेसाण अप्पसत्थाण॥१८॥

अर्थ—(जह) जेवो (परिणयंबगरसो) पाकेला आम्रफळनो रस छे, (वावि) अथवा (जारिसओ) जेवो (पक्कविट्ठस्स) पाका कपित्थनो रस कांइक मधुर अने कांइक खाटो छे, (एत्तो०) तेनाथी पण अनंतगुणो रस (तेऊइ नायव्वो) तेजोलेश्यानो जाणवो. १३.

वरवारुणीइ व रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ।
महुमेरगस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएणं ॥ १४ ॥

अर्थ—(वरवारुणीइ व) उत्तम जातिनी मदिरानो (जारिसओ) जेवो (रसो) रस छे, अथवा (विविहाण व) विविध प्रकारना (आसवाण) आसवोनो एटले पुष्पथी उत्पन्न थता मद्योनो जेवो रस छे, अथवा (महुमेरगस्स व) मधु एटले मद्यविशेष अने मैरेय एटले सरको, तेनो जेवो (रसो) रस छे, (एत्तो) एनाथी (परएणं) अनंतगुणो अधिक रस (पम्हाए) पद्मलेश्यानो छे. आ रस कांइक खाटो, कांइक तुरो अने कांइक मधुर होय छे. १४.

खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खंडसक्कररसो वा। एत्तोऽवि अणंतगुणो, रसो उ सुक्काइ नायव्वो ॥ १५ ॥

अर्थ—(खज्जूरमुद्दियरसो) खर्जुरनो अने द्राक्षनो रस, (खीररसो) खीरनो रस (खंडसक्कररसो वा) अथवा खांड साकरनो रस जेवो मिष्ट छे, (एत्तोऽवि०) एनाथी पण अनंतगुणो रस (सुक्काइ) शुक्ललेश्यानो जाणवो. १५.

हवे लेश्यानो गंध कहे छे.—

जह तिकडुअस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ नीलाइ नायव्वो ॥ ११ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (तिकडुअस्स य) सुंठ, पीपर अने मरी ए त्रिकटुनो (रसो) रस (तिक्खो) तीखो छे, (जह हत्थिपिप्पलीए वा) अथवा गजपिपळी-पीपरनो रस जेवो तीखो छे, (एत्तो वि) तेनाथी पण (अनंतगुणो रसो उ)अनंत गुणो तिक्त रस (नीलाइ) नीललेश्यानो (नायव्वो) जाणवो. ११

जह तरुणअंबगरसो, तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, रसो उ काऊइ नायव्वो ॥ १२ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (तरुणअंबगरसो) काचा आम्रफळनो रस छे, (वावि) अथवा (जारिसओ) जेवो (तुवर कविट्ठस्स) कषायला एटले तुरा कपित्थफळनो-कोठानो रस छे, (एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ) तेनाथी पण अनंत गुणो रस (काऊइ) कापोत लेश्यानो (नायव्वो) जाणवो १२

जह परिणयंबगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, रसो उ तेऊइ नायव्वो ॥ १३ ॥

...लेसा उ वणओ ॥ ८ ॥

अर्थ—(पम्हलेसा उ) पद्मलेश्या (वण्णओ) वर्णथी (हरियालभेयसंकासा) हडताळना ककडा जेवी छे. (हलिद्दाभेयसन्निभा) हळदरना ककडा जेवी छे, तथा (सणासणकुसुमनिभा) सण नामनुं धान्य अने असण एटले बीयक नामनुं वृक्ष तेना पुष्प जेवी छे. अर्थात् पीळी छे. ८.

संखंककुंदसंकासा, खीरधारासमप्पभा । रययहारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

अर्थ—(सुक्कलेसा उ) शुक्ल लेश्या (वण्णओ) वर्णथी (संखंककुंदसंकासा) शंख, अंक नामनो मणि अने कुंद पुष्प जेवी छे, (खीरधारासमप्पभा) दूधनी धारा जेवी छे, तथा (रययहारसंकासा) रजत एटले रुपुं अने हार एटले मोतीनी माळा तेना जेवी छे अर्थात् धोळी छे. ९.

हवे लेश्याओना रस कहे छे.—

जह कडुअतुंबगरसो, निंबरसो कडुअरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ किण्हाइ नायव्वो ॥ १० ॥

अर्थ—(जह) जेवो (कडुअतुंबगरसो) कडवा तुंबडानो रस छे, (निंबरसो) जेवो लींबडानो रस छे, (कडुअरोहिणिरसो वा) अथवा जेवो कडवी रोहिणी नामनी छालनो रस छे, (एत्तो वि) तेनाथी पण (अणंतगुणो) अनंत गुणो अधिक कडु (रसो उ) रस (किण्हाइ) कृष्णलेश्यानो (नायव्वो) जाणवो. १०.

नीलासोगसकासा, चासपिच्छसमप्पभा । वेरुलियनिद्धसकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥

अर्थ—(नीललेसा उ) नील लेश्या (वण्णओ) वर्णथी (नीलासोगसकासा) नील अशोकवृक्षना जेवी छे, (चासपिच्छसमप्पभा) चास पक्षीनी पांख जेवी छे, तथा (वेरुलियनिद्धसकासा) स्निग्ध वैडूर्य रत्नना जेवी छे अर्थात् अति नील छे ५

अयसीपुप्फसकासा, कोइलच्छदसन्निभा । पारेवयगीवनिभा, काउलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥

अर्थ—(काउलेसा उ) कापोत लेश्या (वण्णओ) वर्णथी (अयसीपुप्फसकासा) अळसी नामना धान्यना पुष्प जेवी छे, (कोइलच्छदसन्निभा) कोकिलच्छद एटले कोयल पक्षीनी पांख जेवी छे, तथा (पारेवयगीवनिभा) पारेवानी ग्रीवा जेवी छे अर्थात् कांइक काळी अने कांइक राती छे ६

हिंगुलधाउसकासा, तरुणाइच्चसन्निभा । सुअतुडपईवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥

अर्थ—(तेउलेसा उ) तेजोलेश्या (वण्णओ) वर्णथी (हिंगुलधाउसकासा) हिंगळोक अने गेरुना जेवी छे, (तरुणाइच्चसन्निभा) उगता सूर्य जेवी छे, तथा (सुअतुडपईवनिभा) पोपटनी चांच अने प्रदीप–दीवा जेवी छे, अर्थात् राती छे ७

हरियालभेयसकासा, हलिद्दाभेयसन्निभा । सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥

सते आवता भवनी लेश्यानो परिणाम थाय ते सर्व (मे सुणेह) मारी पासेथी तमे सांभळो. २.

' जे प्रकारे उद्देश कर्यो होय ते प्रकारे निर्देश करवो ' ए न्यायने अनुसारे प्रथम लेश्यानां नामो कहे छे.—

किण्हा १ नीला २ य काऊय ३, तेऊ ४ पम्हा ५ तहेव य ।
सुक्कलेसा ६ य छट्ठा उ, नामाइं तु जहक्कमं ॥ ३ ॥

अर्थ—(किण्हा) कृष्ण १, (नीला य) नील २, (काऊय) कापोत ३, (तेऊ) तेजो ४, (पम्हा) पद्म ५, (तहेव य) तथा (सुक्कलेसा य छट्ठा उ) छठी शुक्ल लेश्या ६, आ प्रमाणे लेश्याओनां (नामाइं तु) नामो (जहक्कमं) अनुक्रमे जाणवां. ३.

हवे लेश्याना वर्ण कहे छे.—

जीमूतनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा । खंजंजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥

अर्थ—(किण्हलेसा उ) कृष्णलेश्या (वण्णओ) वर्णथी (जीमूतनिद्धसंकासा) स्निग्ध मेघना जेवी छे, (गवलरिट्ठगसन्निभा) गवल एटले भेंशनुं शींगडुं अने रिष्टक एटले कागडो अथवा ते नामनुं फळ, तेना जेवी छे, तथा (खंजंजणनयणनिभा) खंज एटले गाडानो कील, अंजन एटले काजळ अने नयन एटले नेत्रनी कीकी, तेना जेवी छे अर्थात् अत्यंत काळी छे. ४.

अथ लेश्या नामनु चोत्रीशमु अध्ययन ३४

तेत्रीशमा अध्ययनमां कर्मनी प्रकृतिओ कही ते कर्मनी स्थिति लेश्याने आश्रीने थाय छे, तेथी आ अध्ययनमां लेश्यानु स्वरूप कहे छे —

लेसज्झयण पवक्खामि, आणुपुव्वि जहक्कम । छण्ह पि कम्मलेसाण, अणुभावे सुणेह मे ॥ १ ॥

अर्थ—(लेसज्झयण) लेश्याने कहेनारु अध्ययन (आणुपुव्वि) आनुपूर्वीए (जहक्कम) अनुक्रमे (पवक्खामि) हु कहीश ते (छण्ह पि) छए प्रकारनी (कम्मलेसाण) कर्मनी स्थिति करनार ते ते विशिष्ट पुद्गलरूप कर्मलेश्याना (अणुभावे) अनुभावने एटले विशेष प्रकारना रसने (मे) मारी पासेथी (सुणेह) तमे सांभळो १

लेश्याना नामादिक कहेवाथी ज लेश्याना अनुभाव कहेला कहेवाय छे, तेथी तेना नामादिकनी प्ररूपणा करवा माटे प्रथम द्वारसूत्र कहे छे.—

णामाइ वण्णरसगध—फासपरिणामलक्खण ठाण । ठिइ गइ च आउ, लेसाण तु सुणेह मे ॥ २ ॥

अर्थ—(लेसाण तु) लेश्याओनां (णामाइ) नाम, (वण्णरसगधफासपरिणामलक्खण) वर्ण, रस, गध, स्पर्श, जघन्यादिक परिणाम, पचाश्रवसेवादिक लक्षण, (ठाण) उत्कर्ष अने अपकर्षरूप स्थान, (ठिइ) स्थितिनो काळ (गइ च) नरकादिक गति—जे जे लेश्याथी जे जे गति प्राप्त थाय ते, तथा (आउ) आयुष्य एटले जेटलु आयुष्य बाकी रहे

हवे भाव एटले अनुभाग–रस कहे छे, तेम ज प्रदेशप्रमाण पण कहे छे.—

सिद्धाणऽणंतभागो अ, अणुभागा भवंति उ । सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्वजीवेसऽइच्छिअं ॥ २४ ॥

अर्थ—(अणुभागा) अनुभाग एटले कर्मना रसविशेषो (सिद्धाण) सिद्धोना (अणंतभागो अ) अनंतमे भागे (भवंति उ) छे. आ अनंतमो भाग पण अनंतनी संख्यावाळो ज जाणवो. तथा (सव्वेसु वि) सर्व अनुभागोने विषे पण (पएसग्गं) प्रदेशनुं परिमाण (सव्वजीवेसऽइच्छिअं) सर्व जीवोने उल्लंघन करनारुं छे एटले सर्व जीवोथी अनंतगुणुं छे. २४

हवे अध्ययनने समाप्त करवा पूर्वक उपदेश आपे छे.—

तम्हा एएसि कम्माणं, अणुभागे विआणिआ। एएसिं संवरे चेव, खवणे अ जए बुहे त्ति बेमि ॥२५॥

अर्थ—जे कारण माटे ए कर्मोना प्रकृतिबंध, स्थितिबंध विगेरे आवा प्रकारना छे (तम्हा) ते कारण माटे (एएसि कम्माणं) आ कर्मोना (अणुभागे) अनुभागने तथा उपलक्षणथी प्रदेशबंध विगेरेने (विआणिआ) विशेषे करीने एटले विपाकना कटुपणाए करीने तथा भवना कारणपणाए करीने जाणीने (एएसिं) आ नहीं ग्रहण करेला कर्मना (संवरे) संवरने विषे एटले रुंधवाने विषे–आवता रोकवाने विषे (चेव) तथा (खवणे अ) ग्रहण करेला कर्मना क्षयने विषे एटले निर्जराने विषे (बुहे) डाह्या माणसे (जए) यत्न करवो ज जोइए (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. २५.   इति त्रयस्त्रिंशमध्ययनम्. ३३.

कर्मनी पण जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्तनी कही, परंतु अन्य स्थळे तो बार मुहूर्तनी कहेली छे ते कषाय सहितने आश्री कहेली छे एम जाणवु ते विषे कह्यु छे के—" मोत्तु अकसायठिइ, बार मुहुत्ता जहन्न वेअणिए " एटले " अकषायी जीवोनी स्थिति विना वेदनीय कर्मनी जघन्य स्थिति बार मुहूर्तनी छे " वळी कषायरहित सातावेदनीयनी स्थिति तो बे समयनी अहीं ज कहेली छे तेनु खरु तत्त्व तो ज्ञानीगम्य छे २०

उदहिसरिसनामाण, सत्तरि कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्त जहण्णिआ ॥ २१ ॥
तेत्तीससागरोवम, उक्कोसेण विआहिआ । ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुत्त जहण्णिआ ॥ २२ ॥
उदहिसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ । नामगोत्ताण उक्कोसा, अट्ठ मुहुत्ता जहण्णिआ ॥ २३ ॥

अर्थ—(मोहणिज्जस्स) मोहनीय कर्मनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (सत्तरि) सीत्तेर (कोडिकोडीओ) कोटाकोटि (उदहिसरिसनामाण) सागरोपमनी छे अने (जहण्णिआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्त) अंतर्मुहूर्तनी छे २१ (आउकम्मस्स) आयुकर्मनी (ठिई उ) स्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टे करीने (तेत्तीससागरोवम) तेत्रीश सागरोपमनी (विआहिआ) कही छे अने (जहण्णिआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्त) अंतर्मुहूर्तनी कही छे २२ (नामगोत्ताण) नामकर्म अने गोत्र कर्मनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (वीसई) वीश (कोडिकोडीओ) कोटाकोटि (उदहिसरिसनामाण) सागरोपमनी कही छे अने (जहण्णिआ) जघन्य स्थिति (अट्ठ मुहुत्ता) आठ मुहूर्तनी कही छे २३

केटलुं अने केवी रीते बंधाय छे ? ते कहे छे.—(सव्वेसु वि पएसेसु) आत्माना सर्व प्रदेशोनी साथे (सव्वं) सर्व एटले ज्ञानावरणादिकमांथी कोइ एक ज कर्म नहीं पण सर्व कर्म (७–८ कर्म) (सव्वेण) सर्व एटले प्रकृति, स्थिति विगेरे सर्व प्रकारे (बज्झगं) चीरनीरनी जेम बांधे छे–आश्लिष्ट करे छे. १८.

हवे काळ एटले कर्मनी स्थितिने कहे छे.—

उदहिसरिसनामाणं, तीसई कोडिकोडीओ । उक्कोसिआ ठिई होई, अंतोमुहुत्तं जहणिआ ॥ १९ ॥

अर्थ—(तीसई) त्रीश (कोडिकोडीओ) कोटाकोटि (उदहिसरिसनामाणं) उदधि सदृश नामवाळानी एटले सागरोपमनी (उक्कोसिआ ठिई) उत्कृष्ट स्थिति (होई) होय छे अने (जहणिआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी छे. १९.

आटली स्थिति कया कया कर्मनी छे ? ते कहे छे.—

आवरणिज्जाण दुण्हं पि, वेअणिज्जे तहेव य । अंतराए अ कम्मम्मि, ठिई एसा विआहिआ ॥ २० ॥

अर्थ—(दुण्हं पि) बन्ने (आवरणिज्जाण) आवरणने विषे एटले ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीयने विषे, (वेअणिज्जे) वेदनीयने विषे, (तहेव य) तेम ज (अंतराए अ) अंतरायने विषे (कम्मम्मि) आ चार कर्मने विषे एटले ते चार कर्मनी (एसा) आ उपरनी गाथामां कहेली (ठिई) स्थिति (विआहिआ) कहेली छे. अही वेदनीय

अनंत छे केटलु अनंत छे? ते कहे छे —(गंठिअसत्ताईअं) ग्रंथिक सत्त्वने ओळंगी जाय तेटलु अनंत छे एटले के जेओ ग्रंथिदेशने पाम्या छतां पण ते ग्रंथिने भेदीने कोइपण वखत आगळ जवाना नथी तेवा अभव्योने ओळंगी जाय तेटलु एटले अभव्योथी अनंतगुणु आ प्रदेशाग्रनु अनंतु छे तथा (अंतो सिद्धाण) सिद्धोनी अंदर (आहिअं कह्यु छे एटले के सर्व सिद्धोने अनंतमे भागे कर्मना परमाणुओ छे एक जीव एक समयमां ज कर्म बांधे छे, ते कर्मना परमाणुओनु आ प्रमाण जाणवु केमके सर्व कर्मना परमाणुओ तो सर्व जीवो करतां अनंतानंतगुणा छे, तेथी आ कहेलु परिमाण अन्यथा घटतु नथी १७

हवे क्षेत्र कहे छे —

सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं । सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥ १८ ॥

अर्थ—(सव्वजीवाण) सर्व जीवो (छद्दिसागयं) छए दिशामां रहेला (कम्मं तु) ज्ञानावरणादिक कर्मने-कार्मणवर्गणाने (संगहे) ग्रहण करे छे अहीं सर्व जीवो कह्या छे तेमां द्वींद्रियादिक पंचेंद्रिय पर्यंतने माटे नियमथी जाणवु एकेंद्रियने आश्रीने तो अन्यथा पण संभवे छे एटले के एकेंद्रियो तो कदाचित् त्रण दिशाना, कदाचित् चार दिशाना, कदाचित् पांच दिशानां अने कदाचित् छ दिशाना कर्मपुद्‌गलोने ग्रहण करे छे [1] ते ग्रहण करेलु कर्म कोनी साथे,

१ आ त्रण, चार ने पाच दिशा लोकांतनी अपेक्षाए जाणवी

इच्छा न थाय ते दानांतराय कहेवाय छे १, उदार दिलनो दातार छतां याचना करवामां कुशळ एवा पण याचकने लाभ न थाय ते लाभांतराय कहेवाय छे २, आहार अने पुष्पमाळा विगेरे भोग्यवस्तु छतां पण भोगवी न शकाय ते भोगांतराय कहेवाय छे ३, स्त्री अने वस्त्रादिक छतां पण उपभोग करी न शकाय ते उपभोगांतराय कहेवाय छे ४, तथा नीरोगी अने युवान छतां पण तृण जेवी वस्तुने वांकी पण करी न शके ते वीर्यांतराय कहेवाय छे. ५. १५.

आ प्रमाणे आठे कर्मनी उत्तर प्रकृतिओ कही, हवे आ कर्मनो विषय संपूर्ण करवा पूर्वक हवे पछी कहेवाना विषयनो संबंध कहे छे.—

एआओ मूलप्पयडीओ, उत्तराओ अ आहिआ। पएसग्गं खेत्तकाले अ, भावं चादुत्तरं सुण॥ १६॥

अर्थ—(एआओ) आ (मूलप्पयडीओ) मूल प्रकृतिओ (उत्तराओ अ) तथा उत्तर प्रकृतिओ (आहिआ) कही. (अदुत्तरं) हवे पछी (पएसग्गं) प्रदेशाग्र एटले परमाणुओना परिमाणरूप द्रव्य (खेत्तकाले अ) क्षेत्र, काळ, (भावं च) अने भावने (सुण) सांभळो. १६.

तेमां प्रथम प्रदेशाग्रने कहे छे.

सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणंतगं। गंठिअसत्ताईअं, अंतो सिद्धाण आहिअं॥ १७॥

अर्थ—(सव्वेसिं चेव) सर्व एवा पण (कम्माणं) कर्मना (पएसग्गं) प्रदेशाग्र एटले परमाणुओनुं परिमाण (अणंतगं)

गति २४, तथा त्रसदशकथी विपरीत एवु स्थावरदशक ३४. आ प्रकृतिओ नारकपणु विगेरे अशुभना कारण होवाथी अशुभ कहेवाय छे १३

हवे गोत्रकर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे —

गोअकम्म दुविहं, उच्च नीअं च आहिअं । उच्च अट्ठविहं होइ, एवं नीअं पि आहिअं ॥ १४ ॥

अर्थ—(गोअकम्म) गोत्रकर्म (उच्च नीअं च) उच्च अने नीच एम (दुविहं) बे प्रकारनु (आहिअं) कह्यु छे तेमां (उच्च) उच्च गोत्रकर्म (अट्ठविहं) आठ प्रकारनु (होइ) छे (एवं) ए ज प्रकारे (नीअं पि) नीच गोत्रकर्म पण आठ प्रकारनु (आहिअं) कह्यु छे जातिमदादिक आठनो ज अभाव ते उच्चगोत्रनु कारण छे अने जातिमदादिक आठनु होवापणु ए नीच गोत्रनु कारण छे १४. हवे अंतरायकर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे—

दाणे लाभे अ भोगे अ, उवभोगे वीरिए तहा । पंचविहमंतरायं, समासेण विआहिअं ॥ १५ ॥

अर्थ—(दाणे) देवालायक वस्तु आपवाने विषे, (लाभे अ) इच्छित वस्तुना लाभने विषे, (भोगे अ) एकवार भोगववा लायक पुष्पादिकने विषे, (उवभोगे) वारंवार भोगववा लायक घर, स्त्री विगेरेने विषे, (वीरिए तहा) तथा वीर्यने विषे–पराक्रमने विषे, आ रीते (पंचविहं) पांच प्रकारनु (अंतरायं) अंतराय कर्म (समासेण) संक्षेप करीने (विआहिअं) कह्यु छे तेमां पात्र अने देवालायक वस्तु हाजर छतां तथा दाननु फळ जाणता छतां दान देवामां प्रवृत्ति-

अर्थ—(नेरइअतिरिक्खाउं) नरकायु, तिर्यगायु, (मणुस्साउं) मनुष्यायु, (तहेव य) तथा वळी (देवाउअं) देवायु ए (चउत्थं तु) चोथुं छे. ए प्रमाणे (आउकम्मं) आयुकर्म (चउव्विहं) चार प्रकारनुं छे. १२.

हवे नामकर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे.—

नामकम्मं तु दुविहं, सुहं असुहं च आहिअं । सुहस्स य बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥

अर्थ—(नामकम्मं तु) नामकर्म (दुविहं) बे प्रकारनुं (सुहं) शुभ (असुहं च) अने अशुभ (आहिअं) कह्युं छे. तेमां (सुहस्स य) शुभ नामकर्मना (बहू भेया) घणा भेदो छे, (एमेव) ए ज प्रमाणे (असुहस्स वि) अशुभना पण घणा भेदो छे. तेमां शुभ नामना उत्तर भेद अनंत छे तोपण मध्यम विवक्षा करीए तो साडत्रीश भेदो छे, ते आ प्रमाणे—नरगति १, देवगति २, पंचेंद्रिय जाति ३, औदारिकादिक पांच शरीर ८, पहेला त्रण शरीरना अंगोपांग ११, प्रशस्त वर्णादि चार १५, पहेलु संस्थान १६, पहेलुं संहनन १७, मनुष्यानुपूर्वी १८, देवानुपूर्वी १९, अगुरुलघु २०, पराघात २१, उच्छ्वास २२, आतप २३, उद्योत २४, प्रशस्त विहायोगति २५, त्रस २६, बादर २७, पर्याप्त २८, प्रत्येक २९, स्थिर ३०, शुभ ३१, सुभग ३२, सुस्वर ३३, आदेय ३४, यश ३५, निर्माण ३६ अने तीर्थंकर नाम ३७, आ प्रकृतिओ शुभ अनुभाववाळी होवाथी शुभ छे. तथा अशुभ नामना पण मध्यम विवक्षाए करीने चोत्रीश भेद छे, ते आ प्रमाणे.—नरकगति १, तिर्यग्गति २, एकेंद्रियादिक जाति चार ६, पहेला विनाना पांच संहनन ११, पहेला विनाना पांच संस्थान १६, अप्रशस्त वर्ण, गंध, रस, स्पर्श ए चार २०, नरकानुपूर्वी २१, तिर्यगानुपूर्वी २२, उपघात २३, अप्रशस्त विहायो-

अर्थ—(चरित्तमोहण) जेनावडे चारित्रने विषे मोह पमाय ते चारित्रमोहनीय नामनु (कम्म) कर्म (दुविह तु) बे प्रकारनु (विआहिअ) कह्यु छे ते आ प्रमाणे—(कसायवेअणिज्ज तु) क्रोधादिक कषायरूपे जे वेदाय—अनुभवाय ते कषायवेदनीय, (तहेव य) तथा (नोकसाय) कषायना सहचारीओ हास्यादिक नव ते नोकषाय, ते रूपे जे वेदाय ते नोकषायवेदनीय कहेवाय छे १०.

कषाय अने नोकषायना भेदो कहे छे—

सोलसविह भेएण, कम्म तु कसायज । सत्तविह नवविह वा, कम्म नोकसायज ॥ ११ ॥

अर्थ—(कसायज) कषायथी उत्पन्न थयेलु (कम्म तु) कर्म (भेएण) भेदे करीने (सोलसविह) सोळ प्रकारनु छे अने (नोकसायज) नोकषायथी उत्पन्न थयेलु (कम्म) कर्म (सत्तविह) सात प्रकारनु (नवविह वा) अथवा नव प्रकारनु छे तेमां कषाय चार छे—क्रोध, मान, माया अने लोभ ते दरेकना चार चार भेद छे—अनतानुबधी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानावरण अने सज्वलन नोकषाय कर्म सात प्रकारनु आ प्रमाणे छे—हास्य १, रति २, अरति ३, भय ४, शोक ५, जुगुप्सा ६ अने वेद ७ तेमां त्रणे वेदने जूदा गणीए त्यारे हास्यादि छ अने त्रण वेद मळी नव थाय छे ११

हवे आयुष्य कर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे—

नेरइअतिरिक्खाउ, मणुस्साउ तहेव य । देवाउअ चउत्थ तु, आउकम्म चउव्विह ॥ १२ ॥

अर्थ—(मोहणिज्जं पि) मोहनीय कर्म पण (दुविहं) बे प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे—(दंसणे) दर्शनने विषे (चरणे तहा) तथा चारित्रने विषे एटले दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीय. तेमां (दंसणे) दर्शनना–समकितना विषयवाळुं मोहनीय (तिविहं) त्रण प्रकारनुं (वुत्तं) कह्युं छे, अने (चरणे) चारित्रना विषयवाळुं मोहनीय (दुविहं भवे) बे प्रकारनुं छे. ८.

प्रथम दर्शनमोहनीयना त्रण भेद कहे छे—

सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य। एआओ तिण्णि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥

अर्थ—(सम्मत्त) शुद्ध दळीयांरूप समकित मोहनी, तेनो उदय थये सते शुद्ध तत्त्वनी रुचि थाय छे १, (चेव) तथा (मिच्छत्तं) अशुद्ध दळीयांरूपी मिथ्यात्व मोहनी, तेनो उदय थये सते अतत्त्वने विषे तत्त्वनी बुद्धि थाय छे २, (सम्मामिच्छत्तमेव य) तथा शुद्धाशुद्ध दळीयांरूप सम्यग्मिथ्यात्व–मिश्रमोहनी, तेनो उदय थये सते बन्ने प्रकारनो स्वभाव थाय छे. ३ (एआओ) आ (तिण्णि) त्रण (पयडीओ) प्रकृतिओ (मोहणिज्जस्स) मोहनीय संबंधी (दंसणे) दर्शनने विषे एटले दर्शनमोहनीयनी छे. ९.

हवे चारित्रमोहनीयना बे भेद कहे छे.—

चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तु विआहिअं। कसायवेअणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥ १० ॥

पयला य) प्रचलाप्रचला ४, (तत्तो अ) त्यारपछी (थीणगिद्धी उ) स्त्यानगृद्धि अथवा स्त्यानर्द्धि ५, (पचमा) पांचमी (होइ) छे एम (नायव्वा) जाणवु तथा (चक्खुमचक्खुओहिस्स) चक्षु, अचक्षु अने अवधिना (दंसणे) दर्शनने विषे एटले चक्षुदर्शन–चक्षुवडे सामान्य रीते रूपनु ग्रहण ६, अचक्षु एटले चक्षु सिवायना चार इंद्रियो तथा मन वडे तेना विषयनु ग्रहण ते अचक्षुदर्शन ७, अवधिदर्शन ८, (केवले अ) तथा केवळदर्शन ९, आ चारने विषे (आवरणे) आवरण, (एव तु) आ प्रकारे एटले निद्रादिक पांच निद्रा अने चक्षु आदिक चारनु आवरण ए (नवविगप्प) नव प्रकारनु (दसणावरण) दर्शनावरण (नायव्व) जाणवु ५–६

हवे वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे —

वेअणिअ पि अ दुविह, सायमसाय च आहिअ । सायस्स उ बहू भेआ, एमेवासायस्स वि ॥ ७ ॥

अर्थ—(वेअणिअ पि अ) वळी वेदनीय कर्म (दुविह) बे प्रकारनु छे, ते (सायं) सात एटले शरीर अने मन सबधी सुख (असाय च) तथा असात एटले शरीर अने मन सबधी दुःख, (आहिअ) कह्यु छे तेमां (सायस्स उ) सात वेदनीयना (बहू भेआ) घणा भेदो छे, (एमेव) ए ज प्रमाणे (असायस्स वि) असातवेदनीयना पण घणा भेदो छे ७

हवे मोहनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे —

मोहणिज्ज पि दुविह, दसणे चरणे तहा । दसणे तिविह वुत्त, चरणे दुविह भवे ॥ ८ ॥

(तहा) तथा (वेअणिज्जं) वेदनीय ३, (तहा मोहं) तथा मोहनीय ४, (आउकम्मं) आयुकर्म ५, (तहेव य) तथा वळी (नामकम्मं च) नामकर्म ६, (गोत्तं च) गोत्रकर्म ७, (अंतरायं तहेव य) तथा वळी अंतराय कर्म ८, (एवं) ए प्रमाणे (एआइं) आ (कम्माइं) कर्मो (अट्ठेव उ) आठ ज (समासओ) संक्षेपथी कह्यां छे. २–३.

हवे ते आठ कर्मनी उत्तर प्रकृतिओ कहे छे—

नाणावरणं पंचविहं, सुअं आभिणिबोहिअं। ओहिनाणं तइयं, मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥

अर्थ—(नाणावरणं) ज्ञानावरणीय कर्म (पंचविहं) पांच प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे—(सुअं) श्रुत एटले श्रुतज्ञानावरण १, (आभिणिबोहिअं) आभिनिबोधिक एटले मतिज्ञानावरण २, (ओहिनाणं) अवधिज्ञानावरण ए (तइयं) त्रीजुं छे ३, (मणनाणं) मनःपर्यायज्ञानावरण ४, (च) अने (केवलं) केवळज्ञानावरण ५. आ पांच ज्ञानावरणीय कर्मनी उत्तर प्रकृति छे. ४.

हवे दर्शनावरणनी उत्तर प्रकृतिओ कहे छे—

निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा य पयलपयला य। तत्तो अ थीणगिद्धी उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥
चक्खुमचक्खुओहिस्स, दंसणे केवले अ आवरणे। एवं तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥६॥

अर्थ—(निद्दा) निद्रा १, (तहेव) तथा (पयला) प्रचला २, (निद्दानिद्दा य) निद्रानिद्रा ३, तथा (पयल-

अथ कर्मप्रकृति नामनु तेत्रीशमु अध्ययन ३३

बत्रीशमा अध्ययनमां प्रमादनां स्थानो कह्यां, ते स्थानोवडे कर्म बधाय छे तेथी आ अध्ययनमां कर्मनु स्वरूप बतावे छे आ सबधथी आवेला आ अध्ययननु आ प्रथम सूत्र छे—

अट्ठ कम्माइ वोच्छामि, आणुपुव्विं जहक्कम ।
जेहिं बद्धो अय जीवो, ससांरे परिअत्तइ ॥ १ ॥

अर्थ—(अट्ठ) आठ (कम्माइ) कर्माने (जहक्कम) अनुक्रमे एटले जेवो क्रम कह्या छे ते प्रमाणे (आणुपुव्विं) परिपाटीए करीने (वोच्छामि) हु कहीश के (जेहिं) जे कर्मोवडे (बद्धो) बधायेलो (अय जीवो) आ जीव (ससार) ससारने विषे (परिअत्तइ) भ्रमण करे छे १

आठ कर्मनां नाम कहे छे—

नाणस्सावरणिज्ज, दसणावरण तहा । वेअणिज्ज तहा मोह, आउकम्म तहेव य ॥ २ ॥
नामकम्म च गोत्त च, अतराय तहेव य । एवमेआइ कम्माइ, अट्ठेव उ समासओ ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाणस्स आवरणिज्ज) ज्ञानने आवरण करनारु एटले ज्ञानावरणीय १, (दसणावरण) दर्शनावरणीय २,

सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को, जं बाहई सययं जंतुमेअं।
दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो, तो होई अच्चंतसुही कयत्थी ॥ ११० ॥

अर्थ—(सो) मोक्षमां गयेलो ते (जं) जे दुःख (एअं जंतुं) आ संसारना जीवने (सययं) निरंतर (बाहई) पीडा उपजावे छे, (तस्स सव्वस्स दुहस्स) ते सर्व दुःखथी (मुक्को) मुक्त थाय छे, तथा (दीहामयविप्पमुक्को) दीर्घस्थितिवाळा कर्मरूपी व्याधिथी मुक्त थाय छे, अने तेथी करीने (पसत्थो) प्रशंसाने लायक थाय छे, (तो) अने त्यारपछी एटले कर्मव्याधिवडे मुक्त थवाथी (अच्चंतसुही) अत्यंत सुखी अने (कयत्थी) कृतार्थ (होइ) थाय छे. ११०. हवे आ अध्ययनने समाप्त करे छे—

अणाईकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो।
वियाहिओ जं समुवेच्च सत्ता, कमेण अच्चंतसुही हवंति त्ति बेमि ॥ १११ ॥

अर्थ—(एसो) आ आखा अध्ययनमां कह्यो ते (अणाइकालप्पभवस्स) अनादिकाळथी उत्पन्न थयेला (सव्वस्स दुक्खस्स) सर्व दुःखना (पमोक्खमग्गो) मोक्षनो मार्ग (वियाहिओ) तीर्थंकरोए कह्यो छे, के (जं) जे मार्गने (समुवेच्च) सम्यक् प्रकारे पामीने (सत्ता) प्राणीओ (कमेण) अनुक्रमे उत्तरोत्तर गुणस्थानने पामी (अच्चंतसुही) अत्यंत सुखी (हवंति) थाय छे. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. १११.

॥ इति द्वात्रिंशत्तममध्ययनम् ॥ ३२.

जेणे एवा पुरुषनी जेवो थयो थको (णाणावरण) ज्ञानावरण-ज्ञानावरणीय कर्मने, (तहेव) तथा (ज) जे कर्म (दसण आवरेइ) दर्शनने आवरे छे ते दर्शनावरणीय कर्मने, (ज च) तथा जे कर्म (अंतराय) दानादिकना अंतरायने (पकरेइ) करे छे, ते (कम्म) कर्मने एटले अंतराय कर्मने (खणेण) एक क्षणमां ज (खवेइ) खपावे छे १०८

ते कर्मानो क्षय थवाथी कयो गुण प्राप्त थाय छे ? ते कहे छे—

सव्वं तओ जाणइ पासई अ, अमोहणे होई निरंतराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥ १०९ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले ज्ञानावरणीयादिक कर्मनो क्षय थयेथी (सव्व) सर्वने (जाणइ) विशेष प्रकारे जाणे छे, (पासइ अ) सामान्य प्रकारे जुए छे अर्थात् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थाय छे तथा (अमोहणे) मोह रहित, (निरंतराए) अंतराय रहित अने (अणासवे) कर्मबंधना हेतुरूप जे हिंसादिक आश्रवो तेणे करीने रहित एवो (होइ) थाय छे त्यारपछी (झाणसमाहिजुत्ते) शुक्लध्यानवडे जे समाधि एटले अत्यंत स्वस्थता तेणे करीने युक्त एवो सतो (आउक्खए) आयुष्यनो अने उपलक्षणथी नाम, गोत्र, तथा वेदनीय कर्मनो क्षय थये सते (सुद्धे) शुद्ध-कर्ममळ रहित एवो ते (मोक्ख उवेइ) मोक्षने पामे छे १०९

मोक्षमां गयेलो ते केवो थाय छे ? ते कहे छे—

एवं ससंकप्पविकप्पणासु, संजायए समयमुवट्ठिअस्स ।
अत्थे अ संकप्पयओ तओ से, पहीअए कामगुणेसु तण्हा ॥ १०७ ॥

अर्थ—(एवं) आ प्रकारे (ससंकप्पविकप्पणासु) पोताना संकल्प एटले राग, द्वेष अने मोहरूप अध्यवसाय, तेनी विकल्पनाने विषे एटले रागादिक ज समग्र दोषनुं मूळ कारण छे एवी भावनाने विषे (उवट्ठिअस्स) उद्यमवंत थयेला (अत्थे अ) तथा अर्थने एटले रूपादिक इंद्रियोना विषयोने (संकप्पयओ) " आ विषयो कांइ कर्मबंधना हेतु नथी, परंतु रागद्वेषादिक कर्मबंधना हेतु छे " एम संकल्प करता–चिंतवन करता एवा पुरुषने (समयं) समता एटले मध्यस्थता (संजायए) उत्पन्न थाय छे. अने (तओ) ते समताथी (से) तेनी (कामगुणेसु तण्हा) कामभोग संबंधी तृष्णा (पहीअए) क्षीण थाय छे. १०७,

त्यारपछी ते शुं करे छे ? ते कहे छे.—

से वीअरागो कयसव्वकिच्चो, खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ, जं चंतरायं पकरेइ कम्मं ॥ १०८ ॥

अर्थ—(स) ते तृष्णा रहित पुरुष (वीअरागो) वीतराग थाय छे, कारण के तृष्णा एटले लोभ, तेनो क्षय थवाथी क्षीणमोह गुणस्थानक प्राप्त थाय छे. तेथी ते वीतराग थइ शके छे, तथा ते पुरुष (कयसव्वकिच्चो) कर्यां छे सर्व कृत्यो

रूपी चोरने वश थयेलाने (मोहमहण्णवम्मि) मोहरूपी महासागरने विषे (निमज्जिउ) डुबाववा माटे (दुक्खविणोअणट्ठा) मानी लीधेला दु खना विनाशने अर्थे (पओअणाइ) विषयसेवा अने हिंसा विगेरे प्रयोजनो (जायति) उत्पन्न थाय छे. अर्थात् सुखनी इच्छाथी दु:खनो नाश करवा माटे विषयसेवादिकमां प्रवर्ते छे परतु ते तो उलटां दुःखनां ज कारण छे तेथी करीने (तप्पच्चय) ते विषयसेवादिकने निमित्ते (रागी) रागी अने उपलक्षणथी द्वेषी एवो सत्वो ज (उज्जमए अ) उद्यम करे छे कारण के राग द्वेष ज समग्र अनर्थना हेतु छे. १०५

राग द्वेष ज अनर्थना हेतु केम छे ? ते उपर कहे छे —

विरज्जमाणस्स य इंदिअत्था, सद्दाइया तावइअप्पयारा ।
न तस्स सव्वेऽवि मणुण्णय वा, निव्वत्तयती अमणुण्णय वा ॥ १०६ ॥

अर्थ—(तावइअप्पयारा) जेटला प्रकारो खर मृदु विगेरे पूर्वे कहेला छे तेटला प्रकारना (सद्दाइआ) शब्दादिक–शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्श ए (सव्वेऽवि) सर्व (इंदिअत्था) इंद्रियोना विषयो (विरज्जमाणस्स य) राग रहित तथा उपलक्षणथी द्वेष रहित एवा (तस्स) ते पुरुषने (मणुण्णय वा) मनोज्ञपणु के (अमणुण्णय वा) अमनोज्ञपणु कांइ पण (न निव्वत्तयती) उत्पन्न करता नथी अर्थात् जे रागद्वेष रहित होय तेने विषयो शु करी शके ? १०६.

आ प्रमाणे रागद्वेषना तथा तेना उपादान कारणरूप मोहना उद्धारनो उपाय कह्यो हवे तेनो उपसहार–समाप्ति करे छे

फरीने बीजी रीते रागने उद्धार करवाना उपायने अने तेथी विपरीत वर्तवाथी थता दोषने कहे छे.—

कप्पं न इच्छेज्ज सहायलिच्छू, पच्छाणुतावेण तवप्पभावं ।
एवं विआरे अमिअप्पयारे, आवज्जई इंदियचोरवस्से ॥ १०४ ॥

अर्थ—साधु (सहायलिच्छू) " आ शिष्य मारुं विश्रामणादिक कार्य करशे " ए प्रमाणे विचारी (कप्पं) वैयावच्च करवामां समर्थ एवा पण शिष्यने (न इच्छेज्ज) न इच्छे, तो पछी अकल्प—असमर्थने तो शानो ज इच्छे ? तेमज (पच्छाणुतावेण) दीक्षा ग्रहण कर्या पछी " में आवुं कष्ट शामाटे अंगीकार कर्युं ? " इत्यादिक पश्चात्तापे करीने अथवा बीजा कोइ कारणथी (तवप्पभावं) तपना प्रभावने एटले आलोकमां ज आमर्षौषध्यादिक लब्धिने अने परलोकमां भोगादिकने पण न इच्छे. कारण के (एवं) आ प्रकारे इच्छवाथी (इंदियचोरवस्से) इंद्रियोरूपी चोरने वश थयेलो साधु (अमिअप्पयारे) घणा प्रकारना (विआरे) विकारोने—दोषोने (आवज्जई) पामे छे. १०४.

आ ज विषयने दृढ करवा माटे विकारोथी बीजा दोषोनी उत्पत्ति कहे छे.—

तओ से जायंति पओअणाइं, निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोअणट्ठा, तप्पच्चयं उज्जमए अ रागी ॥ १०५ ॥

अर्थ—(तओ) कषाय अने वेदादिकनी प्राप्ति थया पछी (सुहेसिणो) सुखनी इच्छावाळा (से) तेने एटले इंद्रियो-

केवा प्रकारनी विकृतिने पामे छे ? ते कहे छे —

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं दुगुंछं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगं पुमित्थिवेअं, नपुंसवेअं विविहे अ भावे ॥ १०२ ॥
आवज्जई एवमणेगरूवे, एवविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने अ एअप्पभवे विसेसे, कारुणदीणे हिरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥

अर्थ—(कोहं च) क्रोधने, (माणं च) मानने, (तहेव) तथा (मायं) मायाने, (लोभं) लोभने, (दुगुंछं) दुगच्छाने–जुगुप्साने, (अरइं) अरतिने, (रइं च) रतिने, (हासं) हास्यने, (भयं) भयने, (सोगं) शोकने, (पुमित्थिवेअं) पुरुषवेदने, स्त्रीवेदने, (नपुंसवेअं) नपुंसकवेदने, (विविहे अ) तथा विविध प्रकारना हर्ष शोकादिक (भावे)भावोने (एवं) आ रीते (अणेगरूवे) अनेक भेदवाळा (एवविहे) आवा प्रकारना विकारोने (कामगुणेसु) कामगुणने विषे (सत्तो) आसक्त थयेलो अने उपलक्षणथी द्विष्ट थयेलो प्राणी (आवज्जई) पामे छे तथा (कारुणदीणे) करुणा करवा लायक दीन एटले अत्यंत दीन, (हिरिमे) लज्जावान अने (वइस्से) द्वेष पाम्यो सतो ते प्राणी (अन्ने अ) बीजा पण (एअप्पभवे) ते क्रोधादिकथी उत्पन्न थता (विसेसे) परिताप अने दुर्गतिपात विगेरेरूप विशेषोने पामे छे १०२–१०३

(किंचि) मन के शरीर संबंधी कांइ पण (थोवं पि) थोडुं पण (दुक्खं) दुःख (कयाइ) कदापि (न करिंति) करता नथी. १००.

अहीं कोइ शंका करे के—काम भोग विद्यमान सते कोइ पण मनुष्य वीतराग संभवतो नथी, तो तेने दुःखनो अभाव शी रीते थाय ? आनो उत्तर आपे छे.—

न कामभोगा समयं उविंति, न यावि भोगा विगइं उविंति ।
जे तप्पओसी अ परिग्गही अ, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥ १०१ ॥

अर्थ—(कामभोगा) कामभोग पोते (समयं) समताने एटले रागद्वेषना अभावने (न उविंति) पामता नथी अर्थात् कामभोग पोते रागद्वेषना अभाव प्रत्ये कारणरूप थता नथी. जो तेम थतुं होय तो तो कोइ पण प्राणी रागद्वेषवाळो होय ज नहीं. (यावि) तेम ज वळी (भोगा) कामभोग पोते (विगइं) क्रोधादिक विकृति प्रत्ये पण (न उविंति) पामता नथी—कारणरूप थता नथी. जो कदाच केवळ कामभोगो ज क्रोधादिक विकारना कारण होय तो कोइ पण प्राणी रागद्वेष रहित थाय ज नहीं. त्यारे तेनो हेतु कोण छे ? ते कहे छे.—(जे) जे माणस (तप्पओसी अ) ते विषयो उपर द्वेषवाळो तथा (परिग्गही अ) परिग्रहनी बुद्धिवाळो एटले रागवाळो होय, (सो) ते मनुष्य (तेसु) ते विषयो उपर (मोहा) मोहथी एटले रागद्वेषरूपी मोहनीय कर्मथी (विगइं उवेइ) क्रोधादिक विकृतिने पामे छे. अर्थात् जे रागद्वेष रहित होय ते ज समताने पामे छे. १०१.

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलास ॥ ९९ ॥ ६ ॥

अर्थ—भावने विषे विरक्त एटले इष्ट एवी मनोज्ञ वस्तुने विषे राग रहित तथा अनिष्ट एवी अमनोज्ञ वस्तुने विषे द्वेष रहित एवो मनुष्य संसारने विषे रहेतो सतो पण रागद्वेषरूपी कारणना अभावथी शोक रहित सतो उपर कहेली दुःखना समूहनी परंपराए करीने जेम पुष्करणीमां रहेलु कमळनु पत्र पाणीवडे लेपातु नथी तेम लेपातो नथी ९९

(उपर प्रमाणे पांच इद्रिओ तथा मन संबंधी ७८ गाथाओनो अर्थ बराबर समजी लेवो)

आ ज अर्थने संक्षेपथी कहे छे —

एविंदियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेऊं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं, न वीयरागस्स करिंति किंचि ॥ १०० ॥

अर्थ—(एव) आ प्रमाणे (इदियत्था य) इद्रियोना रूपादिक विषयो तथा (मणस्स अत्था) मनना स्मरणादिक विषयो तथा उपलक्षणथी इद्रियो अने मन पोते पण (रागिणो) रागी अने उपलक्षणथी द्वेषी एवा (मणुअस्स) मनुष्यने (दुक्खस्स) दुःखना (हेऊ) हेतुरूप थाय छे अने (ते चेव) ते ज विषयो (वीअरागस्स) रागद्वेष रहित एवा पुरुषने

अर्थ—पोतानो अभिप्राय-पोतानी इच्छा सिद्ध करवा-पूर्ण करवा माटे अदत्तनुं पण ग्रहण करे छे. ९४.

तण्हाभिभूयस्स अदत्ताहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ९५ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥ ९७ ॥
एमेव भावम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ९८ ॥

अर्थ—(भावम्मि पओसं गओ) भावने विषे प्रद्वेष पामेलो एटले अनिष्ट वस्तुनुं स्मरण थाय त्यारे ते विचारे के-" आ वस्तुनुं नाम पण मने न सांभरो. " इत्यादिक विचारी तेनापर द्वेष पामे छे. ९८.

अर्थ—अहीं (अतालिसे) अतादृशे एटले तेवा प्रकारना रुचिर न होय एवा (भावे) भावने विषे एटले भावना विषयवाळी वस्तुने विषे " हमणां मने आ अनिष्ट वस्तुनु स्मरण केम थयु ? " इत्यादिक विचारी तेना पर द्वेष पामे छे ९१

भावाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥

अर्थ—" आ औषधवडे हु वशीकरण करु, आ औषधवडे सुवर्णसिद्धि करु, आ औषधिवडे पुत्र थशे " इत्यादि चिंतवन करी अनेक प्रकारना चराचर जीवोनी हिंसा करे छे अथवा " मारा चित्तनी पीडा नाश पामो अने मन प्रसन्न रहो " इत्यादिक विचारी होम विगेरेमां प्रवृत्त थइ अनेक चराचर जीवोनी हिंसा करे छे ९२

भावाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कह सुह से, सभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ९३ ॥
भावे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ९४ ॥

भावे सु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गा वहिए व्व नागे ॥ ८९ ॥

अर्थ—(कामगुणेसु गिद्धे) कामगुणने विषे लुब्ध थयेलो (नागे) हाथी (व्व) जेम (करेणुमग्गावहिए) हाथणीना मार्गे अपहृत एटले आकर्षण करायो सतो नाश पामे छे तेम. एटले के मदोन्मत्त एवो हाथी पासे रहेली हाथणीने जोइ तेना संगममां उत्सुक थइ तेनी पाछळ मार्गमां दोडे छे तेटलामां राजादिक सुभटो ते हाथीने पकडी ले छे. त्यारपछी युद्धादिकमां ते हाथी विनाश पामे छे. जो के आ दृष्टांतमां चक्षु आदिक इंद्रियोना वशथी ज हाथी हाथणीनी पाछळ प्रवृत्ति करे छे एम कही शकाय तो पण अहीं मननुं प्रधानपणुं कहेवानी इच्छा होवाथी भावनो विषय जाणवो. अथवा तथाप्रकारनी कामांध दशामां इंद्रियोनो व्यापार होतो नथी, केवळ मन ज प्रवर्ते छे, तेथी मननी ज प्रवृत्ति कहेवामां कांइ दोष नथी. ८९.

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि भावं अवरज्झई से ॥ ९० ॥
एगंतरत्तो रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥

मणस्स भाव गहण वयति, त रागहेउ तु मणुणमाहु ।
त दोसहेउ अमणुणमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ८७ ॥

अर्थ—(भाव) भावने एटले स्मरणादिकना विषयवाळा अभिप्रायने (मणस्स) मननो (गहण) ग्राहक-ग्रहण करनार (वयति) कह्यो छे, (तु) तु पुन (मणुण) मनोज्ञ एटले सुदर रूपादिकना विषयवाळा एवा (त) ते भावने (रागहेउ) रागना हेतुरूप (आहु) कह्यो छे, तथा (अमणुण) अमनोज्ञ एवा (त) ते भावने (दोसहेउ) द्वेषना हेतुरूप (आहु) कह्या छे, (अ) तथा (जो) जे माणस (तेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ रूपादिकना विषयवाळा ते बन्ने प्रकारना भावने विषे (समो) समान होय (स) ते माणसने (वीअरागो) वीतराग एटले राग रहित तथा उपलक्षणथी द्वेष रहित जाणवो आ ज प्रमाणे हवे पछीनां सूत्रोनो पण भावना विषयरूप रूपादिकनी अपेक्षाए ज अर्थ करवो अथवा स्वप्न अने कामनी दशामा रूपादिकना विषयवाळो जे भाव थाय छे, ते मननो ग्राहक छे, कारणके ते अवस्थामां केवळ मननो ज व्यापार होय छे अथवा मनने इष्ट एवा धन, स्वजन, आरोग्य, पुत्र, राज्य विगेरेना सयोग सबधी अने अनिष्ट एवा रोग, शत्रु, चोर, दारिद्र्य विगेरेना वियोग सबधी चिंतवनरूप भाव अहीं जाणवो ते भाव इष्ट वस्तु मेळववा सबधी होय तो ते मनोज्ञ छे अने अनिष्ट वस्तुना त्याग सबधी होय तो ते अमनोज्ञ छे ८७

भावस्स मण गहण वयति, मणस्स भाव गहण वयति ।
रागस्स हेउ समणुणमाहु, दोसस्स हेउ अमणुणमाहु ॥ ८८ ॥

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे अ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ८२ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥
फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥ ८४ ॥
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥ ५ ॥

हवे मनरूप नोइंद्रिय विषे कहे छे.—

एगतरत्तो रुइरसि फासे, अतालिसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥
फासाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेहि बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ७९ ॥

अर्थ—अहीं शुभ स्पर्शवाळा मृगादिकनां चर्म, पुष्प, वस्त्र विगेरेनो संग्रह करवा माटे तथा स्त्रीसेवनादिकमां प्रवर्ततो मनुष्य चराचर जीवोने हणे छे ७९

फासाणुवाएण य परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कह सुह से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ८० ॥
फासे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ८१ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त ते शुभ स्पर्शवाळां वस्त्र, तळाइ विगेरेने ग्रहण करे छे–चोरे छ एम जाणवु ८१

कायस्स फासं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुण्णमाहु ॥
तं दोसहेउं अमणुण्णमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ७४ ॥
फासस्स कायं गहणं वयंति, कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुण्णमाहु. दोसस्स हेउं अमणुण्णमाहु ॥ ७५ ॥
फासस्स जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिअं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीअजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे व रण्णे ॥ ७६ ॥

अर्थ—(व) जेम (रण्णे) अरण्यमां (सीअजलावसन्ने) शीतळ जळमां एटले जळाशयमां मग्न थयेलो (महिसे) पाडो (गाहग्गहीए) ग्राह नामना जळचरोए ग्रहण कर्यो सतो विनाशने पामे छे तेम. कदाच ग्राम विगेरेनी समीपे जळाशयमां पड्यो होय तो कदाच कोइ मनुष्य तेने ग्राहथी छोडावी पण शके, तेथी अहीं अरण्य शब्द लख्यो छे के ज्यां तेने छोडावनार कोइ पण मळी शके नही. ७६.

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि फासं अवरज्झई से ॥ ७७ ॥

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, रसे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ६९ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरते ।
एव अदत्ताणि समाययतो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥
रसाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्ख ॥ ७१ ॥
एमेव रसम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ७२ ॥
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि सतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलास ॥ ७३ ॥ ४ ॥

हवे स्पर्श इंद्रिय विषे कहे छे —

एगंतरत्तो रुइरे रसम्मि, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६५ ॥

रसाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरुकिलिट्ठे ॥ ६६ ॥

अर्थ—अहीं जिन्हा इंद्रिय माटे भक्षण करवा सारु मृग, पशु, मत्स्य, पक्षी विगेरे चर–त्रस अने कंद, मूळ, फळ विगेरे अचर–स्थावर जीवोनी हिंसा करे छे एम जाणवुं. ६६.

रसाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहिं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ६७ ॥

रसे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ६८ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त खांड, खाजां, फळ विगेरे रसवाळी वस्तुओ ग्रहण करे छे एम जाणवुं.

हवे जिन्हा इंद्रिय विषे कहे छे—

जीहाए रस गहण वयति, त रागहेउ तु मणुण्णमाहु ।
त दोसहेउ अमणुण्णमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ६१ ॥
रसस्स जिब्भ गहण वयति, जिब्भाए रस गहण वयति ।
रागस्स हेउ समणुण्णमाहु, दोसस्स हेउ अमणुण्णमाहु ॥ ६२ ॥
रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व, अकालिअ पावइ से विणास ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (आमिसभोगगिद्धे) मांसना स्वादमां लुब्ध एवो (मच्छे) मत्स्य (बडिसविभिन्नकाए) जेना अग्रभागपर मांस राखेलु होय छे तेवा बडिशवडे जेनी काया भेदाय-वींधाय छे एवो सतो विनाश पामे छे ६३

जे आवि दोस समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ॥
दुद्दतदोसेण सएण जतू, न किंचि रस्स अवरज्झई से ॥ ६४ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त वस्तु सुगंधी तेल, कस्तूरि, पुष्प विगेरे जाणवी. ५५

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, गंधे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ५६ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ५७ ॥
गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ॥ ५८ ॥
एमेव गंधम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ५९ ॥
गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥ ३ ॥

जे यावि दोस समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दतदोसेण सएण जतू, न किंचि गध अवरुज्झई से ॥ ५१ ॥
एगतरत्तो रुइरसि गधे, अतालिसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥
गधाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ५३ ॥

अर्थ—अहीं कस्तूरि विगेरेने माटे चर–त्रस जीवनी अने पुष्पादिकने माटे अचर–स्थावर जीवनी हिंसा करवामां आवे छे ५३

गधाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहिं सुह से, सभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ५४ ॥
गधे अतित्तो अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ५५ ॥

सद्दे विरत्तो मणुश्रो विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ४७ ॥ २ ॥

हवे घ्राण इंद्रिय विषे कहे छे.—

घाणस्स गंधं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं श्रमणुन्नमाहु, समो श्र जो तेसु स वीश्ररागो ॥ ४८ ॥
गंधस्स घाणं गहणं वयंति, घाणस्स गंधं गहणं वयंति ।
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं श्रमणुन्नमाहु ॥ ४९ ॥
गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, श्रकालिश्रं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहिगंधगिद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते ॥ ५० ॥

अर्थ—(ओसहिगंधगिद्धे) नागदमनी आदिक ओषधिना गंधमां गृद्धि पामेलो (सप्पे विव) सर्प जेम (विलाओ) पोताना विलमांथी (निक्खमंते) निकळतो सतो नाश पामे छे. कारण के ते औषधिना गंधनी उपेक्षा करवामां अशक्त एवो सर्प विलमांथी पराधीनपणे बहार नीकळे छे, पछी गारुडादिकने आधीन थइ दुःखने पामे छे. ५०

सद्दे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ४२ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त ग्रहण करवानु कह्यु ते आ प्रमाणे-सारु गीत गानारी दासी विगेरेने तथा सारा ध्वनिवाळा वीणा वासळी विगेरे वाजित्रने चोरी ले छे, इत्यादि समजवु ४२

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरते ।
एव अदत्ताणि समाययतो, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥
सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्ख ॥ ४५ ॥
एमेव सद्दम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ४६ ॥

पामे छे. तेम—बाकी उपर प्रमाणे. ३७.

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥ ३८ ॥

एगंतरत्तो रुइरंसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥

सद्दाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिँ ते परितावेइ वाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ४० ॥

अर्थ—अहीं चराचर जीवनी हिंसा कही ते आ प्रमाणे—वाजित्रना उपयोगमां लेवा माटे स्नायु—नसो अने चामडा माटे चर एटले त्रस जीवोनी अने वांसळी, मृदंग विगेरेना काष्ठादिक माटे अचर एटले स्थावर जीवोनी हिंसा करवामां आवे छे. ४०.

सद्दाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहिं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ४१ ॥

रिणीपलास) कमलिनीनु पांदडु (जलेण) जळवडे लेपातु नथी तेम ३४.

आ प्रमाणे चक्षुने आश्रीने तेर सूत्रो व्याख्यान सहित कह्यां हवे ए ज रीते बाकीनां चार इंद्रियो तथा मनना विषय वाळा पण तेर तेर सूत्रो कहे छे, तेनु व्याख्यान उपर प्रमाणे करी लेवु तेमां जेटलो विशेष हशे, ते ज मात्र कहेशे.—

सोअस्स सद्द गहण वयंति, त रागहेउ तु मणुण्णमाहु ।
त दोसहेउ अमणुण्णमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ३५ ॥

अर्थ—(सद्द) शब्दने (सोअस्स) श्रोत्रनु (गहण) ग्राहक-आकर्षक (वयति) कहे छे इत्यादि पूर्ववत् ३५

सद्दस्स सोअ गहण वयंति, सोअस्स सद्द गहण वयंति ।
रागस्स हेउ समणुण्णमाहु, दोसस्स हेउ अमणुण्णमाहु ॥ ३६ ॥
सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व, अकालिअ पावइ से विणास ।
रागाउरे हरिणमिए व्व मुद्धे, सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चु ॥ ३७ ॥

अर्थ—(रागाउरे) रागातुर अने (मुद्धे) मुग्ध एटले हिताहितने नहीं जाणनो एवो (हरिणमिए व्व) हरिण रूपी पशु जेम (सद्दे) शब्दने विषे एटले शीकारीना गीतने विषे (अतित्ते) अतृप्त थयो सतो (मच्चु) मृत्युने (महुवइ)

एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥

अर्थ—(एमेव) एज रीते एटले राग पामेलानी जेम (रूवम्मि) खराब रूपने विषे (पओसं) प्रद्वेषने (गओ) पामेलो प्राणी (दुक्खोहपरंपराओ) दुःखना समूहनी परंपराने (उवेइ) पामे छे. (अ) तथा (पदुट्ठचित्तो) प्रद्वेषवाळुं छे चित्त जेनुं एवो ते प्राणी (कम्मं) कर्मने (चिणाइ) उपार्जन करे छे, (जं) जेथी करीने (से) ते प्राणीने (विवागे) ते कर्मना विपाक वखते (पुणो) फरीथी (दुहं) दुःख (होइ) थाय छे. अशुभ कर्मनुं उपार्जन हिंसादिक आश्रव विना थइ शकतुं नथी तेथी द्वेष पण आश्रवनो हेतु छे एम सूचव्युं छे. ३३.

आ प्रमाणे राग द्वेषनो उद्धार न करवाथी थता दोष कह्या, हवे तेमनो उद्धार करवाथी जे गुण थाय छे ते कहे छे.—

रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥ १ ॥

अर्थ—(रूवे) रूपने विषे (विरत्तो) राग रहित तथा उपलक्षणथी द्वेष रहित एवो (मणुओ) मनुष्य (भवमज्झेऽवि संतो) संसारनी मध्ये रहेतो सतो पण (विसोगो) रागद्वेषरूपी कारणना अभावथी शोक रहित सतो (एएण) आ उपर कहेली (दुक्खोहपरंपरेण) दुःखना समूहनी परपराए करीने (न लिप्पई) लेपातो नथी. (वा) जेम (पुक्ख-

रीते दु खी थयो थको (दुरत) दुष्ट छे अत–परिणाम जेनु एवो थाय छे एटले के आ भवमा अनेक विडंबना पामे छे अने परभवमां नरकादिकने पामे छे (एव) आ प्रकारे (अदत्ताणि) अदत्त वस्तुन (समाययंतो) ग्रहण करतो तथा (रूवे अतित्तो) रूपने विषे अतृप्त एवो ते (अणिस्सो) निश्रा रहित होवाथी एटल कोइना आधार रहित होवाथी (दुहिओ) दु खी थाय छे आ अदत्तादानना उपलक्षणथी मैथुन आश्रव पण जाणी लेवो ३१.

कहेला ज अर्थने समाप्त करे छे —

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥ ३२ ॥

अर्थ—(एव) ए प्रकारे (रूवाणुरत्तस्स) रूपने विषे आसक्त थयेला (नरस्स) मनुष्यने (कयाइ) कदापि (किंचि) कांइ पण (सुह) सुख (कत्तो) क्यांथी (होज्ज) होय ? कारण के (तत्थ) ते रूपानुरागने विषे (उवभोगेऽवि) उपभोग करती वखते पण (किलेसदुक्ख) अतृप्ति रूपी क्लेशथी उत्पन्न थतु दु ख ज थाय छे, के (जस्स कएण) जे उपभोगने माटे पोते (दुक्ख) दु खने (निव्वत्तई) उत्पन्न करे छे जो उपभोगने माटे वस्तु मेळवतां क्लेश करवो पडे तो ते दु ख ज छे, अने जो तेना उपभोग वखते पण दुःख ज छे तो पछी क्यारे सुख थाय? कदापि न थाय ३२

आ प्रमाणे राग अनर्थनु कारण छे एम कह्यु, हवे द्वेष पण अनर्थनु कारण छे एम बताववा माटे भलामण करे छे —

(वड्ढइ) वृद्धि पामे छे. अर्थात् लोभी माणस परधनने ग्रहण करे छे अने पछी तेने गोपववा माटे मायामृषा बोले छे, तेथी करीने लोभ ज सर्व आश्रवोनुं मूळ कारण छे एम सिद्ध थयुं. अहीं रागनो प्रस्ताव छतां पण जे लोभनो विषय कह्यो ते रागमां पण लोभरूप अंशनुं अतिदुष्टपणुं जणाववा माटे कहेल छे. अहीं कोइ शंका करे के मायामृषा बोलवामां शो दोष ? ते उपर कहे छे.—(तत्थावि) तेमां पण एटले मृषा भाषणथी पण (से) ते माणस (दुक्खा) दुःखथी (न विमुच्चई) मुक्त थतो नथी–दुःखी ज थाय छे. ३०.

मृषा भाषण करवाथी शी रीते दुःखी थाय छे ? ते कहे छे.—

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥

अर्थ—(मोसस्स) मृषा वचननी (पच्छा य) पछी एटले मृषावचन बोल्या पछी तथा (पुरत्थओ अ) पहेलां तथा (पओगकाले अ) प्रयोगने वखते एटले मृषा बोलती वखते (दुही) दुःखी सतो एटले मृषावाद बोल्या पछी " में बराबर युक्ति पूर्वक वचन कह्युं छे के नहीं ? कोइने तेनी खबर पडशे तो शुं थशे ? " इत्यादि विचार थवाथी दुःखी थाय छे, तथा मृषावाद बोल्या पहेलां " आ वस्तुना स्वामीने मारे कइ रीते छेतरवो ? " इत्यादि चिंता थवाथी दुःखी थाय छे, तथा मृषावाद बोलतो वखते " मारा असत्य वचनने आ जाणी जशे के केम ? " इत्यादि चिंताथी दुःखी थाय छे. आ

त्यारपछी तेने अन्य अन्य दोषो प्राप्त थाय छे, ते कहे छे —

रूवे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥

अर्थ—(रूवे) प्रशस्तरूपने विषे (अतित्ते अ) अतृप्त अने (परिग्गहे अ) विषयनी मूर्छारूप परिग्रहने विषे (सत्तोवसत्तो) सक्त एटले सामान्य आसक्तिवाळो अने उपसक्त एटले गाढ आसक्तिवाळो सतो (तुट्ठिं) तुष्टिने (न उवेइ) पामतो नथी अने (अतुट्ठिदोसेण) अतुष्टिरूप दोषवडे करीने (दुही) " मने आ वस्तु मळे तो ठीक " एम विचारीने दुःखी एवो अने (लोभाविले) लोभथी कलुष थयेलो एवो ते (परस्स) परना (अदत्त) अदत्तने एटले नहीं आपेली रूपवाळी वस्तुने पण (आययई) ग्रहण करे छे २९ त्यारपछी —

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ३० ॥

अर्थ—(तण्हाभिभूअस्स) तृष्णावडे एटले लोभवडे पराभव पामेला, तेथी करीने ज (अदत्तहारिणो) अदत्तने हरण करता (अ) तथा (रूवे) प्रशस्तरूपना विषयवाळा (परिग्गहे) मूर्छारूप परिग्रहने विषे (अतित्तस्स) तृप्ति रहित एवा ते मनुष्यने (लोभदोसा) लोभना दोषथी (मायामुस) मायामृषा एटले माया प्रधान एवु असत्य वचन पण

सावधान अने (किलिट्ठे) रागवडे क्लिष्ट परिणामवाळो ते (पीलेइ) ते जीवोने पीडा उपजावे छे. २७. तथा—

रूवाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसंनियोगे ।
वए विओगे अ कहिं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ २८ ॥

अर्थ—(रूवाणुवाए ण) प्रशस्त रूपने विषे अनुपात एटले अनुराग सते (परिग्गहेण) मूर्छारूप परिग्रहने लीधे (उप्पायणे) प्रशस्तरूपवाळी वस्तु उपार्जन करवामां तथा (रक्खणसन्नियोगे) नाशथी तेनुं रक्षण करवामां, संनियोग एटले स्वपरना प्रयोजनने सम्यक् प्रकारे तेनो उपयोग करवामां तेमज (वए) व्यय एटले तेना विनाशमां, (विओगे अ) तथा ते वस्तुना वियोगमां (से) ते मनुष्यने (कहिं सुहं) सुख क्यांथी होय ? एटले के प्रशस्तरूपवाळा स्त्री, हाथी, घोडा अने वस्त्रादिकना उपार्जन विगेरे करवाने अर्थे ते ते क्लेशवाळा उपायोमां प्रवृत्ति करवाथी ते दुःखने ज अनुभवे छे. अहीं कोइ शंका करे के–" प्रशस्तरूपवाळी वस्तु उपार्जन करवी ए विगेरेमां भले सुख न थाय, परंतु भोगवती वखते तो सुख थशे." ते उपर कहे छे के–(संभोगकाले अ) भोगवती वखते पण (अतित्तिलाभे) तृप्तिनी प्राप्ति नहीं थवाथी क्यांथी सुख थाय ? कह्युं छे के–" कामी जनोना कामो भोगववाथी शांत थता नथी, परंतु उलटा इंधनवडे अग्निनी जेम वृद्धि ज पामे छे." तेथी अधिकाधिक इच्छा थवाथी रागी पुरुष काम भोगवता छतां पण खेदने ज पामे छे, सुखी थतो नथी. २८.

एगंतरत्तो रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ २६ ॥

अर्थ—(रुइरंसि) रुचिर एटले मनोहर एवा (रूवे) रूपने विषे (एगंतरत्तो) जे एकांत रागी होय (से) ते (अतालिसे) अतादृश एटले तेवा प्रकारना मनोहर न होय एवा रूपने विषे (पओसं) प्रद्वेषने (कुणई) करे छे, तथा (बाले) मूढ एवो ते (दुक्खस्स) दु खना (संपील) समूहने (उवेइ) पामे छे परतु (तेण) ते द्वेषथी थता दु खे करीने (विरागो) राग रहित (मुणी) मुनि (न लिप्पई) लेपाता नथी २६

हवे राग ज हिंसादिक आश्रवनो हेतु छे अने तेनाथी आ भवमां पण दु ख उत्पन्न थाय छे ते वात छ गाथावडे कहे छे—

रूवाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ २७ ॥

अर्थ—(रूवाणुगासाणुगए अ) प्रशस्त रूपना विषयवाळी आशाने अनुसरतो मनुष्य (अणेगरूवे) अनेक प्रकारना (चराचरे) त्रस अने स्थावर (जीवे) जीवोने (हिंसइ) हणे छे, तथा (बाले) मूढ एवो ते (चित्तेहि) नाना प्रकारना उपायोवडे (ते) ते त्रस स्थावर जीवोने (परितावेइ) परिताप उपजावे छे, तथा (अत्तट्ठगुरू) पोताना ज प्रयोजनमां

अर्थ—(रूवेसु) रूपने विषे (जो) जे मनुष्य (गिद्धिं) रागने (उवेइ) पामे छे, (से) ते (अकालिअं) अकाळे थयेला (तिव्वं) तीव्र (विणासं) विनाशने (पावइ) पामे छे, (जह वा) जेम (आलोअलोले) आलोकने विषे लोल एटले अतिस्निग्ध दीपशिखा जोवामां लंपट एवो (से) ते (पयंगे) पतंग (रागाउरे) रागातुर सतो (मच्चुं) मृत्युने (समुवेइ) पामे छे. २४.

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसिं क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥ २५ ॥

अर्थ—(य) तथा (जे) जे प्राणी रूपने विषे (तिव्वं) तीव्र (दोसं) द्वेषने (समुवेइ) पामे छे, (से उ) ते (जंतू) प्राणी (तंसि खणे वि) ते ज समये पण (सएण) पोताना (दुद्दंतदोसेण) दुर्दांतपणाना दोषे करीने एटले इंद्रियने दमन न करवुं ते रूपी दोषे करीने (दुक्खं) दुःखने (उवेइ) पामे छे, परंतु (रूवं) रूप जे ते (से) तेनो—जोनारनो (किंचि) कांइ पण (न अवरज्झई) अपराध करतुं नथी. जो रूप ज दुःख आपवानो हेतु होय तो वीतरागने पण ते दुःख आपी शके, तेम तो छे नहीं. तेथी पोताना ज दोषथी प्राणी दुःख पामे छे, ए वात सिद्ध छे. २५.

आ प्रमाणे राग अने द्वेष अनर्थना हेतु छे एम कह्युं. हवे द्वेष पण रागने लइने ज थतो होवाथी राग महा अनर्थनुं मूळ छे एम देखाडवा पूर्वक तेनो विशेषे करीने त्याग करवानुं कहे छे—

कारण न थयु, तो चक्षुनो निग्रह शा माटे करवो जोइए ? आवी शंकाने दूर करवा कहे छे—

रूवस्स चक्खु गहणं वयंति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ २३ ॥

अर्थ—(चक्खु) चक्षुने (रूवस्स) रूपनु (गहण) ग्रहण करनार (वयति) कहे छे एटले रूपने ग्रहण करनार चक्षु छे अने (रूव) रूपने (चक्खुस्स) चक्षुनु (गहण) ग्राह्य (वयति) कहे छे एटले चक्षुवडे रूप ग्रहण कराय छे एम कहे छे आम कहेवाथी रूप अने चक्षु ए बन्ने परस्पर ग्राह्य पण छे अने ग्राहक पण छे, एम सिद्ध थयुं तेथी करीने जेम रूप रागद्वेषनु कारण छे तेम चक्षु पण रागद्वेषनु कारण छे, तेज कारण माटे कहे छे के—(रागस्स) रागना (हेउ) कारणरूप चक्षुने (समणुण्ण) मनोज्ञ एवा रूपनी साथे वर्तनारु होवाथी समनोज्ञ (आहु) कह्यु छे, अने (दोसस्स) द्वेषना (हेउ) हेतुरूप चक्षुने (अमणुण्ण) मनोज्ञ एवा रूपनी साथे वर्तनारु नहीं होवाथी अमनोज्ञ (आहु) कह्यु छे आ कारणथी चक्षुनो निग्रह करवो ते योग्य छे २३

आ प्रमाणे रागद्वेषना उद्धारनो उपाय कहीने हवे तेनो उद्धार न करवामां दोष बतावे छे—

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिअं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोअलोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥

आ प्रमाणे रागद्वेपनो उद्धार करवा माटे विपयो थकी इंद्रियोनी निवृत्ति करवानुं कह्युं. हवे विपयोमां इंद्रियोने प्रवर्तावमां अने रागद्वेपनो उद्धार नहीं करवामां जे दोप छे, ते प्रत्येक इंद्रियने तथा मनने आश्री अहोतेर गाथावडे बतावे छे. तेमां प्रथम एक चक्षु इंद्रियने आश्री तेर गाथा कहे छे.—

चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुण्णमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुण्णमाहु, समो उ जो तेसु स वीअराओ ॥ २२ ॥

अर्थ—(रूवं) रूपने (चक्खुस्स) चक्षुनुं (गहणं) ग्राहक—आकर्पक (वयंति) तीर्थंकरो कहे छे. (तं) ते रूप (रागहेउं तु) रागना हेतुरूप होवाथी (मणुण्णं आहु) मनोज्ञ कह्युं छे एटले जे रूपने जोइ राग उत्पन्न थाय ते रूप मनोज्ञ कहेवाय छे अने (तं) ते रूप (दोसहेउं) द्वेपना हेतुरूप थतुं छतुं (अमणुण्णं आहु) अमनोज्ञ कह्युं छे एटले जे रूप जोइ द्वेप थाय ते रूप अमनोज्ञ कहेवाय छे. (उ) तु पुनः (जो) जे मनुष्य (तेसु) ते मनोज्ञ अने अमनोज्ञ रूपने विपे (समो) समान एटले रागद्वेप रहित होय (स) ते (वीअराओ) वीतराग अने उपलक्षणथी वीतद्वेप छे. अहीं तात्पर्य ए छे जे प्रथम तो मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एवा कोइ पण रूप उपर चक्षुने प्रवर्तावबुं ज नहीं, छतां कदाच प्रवृत्ति थइ जाय तो तेने विपे समदृष्टि राखवी. २२.

अहीं कोइ शंका करे के—आ रीते तो एटले रूप ज चक्षुनुं आकर्पक होय तो रूप ज रागद्वेपनुं कारण थयुं, चक्षु

य) वर्णवडे तथा चशब्दथी गधादिकवडे (मणोरमा) मनोहर लागे छे, परतु (ते) ते फळो (पचमाणा) पचे त्यारे एटले विपाक अवस्थाने पामे त्यारे (जीविअ) जीवितनो (खुद्दए) भूको करे छे–विनाश करे छे, तेज रीते (कामगुणा) कामगुणो पण (विवागे) विपाकने विषे–परिणामे (एओवमा) ए उपमावाळा छे एटले किंपाकना फळ जेवा ज छे २०

आ प्रमाणे केवळ रागना ज उद्धारनो उपाय बताव्यो हवे राग अने द्वेष बन्नेना उद्धारनो उपाय बतावे छे —

जे इंदिआण विसया मणुण्णा, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुण्णेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ २१ ॥

अर्थ—(समाहिकामे) राग द्वेषना विनाशरूप समाधिनी इच्छावाळा, (समण) चारित्रनी क्रियामां श्रम करनार अने (तवस्सी) तप करनार एवो साधु (जे) जे (इंदिआण) इंद्रियोना (विसया) विषयो (मणुण्णा) मनोज्ञ छे, (तेसु) तेने विषे (कयाइ) कदापि (भाव) अभिप्रायने पण (न निसिरे) न करे, तो पछी विषयोने विषे इंद्रियोनु प्रवर्तन तो क्यांथी ज करे (य) तथा (अमणुण्णेसु) अमनोज्ञ विषयोने विषे (मण पि) मनने पण (न कुज्जा) न करे, तो पछी प्रवर्तन तो क्याथी ज करे अर्थात् मनोज्ञ विषयो उपर रागवाळु मन न करे अने अमनोज्ञ विषयो उपर द्वेषवाळु मन न करे २१

नदी पण (भवे) सुखे उतरी शकाय तेवी थाय छे. १८.

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइअं माणसिअं च किंचि, तस्संतगं गच्छइ वीअरागो ॥ १९ ॥

अर्थ—(सदेवगस्स) देव सहित एवा (सव्वस्स) सर्व (लोगस्स) लोकने (कामाणुगिद्धिप्पभवं खु) विषयोनी अभिलाषाथी उत्पन्न थयेलुं ज (दुक्खं) दुःख होय छे. (जं) जे (काइअं) काया संबंधी व्याधि विगेरेनुं (माणसिअं च) अने मनसंबंधी इष्टवियोगादिकनुं (किंचि) जे कांइ पण दुःख छे, (तस्स) तेना (अंतगं) अंतने (वीअरागो) वीतराग एटले विषयनी लोलुपता रहित मनुष्य ज (गच्छइ) पामे छे. १९.

अहीं कोइ शंका करे के—काम तो सुखरूप ज छे, तो तेनाथी उत्पन्न थयेलुं दुःख केम कही शकाय ? आ शंकानो उत्तर आपे छे.—

जहा य किंपागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुद्दए जीविअ पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥ २० ॥

अर्थ—(जहा य) जेम (किंपागफला) किंपाकना फळो (भुज्जमाणा) खाती वखते (रसेण) रसवडे अने (वण्णेण

ए ज वातने दृढ करवा माटे स्त्रीओनु दुरतिक्रमपणु बतावे छे —

मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिस दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

अर्थ—(मोक्खाभिकंखिस्स वि) मोक्षनी अभिलाषावाळा, (संसारभीरुस्स) संसारथी भय पामनारा अने (धम्मे) धर्मने विषे (ठियस्स) रहेला एवा (माणवस्स) मनुष्यने पण (जहा) जे प्रकारे (बालमणोहराओ) मूर्खजनने मनोहर लागे तेवी (इत्थिओ) स्त्रीओ दुस्तर छे, (एयारिस) एवा प्रकारनु (लोए) आ लोकमां बीजु कोइ (दुत्तर) दुस्तर (न अत्थि) नथी १७

स्त्रीनो संग नहीं करवाथी थता गुणने कहे छे —

एए अ संगे समइक्कमित्ता, सुहुत्तरा चेव हवंति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गंगासमाणा ॥ १८ ॥

अर्थ—(एए अ) आ स्त्रीना विषयवाळा (संगे) संगने (समइक्कमित्ता) ओळंगीने पछी (सेसा) बाकीना बीजा धनादिकना संगो (सुहुत्तरा चेव) सुखे तरी शकाय-ओळंगी शकाय एवा ज (हवंति) थाय छे. ते उपर दृष्टांत आपे छे के—(जहा) जेम (महासागर) मोटा समुद्रने (उत्तरित्ता) उतरी गया पछी (गंगासमाणा) गंगा जेवी (नई अवि)

चेव) न जोवुं ते ज, (अपत्थणं च) तेनी प्रार्थना न करवी ते, (अचिंतणं चेव) तेनुं चिंतवन न करवुं ते, तथा (अकित्तणं च) तेना नामनुं कीर्तन न करवुं ते, आ सर्व (आरियझाणजुग्गं) आर्य एटले धर्मादिक ध्यानने योग्य छे, तथा (सया) सदा (हिअं) हितकारक छे. १५.

अहीं कोइ शंका करे के—विकारनो हेतु छतां पण जेओ विकार न पामे, ते ज धीर कहेवाय छे, तो शा माटे विविक्त स्थान सेववुं ? आ प्रश्ननो उत्तर आपे छे —

कामं तु देवीहिं विभूसिआहिं, न चाइआ खोभइउं तिगुत्ता ।
तहावि एगंतहिअं ति नच्चा, विवित्तभावो मुणिणं पसत्थो ॥ १६॥

अर्थ—(कामं तु) आ तो सर्वने अनुमत ज छे के—(तिगुत्ता) त्रण गुप्तिवाळा मुनिओने (विभूसिआहिं) अलंकारादिकवडे विभूषित थयेली (देवीहिं) देवीओ पण (खोभइउं) क्षोभ पमाडवाने (न चाइआ) शक्तिमान थइ शकती नथी, तो मनुष्यनी स्त्रीओ शी रीते क्षोभ पमाडी शके ? (तहावि) तो पण (एगंतहिअं) एकांतमां रहेवुं ते हितकारक छे (ति) एम (नच्चा) जाणीने (मुणिणं) मुनिओने (विवित्तभावो) विविक्तपणुं एटले विविक्तस्थाने रहेवुं ते (पसत्थो) प्रशस्त छे. स्त्री आदिकना संगथी प्राये योगीओ पण क्षोभ पामे छे. कदाच क्षोभ न पामे तो पण अवर्णवाद आदि दोषने तो पामे ज छे. तेथी एकांतमां रहेवुं ते ज कल्याणकारक छे. १६.

पडकादिकना निवासस्थाननी (मज्झे) मध्ये (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारीनो (निवासो) निवास (खमो न) योग्य नथी १३

विविक्त उपाश्रयमां पण कदापि स्त्रीनु आगमन थाय, त्यारे शु करवु ? ते कहे छ —

न रूवलावण्णविलासहास, न जंपिअं इंगिअं पेहिअं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठु ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥

अर्थ—(समणे) चारित्र क्रियामां श्रम लेनारा (तवस्सी) तपस्वी साधु (इत्थीण) स्त्रीओना (रूवलावण्णविलासहास) रूप-सारु सस्थान, लावण्य-सुदरता, विलास-मनोहर वेषनी रचना अने हास्य, तेने (चित्तसि) मनमां (निवेसइत्ता) स्थापन करीने-राखीने (दट्ठु) जोवाने माटे (न ववस्से) अध्यवसाय-उद्यम न करे (वा) अथवा स्त्रीओना (जपिअ) वचनने, (इगिअ) इंगितने एटले अगने मरडवु विगेरे चेष्टाने तथा (पेहिअ) प्रेक्षितने एटले कटाक्षवाळी दृष्टिने (न) जोवानो उद्यम न करे १४

आवो उपदेश आपवानु कारण कहे छे.—

अदसण चेव अपत्थण च, अचितण चेव अकित्तण च ।
इत्थीजणस्साऽऽरियझाणजुग्ग, हिअ सया बंभचेरे रयाण ॥ १५ ॥

अर्थ—(बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (रयाण) आसक्त थयेला साधुओने (इत्थीजणस्स) स्त्रीजननी सन्मुख (अदसण

ब्रह्मचारीने (हिआय) हितने माटे (न) थतो नथी. ११.

वळी वीजुं—

विवित्तसेज्जासणजंतिआणं, ओमासणाणं दमिइंदिआणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥ १२ ॥

अर्थ—(विवित्तसेज्जासणजंतिआणं) विविक्त एटले स्त्री आदि रहित शय्या एटले उपाश्रयमां रहेवावडे नियंत्रित, (ओमासणाणं) ओछुं भोजन करनारा अने (दमिइंदिआणं) इंद्रियोनुं दमन करनारा साधुओना (चित्तं) चित्तने (रागसत्तू) रागरूपी शत्रु (न धरिसेइ) पराभव करी शकतो नथी. कोनी जेम ? ते कहे छे—(ओसहेहिं) औषधवडे (पराइओ) पराजय करेलो (वाहिरिव) व्याधि जेम शरीरने पराभव करी शकतो नथी तेम. १२.

विविक्त उपाश्रय न होय तो तेथी थता दोषने कहे छे.—

जहा बिरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥

अर्थ—(जहा) जेम (बिरालावसहस्स) बिलाडाना निवासस्थाननी (मूले) समीपे (मूसगाणं) उंदरनो (वसही) निवास (पसत्था न) प्रशस्त-कल्याणकारक नथी, (एमेव) ए ज प्रमाणे (इत्थीनिलयस्स) स्त्री अने उपलक्षणथी

ते ज कहे छे —

रसा पगामं न निसेविअव्वा, पाय रसा दित्तिकरा नराण ।
दित्त च कामा समभिद्दवंति, दुम जहा सादुफल व पक्खी ॥ १० ॥

अर्थ—(रसा) रसो एटले दूध विगेरे विगइ (पगाम) अत्यत एटले जरा पण (न निसेविअव्वा) सेववा लायक नथी कारण के (पाय) प्राये करीने (रसा) रसो (नराण) पुरुषोने तथा उपलक्षणथी स्त्रीओने पण (दित्तिकरा) दृप्ति-मद करनारा छे, (दित्त च) अने दृप्तिवाळा मनुष्यने (कामा) विषयो (समभिद्दवंति) पराभव करे छे कोनी जेम ? ते कहे छे —(जहा) जेम (सादुफल) स्वादिष्ट फळवाळा (दुम) वृक्षने (पक्खी व) पक्षीओ जेम पराभव करे छे तेम अहीं वृक्ष जेवा पुरुष-मनुष्य छे, स्वादिष्ट फळ जेवु दृप्तपणु छे अने पक्षी जेवा विषयो छे १०

जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविंदिअग्गी वि पगामभोइणो, न बंभयारिस्स हिआय कस्सइ ॥ ११ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (पउरिंधण) घणा इंधणावाळा (वणे) वनमां (समारुओ) वायु सहित एवो (दवग्गी) दावानळ (उवसम) शांतिने (न उवेइ) पामतो नथी, (एव) ए ज प्रमाणे (इंदिअग्गी वि) इंद्रिय एटले इंद्रियथी उत्पन्न थयेलो राग, ते रूपी अग्नि पण (पगामभोइणो) अति आहार करनारा (कस्सइ) कोइ पण (बंभयारिस्स)

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥

अर्थ—(जस्स) जेने (मोहो) मोह (न होइ) नथी होतो, तेणे (दुक्खं) दुःख (हयं) हण्युं छे (जस्स) जेने (तण्हा) तृष्णा (न होइ) नथी, तेणे (मोहो) मोह (हओ) हण्यो छे, (जस्स) जेने (लोहो) लोभ (न होइ) नथी, तेणे (तण्हा) तृष्णा (हया) हणी छे, अने (जस्स) जेने (किंचणाइं) कांइ पण धन (न) नथी तेणे (लोहो) लोभने (हओ) हण्यो छे एम जाणवुं. ८.

अहीं कोइ शंका करे के—दुःखना हेतु मोहादिक कह्या, ते ठीक छे, परंतु ते मोहादिकना नाशनो उपाय पूर्वे कह्यो ते ज छे के बीजा पण कोइ उपाय छे ? ए शंका दूर करवा माटे विस्तारथी तेना नाशना उपाय बतावे छे.—

रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥

अर्थ—(रागं च) रागने, (दोसं च) द्वेषने (तहेव) तथा वळी (मोहं) मोहने (समूलजालं) तीव्र कषायादिक अने विषयादिक मूळना समूह सहित (उद्धत्तुकामेण) उखेडवाने इच्छनारे (जे जे उवाया) जे जे उपायो (पडिवज्जियव्वा) अंगीकार करवाना छे, (ते) ते उपायो (अहाणुपुव्विं) अनुक्रमे (कित्तइस्सामि) हुं कहीश—कहुं छुं. ९.

मोहनु स्थान (तण्हा) तृष्णा छे (च तण्हाययण) अने तृष्णानु स्थान (मोह) मोह छे एम (वयति) पडितो कहे छे तृष्णा एटले छती के अछती वस्तु उपरनी मूर्छा, ते मूर्छा रागप्रधान होय छे तथी ते तृष्णावडे राग लइ शकाय छे, अने ज्यां राग होय त्यां अवश्य द्वेष पण होय छे, तेथी तृष्णा शब्दे करीने राग अने द्वेष ए बन्ने कहेवाय छे हवे ते रागद्वेष उत्कट होय तो उपशातमोह गुणठाणा सुधी पहोंचेला पण मिथ्यात्व गुणठाणे जाय छे, तेथी तृष्णा शब्दवडे अज्ञानादिक मोह सिद्ध थाय छे आ गाथामां परस्पर हेतु हेतुमद्भाव कहेवाथी मोहादिकनी उत्पत्तिनो प्रकार कह्यो छे ६

हवे ते मोहादिक जे रीते दु खना हतु छे, ते कहे छे —

रागो य दोसो वि य कम्मवीय, कम्म च मोहप्पभव वयति ।
कम्म च जाईमरणस्स मूल, दुक्ख च जाईमरण वयति ॥ ७ ॥

अर्थ—(रागो य) राग अने (दोसो वि य) द्वेष पण (कम्मवीय) ज्ञानावरणादिक कर्मनु कारण छे, तेथी करीने ज (कम्म च) कर्मने (मोहप्पभव) मोहथी उत्पन्न थयेलु (वयति) कहे छे (कम्म च) तथा कर्म (जाईमरणस्स) जन्म अने मरणनु (मूल) कारण छे, (च) अने (जाईमरण) जन्म ने मरण ए ज (दुक्ख) दु ख छे—दुःखनु कारण छे एम (वयति) पडितो कहे छे ७

तेथी करीने—

ण वा लभिज्जा निउणं सहायं, गुणाहिअं वा गुणओ समं वा ।
एक्कोऽवि पावाइँ विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

अर्थ—(वा) जो कदाच (गुणाहिअं वा) पोताथी अधिक गुणवान अथवा (गुणओ समं वा) गुणे करीने पोतानी समान एटले समान गुणवाळो (निउणं) निपुण (सहायं) सहाय–शिष्य (ण लभिज्जा) न पामे तो (एक्कोऽवि) पोते एकलो पण (पावाइं) पापने एटले पापना हेतुभूत अशुभ अनुष्ठानने (विवज्जयंतो) वर्जतो थको तथा (कामेसु) इंद्रियोना विषयोने विषे (असज्जमाणो) आसक्ति रहित थयो थको (विहरिज्ज) विचरे. ५.

आ प्रमाणे दुःखना नाशनो उपाय ज्ञानादिक छे ते प्रसंग सहित कह्युं. हवे ज्ञानादिकनो प्रतिबंध करनार अने दुःखना हेतुरूप जे मोहादिक छे तेनी जे प्रमाणे उत्पत्ति थाय छे, जे प्रकारे ते दुःखना हेतुरूप छे, जे प्रकारे तेनो क्षय थाय छे अने जे प्रकारे तेना क्षयथी दुःखनो क्षय थाय छे, ते कहे छे.—

जहा य अंडप्पभवा बलागा, अंडं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं च तण्हाययणं वयंति ॥ ६ ॥

अर्थ—(जहा य) जेम (अंडप्पभवा) इंडाथी उत्पन्न थयेली (बलागा) बगली–पक्षिणी होय छे, (जहा य) अने जेम (बलागप्पभवं) बगलीथी उत्पन्न थयेलुं (अंडं) इंडुं होय छे, (एमेव) ए ज रीते (खु) निश्चे (मोहाययणं)

अर्थ—(तस्स) तेना एटले मोचना उपायभूत ज्ञानादिकनो (एस) आ (मग्गो) मार्ग–उपाय छे–(गुरुविद्धसेवा) सद्गुरु अने वृद्ध एटले स्थविर तेनी सेवा, तथा (बालजणस्स) पासत्थादिक अज्ञानी जननो (दूरा) दूरथी (विवज्जणा) त्याग, तथा (सज्झायएगंतनिसेवणा य) स्वाध्यायनी एकांतपणे सेवा, तथा (सुत्तत्थसंचिंतणया) सूत्र अने अर्थनुं चिंतवन, (धिई य) तथा धृति एटले मननी स्वस्थता धृति विना ज्ञानादिक प्राप्त थता नथी ३

जो ज्ञानादिक मेळववाना उपाय आवा प्रकारना छे तो तेनी इच्छावाळाए प्रथम शुं करवुं जोइए ? ते कहे छे —

आहारमिच्छे मिअमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणट्ठबुद्धिं ।
निकेअमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥

अर्थ—(समाहिकामे) समाधि एटले ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना लाभने इच्छनार, (समणे) क्रियानुष्ठानादिकमा श्रम करनार अने (तवस्सी) षष्ठाष्टमादिक तप करनार साधु (मिअं) परिमित अने (एसणिज्जं) एषणीय—निर्दोष एवा (आहार) आहारने (इच्छे) इच्छे तथा (निउणट्ठबुद्धिं) अर्थोने विषे एटले जीवादिक तत्त्वोने विषे निपुण छे बुद्धि जेनी एवा (सहाय) सहायने–शिष्यने (इच्छे) इच्छे, तथा (विवेगजोग) विवेकवडे योग्य एटले स्त्री, पशु, पंडकादिक रहित एवा (निकेअं) उपाश्रयने (इच्छेज्ज) इच्छे ४

तेवा प्रकारनो सहायक—शिष्य न मळे तो शुं करवुं ? ते कहे छे —

अर्थ—(अच्चंतकालस्स) जेनो काळ अत्यंत एटले आदि रहित छे. तथा (समूलयस्स) जे मूळ—कषाय अविरति विगेरे सहित छे एवा (सव्वस्स) सर्व (दुक्खस्स उ) दुःखनो (जो) जे (पमोक्खो) प्रकर्षे करीने मोक्ष—विनाशरूप छे (तं) ते (एगंतहिअं) एकांत हितकारक वचन (भासओ) कहेता एवा (मे) मारी पासे तमे (हिअत्थं) हितने माटे (पडिपुण्णचित्ता) प्रतिपूर्ण—सावधान चित्तवाळा थया सता (सुणेह) सांभळो. १. ते ज कहे छे.—

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अण्णाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥

अर्थ—(सव्वस्स) सर्व एवा (नाणस्स) मत्यादिक ज्ञानना (पगासणाए) प्रकाशनवडे एटले तेने निर्मळ करवावडे तथा (अण्णाणमोहस्स) मत्यज्ञानादिक अज्ञानमोह एटले दर्शनमोहनीय कर्म तेना (विवज्जणाए) वर्जवावडे तथा (रागस्स) राग (दोसस्स य) अने द्वेषना (संखएणं) क्षयवडे (एगंतसोक्खं) एकांत सुखवाळा (मोक्खं) मोक्षने (समुवेइ) पामे छे. अर्थात् अनुक्रमे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रवडे मोक्ष प्राप्त थाय छे. ए त्रणे एकत्र थयेला मोक्षनो उपाय छे अने मोक्ष विना दुःखनो सर्वथा क्षय नथी. २.

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगंतनिसेवणा य, सुत्तत्थसंचिंतणया धिई य ॥ ३ ॥

हवे अध्ययनने समाप्त करे छे—

इइ एएसु ठाणेसु, जो भिक्खू जयई सया । से खिप्प सव्वससारा, विप्पमुच्चइ पडिए त्ति बेमि ॥२१॥

अर्थ—(इइ) आ प्रमाणे (एएसु ठाणेसु) आ कहेला स्थानोने विषे (जो भिक्खू) जे साधु (सया जयई) नित्य यत्न करे, (से) ते (पडिए) पडित (खिप्प) शीघ्र (सव्वससारा) सर्व ससारथी (विप्पमुच्चइ) मुक्त थाय छे (त्ति बेमि) एम हु कहु छु ए प्रमाणे सुधर्मास्वामी जबू स्वामीने कहे छे

इत्येकत्रिंशमध्ययनम् ३१

अथ प्रमादस्थान नामनु बत्रीशमु अध्ययन ३२

उपरना अध्ययनमा चारित्र कह्यु ते चारित्र प्रमादना स्थान त्याग करवाथी ज सेवी शकाय छे तेथी साधुए प्रमादनो त्याग करवो जोइए प्रमादनो त्याग प्रथम तेनु ज्ञान थया पछी थइ शके छे तेथी तेने माटे आ अध्ययननो प्रारभ करे छे —

अच्चतकालस्स समूलयस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
त भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगतहिअ हिअत्थ ॥ १ ॥

समये गुरु बोलावे त्यारे जागता छतां उत्तर न आपे १२, बोलाववा लायक श्रावकने गुरुए बोलाव्या पहेलां पोते बोलावे १३, आहारादिक लावीने प्रथम बीजा साधुओ पासे आलोची पछी गुरुनी पासे आलोचे १४, ए ज रीते प्रथम बीजाने देखाडी पछी गुरुने देखाडे १५, गुरुनी पहेलां बीजाओने आहार माटे निमंत्रण करे १६, गुरुने पूछ्या विना बीजा साधुओने तेमनी इच्छा प्रमाणे घणो आहार आपी दे १७, पोते सारो मारो आहार ग्रहण करे १८, दिवसे पण गुरु बोलावे ते सांभळ्या छतां उत्तर न आपे १९, गुरु प्रत्ये कठोर वचन बोले २०, गुरु बोलावे त्यारे पोते जे ठेकाणे रह्यो होय त्यां बेठो बेठो ज उत्तर आपे २१, गुरु बोलावे त्यारे 'शुं कहो छो ?' एम बहुमान रहित बोले २२, गुरुने तुंकारो करे २३, गुरु कहे के—"आ ग्लान साधुनी वैयावच्च केम करतो नथी ?" त्यारे पोते सामो कहे के "तमे केम करता नथी ?" इत्यादि उत्तर आपे २४, गुरु कथा कहेता होय ते वखते पोतानुं मन सारुं न राखे-तेनी अनुमोदना न करे २५, गुरु कोइने सूत्रादिकनो अर्थ कहेता होय ते वखते "तमने सांभरतुं नथी, आनो अर्थ तो आवो छे" इत्यादिक वचे बोले २६, गुरु कथा करता होय त्यारे वचमां पोते आगळ आगळ कहेवा लागे २७, गुरु देशना देता होय ते वखते "भिक्षादिकनो अवसर थयो छे" एम कही गुरुनी पर्षदानो भंग करे २८, पर्षदा बेठी होय ते ज वखते गुरुए कहेलो ज अर्थ पोतानी कुशळता देखाडवा माटे पोते विस्तारथी कहे २९, गुरुना संथारा विगेरेने पोताना पगनो संघट्टो करे ३०, गुरुना संथारापर बेसे अथवा सुवे ३१, गुरुथी उंचा आसने बेसे ३२, तथा गुरुनी समान आसन पर बेसे सुवे विगेरे ३३. आ सर्व आशातना तजवानी छे २०.

बीजा पासे प्रकाश करवी नहा २, सर्व साधुआए आपत्तिमा धर्मनी विशेप दृढता करवी ३, आलोक अथवा परलोकना फळनी अपेक्षा विना तपस्या करवी ४, ग्रहणा अने आसेवना ए बे प्रकारनी शिक्षानु सेवन करवु ५, शरीरनी शुश्रूषा करवी नहीं ६, तप करी बीजाने जणाववो नही ७, लोभनो त्याग करवो ८, परिपहादिकनो पराजय करवो ९, आर्जव राखवु १०, सयमन विप निर्मळता–निरतिचारता राखवी ११, समकितने शुद्ध करवु १२, चित्तनी समाधि राखवी १३, आचार पाळवामा माया न करवी १४ विनयमा उपयोग राखी माननो त्याग करवा १५, धृतिमा बुद्धि राखवी १६, सवेगमा तत्पर रहेवु १७, पोताना दोप ढाकवा माटे जे माया करवी ते प्रणिधि कहेवाय छे, तेनो त्याग करवो १८, सारी रीते सर्व विधि करवी १९, सवर करवो २०, पोताना दोपनो त्याग करवो २१, सर्व कामथी विरक्त थवानी भावना राखवी २२, मूळगुणनु प्रत्याख्यान करवु २३, उत्तरगुणनु प्रत्याख्यान करवु २४, द्रव्यथी अने भावथी कायोत्सर्ग करवो २५, प्रमादनो त्याग करवो २६, क्षणे क्षणे सामाचारीनी क्रिया करवी २७, ध्यानसवृतपणु एटले आर्त रौद्रनो त्याग करी धर्म अने शुक्ल ध्यानमा आदर करवो २८, मारणातिक परिपह सहन करवा २९, सर्व सगनो त्याग करवो ३०, दोप लाग तेनु प्रायश्चित्त करवु ३१, तथा अत समये आराधना करवी ३२, आ बत्रीश योगनु पालन करवु

तेत्रीश आशातना आ प्रमाणे छे —शिष्ये गुरुनी आगळ-सन्मुख १, पडखे २, अथवा पाछळ ३ अत्यत नजीक चालवु ते आशातना छे, ए ज रीते उभा रहेवु ते आशातना छे ६, ए ज रीत बेसवु ते पण आशातना छे ९, बहिर्भूमिए गयो सतो गुरुनी पहेलां वधेने साधारण एवा जळवडे शौचक्रिया करे १०, गुरुनी पहेलां गमनागमन आलोवे ११, रात्रि

अने कामने विषे गर्दभनी जेवा आसक्त एवा देवोथी शुं ? इत्यादिक कही तेमनो अवर्णवाद बोले. ३०. आ स्थानो त्याग करवामां यत्न करवो. १९. आ ३० क्रियाओ पापना स्थानरूप समजवी.

सिद्धाइगुणजोएसु, तित्तीसासायणासु अ । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ २० ॥

अर्थ—(सिद्धाइगुण) सिद्धना अतिशयवाळा गुणो एकत्रीश छे तेने विषे, तथा (जोएसु) बत्रीश योगसंग्रहने विषे, तथा (तित्तीसासायणासु अ) तेत्रीश आशातनाने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे.

सिद्धना अतिशायी गुणो एकत्रीश आ प्रमाणे छे.—पांच संस्थान, पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श अने त्रण वेद, आ २८ नो अभाव तद्रूप २८ गुण, तथा काय रहित २९, संग रहित ३० अने जन्म रहित ३१. आ एकत्रीश अथवा ज्ञानावरणनी प्रकृति ५, दर्शनावरणनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी दर्शनमोहनी अने चारित्रमोहनी ए २, आयुकर्मनी ४, नामकर्मनी शुभ ने अशुभ २, गोत्रकर्मनी २ अने अंतरायनी ५, आ आठे कर्मनी ३१ प्रकृतिना क्षयरूप एकत्रीश गुण जाणवा. तेने यथार्थ जाणी तेनी श्रद्धा करवा अने ते प्रकृतिओने दूर करवा यत्न करवानो छे.

योग एटले मन, वचन अने कायाना शुभ व्यापार, तेना बत्रीश प्रकारनो संग्रह आ प्रमाणे छे.—शिष्ये प्रशस्त योगना संग्रहने माटे आचार्यने आलोचना संभळाववी १, आचार्ये पण प्रशस्त योगना संग्रहने माटे आलोचना आपीने ते

मोहनीयनां त्रीश स्थानो आ प्रमाणे छे —नदी आदिकना जळमां प्रवेश करी रौद्र अध्यवसायथी त्रस प्राणीनी हिंसा करे १, हाथवडे मुखने बंध करी हृदयमां दुःख सहित रोता बकरा विगेरेने मारे २, वाधी विगेरेवडे मस्तकने बांधीने मारे ३, मुद्गर विगेरेवडे मस्तकमां प्रहार करीने हणे ४, घणा लोकोना नायक अथवा रक्षण करनारने हणे ५, सर्वने साधारण एवा ग्लानादिकनुं छती शक्तिए औषधादिक न करे ६, भिक्षादिक माटे आवेला साधुने अधर्मी होवाथी हणे ७, कुयुक्तिवडे मोह पमाडी पोताने अथवा परने चारित्रधर्मथी भ्रष्ट करे ८, जिनेश्वरना अवर्णवाद बोले ९, आचार्यादिकनी जात्यादिकवडे निंदा करे १०, तेमनी वैयावच्चादिक न करे ११, वारंवार अधिकरणने-कलहने उत्पन्न करी तीर्थनो भेद करे १२, दोषने जाणता छता वशीकरणादिक करे १३, कामभोगनो त्याग कर्या छतां पण आ भव अने परभव संबंधी विषयोनी प्रार्थना करे १४, पोते बहुश्रुत नहीं छता 'हुं बहुश्रुत छुं' एम कहे १५, अतपस्वी छतां 'हुं तपस्वी छुं' एम कहे १६, घर विगेरेमां कोइ माणसने राखी तेमां अग्नि सळगावे १७, पोते अकार्य करी बीजाए कर्यानुं कहे १८, अशुभ मनोयोगवडे घणी माया करी सर्व लोकने छेतरे १९, सत्य बोलनारने 'तुं असत्य बोले छे' एम कही खोटो पाडे २०, निरंतर कलह कर्या करे २१, लोकोने मार्गमां लइ जइ तेनुं वित्त हरण करे २२, अन्यने विश्वास उपजावी तेनी स्त्री प्रत्ये गमन करे २३, पोते कुमार नहीं छता 'हुं कुमार छुं' एम कहे २४, पोते ब्रह्मचारी नहीं छतां 'हुं ब्रह्मचारी छुं' एम कहे २५, जेनाथी ऐश्वर्यने पाम्यो होय तेना ज धनादिकनुं हरण करे २६, जेनां प्रभावथी पोतानो उदय थयो होय तेनाज भोगादिकमां अंतराय करे २७, सेनापति, उपाध्याय, राजा, श्रेष्ठी विगेरेने हणे २८, देवादिकने जोया न होय छतां जोयानुं कहे २९,

भाषा १३, वस्त्रैपणा १४, पात्रैपणा १५, अवग्रहप्रतिमा १६, सप्तकसप्ततिका २३, भावना २४, विमुक्ति २५, उपघात २६, अनुद्घात २७ अने आरुहणा २८. आनी यथार्थ रूपपणामां यत्न करवो. १८.

पावसुयपसंगेसु, मोहट्ठाणेसु चेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १९ ॥

अर्थ—(पावसुयपसंगेसु) पापश्रुतना ओगणत्रीश प्रसंगोने विषे (चेव य) तथा (मोहट्ठाणेसु) मोहना त्रीश स्थानकोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारने विषे (न अच्छइ) न रहे—भ्रमण न करे.

पापश्रुतना ओगणत्रीश प्रसंग आ प्रमाणे.—प्रथम आठ प्रकारनां निमित्त शास्त्र छे ते आ प्रमाणे.—दिव्य एटले व्यंतरना अट्टहासादिकनुं जेमां ज्ञान थाय छे ते १, उत्पात–रुधिरनी वृष्टि विगेरे उत्पातनुं ज्ञान जेमां होय ते २, अंतरिक्ष–ग्रहनो भेद तथा उल्कापात विगेरेनुं जेमां ज्ञान होय ते ३, भौम–भूमिकंपादिकनु ज्ञान जेमां होय ते ४, आंग–अंगना फरकवा विगेरेनुं ज्ञान जेमां होय ते ५. स्वर–षड्ज विगेरे स्वरो तथा पक्षीना स्वर विगेरेनुं ज्ञान जेमां होय ते ६, लक्षण–पुरुष, स्त्री विगेरेना लक्षणोनु ज्ञान जेमां होय ते ७ अने व्यंजन–तल, मसा विगेरेनुं ज्ञान जेमां होय ते ८. आ आठ प्रकारनां शास्त्रो उपर सूत्र, वृत्ति अने वार्तिक ए त्रण त्रण होवाथी २४ भेद थाय छे, तथा गंधर्व २५, नाट्य २६, वास्तुविद्या २७, धनुर्वेद २८ अने आयुर्वेद २९. आ ओगणत्रीश पापशास्त्रो त्याग करवामां मुनिए यत्न करवानो छे. (तेमणे तो मात्र आत्महितकारक शास्त्रो ज वांचवाना छे.)

व्रतनी-शब्द, रस, रूप, गध अने स्पर्श ए पाचे विषयो मनोज्ञ जोइ राग न करवो अने अमनोज्ञ जोइ द्वेष न करवो ए पांच विषयोनी पाच भावना छे कुल पाच महाव्रतनी पचीश भावना भाववामां यत्न करवानो छे

दशाकल्पव्यवहारना छवीश उद्देशा आ प्रमाणे—दशाश्रुतस्कधना उद्देशनकाळ दश छे, बृहत्कल्पना छ छे अने व्यवहारना दश उद्देशन काळ छे कुल मळीने २६ उद्देशानी प्ररूपणा करवामा यत्न करवानो छे १७

अणगारगुणेहि च, पकप्पम्मि तहेव य। जो भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ॥ १८ ॥

अर्थ—(अणगारगुणेहिं च) साधुना सत्तावीश गुणोने विषे (तहेव य) तथा (पकप्पम्मि) प्रकल्पने विषे एटले अठ्ठावीश अध्ययनवाळा आचारागने विषे (जो भिक्खू) जे साधु (निच्च) निरतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मडले) ससारमां (न अच्छइ) न रहे—भ्रमण न करे

साधुना सत्तावीश गुणो आ प्रमाणे —रात्रिभोजन सहित छ महाव्रतो ६, पांच इन्द्रियोनो निरोध ११, भावसत्य १२, करणसत्य १३, क्षमा १४, विरागता १५, मन, वचन, कायानो निरोध १८, छकायनी रक्षा २४, सयमयोगनी रक्षा, २५, परिषह सहन करवा २६ अने मरण पर्यंतना उपसर्गो सहन करवा २७

आचारागना अठ्ठावीश अध्ययन आ प्रमाण —शस्त्रपरिज्ञा १, लोकविजय २, शीतोष्णीय ३, सम्यक्त्व ४, आवति-लोकसार ५, धूताध्ययन ६, विमोच ७, उपधान श्रुत ८, महापरिज्ञा ९, पिंडैषणा १०, शय्या ११, ईर्या १२,

चोवीश देवो आ प्रमाणे.—भवनपति दश, व्यंतर आठ, ज्योतिषी पांच अने वैमानिक एक मळी कुल चोवीश जातिना देवोने अथवा चोवीश तीर्थंकरोने विषे यथार्थ प्ररूपणा करवावडे यतना करवानी छे. १६.

पणवीस भावणाहिं, उद्देसेसु दसाइणं । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १७ ॥

अर्थ—(पणवीस) पचीश (भावणाहिं) भावनाने विषे तथा (दसाइणं) दशादिना एटले दशाकल्पव्यवहारना (उद्देसेसु) छव्वीस उद्देशाने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे-भ्रमण न करे.

पांच महाव्रतनी पचीश भावना आ प्रमाणे छे.—पहेला व्रतनी-इर्यासमिति १, मनगुप्ति २, वचनगुप्ति ३, एषणासमिति ४ अने आदान भांड निक्षेपणासमिति ५. बीजा व्रतनी-विचारीने बोलवुं १, क्रोधनो त्याग २, लोभनो त्याग ३, भयनो त्याग ४ अने हास्यनो त्याग ५. त्रीजा व्रतनी-अवग्रहनी याचना पोते करे १, बीजाने तृणादिकनी आज्ञा आपवी होय तो उपाश्रय देनारना कहेवाथी आपे २, आहार पाणीनो, शयननो अने वेसवा विगेरेनो अवग्रह स्पष्ट रीते अनुज्ञा लइने वापरे ३, साधर्मिक साधुओने माटे पण अवग्रहनी याचना करी पोते स्थानादिक करी आपे. ४. तथा गुरुनी अनुज्ञाथी आहार पाणी वापरे ५. चोथा व्रतनी-स्त्री, पशु, पंडकवाळी वस्तिमां न रहेवुं १, स्त्रीकथानो त्याग २, स्त्रीओनां अवयवो जोवानो त्याग ३, पूर्वे मैथुन के क्रीडा करी होय तेना स्मरणनो त्याग ४ अने प्रणीत भोजननो त्याग ५. पांचमा

मृषावाद बोलवु ते १४ जाणीने अदत्तादान लेवु ते १५ व्यवधान रहित सचित्त पृथ्वी उपर उभा रहेवु, शयन करवु के बेसवु ते १६ स्निग्ध अथवा सचित्त रजवडे व्याप्त एवी पृथ्वीपर, सचित्त शिला विगेरे उपर अथवा घुणादिक जीववाळा काष्ठ विगेरे उपर स्थानादिक करवु ते १७ इडा, इडाळ, त्रस जीव, बीज, लीलवणी के लीलफूल विगेरेवाळा आसनादिक उपर स्थानादिक करवा ते १८ जाणीने कंद, मूळ, पुष्प, फळादिक खावां ते. १९ एक वर्षमा दश वार दकलेप करवा अथवा दश वार माया कपट करवु ते २० जाणी जोइने सचित्त जळादिकथी व्याप्त एवा हस्त के पात्रादिकथी आहार ग्रहण करवो ते २१ आ सर्व शबळ क्रिया वर्जवानी छे तथा बावीश परिषहोने सहन करवाना छे ते परिषहो प्रथम आवी गया छे १५

तेवीसइ सूअगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ १६ ॥

अर्थ—(तेवीसइ) त्रेवीश एटले त्रेवीश अध्ययनवाळा (सूअगडे) सुयगडांगने विषे तथा (रूवाहिएसु) एक अधिक एटले चोवीश (सुरेसु अ) देवोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्च) निरंतर (जयई) यत्न करे (से) ते (मडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे–भ्रमण न करे

सूत्रकृतांगना त्रेवीश अध्ययन आ प्रमाणे छे—पुंडरीक १, क्रियास्थान २ आहारपरिज्ञा ३, प्रत्याख्यानक्रिया ४, अनगारमार्ग ५, आर्द्रकुमार ६, नालंदक ७ तथा बाकीना समयादि सोळ प्रथम कह्यां छे ते मळी कुल त्रेवीश अध्ययन जाणवानां छे

१६. तथा एपणा समिति न पाळवी ते. २०. आ स्थानो तजवानां छे. १४.

इक्कवीसाए सबलेसु, बावीसाए परीसहे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १५ ॥

अर्थ—(इक्कवीसाए) एकवीश (सबलेसु) शबळक्रियाने विपे तथा (बावीसाए) बावीश (परीसहे) परिपहोने विपे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहे नहीं-भ्रमण करे नहीं.

चारित्रने मलिन करनारी क्रियाओ शबळ कहेवाय छे. तेना एकवीश भेद आ प्रमाणे छे.-हस्तकर्म करवुं ते. १. अतिक्रम अने अतिचारवडे मैथुन सेववुं ते. २. रात्रे भोजन करवुं एटले रात्रे ग्रहण करेलुं दिवसे खावुं अथवा दिवसे ग्रहण करेलुं रात्रे खावुं ते. ३. आधाकर्मी भिक्षा ग्रहण करवी ते अथवा हमेशां बे त्रण वार खावुं ते. ४. राजपिंड ग्रहण करवो ते. ५. क्रीत-वेचातो लीधेलो पिंड लेवो ते. ६. प्रामित्य-उधारे लीधेलो आहार लेवो ते. ७. अभ्याहृत-सामो आणेलो आहार लेवो ते. ८. आच्छेद्य-कोइनी पासेथी झुंटवीने लावेलो आहार ग्रहण करवो ते. ९. पच्चख्खाण करेली वस्तु खावी ते. १०. छ मासनी अंदर एक गच्छथी बीजा गच्छमां जवुं ते. ११. एक मासमां त्रण दकलेप करवा ते. तेमां नदी विगेरे उतरतां अर्धी जघा प्रमाण जळ होय तो संघट्ट कहेवाय छे, नाभि प्रमाण होय तो लेप कहेवाय छे अने नाभिथी उपर जळ होय तो लेपोपरि कहेवाय छे. तेथी नाभि प्रमाण जळाशयो एक मासमां त्रण वार उतरवा ते, अथवा एक मासमां त्रण वार पोतानो अपराध ढांकवा माटे माया कपट करवुं ते. १२. जाणी जोइने पृथ्व्यादिक जीव हणवा ते. १३. जाणीने

वीश असमाधिनां स्थानो आ प्रमाणे —द्रुतद्रुतचारित्व—उतावळु उतावळु चालवु ते शीघ्र चालवाथी पोते पडी जाय तो आत्मानी असमाधि थाय, बीजा जीवनो वध थाय तो अन्यने असमाधि थाय अने परलोकमां प्राणीवधना कर्मने लीधे असमाधि थाय आ रीते सर्व स्थानोमां जाणवु १ प्रमार्जन कर्या विनाना स्थानमां बेसवु, उभा रहेवु, सुवु विगेरे करवु ते २ बराबर प्रमार्जन कर्या विना बेसवा विगेरेनी क्रिया करवी ते. आ बे स्थानोमां सर्पादिकवडे पोताने असमाधि थाय छे ३ अतिरिक्त शय्यासन—मोटो उपाश्रय होवाथी बीजा पण साधुओ आवे तेनी साथे कलहादिक थवाथी पोताने अने परने असमाधि थाय ते, तथा पीठ फलकादिक वधारे राखवा ते. ४ रत्नाधिक पराभव—पोताथी मोटा गुणवंतनो पराभव करवो एटले तेनी सामु बोलवु ते. ५ स्थविरपराभव—स्थविर साधुनो पराभव करवो ते. ६ भूतोपघात—प्रमादथी एकेंद्रियादिकनो वध करवो ते. ७ सज्वलन—घणे घणे रोष करवो ते ८ क्रोधन—चिरकाळ सुधी क्रोध करवो ते ९ पृष्ठमांसिक—परोक्षे परनी निंदा करवी ते अथवा अपवाद आपवो ते १० अवधारिणी भाषा—वारंवार 'आ एम ज छे' एवी निश्चयवाळी वाणी बोलवी ते ११ नवाधिकरण करण—अन्य अन्य नवा नवा कलहनी उदीरणा करवी ते १२ उदीरण–शांत थयेला कलहने उदेरी ताजो करवो ते १३. अकाळस्वाध्याय–अकाळे स्वाध्याय करवो ते तेम करवाथी क्षुद्र देवता असमाधि उत्पन्न करे छे १४ सचित्त पृथ्वीनी रजथी खरडायेला हाथवडे भिक्षा ग्रहण करवी ते अथवा रज सहित पगवडे अस्थंडिल भूमिपर जतां पग न प्रमार्जवा ते १५ विकाळे पण मोटा शब्दथी बोलवु ते १६ जेनी तेनी साथे कलह करवो ते १७. झंझ एटले गच्छनो भेद करवो ते १८ सूर्योदयथी आरभी अस्त सुधी छूटे मुखे भोजन करवु ते

अथवा कुशळ मनने न प्रवर्तावधुं ते. १५. वचन असंयम–शुभ वचन न बोलवुं अथवा अशुभ वचननो निरोध न करवो ते. १६. तथा काय असंयम–कार्य वखते उपयोगथी गमनादिक करवुं जोइए अने कार्य न होय त्यारे अंगोपांगने संकोची स्थिर रहेवुं जोइए, ते प्रमाणे न वर्तवुं ते. १७. आ असंयमनो त्याग ए ज सत्तर प्रकारनो संयम छे. १३.

बंभम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु असमाहिए । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१४॥

अर्थ—(बंभम्मि) अढार प्रकारना ब्रह्मचर्यने विषे, ओगणीश ज्ञाताध्ययनने विषे तथा (असमाहिए) असमाधिना (ठाणेसु) वीश स्थानोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे–भ्रमण न करे.

अढार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य आ प्रमाणे.—दिव्य अने औदारिक ए बे प्रकारना कामने–मैथुनने मन, वचन अने कायाए करी करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं नही. एटले बे प्रकारने त्रण योगे गुणतां छ थया, तेने त्रण करणे गुणतां अढार थाय छे. ते अढार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य पाळवानुं छे.

ओगणीश ज्ञाताध्ययन आ प्रमाणे.—उत्क्षिप्त १, संघाड २, अंड ३, कूर्म ४, सेलक ५, तुंब ६, रोहिणी ७, मल्लीनाथ ८, माकंदी ९, चंद्रमा १०, दावद्रव ११, उदक १२, मंडूक १३, तेतलीपुत्र १४, नंदीफळ १५, अपरकंका १६, आकीर्णक १७, सुंसुमार १८ अने पुंडरीक १९. आ अध्ययनो जाणवाना छे.

अर्थ—(गाहासोलसएहिं) जेनु सोळमु अध्ययन गाथा नामनु छे एवा सूत्रकृतांगना प्रथम श्रुतस्कंधना सोळ अध्ययनोने विषे (तहा) तथा (अस्संजमम्मि य) सत्तर प्रकारना असंयमने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्च) निरंतर (जयई) यत्न करे एटले गाथापोडशकमां कह्या प्रमाणे करे अने सत्तर असंयमनो त्याग करे, (से) ते साधु (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहे नहीं—भ्रमण करे नहीं ।१३

गाथापोडशक आ प्रमाणे—समय १, वैतालिक २, उपसर्गपरिज्ञा ३, स्त्रीपरिज्ञा ४, नरकविभक्ति ५, वीरस्तव ६, कुशीलभाषाज्ञा ७, वीतरजा ८, धर्म ९, समाधि १०, मार्ग ११, समवसरण १२, आहतह १३, ग्रंथ १४, संयम १५, अने गाथा १६.

सत्तर प्रकारनो असंयम आ प्रमाणे—पृथ्वीकाय असंयम १, अप्काय असंयम २, अग्निकाय असंयम ३, वायुकाय असंयम ४, वनस्पतिकाय असंयम ५, द्वींद्रिय असंयम ६, त्रींद्रिय असंयम ७, चतुरिंद्रिय असंयम ८, पचेंद्रिय असंयम ९, (आ पृथ्वीकायादि नवनो संघट्टादिक करवाथी हिंसारूप असंयम थाय छे) अजीव असंयम—प्राणीना उपमर्दना हेतुरूप तृणपंचकादिकनु उत्सर्ग मार्गे ग्रहण करवाथी असंयम थाय छे अने अपवाद मार्गे ग्रहण कर्या छतां पण यतना नहीं करवाथी असंयम थाय छे १० प्रेक्षा असंयम—चक्षुवडे जोया विना क्रिया करवी ते ११ उपेक्षा असंयम—चारित्रक्रियामां सीदाता साधुने प्रेरणा न करवी अथवा गृहस्थीने तेना व्यावहारिक कार्यमां प्रेरणा करवी ते १२ प्रमार्जना असंयम—सागारिकनी (श्रावकनी) समक्ष पग न धोवा, तेनी परोक्षमां धोवा, ए रीते न वर्तवु ते १३ परिष्ठापना असंयम—दोषवाळा आहारने तथा विष्ठा—मूत्र विगेरेने विधिप्रमाणे न परठववा ते १४. मन असंयम—अकुशळ मननो निरोध न करवो

स्मात् क्रिया–बीजाने बाणादिकवडे मारतां वचमां बीजो कोइ मराइ जाय ते. ४. दृष्टिविपर्यासक्रिया–अशत्रुने शत्रु धारी तेनी हिंसा करवी ते. ५. मृषाक्रिया–पोताने माटे अथवा पोताना स्वजनादिकने माटे असत्य बोलवुं ते. ६. अदत्तग्रहणक्रिया–स्वपरने माटे जे अदत्तनुं ग्रहण करवुं ते. ७. आध्यात्मिकीक्रिया–बाह्य कारण विना मन दुःखाय ते एटले पोतानुं कोइ वांकुं बोलतुं न होय छतां मनमां शंका राखीने दुभावुं ते. ८. मानक्रिया–जाति आदिकना मदे करीने अन्यनी हीलना करवी ते. ९. मित्रद्वेषवृत्तिक्रिया–मित्रो अथवा मातापितादिक स्वजनोने थोडा अपराधमां पण वधबंधादिक तीव्र दंड करवो ते, आ अमित्रक्रिया पण कहेवाय छे. १०. मायाक्रिया–माया कपटथी अन्यने छेतरवो अथवा वधबंधादिक करवा ते. ११. लोभक्रिया–लोभथी अन्यने वधादिक करवा ते. १२. ऐर्यापथिकीक्रिया–निरंतर अप्रमत्त साधुने मन, वचन अने कायाना योगमात्रथी जे क्रिया लागे ते. १३.

चौद प्रकारनो जीवराशि आ प्रमाणे छे.–सूक्ष्म एकेंद्रिय १, बादर एकेंद्रिय २, द्वींद्रिय ३, त्रींद्रिय ४, चतुरिंद्रिय ५, संज्ञिपंचेंद्रिय ६ अने असंज्ञिपंचेंद्रिय ७ ए सात पर्याप्ता अने ए ज सात अपर्याप्ता मळी चौद थाय छे.

पंदर परमाधार्मिक आ प्रमाणे छे.–अंब १, अंबरीष २, श्याम ३, शबल ४, रुद्र ५, उपरुद्र ६, काल ७, महाकाल ८, असिपत्र ९, धनु १०, कुंत ११, वालुक १२, वेतरणी १३, खरस्वर (घोष) १४, अने महाघोष १५. अहीं तेर क्रियाना त्यागमां, चौद भूतराशिना रक्षणमां अने पंदर परमाधार्मिकना ज्ञानमां यत्न करवानो छे. १२.

गाहासोलसएहिं, तहा अस्संजमम्मि य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १३ ॥

तप करवानो छे ग्रामादिकनी बहार कायोत्सर्गे रही कांइक शरीरने नीचु नमावी रहे अने अनिमेष नेत्र एक पुद्गळपर निश्चळ दृष्टि राखीने रहे "

" साहट्टु दो वि पाए, वग्घारियपाणि ठायए ठाण । वग्घारियलम्बिभुओ, सेस दसासु जहा भणिअ ॥ "

' आ बारमी प्रतिमामा बन्ने पगने सहरीने एटले बन्ने पग वच्चे चार अगुलनु आंतरु राखी लांबा हाथ राखीने कायोत्सर्गे रहेवु बाकीनु दशाश्रुतस्कधथी जाणवु आ प्रतिमामां अहोरात्रि गया पछी अट्टम करवानो छे तेथी चार दिवसे पूर्ण थाय छे आ बार प्रतिमाने पार पामेला साधु अवधि, मन पर्याय के केवळज्ञाननी लब्धिने अवश्य पामे छे "

किरिआसु भूअग्गामेसु, परमाहम्मिएसु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ १२॥

अर्थ—(किरियासु) क्रियाने विषे एटले कर्मबधना कारणभूत अर्थानर्थादि तेर क्रियाओने विषे, (भूअग्गामेसु) भूतग्रामने विषे एटले चौद प्रकारना जीवसमूहने विषे तथा (परमाहम्मिएसु य) पदर परमाधार्मिकने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्च) निरतर (जयई) यतना करे, (से) ते (मडले) ससारमा (न अच्छइ) रहेतो नथी १२

अहीं तेर क्रियाओ आ प्रमाणे छे –अर्थक्रिया–पोताना अथवा परना प्रयोजने क्रिया करतां पृथिव्यादिक प्राणीओनो वध थाय ते १ अनर्थक्रिया–प्रयोजन विना वधनी क्रिया कराय ते २ हिंसाक्रिया–" आ मने अथवा मारा स्वजनने मारतो हतो, अथवा मारे छे अथवा मारशे, तेथी तेने हु मारु " एम विचारी जे दडनो–वधनो आरभ करवो ते ३ अक

पानी ज मात्र पृथ्वीने स्पर्श करे अने पृष्ठभाग स्पर्श करे नहीं ए रीते चत्ता सुवे, अथवा दंडनी जेम लांवा सुइ रहे. अने दिव्यादि उपसर्गोने सहन करे."

"तच्चावि एरिस च्चिअ, नवरं ठाणं तु तस्स गोदोही । वीरासणमहवा वि, ठाइज्जा अंबखुज्जो वा ॥"

"त्रीजी एटले दशमी प्रतिमा पण ते ज प्रमाणे छे, विशेष ए के तेनुं स्थान गोदोही गायने दोवा वेसे तेवी रीते बेसवुं, अथवा वीरासने रहेवुं, अथवा आम्रकुब्ज एटले आंबाना फळनी जेम वक्र आकारे बेसवुं. वीरासन बे प्रकारे थाय छे ते आ प्रमाणे.—सिंहासन पर वेसी पगने भूमिपर राखवा, पछी सिंहासन लइ लइए अने जे आसन रहे ते ज रीते अधर रहेवुं ते. बीजी रीत ए छे जे डावा पगने जमणा साथळपर अने जमणा पगने डावा साथळपर राखी डावा हाथनी हथेळी उपर रहेली जमणा हाथनी हथेळीवडे नाभिने स्पर्श करी रहेवुं ते."

"एमेव अहोराई, छट्ठं भत्तं अपाणगं नवरं । गामनगराण वहिम्मा, वग्घारिअपाणिए ठाण ॥"

"ए ज रीते अग्यारमी प्रतिमा एक रात्रिदिवसनी छे. तेमां चोविहार छठ करवानो छे. बाकी सर्व प्रथमनी जेम जाणवुं. विशेष ए के गाम के नगरनी बहार हाथने लांवा राखी उभा रहेवानुं छे. आ प्रतिमा त्रण दिवसे थाय छे. कारण के एक रात्रिदिवसनी प्रतिमा कर्या पछी छठ करवानो छे."

"एमेव एगराई, अट्ठमभत्तेण ठाण बाहिरओ । ईसिंपब्भारगए, अणिमिसनयणेगदिट्ठीए ॥"

"बारमी प्रतिमा पण ए ज रीते एटले अग्यारसीनी जेम एक रात्रिनी ज छे. तेमां ते रात्रिने छेडे चोविहार अठम

" पच्छा गच्छमुवेई, एव दुमासी तिमासि जा सत्त । नवर दत्ती वड्ढइ, जा सत्त उ सत्तमासीए ॥ "

" त्यारपछी गच्छमां आवे ए ज प्रमाणे बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी यावत् सातमी सात मासनी प्रतिमानु वहन करे, तेमां विशेष ए के दरेक प्रतिमानी वृद्धिए एक एक दत्ती वधारे, यावत् सातमी प्रतिमाए भातपाणीनी सात सात दत्ती ग्रहण करे "

" तत्तो अ अट्ठमीआ, हवइ ह पडिमा उ सत्तराइदिणा । तीइ चउत्थ चउत्थेणं, पाणएण इह विसेसो ॥ "

" त्यारपछी आठमी प्रतिमा सात रात्रिदिवसनी छे, तेमां एकांतर एक एक चोवीहार उपवास करे अहीं पण पारणे आंबील करे, परतु अहीं दत्तीनो नियम नथी " तथा—

उत्ताणग पासल्ली, नेसज्जी आवि ठाण ठाइत्ता । सहइ उवसग्गे घोरे, दिव्वाई तत्थ अविकपो ॥ "

" ग्रामादिकनी बहार उत्तान एटले चीतो सुवे, अथवा पडखे सुवे अथवा चपट बेसे पण एवा स्थाने रहीने निष्कपपणे दिव्यादिक घोर उपसर्गोने सहन करे "

" दुच्चावि एरिसच्चिअ, बहिआ गामाइआण नवर तु । उक्कडु लगडसाई, दडाययओ च ठाएज्जा ॥ "

" बीजी एटले नवमी प्रतिमा पण ए ज प्रकारे छे एटले ग्रामादिकनी बहार रहेवु, तथा तप पारणु विगेरे आठमी प्रमाणे छे विशेष ए के उत्कटुक एटले उभडक आसने बेसे, अथवा लगडशायी एटले लगडानी जेम मस्तक अने पगनी

१ पण शब्द लख्यो छे तेथी पूर्वनी सात प्रतिमामा पण पारणे आंबेल समजवु

पाणीनी. तेने भोजन पण अलेपकृत होवुं जोइए. एटले वाल, चणा विगेरे ज ग्रहण करे. वळी उपधि पण पोतानी बे एषणाथी ज प्राप्त थयेली ग्रहण करे. आ परिकर्म कहेवाय छे."

"गच्छा विणिक्खमित्ता, पडिवज्जे मासिग्रं महापडिमं । दत्तेगभोअणस्सा, पाणस्स वि एग जा मासं ॥"

"गच्छथी बहार नीकळीने एक मासनी महाप्रतिमाने ग्रहण करे. तथा ते आखा मास सुधी एक दत्ती भोजननी अने एक दत्ती पाणीनी ग्रहण करे. जो आचार्यादिक पदवीधर प्रतिमाने अंगीकार करे तो ते अल्प काळने माटे पोतानुं स्थान कोइ बीजा साधुने आपे अने द्रव्यादिकनो शुभ योग प्राप्त थये सते एटले शरद ऋतु आवे त्यारे पोताना गच्छने खमावी बहार नीकळे." प्रतिमा वहन करनारे आ प्रमाणे वर्तवानुं छे.—

"जत्थत्थमेइ सूरो, न तओ ठाणा पयं पि संचलइ । नाएगराइवासी, एगं व दुगं व अन्नाए ॥"

"चालतां चालतां जे ठेकाणे सूर्य अस्त पामे, ते स्थानथी एक पगलुं पण आगळ चाले नहीं अर्थात् ते ज ठकाणे सूर्योदय सुधी कायोत्सर्गे उभा रहे. वळी जे ग्रामादिकमां 'आ मुनि प्रतिमाधारी छे' एम लोकोना जाणवामां आवे, ते ठेकाणे एक ज रात्रिदिवस रहे अने जाणवामां न आव्युं होय तो एक के बे रात्रिदिवस रहे.

"दुट्ठाण हत्थिमाईण, नो भएणं पयं पि ओसरई । एमाइ नियमसेवी, विहरइ जाऽखंडिओ मासो ॥"

"दुष्ट एवा हस्ती आदिकना भयथी एक पगलुं पण पाछा हठे नही, आ विगेरे नियमने सेवता थका अखंडित—आखा मास सुधी विचरे."

वर्षमा वहन कराय छे, पछीनी बे एटले त्रीजी अने चोथी प्रतिमा एक एक वर्षे करवामां आवे छे, अने पछीनी त्रण एटल पांचमी, छठ्ठी अने सातमी प्रतिमा अन्य अन्य वर्षे करवामां आवे छे एटले के एक वर्षे प्रतिमा अने बीजे वर्षे परिकर्म ए रीते आ त्रण प्रतिमा छ वर्षे थाय छे कुल सात प्रतिमा नव वर्षे पूरी थाय छे आ प्रतिमा अंगीकार करनारने जघन्यथी प्रत्याख्यान नामना नवमा पूर्वनी आचार नामनी त्रीजी वस्तु सुधीनु सूत्रार्थ ज्ञान होवु जोइए अने उत्कर्षथी कांइक ओछा दश पूर्वनु सूत्रार्थ ज्ञान होवु जोइए संपूर्ण दश पूर्वना ज्ञानवाळानो उपदेश सफळ ज होय छे तेथी ते धर्मोपदेशवडे भव्य प्राणीओनो उपकार करी शासननी प्रभावना करता होवाथी प्रतिमा वहन करता नथी, अने नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु सुधीनु ज्ञान न होय तो ते अतिशय ज्ञानवाळा न होवाथी काळादिक जाणी शकता नथी, तेथी ते पण प्रतिमा वहन करवाने योग्य नथी " तथा—

" वोसट्ठचत्तदेहो, उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी । एसणअभिग्गहीआ, भत्त च अलेवड तस्स ॥ "

" प्रतिमाधारी मुनि परिकर्मना अभावथी वोसिराव्यु छे अने ममताना अभावथी तज्यु छे शरीर जेणे एवो सतो जिन कल्पीनी जेम उपसर्गने सहन करनार थाय छे वळी तेमने पूर्वे संसृष्टादिक सात प्रकारनी एषणा कही छे तेनो अभिग्रह होवो जोइए ते आ प्रमाणे —भातपाणीनी सात एषणामांथी छेल्ली चार ज ग्रहण करवानी छे तेमां पण पहेली बेनु (संसृष्ट अने असंसृष्टनु) ग्रहण नथी अमुक दिवसे छेल्ली पांच एषणामांथी बेनो अभिग्रह करे तेमां एक भोजननी अने एक

[1] संसृष्ट, असंसृष्ट, उध्धृत, अल्पलेप, उदगृहीत, प्रगृहीत अने उज्झितधर्मा

मासाई सत्तंता ७, पढमा ८ बिइ ९ तइय १० सत्तराइदिणा । अहराइ ११ एगराई १२, भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ "

" एक मासथी आरंभीने सात मास पर्यंतनी प्रथमनी सात प्रतिमाओ जाणवी. एटले के पहेली प्रतिमा एक मासनी, बीजी बे मासनी ए रीते वृद्धि करतां सातमी प्रतिमा सात मासनी जाणवी. त्यारपछीनी पहेली एटले आठमी, बीजी एटले नवमी अने त्रीजी एटले दशमी प्रतिमा सात सात रात्रिदिवसनी जाणवी. पछी अग्यारमी एक रात्रिदिवसनी अने बारमी एक रात्रिनी, एम भिक्षुनी बार प्रतिमा जाणवी. "

" पडिवज्जइ एआओ, संघयणी धिइजुओ महासत्तो । पडिमाओ भाविअप्पा, सम्मं गुरुणा अणुण्णाओ ॥ "

" वज्रर्षभनाराच आदि संघयणवाळो, धृतियुक्त एटले मननी स्वस्थतावाळो, उपसर्गादिक सहन करी शके तेवो महा सत्त्ववान्, उत्तम भावनावडे जेणे आत्माने भाव्यो होय एवो अने गुरुए तेनी योग्यता जाणी अनुज्ञा आपी होय तेवो साधु सम्यक् प्रकारे आ प्रतिमाओने अंगीकार करे छे. जो गुरु पोते ज प्रतिमा वहन करता होय तो ते स्थाने रहेला आचार्यनी अथवा गच्छनी अनुज्ञाथी प्रतिमा वहन करवी. "

" गच्छे चिअ निम्माओ, जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा । नवमस्स तइअवत्थु, होइ जहन्नो सुआभिगमो ॥ "

" प्रतिमा वहन करनार साधु गच्छने विषे ज रहे अने निर्मात एटले प्रतिमाने योग्य एवा आहारादिकना विषयवाळा परिकर्मने विषे निष्ठावाळा होय तथा सात प्रतिमामांथी जेटलामी प्रतिमा वहन कराती होय तेटला परिमाणवाळुं ज परिकर्म होय. वर्षाऋतुमां प्रतिमा अंगीकार कराती नथी, तेम ज परिकर्म पण करातुं नथी. आ सातमांथी पहेली बे प्रतिमा एक ज

प्रतिमा वहन करता पूर्वनी दशे प्रतिमानी क्रिया करवानी छे. तेमां पहेली प्रतिमामा दोष रहित, प्रशमादिक गुण सहित अने कदाग्रह रहित एवु समकित धारण करवानु छे १ बीजीमा अतिचार रहित अणुव्रतादिक बारे व्रतो पाळवानां छे २ त्रीजीमा बने सध्याए अवश्य सामायिक करवानु छे ३ चोथीमां चौदश, आठम विगेरे पर्व तिथिए अतिचार रहित परिपूर्ण पौषध करवानो छे ४ पाचमीमा आठम विगेरे पर्व तिथिए पौषध लइ रात्रे कायोत्सर्ग करवानो छे बीजा दिव सोमां दिवसे ज भोजन करवु, रात्रिभोजन करवु नहीं, दिवसे पण प्रकाशमां ज भोजन करवु, पाछळ धोतीयानो कच्छ बांधवो नहीं, दिवसे ब्रह्मचर्य राखवु अने रात्रे पण स्त्रीओनु तथा तेमना भोगनु परिमाण करवु कायोत्सर्गमां जिनेश्वरना गुणोनु अने कामादिक दोषोनो नाश करवाना उपायोनु चिंतवन करवु ५ छट्ठीमां अब्रह्मचर्य अने शृंगारकथादिकनो सर्वथा त्याग करवो ६ सातमीमां सचित्ताहारनो त्याग करवो. ७ आठमीमां पोते जाते आरंभ न करवो ८ नवमीमां बीजा पासे पण आरंभ न कराववो ९ दशमीमां पोताने माटे भातपाणी कराववां नहीं आ वखते क्षुरथी मुंडन कराववु अथवा शिखाधारी थवु १० तथा छेल्ली अग्यारमी प्रतिमाने विषे पात्रां आदिक साधुनां उपकरण धारण करी लोच अथवा क्षुरमुंडन करावी साधुनी जेवी सर्व क्रिया करवी अने गोचरी वखते गृहस्थीने घेर जइ "प्रतिमाप्रतिपन्नाय श्रमणोपासकाय भिक्षां दत्त"-"प्रतिमा वहन करता एवा मने श्रावकने भिक्षा आपो" ए प्रमाणे बोली भिक्षा ग्रहण करवी, अने मुनिनी जेम मासकल्पादिक विधिए ग्रामादिकमां विहार करवो

भिक्षुनी बार प्रतिमा आ प्रमाणे छे —

आठ मद वर्जवाना छे, वसति १, कथा २, निषिद्या ३, इंद्रिय ४, भित्त्यंतर ५, पूर्वक्रीडित स्मरण ६, प्रणीत आहार ७, अति आहार ८ अने विभूषा ९ ए नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाळवानी छे, तथा क्षांति १, मार्दव २, आर्जव ३, मुक्ति (निर्लोभता) ४, तप ५, संयम ६, सत्य ७, शौच ८, आकिंचन्य ९ अने ब्रह्मचर्य १० ए दश प्रकारना साधुधर्मनी आराधना करवानी छे. १०.

उवासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु अ। जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥११॥

अर्थ—(उवासगाणं) श्रावकोनी (पडिमासु) अग्यार प्रतिमाने विषे तथा (भिक्खूणं) साधुनी (पडिमासु अ) बार प्रतिमाने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं जयई) निरंतर यत्न करे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारमां रहेतो नथी. ११. अहीं श्रावकनी अग्यार प्रतिमा आ प्रमाणे छे.—दर्शन १, व्रत २, सामायिक ३, पौषध ४, प्रतिमा (कायोत्सर्ग) ५, अब्रह्म त्याग ६, सचित्त त्याग ७, आरंभ त्याग ८, प्रेष्य त्याग ९, उद्दिष्ट त्याग १०, अने श्रमणभूत ११. अहीं पहेली प्रतिमा उत्कृष्टथी एक मासनी, बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी ए रीते चडतां छेल्ली अग्यारमी अग्यार मासनी छे, अने जघन्यथी तो सर्व प्रतिमाओ एकादिक अग्यार दिवसनी जाणवी. केमके प्रतिमा ग्रहण कर्या पछी एक बे आदि दिवसे चारित्र ग्रहण करे अथवा आयुष्यनो क्षय थाय तो ते प्रतिमा जेटला दिवस वहन करी होय तेटला दिवसनी कहेवाय छे. अहीं उत्तरोत्तर प्रतिमा वहन करतां पूर्व पूर्वनी प्रतिमानुं सर्व कार्य साथे करवानुं ज छे, तेथी अग्यारमी

कारणे) आहार करवाना कारणने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच) निरतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मडले न अच्छइ) ससारने विषे रहेतो नथी अहीं अशुभ पहेली त्रण लेश्यानो निरोध करवो अने शुभ त्रण लेश्यानु धारण करवु, षट्कायनु रक्षण करवु अने छ कारणे आहार लेवो, ए रीते यत्न करवानो छे ८

पिंडुग्गहपडिमासु, भयठाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ९ ॥

अर्थ—(पिंडुग्गहपडिमासु) प्रथम कहेली ससृष्टादिक सात पिंडावग्रहप्रतिमाने विषे एटले आहार ग्रहण करवाना विषयवाळा अभिग्रहोने विषे तथा (सत्तसु) सात (भयठाणेसु) भयना स्थानोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच) निरतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मडले न अच्छइ) ससारमां रहेतो नथी अहीं पिंडग्रहणनी प्रतिमाओ पाळवानी छे अने भयनां स्थानो तजवानां छे ते सात भय आ प्रमाणे—आलोक भय १, परलोक भय २, आदान भय ३, अकस्मात् भय ४, आजीविका भय ५, मरण भय ६ अने अपयश भय ७ ९

मएसु बभगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥१०॥

अर्थ—(मएसु) आठ मदने विषे, (बभगुत्तीसु) नव ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने विषे, तथा (दसविहे) दश प्रकारना (भिक्खुधम्मम्मि) साधुधर्मने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच) निरतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मडले न अच्छइ) ससारमां रहेतो नथी. अहीं जाति १, कुळ २, बळ ३, रूप ४, तप ५, ऐश्वर्य ६, श्रुत ७ अने लाभ ८ ए

अर्थ—(विगहाकसायसण्णाणं) चार विकथा, चार कषाय अने चार संज्ञाने (तहा) तथा (झाणाणं च दुअं) ध्याननां द्विकने एटले आर्त अने रौद्ररूप बे ध्यानने (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (वज्जई) वर्जे छे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहेतो नथी. अहीं राजकथा १, देशकथा २, भक्त-भोजनकथा ३ अने स्त्रीकथा ४ ए चार विकथा, क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४ ए चार कषाय तथा आहारसंज्ञा १, भयसंज्ञा २, मैथुनसंज्ञा ३ अने परिग्रहसंज्ञा ४ ए चार संज्ञा जाणवी. ६.

वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु अ । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ७ ॥

अर्थ—(वएसु) पांच महाव्रतोने विषे, (इंदियत्थेसु) शब्दादिक पांच विषयोने विषे, (समिईसु) ईर्यासमिति आदि पांच समितिने विषे, (किरियासु अ) कायिकी १, अधिकरणिकी २, प्राद्वेषिकी ३, पारितापनिकी ४ अने प्राणातिपातिकी ५ ए पांच क्रियाने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारने विषे रहेता नथी. व्रत अने समितिने पाळवावडे, इंद्रियविषयोमां मध्यस्थ-रागद्वेष रहित रहेवावडे अने क्रियाने विषे त्यागवडे यत्न करवानो समजवो. ७.

लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ८ ॥

अर्थ—(छसु) छ (लेसासु) लेश्याने विषे, (काएसु) पृथ्व्यादिक छ कायने विषे तथा (छक्के) छ (आहार-

अर्थ—(रागद्दोसे अ) राग अने द्वेष (दो) ए बे (पावे) पापप्रकृतिरूप होवाथी पाप छे तथा (पावकम्मपवत्तणे) ज्ञानावरणादिक पापकर्मना प्रवर्तक छे, तेमने (जे भिक्खू) जे साधु (निच) नित्य (रुभई) रुधे छे, (से) ते साधु (मडले) ससारमां (न अच्छइ) रहेतो नथी–मोक्षमां जाय छे ३

दडाण गारवाण च, सल्लाण च तिय तिय । जे भिक्खू चयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ४ ॥

अर्थ—(दडाण) दडना, (गारवाण च) गौरवना अने (सल्लाण च) शल्यना (तिय तिय) त्रिक त्रिकने एटले मनदड, वचनदड अने कायदड ए त्रण दडने, ऋद्धिगौरव, रसगौरव अने सातगौरव ए त्रण गौरवने तथा मायाशल्य, निदानशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्यने (जे भिक्खू) जे साधु (निच) नित्य (चयई) तजे छे, (से) ते (मडले न अच्छइ) ससारमां रहेतो नथी ४

दिव्वे अ जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे । जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मडले ॥ ५ ॥

अर्थ—(अ) तथा (जे) जे (दिव्वे) देवना करेला (तहा) तथा (तेरिच्छमाणुसे) तिर्यचना अने मनुष्यना करेला (उवसग्गे) उपसर्गोने (जे) जे (भिक्खू) साधु (निच) नित्य (सहई) सहन करे, (से) ते (मडले न अच्छइ) ससारमां रहेतो नथी ५

विगहाकसायसण्णाण, झाणाण च दुअ तहा । जे भिक्खू वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मडले ॥ ६ ॥

अथ चरणविधि नामनुं एकत्रीशमुं अध्ययन. ३१.

त्रीशमा अध्ययनमां तप कह्यो. ते तप चारित्रवंतने ज सफळ थाय छे. तेथी आ एकत्रीशमा अध्ययनमां चारित्रने ज कहे छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं । जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥

अर्थ—(जीवस्स) प्राणीने (सुहावहं उ) सुखकारक एवा ज (चरणविहिं) चारित्रना विधिने (पवक्खामि) हुं कहीश, के (जं) जे विधिनुं (चरित्ता) आचरण–सेवन करीने (बहू जीवा) घणा जीवो (संसारसागरं) संसाररूपी समुद्रने (तिण्णा) तरी गया छे. १.

ते चरणविधिने ज कहे छे.—

एगओ विरइं कुज्जा, एगओ अ पवत्तणं । असंजमे निअत्तिं च, संजमे अ पवत्तणं ॥ २ ॥

अर्थ—(एगओ) एकथकी (विरइं) विरति–निवृत्ति (कुज्जा) करवी, अने (एगओ अ) एकने विषे (पवत्तणं) प्रवृत्ति करवी. ते आ प्रमाणे (असंजमे) असंयम थकी एटले हिंसादिक थकी (निअत्तिं च) निवृत्ति करवी, अने (संजमे अ) संयमने विषे (पवत्तणं) प्रवृत्ति करवी. २.

रागद्दोसे अ दो पावे, पावकम्मपवत्तणे । जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ३ ॥

" उत्सर्ग एटले त्याग ते बे प्रकारनो छे-द्रव्य अने भाव तेमां द्रव्यने विषे चार प्रकारनो व्युत्सर्ग-त्याग छे-गच्छनो, देहनो, उपधिनो अने भक्तनो एटले भातपाणीनो भावने विषे क्रोधादिकषायनो त्याग करवो ते " आ सर्व प्रकारनो व्युत्सर्ग जाणी लेवो २६

हवे अध्ययनने समाप्त करवा पूर्वक तपनु फळ कहे छे —

एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी । से खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए त्ति बेमि॥२७॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (जे) जे (मुणी) साधु (दुविहं) बे प्रकारना (तवं तु) तपने (सम्मं आयरे) सम्यक् प्रकारे आचरण करे, (से) ते (पंडिए) पंडित साधु (खिप्पं) शीघ्रपणे (सव्वसंसारा) सर्व संसारथी (विप्पमुच्चइ) मूकाय छे (त्ति बेमि) एम हु कहु छुं ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्यु २७

इति त्रिंशत्तममध्ययनम् ३०

पांचेनो विस्तरार्थ प्रथम आवी गयो छे. ३४.

हवे ध्यान नामनो पांचमो आभ्यंतर तप कहे छे.—

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिओ । धम्मसुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥ ३५ ॥

अर्थ—(अट्टरुद्दाणि) आर्त अने रौद्र ए बे ध्यानने (वज्जित्ता) वर्जीने (सुसमाहिओ) सम्यक् प्रकारे समाधियुक्त थयो थको (धम्मसुक्काइं) जे धर्म अने शुक्ल ए बे (झाणाइं) ध्यानने (झाएज्जा) ध्यावे, (तं तु) तेने ज (बुहा) पंडितो (झाणं) ध्यानतप (वए) कहे छे. ३५.

हवे कायोत्सर्ग नामनो छट्ठो आभ्यंतर तप कहे छे.—

सयणासणठाणे वा, जे अ भिक्खू न वावरे । कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥

अर्थ—(सयणासणठाणे वा) शयनने विषे, आसनने विषे अथवा वीरासनादिक स्थानने विषे रहेलो (जे अ) जे (भिक्खू) साधु (न वावरे) हालवा चालवा विगेरेनी कांइ पण क्रिया न करे, ते साधुने (कायस्स) कायानो (विउस्सग्गो) व्युत्सर्ग–कायानी चेष्टानो त्याग ए नामनो (छट्ठो) छट्ठो (सो) ते आभ्यंतर तप (परिकित्तिओ) कह्यो छे. अही कायानो व्युत्सर्ग आव्यो छे तेना उपलक्षणथी शेष व्युत्सर्ग पण जाणी लेवा. ते आ प्रमाणे.—

" दव्वे भावे अ तहा, दुविहुस्सग्गो चउव्विहो दव्वे । गणदेहोवहिभत्ते, भावे कोहाइचाओ त्ति ॥ "

अर्थ—गुरु विगर आवे त्यारे (अब्भुट्ठाण) उभा थवु, (अजलिकरण) हाथ जोडवा, (तहेव) तथा (आसणदायण) आसन आपवु, (गुरुभत्ति) गुरुनी भक्ति, (भावसुस्सूसा) भाववडे एटले अंत करणवडे शुश्रूषा एटले गुरुनी आज्ञा सांभळवानी इच्छा अथवा गुरुनी सेवा, (एस) आ पांच प्रकारे (विणओ) विनय तप (विआहिओ) कहेलो छे ३२

वैयावृत्त्य नामनो त्रीजो तप कहे छे —

आयरिअमाइअम्मि, वेआवच्चम्मि दसविहे । आसेवण जहाथाम, वेआवच्च तमाहिअं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(दसविहे) दश प्रकारना (आयरिअमाइअम्मि) आचार्यादिकनु (वेआवच्चम्मि) वैयावृत्त्य एटले उचित विधिए आहारादिक लावी आपवु ते, तथा (जहाथाम) शक्ति प्रमाणे (आसेवण) तेमनी सेवा करवी, (त) ते (वेआवच्च) वैयावृत्त्य तप (आहिअ) कह्यु छे अहीं आचार्य १, उपाध्याय २, स्थविर ३, तपस्वी ४, ग्लान ५, शैक्ष्य-बाळ साधु ६, साधर्मिक ७, कुळ ८, गण ९ अने सघ १०, आ दशनी वैयावच करवानी समजवी. ३३

स्वाध्याय नामनो चोथो तप कहे छे —

वायणा १ पुच्छणा २ चेव, तहेव परिअट्टणा ३। अणुप्पेहा,४ धम्मकहा ५, सज्झाओ पचहा भवे ॥३४॥

अर्थ—(वायणा) वाचना, (पुच्छणा) पृच्छना, (चेव) नीश्चे (तहेव) तथा (परिअट्टणा) परावर्तना, (अणुप्पेहा) अनुप्रेक्षा अने (धम्मकहा) धर्मकथा (पचहा) आ पांच प्रकारनो (सज्झाओ) स्वाध्याय (भवे) छे आ

ष्कृत देवुं ते प्रतिक्रमण अने आलोचना ए बंनेने योग्य होवाथी मिश्र नामनुं प्रायश्चित्त कहेवाय छे ३. विवेक एटले पृथक् करवुं ते. मात्र विवेकथी ज जेनी शुद्धि थती होय ते विवेकार्ह छे. एटले के कोइक प्रकारे अशुद्ध आहार ग्रहण कर्यो होय तो तेनी मात्र त्यागथी ज शुद्धि थाय छे, तेथी ते विवेक नामनुं प्रायश्चित्त कहेवाय छे. ४. व्युत्सर्गवडे एटले केवळ कायोत्सर्गवडे ज जेनी शुद्धि थाय ते व्युत्सर्ग नामनुं प्रायश्चित्त छे. ५. जे दोष सेवे सते नीवीथी आरंभी छ मास सुधीनो तप अपाय ते तपोर्ह प्रायश्चित्त कहेवाय छे ६. जे दोष सेवे सते चारित्रपर्यायनो छेद कराय ते छेदार्ह प्रायश्चित्त छे. ७. जे दोष सेवे सते सर्व पर्यायनो छेद करी फरीथी मूळ व्रतनुं आरोपण कराय ते मूलार्ह प्रायश्चित्त कहेवाय छे. ८. जे दोष सेवे सते उपस्थापना (व्रत) ने पण अयोग्य सतो ज्यां सुधी गुरुए कहेलो तप न करे त्यांसुधी व्रतने विषे स्थापन न कराय अने तप करी दोष रहित थया पछी व्रतने विषे स्थापन कराय ते अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त कहेवाय छे. ९. तथा जे दोष सेवे सते लिंग, क्षेत्र, काळ अने तपवडे पारने पामे ते पारांचित कहेवाय छे. अथवा सर्व प्रायश्चित्तोनो पार एटले अंत ते पारांचित, अथवा अपराधना पारने पामे ते पारांचित कहेवाय छे. १०. (आ प्रायश्चित्त सिद्धसेनदिवाकरने आपवामां आव्युं हतुं.) ए दश प्रकारना प्रायश्चित्तने साधु सम्यक् प्रकारे सेवे. ते अभ्यंतर तप जाणवो. ३१.

हवे विनय नामनो बीजो आभ्यंतर तप कहे छे.—

अब्भुट्ठाणं अंजलि–करणं तहेवासणदायणं । गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस विआहिओ ॥३२॥

अर्थ—(पायच्छित्त) प्रायश्चित्त, (विणओ) विनय, (वेआवच्च) वैयावृत्त्य, (तहेव) तथा (सज्झाओ) स्वाध्याय, (झाणं) ध्यान, (च) अने (विउस्सग्गो) व्युत्सर्ग—कायोत्सर्ग (एसो) आ छ प्रकारनो (अब्भिंतरो) आभ्यंतर (तवो) तप छे ३०

पहेलो प्रायश्चित्त नामनो आभ्यंतर तप कहे छे —

आलोअणारिहाईअं, पायच्छित्तं तु दसविहं । जे भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहिअं ॥३१॥

अर्थ—(आलोअणारिहाईअं) जे पाप, मात्र आलोचनाथीज शुद्ध थाय ते आलोचनार्ह कहेवाय छे, आदिशब्दथी प्रतिक्रमणने योग्य विगेरे (पायच्छित्त) प्रायश्चित्त (दसविहं तु) दश प्रकारनु ज छे तेने (जे) जे (भिक्खू) साधु (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (वहई) वहन करे—सेवे, (तं) तेने (पायच्छित्त) प्रायश्चित्त तप (आहिअं) कह्यु छे प्रायश्चित्तना दश प्रकार आ प्रमाणे छे —आलोचना १, प्रतिक्रमण २, मिश्र ३, विवेक ४, व्युत्सर्ग ५, तप ६, छेद ७, मूल ८, अनवस्थाप्य ९ अने पारांचित १० तेमां गुरुनी पासे वचनमात्रवडे प्रकाश करवाथी ज जे पापथी मुक्त थवाय छे ते आलोचनार्ह कहेवाय छे ते अहीं आलोचना नामनु प्रथम प्रायश्चित्त छे १. दोषथी पाछा फरवु एटले मिथ्यादुष्कृत देवु ते प्रतिक्रमण कहेवाय छे मात्र प्रतिक्रमणथी ज सहसात्कारे उत्पन्न थयेला पापनी शुद्धि थाय छे, तेने गुरुनी समक्ष आलोचवानी जरुर रहेती नथी, ते प्रतिक्रमणने ज लायक छे २ गुरुनी समक्ष आलोचना करी पछी तेनी ज आज्ञाथी मिथ्यादु-

आसन सेववाथी (विवित्तसयणासणं) विविक्तशयनासन नामनो बाह्यतप कहेवाय छे. शयन अने आसन शब्दना उपलक्षणथी एषणीय पाट पाटला विगेरे सेववाथी पण विविक्तशयनासन नामनो बाह्यतप कहेवाय छे. अहीं विविक्तचर्या नामनी संलीनता कही, तेना उपलक्षणथी बीजी त्रणे संलीनता जाणी लेवी. संलीनता चार प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे— इंद्रियसंलीनता १, कषायसंलीनता २, योगसंलीनता ३ अने विविक्तचर्यासंलीनता ४. तेमां इंद्रियसंलीनता एटले मनोज्ञ के अमनोज्ञ शब्दादिक विषयोमां रागद्वेष न करवो ते १, कषायसंलीनता एटले तेना उदयनो निरोध करवो ते २, योगसंलीनता एटले मन, वचन अने कायाना शुभ व्यापारमां प्रवृत्ति अने अशुभथी निवृत्ति करवी ते ३, अने विविक्तचर्या संलीनता तो मूळ गाथामां ज कही छे ते. ४. २८.

हवे बाह्य तपनी समाप्ति करवा पूर्वक अभ्यंतर तपनी प्रस्तावना करे छे.—

एसो बाहिरंगतवो, समासेण वियाहिओ । अब्भिंतरं तवं एत्तो, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ २९ ॥

अर्थ—(एसो) आ (बाहिरंगतवो) बाह्य तप (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिओ) कह्यो. (एत्तो) हवे पछी (अब्भितरं तवं) आभ्यंतर तपने (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (वोच्छामि) हुं कहीश. २९.

आभ्यंतर तपना भेदो कहे छे.—

पायच्छित्तं विणओ, वेआवच्चं तहेव सज्झाओ । झाणं च विउस्सग्गो, एसो अब्भिंतरो तवो ॥३०॥

पुष्टिकारक एवा (पाणभोअण) खजूरनो रस विगेरे पान-पीवा योग्य पदार्थ अने भोजन एटले जेमांथी घी नीतरतु होय एवा ओदनादिक ए सर्व (रसाण तु) रसोनो (परिवज्जण) जे त्याग करवो-तेवो आहार ग्रहण न करवो ते (रसविवज्जण) रसत्याग नामनो तप (भणिअ) कह्यो छे. २६

हवे कायक्लेश नामनो पाचमो बाह्यतप कहे छे.—

ठाणा वीरासणाईआ, जीवस्स उ सुहावहा । उग्गा जहा धरिज्जंति, कायकिलेस तमाहिअ ॥२७॥

अर्थ—(जीवस्स) जीवने (उ सुहावहा) सुखकारक एवां ज अने (उग्गा) दुष्कर होवाथी अति उत्कट एवां (वीरासणाईआ) वीरासन विगेरे आदिशब्दथी गोदोहादिक अने उपलक्षणथी लोच विगेरे (ठाणा) स्थानो (जहा) जे प्रकारे (धरिज्जति) धारण कराय ते प्रकारे ग्रहण करवा (त) तेने (कायकिलेस) कायक्लेश (आहिअ) कह्यो छे २७ (अनेक प्रकारे कायाने क्लेश आपवारूप आ तप छे)

हवे छट्ठो सलीनता नामनो बाह्यतप कहे छे —

एगतमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए । सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासण ॥ २८ ॥

अर्थ—(एगत) एकांत एटले मनुष्य रहित, (अणावाए) अनापात एटले स्त्री विगेरेनी जाव आव न होय एवा तथा (इत्थीपसुविवज्जिए) स्त्री पशु विगेरे ज्यां रहेता न होय एवा शून्य गृहादिकने विषे (सयणासणसेवणया) शयन अने

काढ्युं होय तेमांथी ज भिक्षा ग्रहण करवी ते. ३. अल्पलेपा—चणा विगेरे लेप रहित वस्तु लेवी ते. ४. उद्गृहीता—भोजन समये भोजन करनारने माटे पीरसवानी वस्तु जे पात्रमां नांखीने लावे तेमांथी ज ग्रहण करवी ते. ५. प्रगृहीता—भोजन समये भोजन करनारने आपवा माटे पीरसनारे हस्तादिकवडे जे वस्तु ग्रहण करी होय अथवा भोजन करनारे पोताना हस्तादिकमां ग्रहण करी होय तेमांथी ज ग्रहण करवी ते. ६. तथा सातमी उज्झितधर्मा—जे भोजननी वस्तु त्याग करवा योग्य होय अने तेने बीजा कोइ मनुष्यादिक लेवाने इच्छता न होय एवी वस्तु लेवी अथवा ते वस्तु अर्धी नांखी दीधी होय अने अर्धी बाकी होय ते लेवी ते. ७. हवे चार प्रकारना अभिग्रहो आ प्रमाणे छे.—द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव. तेमां द्रव्य अभिग्रह एटले " भालाना अग्रभाग आदिने विषे रहेला मांडा विगेरेने हुं ग्रहण करीश. " इत्यादि. १. क्षेत्राभिग्रह एटले " बे पगनी वच्चे उमरो राखीने मने आपशे तो हुं ग्रहण करीश. " इत्यादि. २. काळाभिग्रह एटले " समग्र भिक्षुओ भिक्षाचर्या करीने गया होय ते वखते भिक्षा माटे अटन करीश ने जे मळशे ते लइश. " इत्यादि. ३. तथा भावाभिग्रह एटले " हसतो के रोतो दातार मने आपशे तो हुं ग्रहण करीश. " इत्यादि ४. २५.

हवे रसत्याग नामनो चोथो बाह्यतप कहे छे.—

खीरदहिसप्पिमाई, पणीअं पाणभोअणं । परिवज्जणं रसाणं तु, भणिअं रसविवज्जणं ॥ २६ ॥

अर्थ—(खीरदहिसप्पिमाई) दूध, दही, घी, आदिशब्दथी तेल, गोळ, पकान्न विगेरे (पणीअं) प्रणीत एटले

अट्ठविहगोअरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा । अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरिअमाहिआ ॥ २५ ॥

अर्थ—(अट्ठविहगोअरग्गं तु) आठ प्रकारनो अग्र एटले अकल्प्यपिंडने दूर करवाथी-तजवाथी प्रधान एवा गोचर एटले उच नीच सर्व गृहोने विषे सामान्यपणे भ्रमण करवु ते अष्टविधाग्रगोचर कहवाय छे अर्थात् प्रधान गोचरीना आठ भेद छे. (तहा) तथा (सत्तेव) सात ज (एसणा) एषणा छे एटले एषणाना सात भेद छे. (य) तथा (जे अन्ने) बीजा जे (अभिग्गहा) द्रव्यादिक अभिग्रहो छे, ते सर्व (भिक्खायरिअ) भिक्षाचर्या के जेनु बीजु नाम वृत्तिसंक्षेप छे ते (आहिआ) जिनेश्वरोए कही छे अहीं अग्रगोचरना आठ भेद पेटा विगेरे जे प्रथम कही गया ते ज छे तेमां शंबूकावर्तना बन्ने प्रकार जूदा गणवा अने आयतगतुप्रत्यागत-सीधु जवु अने पाछु वळवु ए पण व भेद जूदा गणवा तथी आठ आ प्रमाणे थाय छे-'पेटा १, अर्धपेटा २, गोमूत्रिका ३, पतंगवीथिका ४, आभ्यंतर शंबूकावर्ता ५, बाह्य शंबूकावर्ता ६, आयतगतु ७, तथा प्रत्यागमा ८' सात एषणा आ प्रमाणे छे —

" संसट्ठ १ मसंसट्ठा २, उद्धड ३ तह अप्पलेविआ ४ चेव। उग्गहिआ ५ पग्गहिआ ६, उज्झिअधम्मा ७ य सत्तमिआ ॥ "

" संसृष्टा—भिक्षाथी खरडायेला हाथ के पात्र होय, तेनावडे ज भिक्षा ग्रहण करवी ते १ असंसृष्टा—हाथ के पात्र खरडायेला न होय अने तेवडे भिक्षा ग्रहण करवी ते २ उध्धृता—रसोडामांथी पोताने खावा माटे ज पात्रमां भोजन

१ आयतगतु प्रत्यागमा ७ अने ऋजुगति ८ ए प्रमाणे लक्ष्मीविनयनीनी टीकामां छे

अर्थ—(अन्नेण विसेसेणं) बीजा कोइ विशेषवडे एटले कोप पामेलो के हसतो विगेरे अवस्थावाळो अथवा (वणेणं) कृष्णादिक वर्णे करीने जणातो, (भावं) उपर कहेला अलंकृतत्वादिक भावने (अणुमुअंते उ) नहीं मूकतो-तजतो सतो ज दातार जो मने भात पाणी आपशे तो हु ग्रहण करीश. (एवं) ए प्रकारे अभिग्रह लइने (चरमाणो) भिक्षाटन करता साधुने (खलु) निश्चे (भावोमाणं) भावावमौदर्य-भाव ऊनोदरि (मुणेअव्वं) जाणवी. २३.

हवे पर्याय ऊनोदरि कहे छे.—

दव्वे खित्ते काले, भावम्मि अ आहिआ उ जे भावा। एएहिं ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥

अर्थ—(दव्वे) अशनादिक द्रव्यने विषे, (खित्ते) ग्रामादिक क्षेत्रने विषे, (काले) पोरसी आदिक काळने विषे, (भावम्मि अ) तथा स्त्रीत्वादिक भावने विषे (जे भावा) जे भावो एटले एक दाणो न्यून आदिक पर्यायो (आहिआ उ) कहेला छे, (एएहिं) ते सर्व भावोवडे (ओमचरओ) अवमौदर्यने आचरण करनार (भिक्खू) साधु (पज्जवचरओ) पर्यवचरक एटले पर्याय अवमौदर्यनुं आचरण करनार (भवे) होय छे. अहीं पर्यवशब्दवडे पर्यवनुं प्राधान्य कहेवानी इच्छा होवाथी आ पर्यव अवमौदर्य कहेवाय छे. ए ज प्रमाणे क्षेत्रादिकनुं प्राधान्य कहेवानी इच्छाथी क्षेत्रादिक अवमौदर्य कहेवाय छे. परंतु तत्त्वथी तो ते सर्वने विषे द्रव्यनुं अवमौदर्य संभवे छे. कदाच कोइ क्षेत्रादिक अवमौदर्यमां द्रव्यनी न्यूनता न होय, तो त्यां क्षेत्रादिकनी न्यूनताने आश्री अवमौदर्य कहेवाय छे एम जाणवुं. २४.

हवे भिक्षाचर्या नामनो त्रीजो बाह्य तप कहे छे.—

काळावमौदर्य न त्रीजी रीत कहे छे —

अहवा तइआए पो–रिसीए ऊणाए घासमेसतो । चउभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥

अर्थ—(अहवा) अथवा (तइआए) त्रीजी (पोरिसीए) पोरसी (ऊणाए) उणी–ओछी सते (घास एसतो) ग्रासनी एषणा करे, केटली ओछी होय त्यारे ? ते उत्तर कहे छे—(चउभागूणाए वा) चोथो भाग ओछी सते अथवा पांचमो विगेरे भाग ओछी सते (एव) ए प्रकारे काळना अभिग्रहवडे भिक्षाटन करवाथी (कालेण ऊ) काळथकीन अवमौदर्य एटले काळावमौदर्य (भवे) थाय छे शास्त्रमां त्रीजी पोरसीए ज भिक्षाटन कह्यु छे तेथी आ उत्सर्ग विधिना विषयवाळु आ अवमौदर्य जाणवु २१

हवे भाव ऊनोदरी कहे छे —

इत्थी वा पुरिसो वा, अलकिओ वाऽणलकिओ वावि । अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण वा वत्थेण ॥२२॥

अर्थ—(इत्थी वा) स्त्री अथवा (पुरिसो वा) पुरुष, (अलकिओ वा) अलकार करेलो अथवा (अणलकिओ वावि) अलकार नहीं करेलो, अथवा (अन्नयरवयत्थो वा) यौवन आदिक कोइ एक–अमुक वयमां रहेलो, अथवा (अन्नयरेण वा) कोइ एक–अमुक प्रकारना (वत्थेण) वस्त्रवडे सहित होय एवो २२

अन्नेण विसेसेण, वण्णेण भावमणुमुअते उ । एव चरमाणो खलु, भावोमाण मुणेअव्व ॥ २३ ॥

तेथी विपरीतपणे एटले वहारना घरथी आरंभी मध्यना घर सुधी अटन करवुं ते वाह्य शंबूकावर्त कहेवाय छे ५, तथा (छट्ठा) छट्ठी (आययगंतुंपच्चागया) आयत एटले लांबुं–सीधुं जइने प्रत्यागता एटले पाछुं वळवुं एटले प्रथम सीधुं दूर जइ पछी पाछा वळतां भिक्षाटन करवुं एटले भिक्षा ग्रहण करवी ते आयतगंतुंप्रत्यागता कहेवाय छे. ६. अहीं कोइने शंका थाय के—" अहीं जे क्षेत्रो बताव्यां ते सर्व भिक्षाचर्याना ज प्रकारो छे, तेमां क्षेत्रने आश्री अवमौदर्य शी रीते कहेवाय ?" आनो उत्तर ए छे जे—" आजे मारे अवमौदर्य हो. " एवा आशयथी धारी राखेला—निश्चय करेला क्षेत्रमां भिक्षाटन करवाथी तेने अवमौदर्य तरीके कहेवामां कांइ दोष नथी. निमित्त जूदा जूदा होवाथी जेम एक ज माणस अपेक्षाथी कोइनो पिता अने कोइनो पुत्र विगेरे थइ शके छे, ते ज प्रमाणे अहीं पण गोचरीना क्षेत्रने अवमौदर्यनी धारणाथी क्षेत्रोनोदरी पण कही शकाय छे. एज प्रमाणे उपर ग्रामादिक क्षेत्रोमां अने आगळ काळादिकने आश्री अवमौदर्य कहेशे, त्यां पण अमुक ग्रामादिक अने काळादिकनो अभिग्रह होवाथी अवमौदर्य कहेवाय छे. १९.

हवे काळने आश्री अवमौदर्य कहे छे.—

दिवसस्स[1] पोरिसीणं[3], चउण्हं[2] पि उ जत्तिओ[4] भवे[6] कालो[5]। एवं[7] चरमाणो[8] खलु[9], कालोमाणं[10] मुणेअव्वं[11] ॥२०॥

अर्थ—(दिवसस्स) दिवसनी (चउण्हं पि उ) चारे (पोरिसीणं) पोरसीने मध्ये (जत्तिओ) जेटलो (कालो) काळ (भवे) होय एटले " अमुक काळे हुं भिक्षाटन करीश " ए रीते अभिग्रह धारीने पछी (एवं) एज प्रमाणे नियमित काळे (चरमाणो) भिक्षाटन करता साधुने (खलु) निश्चे (कालोमाणं) काळावमौदर्य (मुणेअव्वं) जाणवुं. २०.

कोट्ट एटले प्राकार तेने विषे १७

वाडेसु वा रत्थासु व, घरेसु वा एवमेत्तिअ खेत्त । कप्पइ उ एवमाई,एव खेत्तेण ऊ भवे ॥ १८ ॥

अर्थ—(वाडेसु वा) वाडाओने विषे, अथवा (रत्थासु व) शेरीओने विषे, अथवा (घरेसु वा) घरोने विषे, (एव) ए प्रकारे (एत्तिअ) एटलु एटले अमुक परिमाणवाळु (खेत्त) क्षेत्र (कप्पइ उ) मारे भिक्षाटन माटे कल्पे. (एवमाई) ए आदिक (एव) आ प्रकारे (खेत्तेण ऊ) क्षेत्रने आश्री अवमौदर्य (भवे) थाय छे १८

हवे बीजी रीते क्षेत्रने आश्री अवमौदर्य कहे छे —

पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्ति पयगवीहिआ चेव । सबुकावट्टायय—गतुपच्चागया छट्ठा ॥ १९ ॥

अर्थ—(पेडा य) पेटीना आकारनी जेम सळग चोतरफ सर्व घरोमा अटन करवु ते पेटा कहेवाय छे १, (अद्धपेडा) तेना ज अर्धभागमां भिक्षाटन करवु ते अर्धपेटा कहेवाय छे २, (गोमुत्ति) बळदना मूत्रने आकारे एटले डाबी बाजु तथा जमणी बाजु एक एक घर मूकीने अटन करवु ते गोमुत्रिका कहेवाय छे ३, (पयगवीहिआ) पतग–तीडनी जेम वचे वचे घणा घरो मूकी मूकीने अटन करवु ते पतगवीथिका कहेवाय छे ४, (चेव) निश्चे (सबुकावट्टा) शबूक एटले शख, तेना आवर्तनी जेम अटन करवु ते शबूकावर्त कहेवाय छे, ते बे प्रकारे छे–आभ्यतर शबूकावर्त अने बाह्यशबूकावर्त तेमां शखनी नाभि जेवा आकारवाळा क्षेत्रमा प्रथम मध्यभागना घरथी आरभी बहारना घर सुधी अटन करवु ते आभ्यतर शबूकावर्त अने

अर्थ—(गामे) गामने विषे, (नगरे) नगरने विषे, (तह) तथा (रायहाणिनिगमे) राजधानीने विषे, निगम एटले घणा वेपारीओनुं निवासस्थान तेने विषे, (अ) तथा (आगरे) आकरने विषे एटले सोना रुपा विगेरेनी खाणने विषे, (पल्ली) पल्लीने विषे, (खेडे) जेमां उंचो किल्लो होय एवा खेटने विषे, (कव्वड) कर्वटने विषे एटले कुत्सित नगरने विषे, (दोणमुह) द्रोणमुख एटले जळमार्गे तथा स्थळमार्गे जेमां जवातुं होय तेने विषे, (पट्टण) पत्तन बे प्रकारे छे—जळपत्तन अने स्थळपत्तन. तेमां जळपत्तन जळनी वच्चे होय छे अने स्थळपत्तन जळ रहित पृथ्वीपर होय छे, ते बन्ने प्रकारना पत्तनने विषे, (मडंब) मडंब एटले फरतुं अढी योजन सुधीमां बीजुं गाम न होय तेवुं गाम तेने विषे, (संवाहे) संबाध एटले जेमां चारे वर्णना घणा लोको वसता होय तेने विषे. १६.

आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे अ । थलिसेणाखंधारे, सत्थे संवट्टकोट्टे अ ॥ १७ ॥

अर्थ—(आसमपए) तापस विगेरेना आश्रमस्थानने विषे, (विहारे) विहार एटले देवगृह अथवा भिक्षुकोनुं निवास स्थान, ते जेमां मुख्य होय एवा गामने विषे, (सन्निवेसे) संनिवेश एटले यात्रादिकने माटे आवेला लोकोना आवास, तेने विषे, (समायघोसे) समाज एटले पथिकनो समूह तेने विषे, घोष एटले गोकुळ तेने विषे, (अ) तथा (थलि) स्थली एटले उंची भूमिनो प्रदेश तेने विषे, (सेणा) चतुरंग सेनाने विषे, (खंधारे) स्कंधावार एटले वणिजादिक सर्व जन सहित चतुरंग सेनानो निवास तेने विषे, (सत्थे) सार्थ एटले गाडांमां करीयाणां भरी वेपार माटे नीकळेला वेपारीओनुं आवासस्थान तेने विषे, (संवट्टकोट्टे अ) तथा संवर्त एटले भयथी त्रास पामेला लोकोनुं निवासस्थान तेने विषे अने

अर्थ—(जो) जेटलो (जस्स उ) जेनो (आहारा) आहार होय (तत्तो) ते आहारमांथी (जो) जे माजन करतो सतो (ओम तु) न्यूनताने (करे) करे केटलो न्यून करे ? ते कहे छे—(जहण्णेण) जघन्ये करीने (एगसित्थाइ) एक सिक्थ-दाणो विगेरे ओछु खाय, आदि शब्दथी बे सिक्थथी आरंभीने एक कवळ सुधीनु भोजन न्यून करे, ते पुरुषने (एवं) आ प्रमाणे (दव्वेण ऊ) द्रव्य करीने (भवे) अवमोदर्य थाय छे आ अल्पाहार नामना अवमोदर्यने आश्रीने कह्यु छे एटले के ज कवळ मुखमां नांखतां मुखनो अतिविकार न थाय तेटला प्रमाणवाळा बत्रीश कवळनो पूर्ण आहार पुरुषने होय छे अने स्त्रीने अट्ठावीश कवळनो आहार पूर्ण होय छे ते आहारमांथी जे एक सिक्थादिकथी एक कवळ पर्यंत ओछो आहार करे ते अल्पाहार नामनु अवमोदर्य कहेवाय छे कारण के अवमोदर्यना उपार्धादिक भेदोमां नव कवळादिकनु प्रमाण जघन्य पक्षे कह्यु छे ते आ प्रमाणे—अल्पाहार नामनु अवमोदर्य जघन्ये करीने एक कवळनु अने उत्कृष्ट करीने आठ कवळनु छे वचनु सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे १ उपार्ध नामनु अवमोदर्य जघन्य नव कवळनु, उत्कृष्ट बार कवळनुं, अने वचनु सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे २ द्विभाग नामनु अवमोदर्य जघन्य तेर कवळनु अने उत्कृष्ट सोळ कवळनु तथा वचेनु सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे ३ प्राप्त नामनु अवमोदर्य जघन्य सत्तर कवळनु, उत्कृष्ट चोवीश कवळनु अने वचनु सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे ४ तथा किंचित् उन नामनुं अवमोदर्य जघन्य पचीश कवळनु, उत्कृष्ट एकत्रीश कवळनु अने वचेनु सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे ५. १५

हवे क्षेत्रथी उनोदरि कहे छे—

गामे नगरे तह राय–हाणिनिगमे य आगरे पल्ली। खेडे कब्बडदोणमु–हपट्टणमडंबसंबाहे ॥१६॥

थवानो संभव छे, आ सपरिकर्म कहेवाय छे, अने वीजळी, पर्वत के भीत विगेरेनुं पडवुं के तत्काळ घात करनार रोगादिकनो उपद्रव थवो ते रूपी आयुष्यनो व्याघात होय तो संलेखना कर्या विना ज भक्तप्रत्याख्यानादिक अनशन करवामां आवे छे. आ अपरिकर्म कहेवाय छे. तथा (नीहारिं) निर्हारि एटले ग्रामादिकनी वहार जइने पादपोपगमन अनशन लेवुं ते, तथा (अनीहारि) अनिर्हारि एटले ग्रामादिकनी वहार ज होवाथी पयांइ जवानुं न होय अने जे स्थाने होय ते ज स्थाने पादपोपगमन अनशन लेवुं ते. (दोसु वि) बन्नेने विषे (आहारच्छेओ) आहारनो त्याग तो समान ज छे, एटले के सविचार के अविचार, सपरिकर्म के अपरिकर्म अने निर्हारि के अनिर्हारि ए सर्वने विषे आहारनो त्याग तो सरखो ज छे. १३.

हवे ऊनोदरि तप कहे छे.—

ओमोअरणं पंचहा, समासेण विआहिअं । दव्वओ खित्तकालेणं, भावेणं पज्जवेहि अ ॥ १४ ॥

अर्थ—(ओमोअरणं) अवमौदर्य एटले ऊनोदरि तप (समासेण) संक्षेपे करीने (पंचहा) पांच प्रकारनो (विआहिअं) कह्यो छे. ते आ प्रमाणे.—(दव्वओ) द्रव्यथी एटले द्रव्यने आश्रीने, (खित्तकालेण) क्षेत्रथी, काळथी, (भावेणं) भावथी, (पज्जवेहि अ) तथा पर्यायथी एटले पर्यायने आश्रीने. १४.

तेमां प्रथम द्रव्यथी ऊनोदरि कहे छे.—

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे । जहण्णेणेगसित्थाइ, एवं दव्वेण ऊ भवे ॥ १५ ॥

मददथी चेष्टा करे १ इंगिनीमरण करनार साधु आलोचना अने संलेखनादि पूर्वक शुद्ध ... उभा रही पोते जाते ज चतुर्विध आहारनु प्रत्याख्यान करे, तथा नियमित करेला स्थंडिलमा ज रहीने छायाथी तडके अने तडकेथी छायामा पोतानी जाते ज जाय, कोइनी कांइपण मदद ले नहीं २ हवे अविचार अनशन ते पादपोपगमन छे तेमां देवगुरुने वदनादिकनी विधि करी चतुर्विध आहारनु प्रत्याख्यान करी पर्वतनी गुफा विगेरे ठेकाणे जइ पादप (वृक्ष) नी जेम जावजीव चेष्टा रहित ज रहे १२

हवे बीजी रीते बे प्रकारनु अनशन कहे छे —

अहवा सपरिक्कम्मा, अपरिक्कम्मा य आहिया । नीहारिमनीहारि, आहारच्छेओ दोसु वि ॥ १३ ॥

अर्थ—(अहवा) अथवा (सपरिक्कम्मा) सपरिकर्म एटले उभा रहेवु, बेसवु, पडखु फेरववु, चापवु, चोळवु विगेरे परिकर्म सहित, (अपरिक्कम्मा य) तथा अपरिकर्म एटले कोइपण प्रकारना परिकर्म रहित (आहिआ) ए बे प्रकारे अनशन कह्यु छे तेमा सपरिकर्मना बे भेद छे —भक्तप्रत्याख्यान १ अने इंगिनीमरण २. तेमां भक्तप्रत्याख्यान अनशनमां पोताना अथवा बीजाना करेला उद्वर्तनादिक परिकर्म थइ शके छे १ अने इंगिनीमरणअनशनमां मात्र पोते करेला ज उद्वर्तनादिक थइ शके छे २ अपरिकर्ममा तो पादपोपगमन होवाथी कांइपण परिकर्म होतु नथी

अथवा सपरिकर्म एटले संलेखना सहित अने अपरिकर्म एटले संलेखना रहित तेमा जो कांइ आयुष्यनो व्याघात न होय तो भक्तप्रत्याख्यान विगेरे त्रणमाथी कोइ पण अनशन संलेखना पूर्वक करवु ए ज योग्य छे, अन्यथा आर्तध्यान

जाणवा लायक छे-जाणवो. अहीं वर्गने वर्गवडे गुणवाथी वर्गवर्ग थाय छे. जेमके ४०९६ वर्गनो अंक छे, तेने तेटलाए गुणवाथी १६७७७२१६ थाय छे. आटला तपना पदवड वर्गवर्ग नामनो तप थाय छे. एक उपवासथी चार उपवास सुधीना पदोने आश्री श्रेणि विगेरे तप बताव्यो. ते ज प्रमाणे पांच विगेरे पदोने आश्रीने पण ए ज रीते श्रेण्यादिक वर्गवर्ग सुधीना तपनी भावना करवी. हवे छठ्ठो जे प्रकीर्णक तप कह्यो ते श्रेणि आदिक निश्चित पदनी रचना विना ज पोतानी शक्ति प्रमाणे नमस्कार सहित-नवकारसी विगेरे तथा यवमध्य, वज्रमध्य, चंद्रप्रतिमा विगेरे अनेक प्रकारना तपो जाणवा. ११.

हवे मरणकाळनुं अनशन कहे छे.—

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा विआहिआ । सवियारमवियारा, कायचिट्ठं पई भवे ॥ १२ ॥

अर्थ—(जा सा) जे ते (मरणे) मरण समये (अणसणा) अनशन थाय छे, (सा) ते (दुविहा) बे प्रकारे (विआहिआ) कह्युं छे. तेमां एक (सवियारं) चेष्टारूप विचार सहित अने बीजुं (अवियारा) चेष्टारूप विचार रहित. ते तप (कायचिट्ठं) शरीरनी चेष्टाने (पई) आश्रीने (भवे) होय छे. तेमां सविचार अनशन बे प्रकारनुं छे.—भक्तप्रत्याख्यान १, अने इंगिनीमरण २. तेमां भक्तप्रत्याख्यान करनार साधु गच्छ मध्ये रही गुरु पासे आलोचना लइ विधिपूर्वक संलेखना करी त्रिविध के चतुर्विध आहारनुं प्रत्याख्यान करे. वळी ते साधु कोमळ संथारो पाथरी आहार अने उपकरण विगेरेपरनी ममतानो त्याग करी पोते नमस्कार मंत्रनो उच्चार करे अथवा पासे रहेला मुनि नमस्कार बोले ते सांभळे, तथा पोतानी शक्ति होय तो पोते शरीरनुं पडखुं फेरवे विगेरे शरीरनी चेष्टा करे अने शक्ति न होय तो बीजानी

शक्ति प्रमाणे श्रेणि वधारता वधारतां उत्कृष्ट छ मासना उपवास सुधी श्रेणिओ थइ शके छे ते सर्व श्रेणितप कहेवाय छे हवे श्रेणिने श्रेणिवडे गुणवाथी प्रतर थाय छे तेमां समजुतीने माटे उपवास, छठ, अट्ठम अने दशम (चार उपवास) नामना चार पदरूप श्रेणि लइए, तेने चारे गुणवाथी सोळ पदरूप प्रतर थाय छे ते लंबाइ अने पहोळाइमां सरखा ज थाय छे एटले के पहेली श्रेणिमां एकथी चार अंक लखवा, बीजीमां बेथी, त्रीजीमां त्रणथी अने चोथीमां चारथी अंक लखवा, ते आ प्रमाणे –

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

आटला अंको आवी रीतना एटले आवा अनुक्रमना तपपदे करीने करातो जे तप ते प्रतर तप कहेवाय छे प्रतरने श्रेणिवडे गुणवाथी घन थाय छे एटले सोळ पदरूप प्रतरने चार पदरूप श्रेणिवडे गुणतां चोसठ (६४) पदवडे घन तप थाय छे अने घनने घनवडे गुणवाथी वर्ग थाय छे तेथी चोसठने चोसठे गुणतां ४०९६, चोथभक्तथी आरंभीने दशम सुधीना तपवडे वर्ग तप थाय छे अर्थात् प्रतर तप चार वार करवाथी घन तप थाय छे अने घन तपने चोसठ वार करवाथी वर्ग तप थाय छे १०

तत्तो अ वग्गवग्गो उ, पचमओ छट्ठओ पइण्णतवो। मणइच्छिअचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥

अर्थ—(तत्तो अ) त्यारपछी (वग्गवग्गो उ) वर्गवर्ग नामनो तप (पचमओ) पांचमो छे ५, तथा (छट्ठओ) छट्ठो (पइण्णतवो) प्रकीर्णतप छे ६ ए रीते (मणइच्छिअचित्तत्थो) मनने इच्छित एवा स्वर्ग, मोक्ष के तेजोलेश्यादिक विचित्र-अनेक प्रकारना अर्थवाळा (इत्तरिओ) इत्वरिक नामनो अनशन तप (नायव्वो होइ)

इत्तरिअ मरणकाला य, दुविहा अणसणा भवे। इत्तरिआ सावकंखा, निरवकंखा उ विइज्जिआ ॥९॥

अर्थ—(इत्तरिअ) अल्प काळनी अवधिवाळुं (मरणकाला य) अने मरण काळ सुधीनुं एम (दुविहा) बे प्रकारनुं (अणसणा) अनशन (भवे) छे. तेमां (इत्तरिआ) इत्वर एटले अल्प काळनुं अनशन (सावकंखा) आकांक्षा सहित छे एटले बेघडी आदिक पछी भोजन करवानी अभिलाषा सहित छे, (उ) तु पुनः तथा वळी (विइज्जिआ) बीजुं जावजीवनुं अनशन (निरवकंखा) भोजननी आकांक्षा एटले इच्छा रहित छे. ९.

तेमां प्रथम इत्वर अनशनना भेद कहे छे.—

जो सो इत्तरिअतवो, सो समासेण छव्विहो। सेढितवो१ पयरतवो२ घणो अ३ तह होइ वग्गो अ४ ॥१०॥

अर्थ—(जो सो) जे ते (इत्तरिअतवो) इत्वर तप–अनशन छे, (सो) ते तप (समासेण) संक्षेपे करीने (छव्विहो) छ प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे.—(सेढितवो) श्रेणितप १, (पयरतवो) प्रतरतप २, (घणो अ) घनतप ३, (तह) तथा (वग्गो अ) वर्गतप ४ (होइ) छे. अहीं एक उपवासथी आरंभीने छ मासना उपवास सुधी श्रेणितप थइ शके छे. एटले के प्रथम एक उपवास करीने पारणुं, पछी तरत बे उपवास करीने पारणुं करवुं ते एक श्रेणि थइ. पछी प्रथम एक उपवास करीने पारणुं, पछी बे उपवास करीने पारणुं, पछी त्रण उपवास करीने पारणुं ए बीजी श्रेणि थइ. ए ज रीते एक उपवास ने पारणुं, बे उपवास ने पारणुं, त्रण उपवास ने पारणुं अने चार उपवास ने पारणुं ए त्रीजी श्रेणि थइ. ए ज रीते

(कम्म) कर्म (तवसा) तपवडे (निज्जरिज्जइ) क्षय पामे छे. ६

तपवडे कर्मनो क्षय थाय छे एम कह्यु, तेथी हवे ते तपना भेद बतावे छे —

सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भिंतरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भिंतरो तवो ॥७॥

अर्थ—(सो तवो) ते तप (दुविहो) बे प्रकारनो (वुत्तो) कह्यो छे, (बाहिरब्भिंतरो तहा) बाह्य तथा आभ्यंतर तेमां (बाहिरो) बाह्य तप (छव्विहो) छ प्रकारनो (वुत्तो) कह्यो छे, (एव) ए ज प्रमाणे (अब्भिंतरो) आभ्यंतर (तवो) तप पण छ प्रकारनो कह्यो छे ७

तेमां प्रथम बाह्य तपना छ प्रकार बतावे छे —

अणसणमूणोअरिआ, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ । कायकिलेसो सली-णया य बज्झो तवो होइ ॥८॥

अर्थ—(अणसण) अनशन, (ऊणोअरिआ) ऊनोदरिका, (भिक्खायरिया) भिक्षाचर्या एटले आहारने माटे उच्च नीच गृहोने विषे भ्रमण, (य) तथा (रसपरिच्चाओ) रसनो एटले विगइनो त्याग, (कायकिलेसो) कायक्लेश एटले ताप, शीत विगेरेनु सहन, (सलीणया य) अने संलीनता एटले अंगोपांगनो संकोच करीने वर्तवु आ प्रमाणे (बज्झो) बाह्य (तवो) तप (होइ) छे ८

तेमां प्रथम अनशननु स्वरूप कहे छे —

अर्थ—(एएसिं तु) वळी हे शिष्य ! आ प्राणीवधविरति विगेरे अने समिति विगेरे के जे आश्रव रहित थवाना हेतु छे तेमनो (विवच्चासे) विपर्यास सते–तेथी विपरीतपणुं हतुं ते वखतना (रागद्दोससमज्जिअं) राग अने द्वेषथी उपार्जन करेला कर्मने (भिक्खू) मुनि (जहा) जे प्रकारे (खवेइ उ) खपावे छे, (तं) ते (मे) मारी पासेथी (एगमणो) एकाग्र मनवाळो थइने (सुण) तुं सांभळ. ४.

प्रथम ते विषे दृष्टांत आपे छे.—

जहा महातलागस्स, सन्निरुद्धे जलागमे । उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥ ५ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (महातलागस्स) मोटा सरोवरना (जलागमे) जळ आववाना मार्ग (सन्निरुद्धे) पाळ विगेरेवडे रुंधे सते (उस्सिंचणाए) पछी तेमांथी अरघट्ट विगेरे यंत्रवडे सींचवाथी–उलेचवाथी तथा (तवणाए) सूर्यना तापथी (कमेणं) अनुक्रमे (सोसणा) तेना जळनुं शोषण (भवे) थाय छे. ५.

हवे दार्ष्टांतिक कहे छे.—

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे । भवकोडिसंचिअं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥

अर्थ—(एवं तु) ए ज प्रमाणे (पावकम्मनिरासवे) नवां पापकर्मना आश्रवनो अभाव सते एटले प्राणातिपातविरति विगेरेरूप पाळवडे नवा पापकर्मनुं आगमन रुंधे सते (संजयस्सावि) साधुनुं पण (भवकोडिसंचिअं) कोटि भवोमां संचेलुं

वरणादिक कर्मने (भिक्खू) साधु (तवसा) तपवडे (खवेइ) खपावे छे, (त) ते तपने (एगग्गमणो) एकाग्र मनवाळो सतो (सुण) तु सांभळ १

अहीं आश्रव रहित एवो ज जीव कर्मने खपावी शके छे, तेथी जे प्रकारे ते जीव आश्रव रहित थाय छे, ते कहे छ —

पाणिवहमुसावाए–अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ । राईभोअणविरओ, जीवो होइ अणासवो ॥ २ ॥

अर्थ—(पाणिवह) प्राणीवध, (मुसावाए) मृषावाद, (अदत्त) अदत्तादान, (मेहुण) मैथुन अने (परिग्गहा) परिग्रहथकी (विरओ) विराम पामेलो तथा (राईभोअणविरओ) रात्रिभोजनथी विराम पामेलो (जीवो) जीव (अणासवो) आश्रवरहित (होइ) होय छे २

पचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइदिओ । अगारवो अ निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥

अर्थ—(पचसमिओ) पांच समितिवाळो, (तिगुत्तो) त्रण गुप्तिवाळो, (अकसाओ) चार कषाय रहित, (जिइदिओ) जितेंद्रिय, (अगारवो) त्रण गौरव रहित, (अ) तथा (निस्सल्लो) त्रण शल्य रहित एवो (जीवो) जीव (अणासवो) आश्रव रहित (होइ) होय छे ३

आ प्रमाणे आश्रव रहित थयेलो जीव जे प्रकारे कर्मने खपावे छे, ते कहे छे —

एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जिअ । खवेइ उ जहा भिक्खू, त मे एगमणो सुण ॥ ४ ॥

अर्थ—(एस) आ (खलु) निश्चे (सम्मत्तपरक्कमस्स) सम्यक्त्व पराक्रम नामना (अज्झयणस्स) अध्ययननो (अट्ठे) अर्थ (समणेणं भगवया महावीरेणं) श्रमण भगवान महावीरस्वामीए (आघविए) सामान्य अने विशेषवडे कह्यो छे, (पण्णविए) हेतु फळादिक कहेवावडे जणाव्यो छे, (परूविए) स्वरूपने कहेवावडे प्ररूप्यो छे, (निदंसिए) दृष्टांत कहेवावडे देखाड्यो छे, तथा (उवदंसिए) उपसंहार द्वारवडे बताव्यो छे. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ७६.

इति एकोनत्रिंशमध्ययनम्. २६.

अथ तपोमार्गगति नामनुं त्रीशमुं अध्ययन. ३०.

ओगणत्रीशमा अध्ययनमां कर्म रहितपणुं थवाना कारणो कह्यां ते अकर्मता खरेखरी तपथी साधी शकाय छे, तेथी आ तपोमार्गगति नामनुं अध्ययन कहेवाय छे. तेमां तपरूपी भावमार्गनां फळभूत सिद्धिगति जेमां कहेवामां आवे ते तपोमार्गगति ए प्रमाणे आनो शब्दार्थ छे. तेनुं प्रथम सूत्र आ प्रमाणे छे.—

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥

अर्थ—(जहा उ) जे प्रकारे (रागदोससमज्जिअं) रागद्वेषथी उपार्जन करेला (पावगं) पापवाळा (कम्मं) ज्ञाना-

ध्यानना चोथा भेदनु (झियायमाणे) ध्यान करतो अर्थात् शैलेशी अवस्थाने अनुभवतो सतो (वेयणिज्जं) वेदनीय, (आउअं) आयुष्य, (नामं) नाम, (गोत्तं च) अने गोत्र (एए चत्तारि वि) ए चारे (कम्मंसे) सत्कर्मांने (जुगवं) एकी वखते (खवेइ) खपावे छे ७२-७४ (तओ) त्यारपछी (ओरालियकम्माइं च) औदारिक, कार्मण अने च शब्दथी तैजस ए त्रणे शरीरने (सव्वाहिं विप्पजहणाहिं) सर्व विप्रहानिओवडे एटले विशेषे करीने प्रकर्षथी त्याग करवा वडे अर्थात् सर्वथा प्रकारे (विप्पजहित्ता) त्याग करीने (उज्जुसेढिपत्ते) ऋजुश्रेणिने-सरल एवी आकाशप्रदेशनी पंक्तिने पाम्यो सतो (अफुसमाणगई) स्पर्श रहित गतिवाळो एटले पोताना अवगाह उपरांत बीजा आकाशप्रदेशने स्पर्श नहीं करतो सतो अर्थात् जेटला आकाशप्रदेशमां ते जीव अवगाढ थयो छे तेटला ज आकाशप्रदेशने समश्रेणिवडे स्पर्श करतो सतो (उड्ढं) उपर (एगसमएण) एक समयवडे ज (अविग्गहेणं) वक्रगतिरूप विग्रहगति विना ज (तत्थ गंता) त्यां एटले ईषत्प्राग्भारा एवा मुक्तिपदमां जइने (सागारोवउत्ते) साकार उपयोगवाळो एटले ज्ञानना उपयोगवाळो होय ते समये (सिज्झइ) समाप्त कार्यवाळो थाय छे इत्यादि (जाव) यावत् (अंतं करेइ) सर्व कर्मना अंतने करे छे ए सर्व पूर्वनी जेम जाणवु ७२-७५

हवे आ अध्ययननो उपसंहार करे छे

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेण भगवया महावीरेण आघविए पण्णविए परूविए निदंसिए उवदंसिए त्ति बेमि ॥ ७६ ॥

जुगवं खवेइ ॥ ७२ ॥ ७४ ॥ तओ ओरालिअकम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ, जाव अंतं करेइ ॥ ७३ ॥ ७५ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी—केवळीपणुं प्राप्त थया पछी (आउअं) अंतर्मुहूर्त्तथी आरंभीने देशोनपूर्वकोटि पर्यंत जेटलुं आयुष्य बाकी होय तेटला आयुष्यने (पालइत्ता) पाळीने (अंतोमुहुत्तावसेसाउए) अंतर्मुहूर्त आयुष्य शेष रहे त्यारे (जोगनिरोहं) योगनिरोधने (करेमाणे) करनार जीव (सुहुमकिरिअं अप्पडिवाइ) सूक्ष्मक्रियअप्रतिपाति नामना (सुक्कज्झाणं) शुक्लध्यानना त्रीजा भेदने ध्यावे. तेनुं (ज्झिआयमाणे) ध्यान करतो (तप्पढमयाए) ते प्रथमपणाए करीने एटले प्रथम (मणजोगं) मनोयोगने एटले द्रव्यमनना समीपपणाथी उत्पन्न थयेला जीवव्यापारने (निरुंभइ) रुंधे, तेने (निरुंभइत्ता) रुंधीने (वइजोगं) वचनयोगने एटले द्रव्यभाषाना सांनिध्यपणाथी उत्पन्न थयेला जीवव्यापारने (निरुंभइ) रुंधे, (निरुंभइत्ता) तेने रुंधीने (आणापाणनिरोहं) उच्छ्वास निश्वासना निरोधने (करेइ) करे—उपलक्षणथी सर्व काययोगनो निरोध करे. (करित्ता) आ रीते असंख्याता असंख्याता समयोवडे त्रणे योगनो निरोध करीने (ईसिं) ईषत् एटले स्वल्प प्रयत्नवडे (पंचहस्सक्खरुच्चारद्धाए अ णं) अ इ उ ऋ लृ ए पांच ह्रस्व अक्षरोने मध्यमपणे उचार करतां जेटलो काळ लागे तेटला काळने विषे (अणगारे) साधु (समुच्छिन्नकिरिअं अनियट्टि) समुच्छिन्नक्रिय अनिवृत्ति नामना (सुक्कज्झाणं) शुक्ल-

बे समयनी स्थितिवाळु, (त) ते कर्म (पढमसमए) पहेले समये (बद्ध) बांधे (बिइअसमए) बीजे समये (वेइअ) वेदे अने (तइअसमए) त्रीजे समये (निज्जिण्ण) जीर्ण करे एटले क्षीण करे–आवु (त बद्ध) त कर्म जीव प्रदेशनी साथे आकाशनी साथे घटनी जेम तथा (पुट्ठ) लीसी मणिनी भींत उपर पडेला सुका अने आडा चूर्णनी जेम स्पर्श मात्र करे छे. आ य विशेषणथी ते कर्म निधत्त अने निकाचित अवस्थाने नहीं पामेलु एम जाणवु ते कम पहेल समय (उईरिअ) उदयने पाम्यु एवु, बीजे समये (वेइअ) तेना फळरूप सुखने अनुभववावड वेद्यु एवु अने त्रीजे समय (निज्जिण्ण) क्षयने पाम्यु एवु समजवु एटले (सेअकाले) चोथा समय आदि आगामी काळन विषे (अकम्म चावि) ते कर्मथी रहितपणु (भवइ) थाय छे ७१–७३

तेवो जीव आयुष्यने छेडे शैलेशीकरणने पामीने–करीने कर्म रहित थाय छे, तेथी शैलेशी अने अकर्मता ए बे द्वारने अर्थथी कहे छे —

अहाउअं पालइत्ता अंतोमुहुत्तावसेसाउए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरिअं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झिआयमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ, निरुंभइत्ता वइजोगं निरुंभइ, निरुंभइत्ता आणापाणनिरोहं करेइ, करित्ता ईसिं पंचहस्सक्खरुच्चारद्धाए अ णं अणगारे समुच्छिन्नकिरिअं अनिअट्टिं सुक्कज्झाणं झिआयमाणे वेअणिज्जं आऊअं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि कम्मंसे

छेवटे खपावे छे. त्यारपछी अनुक्रमे संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभने खपावे छे. आ दरेक प्रकृतिने खपाववानो
काळ अंतर्मुहूर्त्तनो छे. तथा सर्व प्रकृतिओने खपाववानो काळ पण अंतर्मुहूर्त्तनो ज छे. केमके अंतर्मुहूर्त्तना असंख्याता भेद छे.
आ प्रमाणे मोहनीय कर्मने खपावी पछी एक अंतर्मुहूर्त्तमां यथाख्यात चारित्रने पामे छे, पछी क्षीणमोह गुणस्थानकना
छेल्ला बे समयमांना पहेला समये निद्रा अने प्रचला ए बेने खपावी छेल्ला समये शुं खपावे छे ? ते कहे छे.—(पंचविहं)
पांच प्रकारनुं (नाणावरणिज्जं) ज्ञानावरणीय, (नवविहं) नव प्रकारनुं (दंसणावरणिज्जं) दर्शनावरणीय[1] अने
(पंचविहं) पांच प्रकारनुं (अंतराइअं) अंतराय कर्म, (एए तिण्णि वि कम्मंसे) आ त्रणे सत्कर्मोने—तेनी १४ प्रकृ-
तिओने (जुगवं खवेइ) एकी वखते खपावे छे. (तओ पच्छा) त्यारपछी (अणुत्तरं) सर्वोत्तम, (अनंतं) विनाश
नहीं होवाथी अनंत, (कसिणं) समग्र पदार्थोने ग्रहण करनार होवाथी कृत्स्न—समग्र, (पडिपुण्णं) समग्र स्वपर पर्यायो-
वडे परिपूर्ण, (निरावरणं) समग्र आवरण रहित, (वितिमिर) अज्ञानरूपी अंधकार रहित, (विसुद्धं) सर्व दोष रहित,
(लोगालोगप्पभावगं) लोकालोकने प्रकाश करनार (केवलवरनाणदंसणं) श्रेष्ठ एवा केवळज्ञान अने केवळदर्शनने
(समुप्पाडेइ) उत्पन्न करे छे. त्यारपछी (जाव) ज्यां सुधी (सजोगी) सयोगी मन, वचन अने कायाना व्यापारवाळो
(भवइ) होय, (ताव य) त्यां सुधी (इरिआवहिअं) ऐर्यापथिक (कम्मं) कर्मने (बंधइ) बांधे छे. ते ऐर्यापथिक
कर्म केवुं ? ते कहे छे.—(सुहफरिस) आत्मप्रदेशनी साथे सुखकारक छे स्पर्श जेनो एवुं—सातावेदनीयरूप (दुसमयट्ठितिअं)

---

१ अहीं नव विध कहे छे पण तेमाथी पाच निद्रा तो प्रथम खपावेली छे तेथी आ छेल्ले समये तो चार दर्शनावरण ज खपावे छे.

भवइ ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पिज्जदोसमिच्छादसणविजएण) प्रेम–(राग), द्वेष अने मिथ्यादर्शनना विजयवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर–(पिज्जदोसमिच्छादसणविजएण) राग, द्वेष अने मिथ्यात्वना विजयवडे करीने जीव (नाणदसणचरित्ताराहणयाए) ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधनाने माटे (अब्भुट्ठेइ) उद्यमवंत थाय छे. त्यारपछी (अट्ठविहस्स) आठ प्रकारना (कम्मगंठिविमोअणयाए) कर्मनी मध्ये जे अत्यंत दुर्भेद्य घातीकर्मरूप कर्मग्रंथि छे तेना विमोचन एटले विनाश करवा माटे उद्यमवंत थाय छे पछी शु करे छे ? ते कहे छे–(तप्पढमयाए) पहेलां कोइ वखत खपावेल नहीं होवाथी प्रथमपणाए करीने (जहाणुपुव्वीए) अनुक्रमे (अट्ठावीसइविहं) अट्ठावीश प्रकारना (मोहणिज्ज कम्म) मोहनीय कर्मने (उग्घाएइ) खमावे छे तेने खपाववानो अनुक्रम आ प्रमाणे छे–प्रथम एकी वखते अनंतानुबंधी क्रोधादिक चारे कषायने खपावे छे त्यारपछी अनुक्रमे मिथ्यात्व, मिश्र अने समकितमोहनीनां दळियांने खपावे छे त्यारपछी प्रत्याख्यानावरण अने अप्रत्याख्यानावरणरूप आठ कषायोने खपाववानो आरंभ करे छे, ते आठे अर्धा खपे त्यां वच्चे नरकगति १, नरकानुपूर्वी २, तिर्यंगति ३ तिर्यगानुपूर्वी ४, एकेंद्रियादिक चार जाति ८, आतप ९, उद्योत १०, स्थावर ११, सूक्ष्म १२, साधारण १३, निद्रानिद्रा १४, प्रचलाप्रचला १५ अने स्त्यानर्द्धि १६, आ सोळ प्रकृतिने खपावे छे पछी ते आठे कषायोनो बाकी रहेलो अर्ध भाग खपावे छे. त्यारपछी पुरुष होय तो अनुक्रमे नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, हास्यादिक छ अने पुरुषवेदने खपावे छे, स्त्री के नपुंसक खपावतो होय तो पोतपोताना वेदने छेडे–

उज्जुभावं संतोसं च जणयइ त्ति वत्तव्वं ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे मान, माया अने लोभना विषयवाळां सूत्रो पण कहेवा. विशेष ए जे–मानना विजयवडे मार्दवने, मायाना विजयवडे ऋजुभावने अने लोभना विजयवडे संतोषने उत्पन्न करे छे अने तेथी नवा कर्म बांधतो नथी ने पूर्वकर्म निर्जरे छे इत्यादि कहेवुं. ६८–७०. ६९–७१. ७०–७२.

कषायनो विजय प्रेम (राग), द्वेष अने मिथ्यादर्शनना विजय विना थतो नथी तेथी ते प्रेमादिकना विजयने कहे छे.—

पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ, अट्ठविहस्स कम्मगंठिविमोअणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं पंचविहं अंतराइअं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावगं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ, जाव सजोगी भवइ ताव य इरिआवहिअं कम्मं बंधइ, सुहफरिसं दुसमयट्ठितिअं, तं पढमसमए बद्धं बिइअसमए वेइअं तइअसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उईरिअं वेइअं निज्जिण्णं सेअकाले अकम्मं चावि

घाणिंदिएण एव चेव ॥ ६४ ॥ ६६ ॥ जिब्भिंदिए वि ॥ ६५ ॥ ६७ ॥ फासिंदिए वि ॥ ६६ ॥ ६८ ॥ नवर गधेसु रसेसु फासेसु वत्तव्व ॥

अर्थ—घ्राणेंद्रिय, जिव्हेंद्रिय अने स्पर्शेंद्रियना निग्रहने विषे पण ए ज प्रमाणे जाणवु विशेष ए के घ्राणेंद्रियमा मनोज्ञामनोज्ञ गध लेवो, जिव्हेंद्रियमा रस लेवो अने स्पर्शेंद्रियमां स्पर्श लेवो. अने तेना निग्रहथी नवा कर्म बाधतो नथी ने पुर्वकर्मने निर्जरे छे एम समजवु ६४–६६ ६५–६७ ६६–६८

इंद्रियनिग्रह पण कषायना विजयथी ज थाय छे तेथी कषायना विजयने कहे छे —

कोहविजएण भते ! जीवे किं जणयइ ? कोहविजएण खतिं जणयइ । कोहवेअणिज्ज कम्म न बधइ, पुव्वबद्ध च निज्जरेइ ॥ ६७ ॥ ६९ ॥

अर्थ—(भते) हे भगवान ! (कोहविजएण) क्रोधना विजय–निग्रहवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? (कोहविजएण) क्रोधना विजयवडे जीव (खतिं) क्षमाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (कोहवेअणिज्ज) क्रोधवेदनीय एटले क्रोधना हेतुभूत पुद्गळरूप (कम्म) कर्मने (न बधइ) बांधतो नथी (पुव्वबद्ध च) तथा पूर्वे बांधेला ते क्रोधवेदनीय कर्मने (निज्जरेइ) खपावे छे ६७–६९

एव माणेण ॥ ६८ ॥ ७० ॥ मायाए ॥ ६९ ॥ ७१ ॥ लोहेण ॥ ७० ॥ ७२ ॥ नवर मद्दव

रागद्दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइअं च नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६२ ॥ ६४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सोइंदियनिग्गहेणं) पोताना विषय तरफ जता एवा श्रोत्रेंद्रियना निग्रहवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर—(सोइंदियनिग्गहेणं) श्रोत्रेंद्रियना निग्रहवडे जीव (मणुण्णामणुण्णेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एटले इष्ट अने अनिष्ट एवा (सद्देसु) शब्दोने विषे अनुक्रमे (रागद्दोसनिग्गहं) राग अने द्वेषना निग्रहने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (तप्पच्चइअं च) तथा ते रागद्वेषना प्रत्ययवाळुं-निमित्तवाळुं (नवं कम्मं) नवुं कर्म (न बंधइ) बांधतो नथी. (पुव्वबद्धं च) अने पूर्वे बांधेला कर्मने (निज्जरेइ) निर्जरे छे-खपावे छे. ६२-६४.

चक्खिंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? चक्खिंदियनिग्गहेणं मणुण्णामणुण्णेसु रूवेसु रागद्दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइअं नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६३ ॥ ६५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (चक्खिंदियनिग्गहेणं) चक्षुइंद्रियना निग्रहवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(चक्खिंदियनिग्गहेणं) चक्षुइंद्रियना निग्रहवडे जीव (मणुण्णामणुण्णेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एवा (रूवेसु) रूपोने विषे (रागद्दोसनिग्गहं) अनुक्रमे राग अने द्वेषना निग्रहने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (तप्पच्चइअं) तथा ते रागद्वेषना निमित्तवाळुं (नवं कम्मं) नवुं कर्म (न बंधइ) बांधतो नथी. (पुव्वकम्मं च) तथा पूर्वे बांधेला कर्मने (निज्जरेइ) निर्जरे छे-खपावे छे. ६३-६५.

चरित्तसपन्नयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? चरित्तसपन्नयाए ण सेलेसीभाव जणयइ, सेलेसीपडिवन्ने अ अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमत करेइ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भते) हे भगवान ! (चरित्तसपन्नयाए ण) चारित्र सहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(चरित्तसपन्नयाए ण) चारित्रसहितपणाए करीने जीव (सेलेसीभाव) योगनो निरोध करवावडे शैलेश–मेरुनी जेम अत्यत स्थिर थयेल होवाथी मुनि पण शैलेश कहेवाय छे तेनी जे अवस्था त शैलेशी, तेना होवापणाने एटले कहेवाशे एवा शैलेशीभावने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (सेलसीपडिवन्ने अ) शैलेशीकरणने पामलो एवो (अणगारे) साधु (चत्तारि केवलिकम्मसे) चार केवळी सत्कर्मोने–अघातिया कर्मोने (खवेइ) खपावे छे (तओ पच्छा) त्यारपछी (सिज्झइ) समाप्त कार्यवाळो थाय छे, (बुज्झइ) वस्तुतत्त्वने जाणे छ, (मुच्चइ) ससारथी मूकाय छे, (परिनिव्वाइ) कर्मना ताप रहित थवाथी शीतळ थाय छे, अने (सव्वदुक्खाणमत करेइ) सर्व दुःखोनो अत करे छे ६१–६२

इंद्रियोनो निग्रह करवाथी ज चारित्र प्राप्त थाय छे, तथी दरेक इंद्रियना निग्रहने कहे छे —

सोइंदियनिग्गहेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? सोइंदियनिग्गहेण मणुण्णामणुण्णेसु सद्देसु

सहित एवो सतो (संसारे) संसारने विषे (न विणस्सइ) विनाश पामतो नथी—मोक्षमार्गथी दूर जतो नथी. (नाणविणयतवचरित्तजोगे) अवधि विगेरे ज्ञान, विनय, तप अने चारित्रयोगोने (संपाउणइ) सम्यक् प्रकारे पामे छे, तथा (ससमयपरसमयसंघायणिज्जे) स्वसमय अने परसमयने अर्थात् तेना जाणनारने मळवा लायक (भवइ) थाय छे. ५९–६१.

दंसणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तच्छेअणं करेइ, परं न विज्झाइ, अणुत्तरेणं णाणेणं दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (दंसणसंपन्नयाए णं) दर्शन युक्तपणाए करीने एटले क्षायोपशमिक समकित सहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(दंसणसंपन्नयाए णं) दर्शन सहितपणाए करीने जीव (भवमिच्छत्तच्छेअणं) संसारना हेतुरूप मिथ्यात्वनुं सर्वथा छेदन (करेइ) करे छे, एटले क्षायिक समकितने पामे छे. (परं) त्यारपछी उत्कृष्टथी ते ज भवमां अने मध्यम तथा जघन्यनी अपेक्षाए त्रीजा के चोथा भवमां केवळज्ञान प्राप्त थवाथी (न विज्झाइ) होलवाइ जतो नथी-केवळज्ञान अने केवळदर्शनरूप प्रकाशना अभावने पामतो नथी. परंतु (अणुत्तरेणं) सर्वोत्तम एवा (णाणेणं) केवळज्ञानवडे अने (दंसणेणं) केवळदर्शनवडे (अप्पाणं) पोताना आत्माने (संजोएमाणे) संयोजना करतो-तेनी साथे जोडतो (सम्मं भावेमाणे) सम्यक् प्रकारे भावतो एटले तन्मयपणाने पमाडतो सतो (विहरइ) भवस्थ केवळीपणे विचरे छे. ६०–६२.

कर्मना ताप रहित थवाथी शीतळ थाय छे, तथा (सव्वदुक्खाणमंत करेइ) शारीरिक अने मानसिक सर्व दुःखोना अंतने करे छे ५८-६०

आ प्रमाणे त्रण समाधारणाथी ज्ञानादिक त्रयनी शुद्धि कही हवे तेनु ज फळ कहे छे —

नाणसपन्नयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? नाणसपन्नयाए ण सव्वभावाहिगमं जणयइ, नाणसपन्ने अ ण जीवे चाउरंते संसारकंतारे न विणस्सइ, जहा सूई ससुत्ता पडिआ वि न विणस्सइ तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ, नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमयपरसमयसंघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ ६१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (नाणसपन्नयाए ण) श्रुतज्ञान सहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(नाणसपन्नयाए ण) श्रुतज्ञान सहितपणाए करीने जीव (सव्वभावाहिगमं) सर्व पदार्थना ज्ञानने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (नाणसपन्ने अ ण) श्रुतज्ञान सहित एवो (जीवे) जीव (चाउरंते) चतुरंत (संसारकंतार) संसाररूपी कांतारने विषे (न विणस्सइ) विनाश पामतो नथी एटले मुक्तिमार्गथी वधारे दूर थतो नथी आ वातने दृष्टांतवडे वधारे स्पष्ट करीने बतावे छे —(जहा) जेम (सूई) सोय (ससुत्ता) सूत्र-दोरा सहित (पडिआ वि) कादव विगेरेमां पडी सती पण (न विणस्सइ) विनाश पामती नथी-बहु दूर जती नथी (तहा) तेम (जीवे) जीव (ससुत्ते) सूत्र-श्रुतज्ञान

पर्यायोने (विसोहित्ता) विशुद्ध करीने (सुलहबोहित्तं) सुलभबोधिपणाने (निव्वत्तेइ) उत्पन्न करे छे अने (दुल्लहबोहित्तं) दुर्लभबोधिपणाने (निज्जरेइ) निर्जरे छे–खपावे छे. ५७–५६.

कायसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ, चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ, अहक्खायचरित्तं विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ५८ ॥ ६० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कायसमाहारणयाए णं) संयमयोगने विषे शरीरना सम्यक् व्यापाररूप कायनी समाधारणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(कायसमाहारणयाए णं) कायनी समाधारणाए करीने जीव (चरित्तपज्जवे) क्षायोपशमिक चारित्रना भेदरूप चारित्रना पर्यायोने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे. (चरित्तपज्जवे) क्षायोपशमिक चारित्रना पर्यायोने (विसोहित्ता) विशुद्ध करीने (अहक्खायचरित्तं) यथाख्यात चारित्रने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे, (अहक्खायचरित्तं) यथाख्यात चारित्रने (विसोहित्ता) विशुद्ध करीने (चत्तारि) चार (केवलिकम्मंसे) केवळीना सत्कर्मोने एटले अघातिया चारे कर्मोने (खवेइ) खपावे छे. (तओ पच्छा) त्यारपछी (सिज्झइ) समाप्त कार्यवाळा थाय छे, (बुज्झइ) वस्तुतत्त्वने जाणे छे, (मुच्चइ) संसारथी मुक्त थाय छे, (परिनिव्वाइ)

स्थापन करवु तेरूप मननी समाधारणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(मणसमाहारणयाए ण) मननी समाधारणाए करीने जीव (एगग्ग) चित्तना एकाग्रपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (एगग्ग जणइत्ता) एकाग्रताने उत्पन्न करीने (नाणपज्जवे जणयइ) विशेष विशेष श्रुतना बोधरूप ज्ञानना पर्यायोने उत्पन्न करे छे, (नाणपज्जवे जणइत्ता) अने ज्ञानना पर्यायोने उत्पन्न करीने (सम्मत्त विसोहेइ) सम्यक्त्वने शुद्ध करे छे केमके तत्त्व ज्ञाननी शुद्धि थवाथी तत्त्वना विषयवाळी श्रद्धा पण विशुद्ध थाय छे, तेथी करीने ज (मिच्छत्त विनिज्जरेइ) मिथ्यात्वने विशेषे करीने निर्जरे छे-खपावे छ ५६–५८

वइसमाहारणयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? वइसमाहारणयाए ण वइसाहारणदंसण पज्जवे विसोहेइ, वइसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहित्त निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहित्त निज्जरेइ ॥ ५७ ॥ ५९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वइसमाहारणयाए ण) स्वाध्यायमां वाणी स्थापन करवारूप वाणीनी समाधारणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(वइसमाहारणयाए ण) वाणीनी समाधारणाए करीने जीव (वइसाहारणदंसणपज्जवे) वाणीने साधारण एटले वाणीना विषयवाळा अर्थात् वाणीथी कहेवा लायक पदार्थोना विषयवाळा दर्शनना पर्यायोने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे (वइसाहारणदंसणपज्जवे) वाणीने साधारण एवा दर्शनना

प्रकारनी वचनगुप्ति न होय तो चित्तनुं एकाग्रपणुं पण थइ शके नहीं. ५४–५६.

कायगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ, संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥ ५७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कायगुत्तयाए णं) शुभ योगने विषे प्रवृत्ति करवारूप कायगुप्तिए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे? उत्तर—(कायगुत्तयाए णं) कायगुप्तिए करीने जीव (संवरं) अशुभ योगना निरोधरूप संवरने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (संवरेणं) निरंतर अभ्यास कराता संवरवडे (कायगुत्ते) सर्वथा कायव्यापारनो निरोध करनार जीव (पुणो) वळी (पावासवनिरोहं) पापाश्रवनो एटले पापकर्मना ग्रहणनो निरोध (करेइ) करे छे. ५५–५७.

आ त्रणे गुप्तिवडे अनुक्रमे मन विगेरेनी समाधारणा थाय छे, तेथी ते समाधारणाने कहे छे.—

मणसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ, एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ, नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं विनिज्जरेइ ॥ ५६ ॥ ५८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (मणसमाहारणयाए णं) मननुं सम्यक् प्रकारे आगममां कह्या प्रमाणे धारण करवुं-

मणगुत्तयाए ण भंते! जीवे किं जणयइ? मणगुत्तयाए ण जीवे एगग्ग जणयइ, एगग्गचित्ते ण जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥ ५३ ॥ ५५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (मणगुत्तयाए ण) मनगुप्तिए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(मणगुत्तयाए ण) मनगुप्तिए करीने (जीवे) जीव (एगग्ग) धर्मने विषे एकाग्रताने–तन्मयपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. अने (एगग्गचित्ते ण) एकाग्रचित्तवाळो (जीवे) जीव (मणगुत्ते) मनगुप्तिवाळो एटले अशुभ अध्यवसायमां जता मनने रोकतो सतो (संजमाराहए) संयमनो आराधक (भवइ) थाय छे ५३–५५

वइगुत्तयाए ण भंते! जीवे किं जणयइ? वइगुत्तयाए ण निव्विआरत्तं जणयइ, निव्विकारे ण जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते आवि भवइ ॥ ५४ ॥ ५६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वइगुत्तयाए ण) कुशळ वाणी बोलवारूप वचनगुप्तिवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वइगुत्तयाए ण) वचनगुप्तिवडे जीव (निव्विआरत्तं) निर्विकारपणाने एटले विकथादिक करवारूप वाणीना विकारना अभावने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (निव्विकारे ण) वाणीना विकार रहित एवो (जीवे) जीव (वइगुत्ते) सर्वथा वाणीना निरोधरूप वचनगुप्तिवाळो अने (अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते आवि) अध्यात्मयोगना एटले मनना व्यापार धर्मध्यानादिकना साधनो जे एकाग्रतादिक तेणे करीने युक्त एवो पण (भवइ) थाय छे विशेष

वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी आवि भवइ ॥ ५१ ॥ ५३ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (करणसच्चेणं) प्रतिलेखनादिक क्रिया करवामां सत्य एटले विधिप्रमाणे आराधन करवुं, ते वडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(करणसच्चेणं) करणसत्यवडे, जीव (करणसत्ति) करणशक्ति एटले अपूर्व अपूर्व शुभ क्रिया करवानी शक्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (करणसच्चे अ) तथा करणसत्यने विषे (वट्टमाणे जीवे) वर्तता जीव (जहावाई) जे प्रमाणे बोले (तहाकारी आवि) ते प्रमाणे करनारो पण (भवइ) थाय छे, एटले के ते सूत्रने भणतो सतो जे प्रमाणे क्रियासमूहने मुखथी बोले छे ते ज प्रमाणे ते ते क्रियाने करे पण छे. ५१–५३.

तेवा मुनिने योगसत्य पण होय छे, तेथी योगसत्यने कहे छे.—

जोगसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोगसच्चेणं जोगे विसोहेइ ॥ ५२ ॥ ५४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (जोगसच्चेणं) योगसत्यवडे एटले मन, वचन अने कायाना सत्यवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(जोगसच्चेणं) योगसत्यवडे जीव (जोगे) मन, वचन, कायाना योगोने (विसोहेइ) शुद्ध करे छे एटले क्लिष्ट कर्मना बंधनो अभाव होवाथी ते योगोने निर्दोष करे छे. ५२–५४.

आ योगसत्य गुप्तिवाळाने ज होय छे तेथी गुप्तिने कहे छे.—

तत्त्वथी जे सत्यतायुक्त होय तेने ज मार्दव होइ शके छे, सत्यमां पण भावसत्य ज प्रधान छे, तेथी भावसत्यने कहे छे —

भावसच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? भावसच्चेण भावविसोहिं जणयइ, भावविसोहिए अ वट्टमाणे जीवे अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोअधम्मस्स आराहए भवइ ॥ ५० ॥ ५२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (भावसच्चेण) भावसत्यवडे एटले शुद्ध अंतःकरणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(भावसच्चेण) भावसत्यवडे जीव (भावविसोहिं) भावविशुद्धिने एटले अध्यवसायनी शुद्धिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (भावविसोहिए अ) अने भावविशोधिने विषे (वट्टमाणे) वर्ततो (जीवे) जीव (अरहंतपण्णत्तस्स) अरिहंते प्ररूपेला (धम्मस्स) धर्मनी (आराहणयाए) आराधनाने माटे (अब्भुट्ठेइ) उत्साहवाळो थाय छे (अरहंतपण्णत्तस्स) अने अरिहंते प्ररूपेला (धम्मस्स) धर्मनी (आराहणयाए) आराधनाने माटे (अब्भुट्ठित्ता) उद्यमवंत थइने (परलोअधम्मस्स) परलोकना धर्मनो (आराहए) आराधक (भवइ) थाय छे, एटले परभवमां जिनधर्मनी ने विशिष्ट भवनी प्राप्ति थाय छे ५०-५२

भावसत्य सते करणसत्य पण होय छे तेथी करणसत्यने कहे छे —

करणसच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? करणसच्चेण करणसत्तिं जणयइ, करणसच्चे अ

तेना अभावरूप-तेम नहीं करवारूप मननी सरळताने, तथा (भासुज्जुअयं) भाषानी ऋजुता एटले हास्यादिकने निमित्ते अन्य देशनी भाषा न बोलवारूप भाषानी सरळताने, तथा (अविसंवायणं) अविसंवादनने एटले अन्यना अविप्रतारणने अर्थात् बीजाने ठगवुं नहीं तेने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अविसंवायणसंपन्नयाए अ णं) अविसंवादनने प्राप्त थयेलो तथा उपलक्षणथी काय, मन अने वचननी ऋजुताने प्राप्त थयेलो (जीवे) जीव (धम्मस्स) धर्मनो (आराहए) आराधक (हवइ) थाय छे. ४८-५०.

आवा गुणवाळाने पण विनयथी ज इष्टसिद्धि थाय छे, अने विनय मार्दवथी थाय छे, तेथी मार्दवने कहे छे.—

मद्दवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मद्दवयाए णं जीवे अणुस्सियत्तं जणयइ, अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठमयट्ठाणाइं निट्ठवेइ ॥ ४९ ॥ ५१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (मद्दवयाए णं) मार्दववडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(मद्दवयाए णं) मार्दववडे (जीवे) जीव (अणुस्सियत्तं) अनुच्छ्रितपणाने एटले अहंकारना अभावने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अणुस्सियत्तेणं) अनुच्छ्रितपणाए करीने (जीवे) जीव (मिउमद्दवसंपन्ने) कोमळ एटले द्रव्यथी अने भावथी नमनना-नम्रताना स्वभाववाळानुं जे मार्दव एटले सदा सुकुमाळपणुं तेणे करीने सहित एवो सतो (अट्ठमयट्ठाणाइं) आठ मदना स्थानोने (निट्ठवेइ) खपावे छे. ४९-५१.

मुत्तीए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? मुत्तीए ण अकिंचण जणयइ, अकिंचणे अ जीवे अत्थलोलाण पुरिसाण अपत्थणिज्जे हवइ ॥ ४७ ॥ ४९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (मुत्तीए ण) निर्लोभतावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर-(मुत्तीए ण) निर्लोभतावडे जीव (अकिंचण) अकिंचन एटले परिग्रह रहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (अकिंचणे अ) परिग्रह रहित एवो (जीवे) जीव (अत्थलोलाण) धनना लोभी एवा (पुरिसाण) चौरादिक पुरुषोने (अपत्थणिज्ज) नहीं प्रार्थना करवा लायक एटले पीडवाने नहीं इच्छवा लायक (भवइ) थाय छे ४७-४९

लोभने अभाव माया करवानु कारण पण होतु नथी, तेथी मायाना अभावरूप आर्जवने कहे छे —

अज्जवयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? अज्जवयाए ण काउज्जुअय भावुज्जुअय भासुज्जुअय अविसंवायण जणयइ, अविसंवायणसपन्नयाए अ ण जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥ ४८ ॥ ५० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (अज्जवयाए ण) आर्जववडे करीने एटले माया रहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(अज्जवयाए ण) आर्जववडे करीने जीव (काउज्जुअय) कायानी ऋजुताने एटले कुब्जादिकनो वेष अने भृकुटिनो विकार विगेरे नहीं करवाथी शरीरना सरळपणाने, तथा (भावुज्जुअय) भावनी ऋजुताने एटले मनमां कांइक विचार होय छता लोकोने रंजन करवा माटे मुखथी जूदु बोलवु अथवा कायाथी जूदु करवु

वीअरागयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वीअरागयाए णं णेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि अ वोच्छिंदइ, मणुन्नामणुन्नेसु सद्दफरिसरूवरसगंधेसु विरज्जइ ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वीअरागयाए णं) वीतरागपणाए करीने एटले रागद्वेष रहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर-(वीअरागयाए णं) वीतरागपणाए करीने जीव (णेहाणुबंधणाणि) पुत्रादिक संबंधी स्नेहना बंधनोने (तण्हाणुबंधणाणि अ) तथा तृष्णा एटले लोभरूप बंधनोने (वोच्छिंदइ) छेदी नांखे छे, तथा (मणुन्नामणुन्नेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एवा (सद्दफरिसरूवरसगंधेसु) शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंधने विषे (विरज्जइ) विराग पामे छे-विरमे छे. प्रथम कषायनुं पच्चख्खाण कर्युं छे तेनाथी ज वीतरागपणुं आवी जाय छे तो पण राग ए समग्र अनर्थनुं मूळ छे एम जणाववा माटे अहीं वीतरागपणुं जूदुं कह्युं छे. ४५–४७.

वीतरागपणानुं मुख्य कारण क्षमा छे तेथी क्षमाने कहे छे.—

खंतीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? खंतीए णं परीसहे जिणइ ॥ ४६ ॥ ४८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (खंतीए णं) क्षमाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर-(खंतीए णं) क्षमाए करीने जीव (परीसहे) वधादिक परिषहोने (जिणइ) जीते छे. ४६–४८.

क्षमा पण मुक्तिवडे एटले निर्लोभतावडे ज दृढ थाय छे, तेथी मुक्तिने कहे छे.—

वेआवच्चेण भंते! जीवे किं जणयइ? वेयावच्चेण तित्थयरनामगोअ कम्म निबंधइ ॥ ४३ ॥ ४५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वेआवच्चेण) वैयावच्चवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(वेआवच्चेण) वैयावच्चवडे करीने जीव (तित्थयरनामगोअ) तीर्थंकरनाम गोत्र (कम्म) कर्मने (निबंधइ) बांधे छे ४३-४५

वैयावच्चवडे अरिहंतपदनी प्राप्ति कही, ते अरिहंत सर्व गुण संपन्न होय छे, तेथी सर्व गुणसंपन्नताने कहे छे —

सव्वगुणसपन्नयाए ण भंते! जीवे किं जणयइ? सव्वगुणसपन्नयाए ण अपुणरावत्तिं जणयइ, अपुणरावत्तिपत्तए अ ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण नो भागी भवइ ॥ ४४ ॥ ४६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सव्वगुणसपन्नयाए ण) ज्ञानादिक सर्व गुणोथी युक्तपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(सव्वगुणसपन्नयाए ण) सर्व गुणोथी युक्तपणाए करीने जीव (अपुणरावत्तिं) अपुनरावृत्तिने एटले मुक्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (अपुणरावत्तिपत्तए अ ण) अपुनरावृत्तिने-मुक्तिने पामेलो (जीवे) जीव (सारीरमाणसाण) शरीर अने मन संबधी सर्व (दुक्खाण) दु खोनो (भागी) भागी (नो भवइ) थतो नथी केमके दुःखना कारणरूप शरीर अने मननो ज अभाव छे तेथी ते दु खनो भागी थतो नथी. ४४-४६

सर्व गुणो तो वीतरागपणु सते ज थाय छे तेथी वीतरागपणाने कहे छे —

वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउलतवसमिइसमन्नागए आवि भवइ ॥ ४२ ॥ ४४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पडिरूवयाए णं) प्रतिरूपतावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(पडिरूवयाए णं) स्थविरकल्पीना जेवो वेप धारण करवो ते प्रतिरूप कहेवाय छे ते प्रतिरूपतावडे अर्थात् अधिक उपकरणना त्यागवडे जीव (लाघविअं) द्रव्यथी अल्प उपकरणने लीधे अने भावथी अप्रतिबद्धपणाने लीधे लाघवपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (लहुब्भूए अ णं) अने लघुभूत एटले लघु थयेलो (जीवे) जीव (अप्पमत्ते) प्रमादरहित थाय छे, ते (पागडलिंगे) स्थविरकल्पिकादिकना जेवो जणातो होवाथी प्रगट लिंगवाळो थाय छे, (पसत्थलिंगे) जीवरक्षाना हेतुरूप रजोहरणादिक धारण करवाथी प्रशस्त लिंगवाळो थाय छे, (विसुद्धसम्मत्ते) क्रियावडे समकितने शोधन करवाथी विशुद्ध समकितवाळो थाय छे, (सत्तसमिइसम्मत्ते) सत्य अने समितिओ जेनी समाप्त अने परिपूर्ण थइ छे एवो थाय छे, अने तेथी करीने ज (सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु) सर्व प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वने विषे (वीससणिज्जरूवे) पीडा उपजावनार नहीं होवाथी विश्वास करवा लायक थाय छे, (अप्पडिलेहे) अल्प उपधि होवाथी अल्प पडिलेहणवाळो थाय छे, (जिइंदिए) जितेंद्रिय थाय छे, तथा (विउलतवसमिइसमन्नागए आवि) विपुल अने घणा भेद होवाथी विस्तीर्ण एवा तप अने सर्व विषयमां व्याप्त होवाथी विपुल एवी समितिओवडे युक्त एवो पण (भवइ) थाय छे. उपर समितिओनुं समग्रपणुं कह्युं अने अहीं सर्व विषयनुं व्याप्तपणुं कह्युं, तेथी पुनरुक्त दोष समजवो नहीं. ४२–४४.

प्रतिरूपता छते पण वैयावच्च करवाथी ज इष्टनी सिद्धि थाय छे, तेथी वैयावच्चने कहे छे.—

गोत्त । तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणमतं करेइ ।। ४१ ॥ ४२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सब्भावपच्चक्खाणेण) सद्भाव प्रत्याख्याने करीने (जीवे) जीव (किं) शु (जणयइ) उत्पन्न करे ? उत्तर—(सब्भावपच्चक्खाणेण) सर्वथा फरीथी करवानो असभव होवाथी सद्भावे करीने एटले परमार्थे करीने जे प्रत्याख्यान ते सद्भाव प्रत्याख्यान करवावडे करीने एटले सर्व संवररूप शैलेशीकरण करवावडे करीने जीव (अनिअट्टिं) अनिवृत्तिने एटले शुक्ल ध्यानना चोथा भेदने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अनिअट्टिं) अनिवृत्तिने (पडिवन्ने अ) पामेलो एवो (अणगारे) साधु (चत्तारि) चार (केवलिकम्मंसे) केवळीना कर्मांशोने एटले केवळी थतां बाकी रहेला कर्मोने (खवेइ) खपावे छे (त जहा) ते कर्मो आ प्रमाणे —(वेअणिज्ज) वेदनीय, (आउअ) आयुष्य, (नाम) नामकर्म अने (गोत्त) गोत्रकर्म ए चार भवोपग्राही कर्मोने खपावे छे, (तओ पच्छा) त्यारपछी (सिज्झइ) समग्र अर्थने साधीने सिद्ध थाय छे, (बुज्झइ) तत्त्वना बोधने पामे छे, (मुच्चइ) कर्मथी मुक्त थाय छे, (परिनिव्वाइ) कर्मरूपी तापना अभावथी शीतळ थाय छे, तथा (सव्वदुक्खाणमतं करेइ) सर्व दु खोनो अंत करे छे ४१-४२

आ सद्भाव प्रत्याख्यान प्राये करीने प्रतिरूपता सते थाय छे तेथी हवे प्रतिरूपतान बतावे छे—

पडिरूवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिरूवयाए णं लाघविअं जणयइ, लहुब्भूए अ णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसम्मत्ते सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु

कषाय रहित थाय छे. (अप्पकलहे) कलह रहित थाय छे, (अप्पतुमंतुमे) तुं तुं एवा शब्द रहित थाय छे, एटले के "तुं ज आ कार्य करतो हवो, तुं ज करे छे" इत्यादिक शब्द बोलवानो वखत ज आवतो नथी. तथा (संजमबहुले) घणा संयमवाळो अने (संवरबहुले) घणा संवरवाळो थाय छे, (समाहिए आवि भवइ) तेमज ज्ञानादिकनी समाधिवाळो पण थाय छे. ३९-४१.

आवो जे जीव होय ते छेवट भक्तप्रत्याख्यान करे छे, तेथी तेने कहे छे.—

भत्तपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुंभइ ॥ ४० ॥ ४२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (भत्तपच्चक्खाणेणं) आहारना प्रत्याख्यानवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(भत्तपच्चक्खाणेणं) आहारना प्रत्याख्यानवडे करीने जीव (अणेगाइं) अनेक (भवसयाइं) सेंकडो भवोने (निरुंभइ) रुंधे छे अर्थात् दृढ शुभ अध्यवसायथी संसारने घणो अल्प करे छे. ४०-४२.

हवे सर्व प्रत्याख्यानोने विषे उत्तम एवा छेवटना सद्भाव प्रत्याख्यानने कहे छे.—

सब्भावपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सब्भावपच्चक्खाणेणं अनिअट्टिं जणयइ, अनिअट्टिं पडिवन्ने अ अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तंजहा—वेअणिज्जं, आउअं, नामं,

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सरीरपचक्खाणेण) शरीरना पचक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सरीरपचक्खाणेण) औदारिकादिक सर्व शरीरना त्यागवडे जीव (सिद्धाइसयगुणत्त) सिद्धना अतिशय गुणपणाने (निव्वत्तेइ) उत्पन्न करे छे (सिद्धाइसयगुणसंपन्ने अ ण) सिद्धना अतिशय गुणने पामेलो (जीवे) जीव (लोगग्ग उवगए) लोकना अग्रभागने पाम्यो सतो-मुक्तिशिलाए पहोंच्यो सतो (परमसुही भवइ) अत्यंत सुखी थाय छे ३८–४०

उपर कहेला संभोगादिक पचक्खाणो प्राये सहायनुं पचक्खाण सते सुलभ छे, तेथी सहायनुं पचक्खाण कहे छे —

सहायपच्चक्खाणेण भंते जीवे ! किं जणयइ ? सहायपच्चक्खाणेण एगीभावं जणयइ, एगीभावभूए अ जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पझंझे अप्पकसाए अप्पकलहे अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए आवि भवइ ॥ ३९ ॥ ४१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सहायपचक्खाणेण) सहायना पचक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सहायपचक्खाणेण) सहाय करनारा जे मुनिओ तेमनो त्याग करवावडे-सहायनी अपेक्षा तजवावडे जीव (एगीभाव) एकीभावने एटले एकत्वने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (एगीभावभूए अ) एकत्वने पाम्यो एवो (जीवे) जीव (एगग्गं भावेमाणे) एकाग्रपणाने भावतो-अभ्यास करतो (अप्पझंझे) वाणीना कलह रहित थाय छे, (अप्पकसाए)

वीतरागपणाने (पडिवणे अ णं)
उपलक्षणथी द्वेषरहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. तथा (वीयरागभावं)
पामेलो एवो (जीवे) जीव (समसुहदुक्खे) समान छे सुखदुःख जेने एवो (भवइ) थाय छे-सुख दुःखने विषे समान
चित्तवाळो थाय छे. ३६-३८.

कषाय रहित सतो पण योगना पच्चक्खाणथी ज खरो मुक्त थाय छे, तेथी तेने कहे छे.—

जोगपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोगपच्चक्खाणेणं अजोगित्तं जणयइ, अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबंधं च निज्जरेइ ॥ ३७ ॥ ३९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (जोगपच्चक्खाणेणं) योगना पच्चक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न
करे ? उत्तर—(जोगपच्चक्खाणेणं) योग एटले मन, वचन, कायाना व्यापार, तेना निरोधवडे जीव (अजोगित्तं)
अयोगीपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (अजोगी णं जीवे) अने अयोगी एवो जीव (नवं कम्मं) नवुं कर्म
(न बंधइ) बांधतो नथी, (पुव्वबद्धं च) अने पूर्वे बांधेला भवोपग्राही चार कर्मने (निज्जरेइ) निर्जरे छे-क्षय करे छे. ३७-३९.

योगनुं पच्चक्खाण करनारने शरीरनुं पच्चक्खाण पण करवानुं होय छे, तेथी तेने कहे छे.—

सरीरपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तं निव्वत्तेइ, सिद्धाइसयगुणसंपन्ने अ णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ ॥ ३८ ॥ ४० ॥

आहारपच्चक्खाणेण भंते! जीवे किं जणयइ? आहारपच्चक्खाणेण जीविआससप्पओगं वोच्छिंदइ, जीविआससप्पओगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥ ३७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (आहारपच्चक्खाणेण) आहारना पच्चख्खाणवडे एटले सदोष आहारना त्यागवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(आहारपच्चक्खाणेण) आहारना पच्चख्खाणवडे-उपवास करवावडे जीव (जीविआससप्पओगं) जीवितनी आशंसाना प्रयोगनो एटले जीववानी अभिलाषानो (वोच्छिंदइ) विच्छेद-विनाश करे छे तथा (जीविआससप्पओगं) जीवितनी आशंसाना प्रयोगने (वोच्छिंदित्ता) छेदीने (जीवे) जीव (आहारमंतरेण) आहार विना-योग्य आहार न मळे तोपण (न संकिलिस्सइ) क्लेशने पामतो नथी-उत्कृष्ट तप थाय तोपण ते पीडाने अनुभवतो नथी. ३५-३७

उपर कहेला त्रणे पच्चख्खाणो कषायना अभावे ज सफळ थाय छे तेथी हवे कषायनुं पच्चख्खाण देखाडे छे —

कसायपच्चक्खाणेण भंते! जीवे किं जणयइ? कसायपच्चक्खाणेण वीयरागभावं जणयइ, वीयरागभावं पडिवन्ने अ णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥ ३८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कसायपच्चक्खाणेण) कषायना पच्चख्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर-(कसायपच्चक्खाणेण) क्रोधादिक कषायना त्यागवडे जीव (वीयरागभावं) वीतरागपणाने अने

नहीं करतो सतो (दोच्चं) बीजी (सुहसिज्जं) सुखशय्याने एटले बीजा सर्व साधुओथी जूदा एकला रहेवारूप सुखशय्याने (उपसंपज्जित्ता णं) अंगीकार करीने (विहरइ) विचरे छे. ३३-३५.

संभोगना पच्चख्खाण करनारने उपधिनुं पण पच्चख्खाण होय छे तेथी तेने बतावे छे.—

उवहिपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमंथं जणयइ, निरुवहिए णं जीवे निक्कंखे उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ॥ ३४ ॥ ३६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (उवहिपच्चक्खाणेणं) उपधिना पच्चख्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(उवहिपच्चख्खाणेणं) रजोहरण अने मुखवस्त्रिका सिवाय बीजी उपधिना पच्चख्खाण—त्यागवडे (अपलिमंथं) परिमंथ एटले स्वाध्यायनो विघात, तेनो अभाव ते अपरिमंथ अर्थात् स्वाध्यायादिकमां आळस रहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, तथा (निरुवहिए णं) उपधि रहित एवो (जीवे) जीव (निकंखे) कांक्षा रहित एटले वस्त्रादिकने विषे अभिलाषा रहित थाय छे, तेथी ते (उवहिमंतरेण य) उपधि विना (न संकिलिस्सइ) क्लेशने पामतो नथी—अनुभवतो नथी. ३४-३६.

उपधिनुं पच्चख्खाण करनार जिनकल्पिकादिकने योग्य आहारादिक न मळे तो उपवास पण थाय छे माटे उपवास एटले आहारना पच्चख्खाणने हवे कहे छे.—

अपत्थेमाणे अणभिलसेमाणे दोच्च सुहसिज्ज उवसपज्जित्ताण विहरइ ॥ ३३ ॥ ३५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (समोगपच्चक्खाणेण) सभोगना पचक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(समोगपच्चक्खाणेण) सभोग एटले एक मडळीमा आहार करवो अर्थात् बीजा मुनिए आपेला आहारादिक ग्रहण करवा, तेनु प्रत्याख्यान एटले पोते गीतार्थ होइन जिनकल्पादिक अगीकार करवाथी तेनो-बीजाना लावेला आहारादिकनो त्याग करवा, तेरूप समोगपच्चख्खाणे करीने जीव (आलवणाइ) ग्लानत्वादिक आलबनोने (खवेइ) खपावे छे—दूर करे छे बीजा साधु मादगी आदि कारणे बीजाना लावी आपेला आहारादिकने ग्रहण करे छे, परतु आ तो कारण छतां पण ग्रहण करता नथी, अने निरतर उद्यत विहारवडे वीर्याचारनु आलबन करे छे (निरालबणस्स य) तथा आलबन रहित एवा जायने-साधुने (आययट्ठिया) आयतार्थिक एटले मोक्षना प्रयोजनवाळा ज (जोगा) व्यापारा (भवति) होय छे आलबनवाळाने केटलाक व्यापारो मोक्षना प्रयोजनवाळा नथी पण होता तेथी आ प्रमाणे कह्यु छे तेथी ते निरालबन साधु (सएण लाभेण तुस्सइ) पोताना लाभे करीने पोते ज मेळवेला लाभे करीन सतुष्ट थाय छे, अने (परस्स लाभ) बीजाना लाभनो (नो आसाएइ) आस्वाद करतो नथी, (नो तक्केइ) तर्क करतो नथी-चिंतवतो नथी, (नो पीहेइ) स्पृहा करतो नथी-इच्छतो नथी, (नो पत्थेइ) प्रार्थना करतो नथी, तथा (नो अभिलसइ) अभिलाषा करतो नथी (परस्स लाभ) बीजाना लाभने (अणासाएमाणे) आस्वादन नहीं करतो, (अतक्केमाणे) तर्क नहीं करतो, (अपीहेमाणे) स्पृहा नहीं करतो, (अपत्थेमाणे) प्रार्थना नहीं करतो तथा (अणभिलसेमाणे) अभिलाष

विणिवट्टणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? विणिवट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ, पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं निअत्तेइ, तओ पच्छा चाउरंतसंसारकंतारं विईवयइ ॥३२॥३४॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (विणिवट्टणयाए णं) विनिवर्तनाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(विणिवट्टणयाए णं) विनिवर्तनावडे एटले विषयोथी आत्माने पराङ्मुख करवावडे जीव (पावकम्माणं) ज्ञानावरणादिक पापकर्मोने (अकरणयाए) नही करवाथी एटले नवां कर्मो नहीं बांधवामां (अब्भुट्ठेइ) उद्यमवंत थाय छे. (पुव्वबद्धाण य) तथा पूर्वे बांधेला कर्मोनी (निज्जरणयाए) निर्जरा करवाथी (तं) ते पापकर्मने (निअत्तेइ) निवर्तन करे छे—खपावे छे, (तओ पच्छा) त्यारपछी (चाउरंतसंसारकंतारं) चार गतिरूप अंत—अवयवो छे जेना एवा संसाररूप कांतारने (विईवयइ) ओळंगे छे. ३२–३४.

विषयोथी निवृत्ति पामेलो कोइक जीव—साधु संभोगना पच्चक्खाणवाळो पण थाय छे, तेथी हवे संभोगना पच्चक्खाणने कहे छे.—

संभोगपच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? संभोगपच्चक्खाणेणं आलंबणाइं खवेइ, निरालंबणस्स य आययट्ठिआ जोगा भवंति, सएणं लाभेणं तुस्सइ, परस्स लाभं नो आसाएइ, नो तक्केइ, नो पीहेई, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ, परस्स लाभं अणासाएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे

अप्रतिबद्धता तो विविक्त शयनासनथी थइ शके छे तेथी तेने कहे छे.—

विवित्तसयणासणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ, चरित्तगुत्ते अ णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभावपडिवण्णे अट्ठविहं कम्मगंठिं निज्जरेइ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (विवित्तसयणासणयाए णं) विविक्त शयनासनवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(विवित्तसयणासणयाए णं) विविक्त एटले स्त्री, पशु, पंडकादि रहित शयन, आसन अने उपलक्षणथी उपाश्रयवडे करीने जीव (चरित्तगुत्तिं) चारित्रनी गुप्तिने एटले रक्षाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (चरित्तगुत्ते अ णं) तथा चारित्रनी रक्षा करनार (जीवे) जीव (विवित्ताहारे) विविक्त एटले विगइ आदिक शरीरनी पुष्टि करनार वस्तु रहित आहार छे जेनो एवो, तथा (दढचरित्ते) दृढ छे चारित्र जेनुं एवो, तथा, (एगंतरए) संयम विषे एकांतपणे-निश्चयपणे रक्त—आसक्त एवो, तथा (मोक्खभावपडिवण्णे) मोक्षना भावने—अभिप्रायने पामेलो एटले 'मारे मोक्ष ज साधवानो छे' एवा अभिप्रायवाळो सतो (अट्ठविहं) आठ प्रकारनी (कम्मगंठिं) कर्मरूपी ग्रंथिने (निज्जरेइ) निर्जरे छे—क्षपकश्रेणिवडे क्षय करे छे ॥ ३१-३२ ॥

विविक्त शयनासनथी विनिवर्तना थाय छे तेथी तेने बतावे छे —

छे, तथा (विगयसोए) शोकरहित एटले आलोक संबंधी कार्यनो नाश थया छतां ते मोक्षनी इच्छावाळो होवाथी शोक करतो नथी अने आवा प्रकारनो होवाथी ते (चरित्तमोहणिज्जं) कपाय अने नोकपायरूप चारित्रमोहनीय (कम्मं) कर्मने (खवेइ) खपावे छे—क्षय करे छे २६–३१.

सुखनो शात—विनाश सुखमां अप्रतिबद्धतावडे थइ शके छे तेथी अप्रतिबद्धताने कहे छे.—

अप्पडिबद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ, निस्संगत्तगए अ णं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिआ य राओ अ असज्जमाणे अप्पडिबद्धे आवि विहरइ ॥ ३० ॥ ३२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (अप्पडिबद्धयाए णं) अप्रतिबद्धताए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(अप्पडिबद्धयाए णं) अप्रतिबद्धता एटले मनने विषे कोइ पण पदार्थ उपर आसक्तिरहितपणुं, ते वडे करीने जीव (निस्संगत्तं) बाह्यवस्तुना निःसंगपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (निस्संगत्तगए अ णं) निःस्संगपणाने पामेलो (जीवे)जीव (एगे) एकलो एटले रागद्वेष रहित थाय छे, तथा (एगग्गचित्ते) एकाग्रचित्त एटले धर्ममां दृढ मनवाळो थाय छे, तथा (दिआ य राओ अ) दिवसे अने रात्रे (असज्जमाणे) अनासक्त एटले बाह्य संगने त्याग करतो सतो (अप्पडिबद्धे आवि) अने अप्रतिबद्ध एवो सतो पण (विहरइ) मासकल्पादिक उद्यत विहारे करीने विचरे छे. ३०–३२.

ज्ञानदर्शनना उपयोगवडे वस्तुतत्त्वने जाणे छे, (बुज्झइ) संसारथी मूकाय छे, (परिनिव्वाइ) कर्मरूपी अग्निने बुझावीने चोतरफथी शीतळ थाय छे, तथा (सव्वदुक्खाणमंत करेइ) शारीरिक अने मानसिक सर्व प्रकारना दुःखोना अंतने करे छे २८-३०

व्यवदान एटले विशेष प्रकारनी शुद्धि तो सुखना शातवडे एटले सुखने पण दूर करवावडे थाय छे तेथी हवे सुखशातने कहे छे —

सुहसाएण भंते ! जीवे किं जणयइ ? सुहसाएण अणुस्सुअत्तं जणयइ, अणुस्सुए अ णं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोए चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥ ३१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सुहसाएण) सुखना शातवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सुहसाएण) वैषयिक सुखना शातवडे एटले तेने दूर करवावडे-तजीदेवावडे अर्थात् वैषयिक स्पृहानो नाश करवावडे जीव (अणुस्सुअत्तं) अनुत्सुकपणाने एटले वैषयिक सुखना निस्पृहपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (अणुस्सुए अ णं) अने उत्सुकता रहित थयेलो (जीवे) जीव (अणुकंपए) दुःखी प्राणी उपर अनुकंपावाळो थाय छे, विषयसुखमां उत्सुकतावाळो जीव बीजा प्राणीने मरता जोइने पण एक पोताना ज सुखमां रसिक थाय छे, पण तेनापर अनुकंपा करतो नथी, तथा उत्सुकता रहित थयेलो जीव (अणुब्भडे) अनुद्भट एटले अभिमान रहित अथवा शृंगारादिकनी शोभा रहित थाय

एटले पापरहित थाय छे. २६-२७.

संयम छतां पण तप विना कर्मक्षय थतो नथी, तेथी हवे तपसंबंधी कहे छे.—

तवेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? तवेणं वोदाणं जणयइ ॥ २७ ॥ २९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (तवेणं) तपवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(तवेणं) तपवडे जीव (वोदाणं) व्यवदानने एटले पूर्वे बांधेला कर्ममळनो नाश थवाथी विशेष प्रकारनी शुद्धिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. २७-२८.

व्यवदाननुं ज फळ कहे छे.—

वोदाणेणं भंते जीवे किं जणयइ ? वोदाणेणं अकिरिअं जणयइ, अकिरिआए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ २८ ॥ ३० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वोदाणेणं) व्यवदाने करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वोदाणेणं) व्यवदाने करीने जीव (अकिरिअं) अक्रियने एटले व्युपरतक्रिय नामना शुक्लध्यानना चोथा भेदने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अकिरिआए) अक्रियाक एटले व्युपरताक्रिय नामना शुक्लध्यानना चोथा भेदमां वर्तनारो (भवित्ता) थइने (तओ पच्छा) त्यारपछी तरत ज (सिज्झइ) सिद्ध थाय छे—समाप्त अर्थवाळो थाय छे, (.बुज्झइ)

यइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(सुअस्स) श्रुतनी (आराहणयाए ण) आराधनाए करीने जीव (अण्णाण) अज्ञानने (खवेइ) खपावे छे, (न य संकिलिस्सइ) तथा रागादिकथी उत्पन्न थता क्लेशने पामतो नथी केमके विशिष्ट ज्ञानने लीधे नवी नवी संवेगनी प्राप्ति थवाथी क्लेशने पामतो नथी २४–२६

श्रुतनी आराधना मनना एकाग्रपणाथी थाय छे तेथी हवे मननु एकाग्रपणु कहे छे —

एगग्गमनसंनिवेसणयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? एगग्गमनसंनिवेसणयाए ण चित्त निरोह करेइ ॥ २५ ॥ २७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (एगग्गमनसंनिवेसणयाए ण) एकाग्रन विषे मन स्थापवावडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(एगग्गमनसंनिवेसणयाए ण) एकाग्रने विषे मन स्थापवावडे करीने मननी एकाग्रताए करीने जीव (चित्तनिरोह) कोइ प्रकारे उन्मार्गे गयेला चित्तना निराधने (करेइ) करे छे. २५–२७

आ सर्व संयमवाळाने ज सफळ थाय छे, तेथी हवे संयमने कहे छे —

संजमेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? संजमेण अणण्हयत्त जणयइ ॥ २६ ॥ २८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (संजमेण) संयमवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(संजमेण) हिंसादिक आश्रवथी निरमवारूप संयमवडे जीव (अणण्हयत्त) अनहस्कत्त्व–पापरहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे

जेणे श्रुतनो अभ्यास कर्यो होय तेणे धर्मकथा पण करवी जोइए, तेथी हवे धर्मकथाने माटे कहे छे.—

धम्मकहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ, पवयणपभावए णं जीवे आगमे सस्सभद्दत्ताए कम्मं निबंधइ ॥ २३ ॥ २५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (धम्मकहाए णं) धर्मकथाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(धम्मकहाए णं) धर्मकथाए करीने एटले व्याख्यान करवावडे करीने जीव (पयवणं) प्रवचननी–जिनशासननी (पभावेइ) प्रभावना करे छे—" प्रावचनिक १, धर्मकथी २, वादी ३, नैमित्तिक ४, तपस्वी ५, विद्या ६, सिद्ध, ७, अने कवि ८, ए आठ प्रभावक कहेला छे." तथा (पवयणपभावए णं) प्रवचननी प्रभावना करवावडे (जीवे) जीव (आगमे) आगामी काळने विषे (सस्सभद्दत्ताए) शश्वत् भद्रताए करीने एटले निरंतर कल्याणपणाए करीने सहित एवा (कम्मं) कर्मने (निबंधइ) बांधे छे अर्थात् शुभानुबंधी शुभ कर्मने उपार्जन करे छे. २३–२५.

आ प्रमाणे पांच प्रकारना स्वाध्यायनी प्रीतिथी श्रुतनी आराधना थाय छे, तेथी हवे श्रुतनी आराधनाने कहे छे.—

सुअस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सुअस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ, न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ २६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सुअस्स) श्रुतनी (आराहणयाए ण) आराधनाए करीने (जीवे) जीव (किं जण-

स्थितिना कडकोनो ह्रास कर छे तेथी ते अल्पकाळनी स्थितिवाळी थाय छे अहीं मनुष्यायु, तिर्यगायु अने देवायु रहित बाकीनी सर्व कर्मनी स्थिति जाणवी, कारण के तेनु ज दीर्घपणु अशुभ छे तथा (तिव्वाणुभावाओ) तीव्र अनुभाववाळी एटले चारस्थानीया आदिक रसवाळी प्रकृतिने (मंदाणुभावाओ) मंद अनुभाववाळी एटले त्रणस्थानीया आदिक रसवाळी (पकरेइ) करे छे तथा (बहुप्पएसग्गाओ) बहु प्रदेशाग्रवाळी एटले घणा दळीयावाळी प्रकृतिने (अप्पप्पएसग्गाओ) अल्प प्रदेशाग्रवाळी एटले थोडा दळीयावाळी (पकरेइ) करे छे, तथा (आउअं च णं कम्मं) आयुष्य कर्मने (सिअ बंधइ) कदाचित बांधे छे अने (सिअ नो बंधइ) कदाचित बांधतो नथी; केमके आयु तो चालता भवना आयुष्यनो त्रीजो भाग के तेनो पण त्रीजो भाग विगेरे छेवट अंतर्मुहूर्त शेष रहे त्यारे ज बंधाय छे अने ते पण एक ज वार बंधाय छे, ज्यारे बांधे छे त्यारे पण देवायुने ज बांधे छे केमके मुनिने तेनो ज बंध होय छे तथा (असायावेअणिज्जं च णं कम्मं) असातावेदनीय कर्मने अने चशब्दथी बीजी पण अशुभ कर्मप्रकृतिने (नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ) वारंवार उपचय करतो नथी–बांधतो नथी. कदाच कोइ वखत प्रमादथी प्रमत्त मुनि अशुभनो पण बंध करे छे पण वारंवार करतो नथी तथा (अणाइअं च णं) अनादि, (अणवदग्गं) अनवदग्र–अनंत अने (दीहमद्धं) दीर्घाद्ध एटले लांबा काळे ओळगाय तेवा (चाउरंतसंसारकंतारं) चार गतिरूप अंत–अवयवो छे जेना एवा संसाररूपी कांतारने–अटवीने (खिप्पामेव) शीघ्रपणे ज (विईवयइ) विशेषे करीने अतिक्रमण करे छे–ओळंगे छे २२–२४

अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अणुप्पेहाए णं आउअवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडिओ धणिअवंधणवद्धाओ सिढिलवंधणवद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइआओ हस्सकालट्ठिइआओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, वहुप्पएसग्गाओ अप्पप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउअं च णं कम्मं सिअ वंधइ, सिअ नो वंधइ, असायावेअणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ, अणाइअं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं खिप्पामेव वीईवयइ ॥ २२ ॥ २४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (अणुप्पेहाए णं) अनुप्रेक्षावडे एटले अर्थनी चिंतनावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे छे ? उत्तर-(अणुप्पेहाए णं) अर्थचिंतवनरूप अनुप्रेक्षावडे (आउअवज्जाओ) एक आयुष्य-कर्मने वर्जीने बाकीनी (सत्त) सात (कम्मप्पगडिओ) कर्मनी प्रकृतिओ (धणिअवंधणवद्धाओ) गाढ वंधनथी बांधेली-निकाचित करेली होय तेने (सिढिलवंधणवद्धाओ) शिथिळ वंधनवडे वंधायेली होय तेवी (पकरेइ) करे छे एटले के अपवर्तना करण करी शकाय तेवी करे छे. कारण के आ अनुप्रेक्षा आभ्यंतर तपरूप छे अने तपथी निकाचित कर्मनो पण क्षय थाय छे एम आगममां कह्युं छे. तथा (दीहकालट्ठिइआओ) जे कर्मप्रकृतिओ दीर्घकाळनी स्थितिवाळी होय तेने (हस्सकालट्ठिइआओ) ह्रस्व एटले अल्प काळनी स्थितिवाळी (पकरेइ) करे छे, एटले शुभाशयना वशथी कर्मनी

छ, ते प्रतिप्रच्छनावडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(पडिपुच्छणयाए ण) प्रतिप्रच्छनावडे करीने जीव (सुत्तत्थतदुभयाइ) सूत्र, अर्थ अने ते बन्नेने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे, अने (कखामोहणिज्ज कम्म) कांक्षामोहनीय कर्मनो (वोच्छिंदइ) नाश करे छे. " आ मारे आ रीते भणवु योग्य छे के आ रीते भणवु योग्य छे ? " इत्यादिक शकानो तथा परमतनी अभिलापारूप कांक्षानो–ते बन्ने प्रकारना मिथ्यात्वमोहनीय कर्मनो क्षय करे छे २०–२२

आ प्रमाणे एटले पूछीने स्थिर करेला श्रुतनु विस्मरण न थवा माटे परावर्तना करवी जोइए तेथी हवे परावर्तना कहे छे

परिअट्टणयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? परिअट्टणयाए ण वजणाइ जणयइ, वजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥ २१ ॥ २३ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (परिअट्टणयाए ण) परावर्तनावडे (जीवे) जीव (कि जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर—(परिअट्टणयाए ण) परावर्तनावडे एटले भणेलाने फरी फरी गणवावडे जीव (वजणाइ) व्यजनोने–अक्षरोने (जणयइ) उत्पन्न करे छे एटले के ते व्यजनो विस्मृत थया होय तोपण गणवाथी ते जलदीथी पाछा स्मरणमां आवे छे तेथी उत्पन्न थाय छे एम कह्यु (वजणलद्धिं च) तथा वळी तेवा प्रकारना क्षयोपशमने लीधे व्यजनलब्धि अने च शब्द छे तेथी पदलब्धिने पण (उप्पाएइ) उत्पन्न करे छे.–पामे छे २१–२३

सूत्रनी जेम अर्थनु पण विस्मरण नहीं थवा देवा माटे अनुप्रेक्षा करवी जोइए तेथी हवे अनुप्रेक्षा कहे छे —

महानिज्जर महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥ २१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वायणाए णं) वाचनाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वायणाए णं) वाचनाए करीने जीव (निज्जरं) कर्मनी निर्जराने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, अने (सुअस्स) श्रुतनी (अणासायणाए) अनाशातनाने विषे (वट्टति) वर्ते छे, केमके वाचना नहीं करवाथी श्रुतनी अवज्ञा करी कहेवाय अने तेथी तेनी आशातना करी कहेवाय छे तथा (सुअस्स) श्रुतनी (अणासायणाए) अनाशातनामां (वट्टमाणे) वर्ततो सतो (तित्थधम्मं) तीर्थना धर्मने एटले श्रुतदानरूप गणधरना आचारने (अवलंबइ) अवलंबन करे छे–आश्रय करे छे. अर्थात् पामे छे, तथा (तित्थधम्मं) तीर्थना धर्मने (अवलबमाणे) अवलंबन करतो सतो (महानिज्जरे) मोटी निर्जरा-वाळो अने (महापज्जवसाणे) महा पर्यवसान एटले सर्वथा कर्मना अंतवाळो (भवइ) थाय छे अर्थात् मोक्षने पामनारो थाय छे. १९–२१.

वाचना लीधा पछी शंका थाय त्यारे फरी पूछवुं जोइए, तेथी हवे प्रच्छना कहे छे.—

पडिपुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ, कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ ॥ २० ॥ २२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पडिपुच्छणयाए णं) पूर्वे कहेला सूत्रादिकने फरीथी जे पूछवुं ते प्रतिप्रच्छना कहेवाय

ग)अने चित्तनी प्रसन्नताने पामेलो (जीवे) जीव (सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु) सर्व प्राण-बे, त्रण अने चार इंद्रियोवाळा, भूत-वनस्पतिकाय, जीव-पचेंद्रियो अने सत्त्व-बाकीना जीवो, ए सर्वने विषे (मित्तीभाव) परहितना चिंतवनरूप मैत्रीभावने (उप्पाएइ) उत्पन्न करे छे, (मित्तीभाव उवगए आवि) तथा मैत्रीभावने पामेलो एवो पण (जीवे) जीव (भावविसोहिं) रागद्वेषना अभावरूप भावविशुद्धिने एटले चित्तविशुद्धिने (काऊण) करीने (निब्भए भवइ) निर्भय थाय छे-समग्र भयना कारणनो अभाव थवाथी भय रहित थाय छे. १७-१९

आवा गुणवाळाए स्वाध्याय करवानो छे तेथी हवे स्वाध्यायने कहे छे —

सज्झाएण भंते ! जीवे किं जणयइ ? सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १८ ॥ २० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सज्झाएण) स्वाध्यायवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर-(सज्झाएण) स्वाध्यायवडे करीने जीव (नाणावरणिज्जं) ज्ञानावरणीय (कम्मं) कर्मने तथा उपलक्षणथी बीजां कर्मोने पण (खवेइ) खपावे छे-क्षय करे छे १८-२०

स्वाध्यायमां प्रथम वाचना करवानी छे तेथी हवे वाचनाने कहे छे

वायणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वायणाए णं निज्जरं जणयइ, सुअस्स अणासायणाए वट्टति, सुअस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ, तित्थधम्मं अवलंबमाणे

एटले पाप रहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (निरइआरे आवि) तथा ज्ञानाचारादि अतिचारने शोधवाथी अतिचार रहितपणुं पण (भवइ) थाय छे, (सम्मं च णं) तथा सम्यक् प्रकारे (पायच्छित्तं) प्रायश्चित्तने (पडिवज्जमाणे) अंगीकार करतो सतो (मग्गं च) मार्गने एटले ज्ञाननी प्राप्तिना हेतुरूप समकितने (मग्गफलं च) अने मार्गना फळने एटले ज्ञानने (विसोहेइ) शुद्ध करे छे, जो के समकित अने ज्ञान एकीवखते ज प्राप्त थाय छे. तोपण जेम प्रकाशनुं कारण प्रदीप छे तेम ज्ञाननुं कारण समकित छे एम जणाववा माटे आ प्रमाणे कह्युं छे तथा (आयारं) आचारने एटले चारित्रने (आयारफलं च) अने आचारना फळने एटले मोक्षने (आराहेइ) आराधे छे-साधे छे. १६-१८.

प्रायश्चित्तनुं करवुं ते खमाववाथी थइ शके छे तेथी हवे खामणा करवा संबंधी कहे छे.—

खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ, पल्हायणभावमुवगए अ जीवे सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु मित्तीभावं उप्पाएइ. मित्तीभावमुवगए आवि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥ १७ ॥ १९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (खमावणयाए णं) खामणाए करीने एटले कांइ पण दुष्कृत कर्या पछी " आ मारा दुष्कृतनी तमे क्षमा करो " एम खमाववाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर–(खमावणयाए णं) खमाववावडे करीने जीव (पल्हायणभावं) चित्तनी प्रसन्नताने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (पल्हायणभावं उवगए

काळप्रत्युपेक्षणावडे थाय छे, तेथी हवे काळप्रत्युपेक्षणाने कहे छे —

कालपडिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १५–१७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कालपडिलेहणयाए णं) काळपडिलेहणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर—(कालपडिलेहणयाए णं) प्रादोषिक आदिक काळग्रहण अने प्रतिजागरणरूप पडिलेहणावडे जीव (नाणावरणिज्जं) ज्ञानावरणीय (कम्मं) कर्मने (खवेइ) खपावे छे १५–१७

कदाच अकाळे पाठ कर्यो होय तो प्रायश्चित्त करवुं जोइए, तेथी ते कहे छे —

पायच्छित्तकरणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइआरे आवि भवइ, सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं आयारफलं च आराहेइ ॥ १६ ॥ १८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पायच्छित्तकरणेणं) प्रायश्चित्त करवावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर–(पायच्छित्तकरणेणं) आलोचनादिक प्रायश्चित्त करवावडे जीव (पावकम्मविसोहिं) पापकर्मनी विशुद्धिने

थयथुइमंगलेणं[1] भंते ! जीवे किं जणयइ ? थयथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ, नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्नेणं जीवे अंतकिरिअं कप्पविमाणोववत्तिअं आराहणं आराहेइ ॥ १४ ॥ १६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (थयथुइमंगलेणं) स्तुति अने स्तवरूप मंगळे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर-(थयथुइमंगलेण) स्तव एटले देवेंद्रस्तव विगेरे अने स्तुति एटले एकथी आरंभीने सात श्लोक पर्यंत स्तुति, तेरूप मंगळे करीने जीव (नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं) ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी बोधिलाभने एटले जैनधर्मनी प्राप्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्नेणं) अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्ररूप बोधिलाभने पामवावडे करीने (जीवे) जीव (अंतकिरिअं) संसारना अथवा कर्मना अंतनी क्रियाने अर्थात् मोक्षने आपनारी अथवा (कप्पविमाणोववत्तिअं) कल्प एटले बार देवलोक अने विमान एटले ग्रैवेयक अने अनुत्तरविमान, तेने प्राप्त करावनारी (आराहणं) आराधनाने (आराहेइ) आराधे छे—साधे छे. अर्थात् प्रथम विशिष्ट देवलोकने अने परंपराए छेवट मोक्षने आपनारी आराधनाने साधे छे—करे छे. १४–१६.

स्तव स्तुतिरूप चैत्यवंदन कर्या पछी स्वाध्याय करवानो छे, ते स्वाध्याय काळने विषे ज थाय छे अने ते काळनुं ज्ञान

१ थुइथय० थवु जोइए, परतु प्राकृत होवाथी आ प्रमाणे पाठ कर्यो छे.

थयेलु वर्तमान काळनु (पायच्छित्त) प्रायश्चित्त एटले प्रायश्चित्तने योग्य अपराध, तेने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे, (विसुद्धपायच्छित्ते अ) अने प्रायश्चित्तवडे विशुद्ध थयेलो (जीवे) जीव (नियहिअए) निवृत्तहृदय थाय छे एटले पोताना चित्तने विषे निवृत्तिने पामे छे, कोनी जेम ? ते कहे छे-(ओहरिअभरु व्व भारवहे) उतार्यो छे भार जेणे एवा भारवाहकनी जेम अतिचाररूप भार उतारवाथी चित्तमां निवृत्ति पामे छे, अने तेथी करीने (पसत्थज्झाणोवगए) प्रशस्त ध्यानने पाम्यो सतो (सुहसुहेण) सुखे सुखे (विहरइ) विचरे छे १२-१४

कायोत्सर्गथी पण जे शुद्ध न थाय, तेने माटे प्रत्याख्यान करवानु होय छे तेथी हवे प्रत्याख्यानने कहे छे —

पच्चक्खाणेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? पच्चक्खाणेण आसवदाराइं निरुंभइ ॥ १३ ॥ १५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पच्चक्खाणेण) प्रत्याख्यानवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ? उत्तर-(पच्चक्खाणेण) प्रत्याख्यानवडे एटले मूळगुण अने उत्तरगुणरूपी पच्चख्खाणवडे जीव (आसवदाराइं) हिंसादिक आश्रवना द्वारोने (निरुंभइ) रुंधे छे उपलक्षणथी पूर्वे उपार्जन करेला कर्मोने खपावे छे अहीं नमस्कार सहित-नवकारसी विगेरे पच्चख्खाणोनो उत्तरगुणप्रत्याख्यानमां समावेश थाय छे १३-१५

प्रत्याख्यान कर्या पछी जो त्यां चैत्य होय तो तेनु वंदन करवानु छे, ते चैत्यवंदन स्तुतिस्तवमंगळ विना थइ शकतु नथी, तेथी हवे स्तुतिस्तवमंगळने कहे छे —

छे. (पसत्थे अ) अने प्रशस्त एवा योगोने विषे (पवत्तइ) प्रवर्ते छे. (पसत्थजोगपडिवण्णे अ णं) तथा प्रशस्त योगने पामेलो (अणगारे) साधु (अणंतघाई) अनंत एवा ज्ञान दर्शनने हणनारा (पज्जवे) पर्यायोने एटले ज्ञानावरणीयादिक कर्मना परिणामोने (खवेइ) खपावे छे. ७–९.

उपर कहेली आलोचना विगेरे तत्त्वथी सामायिकवाळाने ज होय छे तेथी हवे सामायिकने कहे छे.—

सामाइएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सामाइएणं सव्वसावज्जजोगविरइं जणयइ ॥ ८ ॥१०॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सामाइएणं) सामायिकवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सामाइएणं) सामायिकवडे जीव (सव्वसावज्जजोगविरइं) सर्व सावद्य योगनी विरतिने एटले सर्व पापव्यापारनी निवृत्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. ८–१०.

सामायिक अंगीकार करनाराए ते सामायिकने रचनारा–कहेनारा अरिहंतोनी स्तुति करवी जोइए तेथी हवे ते चतुर्विंशतिस्तवरूप अरिहंतोनी स्तुतिने कहे छे.—

चउवीसत्थएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? चउवीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥ ९ ॥११॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (चउवीसत्थएणं) चोवीसत्थाए करीने एटले चतुर्विंशतिस्तवे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर—(चउवीसत्थएणं) चतुर्विंशतिस्तवे करीने जीव (दंसणविसोहिं) दर्शननी एटले समकितनी विशुद्धिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. ९–११.

वडे एटले अपूर्वकरणवडे अर्थात् पूर्वे कदापि नहीं पामेला एवा निर्मळ मनना परिणामवडे गुणश्रेणिने एटले क्षपकश्रेणिने (पडिवज्जइ) पामे छे (करणगुणसेढिं) अपूर्वकरणवडे क्षपकश्रेणिने (पडिवन्ने अ) पामेलो (अणगारे) अनगार-साधु (मोहणिज्ज कम्म) मोहनीय कर्मने (उग्घाएइ) खपावे छे ६-८

बहु दोष होय तो निंदानी पछी गर्हा पण करवी जोइए तेथी हवे गर्हाने कहे छे —

गरहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयई, अपुरक्कारगए अ णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो निअत्तइ, पसत्थे अ पवत्तइ, पसत्थजोगपडिवण्णे अ णं अणगारे अणंतघाई पज्जवे खवेइ ॥ ७ ॥ ६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (गरहणयाए णं) अन्यनी पासे पोताना दोष प्रगट करवारूप गर्हाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ?

उत्तर—(गरहणयाए णं) गर्हाए करीने जीव (अपुरक्कारं) पोताना अपुरस्कारने एटले 'आ गुणवान छे' एवी प्रसिध्धिना अभावरूप अवज्ञाना स्थानपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (अपुरक्कारगए अ णं) अपुरस्कारने पामेलो (जीवे) जीव (अप्पसत्थेहिंतो) कदाच अशुभ अध्यवसाय उत्पन्न थाय तोपण पोतानी विशेष अवज्ञा थशे एवा भयने लीधे अप्रशस्त एवा (जोगेहिंतो) योगोथी-एटले मन, वचन अने कायाना व्यापारोथी (निअत्तइ) निवर्ते छे-पाछो फरे

रवद्धणाणं) अनंत संसारनी वृद्धि करनारा (मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं) मायाशल्य, निदानशल्य अने मिथ्यादर्शनशल्य ए त्रणे शल्यना (उद्धरणं) उद्धारने–विनाशने (करेइ) करे छे. (उज्जुभावं च णं) तथा ऋजुभावने–सरळपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (उज्जुभावपडिवन्ने अ णं) ऋजुभावने पामेलो (जीवे) जीव (अमाई) माया रहित थयो सतो (इत्थिवेयं) स्त्रीवेदने (नपुंसगवेयं च) अने नपुंसकवेदने (न बंधइ) बांधतो नथी, (पुव्वबध्धं च णं) तथा पूर्वे बांधेला आ बन्ने वेदने अथवा समग्र कर्मने (निज्जरेइ) खपावे छे. ५–७

जे पोताना दोषनी निंदा करतो होय तेनी ज आलोचना सफळ थाय छे तेथी हवे स्वदोषनी निंदाने ज कहे छे.—

निंदणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ, पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ, करणगुणसेढिं पडिवन्ने अ अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥ ६ ॥ ८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (निंदणयाए णं) निंदावडे एटले पोताना दोषना चिंतवनवडे–तेनी निंदावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ?

उत्तर—(निंदणयाए णं) निंदावडे करीने जीव (पच्छाणुतावं) " अहो ! में आ अकार्य कर्यु ! " एम पश्चात्तापने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (पच्छाणुतावेणं) पश्चात्तापवडे (विरज्जमाणे) वैराग्यने पाम्यो सतो (करणगुणसेढिं) करण-

आ सर्व गुरु प्रत्ये करवाथी (मणुस्सदेवसुग्गईओ) कुळवान मनुष्य अने ऐश्वर्यादि युक्त देवरूप सुगतिने (निबधइ) बांधे छे, (सिद्धिसोग्गइ च) अने सिद्धिरूपी सुगतिने (विसोहेइ) सन्मार्गरूप सम्यग्दर्शनादिवडे विशुद्ध करे छे, (पसत्थाइ च ण) तथा प्रशस्त एवां (विणयमूलाइ) अने विनयना हेतुवाळां (सव्वकज्जाइ) सर्व कार्योने एटले श्रुतनो अभ्यास विगेरे आ भव सबधी तथा मोक्षादिक परभव सबधी कार्योने (साहेइ) साधे छे, (अन्ने अ) तथा बीजा (बहवे) घणा (जीवे) जीवोने (विणइत्ता) विनय ग्रहण करावनार-विनय शिखवनार (भवइ) थाय छे ४-६

गुरुनी सेवा करतां छतां पण कांइक दोष लागवानो सभव छे तेथी तनी आलोचना करवी जोइए, तेथी हवे आलोचनाने कहे छे —

आलोयणाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ? आलोयणाए ण मायानियाणमिच्छादसणसल्लाण मोक्खमग्गविग्घाण अणतससारवद्धणाण उद्धरण करेइ, उज्जुभाव च ण जणयइ, उज्जुभावपडिवन्ने अ ण जीवे अमाई इत्थिवेय नपुसगवेय च न बधइ, पुव्वबद्ध च ण निज्जरेइ ॥५॥७॥

अर्थ—(भते) हे भगवान ! (आलोयणयाए ण) आलोचनावडे एटले गुरुनी पासे पोताना दोष प्रगट करवावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शु उत्पन्न करे ?

उत्तर—(आलोयणयाए ण) आलोचनावडे जीव (मोक्खमग्गविग्घाण) मोक्षमार्गना विघ्नरूप अने (अणतससा

धर्मनी श्रद्धावाळाए गुर्वादिकनी सेवा अवश्य करवी जोइए, तेथी हवे गुर्वादिकनी सेवाने कहे छे.—

गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ, विणयपडिवण्णे अ णं जीवे अणच्चासायणासीले नेरइअतिरिक्खजोणिअमणुस्सदेवदुग्गइओ निरुंभइ वण्णसंजलणभत्तिवहुमाणयाए मणुस्सदेवसुग्गईओ निबंधइ सिद्धिसोग्गइं च विसोहेइ, पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ, अन्ने अ बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥ ४ ॥ ६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए णं) गुरु अने साधर्मिकनी सेवावडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? शुं उपार्जन करे ?.

उत्तर—(गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए ण) गुरु अने साधर्मिकनी सेवावडे करीने (विणयपडिवत्तिं) विनयनी प्राप्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (विणयपडिवण्णे अ णं) विनयने पामेलो (जीवे) जीव (अणच्चासायणासीले) आशातना रहित स्वभाववाळो थयो सतो (नेरइअतिरिक्खजोणिअमणुस्सदेवदुग्गइओ) नारकी, तिर्यंच योनि, म्लेच्छादिक मनुष्य अने किल्बिषादिक देवरूप दुर्गतिने (निरुंभइ) रुंधे छे, तथा (वण्णसंजलणभत्तिवहुमाणयाए) वर्णवडे एटले श्लाघावडे जे संज्वलन एटले गुणनी प्रगटता, भक्ति एटले उभा थवुं विगेरे सेवा अने बहुमान एटले आभ्यंतरनी प्रीति

निवद पण धर्मनी श्रद्धाथी ज थाय छे तेथी हवे धर्मश्रद्धाने ज कहे छे—

धम्मसद्धाएण भंते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मसद्धाएण सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ, अगारधम्मं च णं चयइ, अणगारे णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयणसंजोगाईणं वुच्छेअं करेइ, अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ ॥ ३–५ ॥

अर्थ— (भंते) हे भगवान् ! (धम्मसद्धाएण) धर्मनी श्रद्धाए करीने–आस्तिक्यपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? शो गुण प्राप्त करे ?

उत्तर—(धम्मसद्धाएण) धर्मश्रद्धाए करीने (सायासोक्खेसु) सातवेदनीयथी उत्पन्न थयेला सुखने विषे एटले विषयसुखने विष (रज्जमाणे) प्रथम आसक्त थयो हतो ते हवे (विरज्जइ) विराग पामे छे, (अगारधम्मं च णं) अने गृहाचारनो–गृहस्थ धर्मनो (चयइ) त्याग करे छे,–साधु थाय छे तथा (अणगारे णं) अणगार–साधु थयेलो (जीवे) जीव (सारीरमाणसाणं) शरीर अने मनसबंधी (दुक्खाणं) दु खोना तथा (छेयणभेयणसंजोगाईणं) खड्गादिकवडे छेदन, कुंतादिकवडे भेदन विगेरे शरीर संबंधी अने संयोग एटले अनिष्टना मेळाप तथा आदि शब्दथी इष्टनो वियोग विगेरे मन संबंधी दु खोना (वुच्छेअं) विच्छेदने (करेइ) करे छे (अव्वाबाहं च) अने ए ज कारणथी अव्याबाध एटले बाधा पीडा रहित मोक्ष संबंधी (सुहं) सुखने (निव्वत्तेइ) उत्पन्न करे छे ३–५.

निव्वेएणं भंते! जीवे किं जणयइ! निव्वेएणं दिव्वमाणुस्सतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेअं हव्वमागच्छइ, सव्वविसएसु विरज्जइ, सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभपरिग्गहपरिच्चायं करेइ, आरंभपरिग्गहपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वुच्छिंदइ, सिद्धिमग्गपडिवण्णे अ भवइ ॥२॥४॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (निव्वेएणं) निर्वेद एटले " आ संसारनो हुं क्यारे त्याग करुं." एवो सामान्यपणे संसारपरनो वैराग्य, ते वडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? कयो गुण उपार्जन करे ?

उत्तर—(निव्वेएणं) निर्वेदवडे करीने (दिव्वमाणुस्सतेरिच्छिएसु) देव, मनुष्य अने तिर्यंच संबंधी (कामभोगेसु) कामभोगने विषे (निव्वेअं) निर्वेदने एटले " आ अनर्थना हेतुरूप विषयोथी सर्युं " एवा भावने (हव्वं आगच्छइ) शीघ्रपणे पामे छे, तथा ((सव्वविसएसु) सर्व विषयोने विषे (विरज्जइ) वैराग्य पामे छे, (सव्वविसएसु) सर्व विषयोने विषे (विरज्जमाणे) वैराग्य पामे सते (आरंभपरिग्गहपरिच्चायं) आरंभ अने परिग्रहना त्यागने (करेइ) करे छे, (आरंभपरिग्गहपरिच्चायं) आरंभ अने परिग्रहना त्यागने (करेमाणे) करते सते (संसारमग्गं) मिथ्यात्व, अविरति आदिक संसारना मार्गने (वुच्छिदइ) छेदे छे, तथा (सिद्धिमग्गपडिवण्णे अ) सिद्धिमार्गने पामेलो (भवइ) थाय छे. कृषि विगेरे आरंभ अने धन, धान्यादि परिग्रहनो त्याग करवाथी ज संसारमार्गनो विच्छेद थाय छे, तेनो विच्छेद थवाथी सम्यक् दर्शनादिक मोक्षमार्ग सुखेथी प्राप्त थाय छे, तेथी करीने सिद्धिमार्गने पामेलो थाय छे एम कह्युं छे ते योग्य ज छे. २–४.

अर्थ—(संवेगेण) संवेगे करीने एटले मोक्षना अभिलाषे करीने (भंते) हे भगवान ! (जीवे) जीव (किं) शु (जणयइ) उत्पन्न करे एटले शो गुण उपार्जन करे ? आ प्रमाणे शिष्य प्रश्न करे छे तेने भगवान उत्तर आपे छे के—(संवेगेण) संवेगे करीने (अणुत्तर) श्रेष्ठ एवी (धम्मसद्ध) धर्मनी श्रद्धाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे (अणुत्तराए) श्रेष्ठ एवी (धम्मसद्धाए) धर्मनी श्रद्धाए करीने जीव (संवेग) विशेष संवेगने (हव्व) शीघ्रपणे (आगच्छइ) पामे छे (नव अणताणुबंधिकोहमाणमायालोहे) अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभने (खवेइ) खपावे छे–क्षय करे छे, (तप्पच्चइअं च णं) अने तेने आश्रीने एटले कषायना क्षयने आश्रीने (न बंधइ) बांधतो नथी (नवं च कम्मं) तथा नवा अशुभ कर्मने (मिच्छत्तविसोहिं) मिथ्यात्वनी शुद्धिने एटले सर्वथा मिथ्यात्वनो क्षय (काउण) करीने (दसणाराहए) दर्शननो एटले क्षायिक सम्यक्त्वनो आराधक (भवइ) थाय छे (दसणविसोहीएण विसुद्धाए) निर्मळ एवा दर्शननी शुद्धिए करीने (अत्थि एगतिए) एक कोइ जीव एवो छे के जे (तेणेव भवग्गहणेण) ते ज भवना ग्रहणवडे एटले ते एक ज भवे करीने (सिज्झइ) मरुदेवी मातानी जेम सिद्ध थाय छे अने जे जीव ते ज भवे सिद्धिपदने पामतो नथी ते पण (सोहीए अ णं विसुद्धाए) निर्मळ एवी दर्शनशुद्धिए करीने (तच्चं पुणो) वळी त्रीजा (भवग्गहणं) भवना ग्रहणने (नाइक्कमइ) उल्लंघन करे नहीं एटले त्रीजे भवे तो अवश्य सिद्धिपदने पामे आ उत्कृष्ट दर्शननी आराधनाने आश्रीने कह्यु छे १–२

संवेगे करीने अवश्य निर्वेद थाय छे, तेथी हवे तेने ज कहे छे—

णया) मनसमाधारणा–मननी समाधि ५६, (वयसमाधारणया) वचनसमाधारणा ५७, (कायसमाधारणया) कायसमाधारणा, ५८, (नाणसंपन्नया) ज्ञानसंपन्नता–ज्ञानसहितपणुं ५९, (दंसणसंपन्नया) दर्शनसंपन्नता ६०, (चरित्तसंपन्नया) चारित्रसंपन्नता ६१, (सोइंदिअनिग्गहे) श्रोत्रेंद्रियनिग्रह ६२, (चक्खिदिअनिग्गहे) चक्षुइंद्रियनिग्रह ६३, (घाणिंदिअनिग्गहे) घ्राणेंद्रियनिग्रह ६४, (जिब्भिदिअनिग्गहे) जिव्हेंद्रियनिग्रह ६५, (फासिंदिअनिग्गहे) स्पर्शेंद्रियनिग्रह ६६, (कोहविजए) क्रोधविजय ६७, (माणविजए) मानविजय ६८, (मायाविजए) मायाविजय ६९, (लोभविजए) लोभविजय ७०, (पिज्जदोसमिच्छादंसणविजए) प्रेम द्वेष अने मिथ्यादर्शननो विजय ७१ (सेलेसी) शैलेशीकरण–चौदमा गुणस्थानमां रहेवुं ते ७२, तथा (अकम्मया) अकर्मता–कर्मनो अभाव ७३. आ प्रमाणे शब्दार्थ कह्यो. २.

हवे अनुक्रमे दरेक पदनी फळपूर्वक व्याख्या करे छे.—

संवेगेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ, अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ, अणंताणुबंधिकोहमाणमायालोहे खवेइ, नवं च कम्मं न बंधइ, तप्पच्चइअं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ, दंसणविसोहीएणं विसुद्धाए अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ, सोहीए अ णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १ ॥ ३ ॥

(तवे) तप २७, (वोदाणे) व्यवदान एटले कर्मनी शुद्धि-कर्मनिर्जरा २८, (सुहसाए) सुखशाय एटले विषयसुखनो नाश २९, (अप्पडिबद्धया) अप्रतिबद्धपणु ३०, (विवित्तसयणासणसेवणया) विविक्त शयनासनसेवन-स्त्री, पशु, पंडकादि रहित शय्या, आसन विगेरेनु सेवन ३१, (विणिअट्टणया) विनिवर्तना एटले पांच इंद्रियोना विषयथी निवर्तन ३२, (संभोगपच्चक्खाणे) संभोगप्रत्याख्यान एटले जिनकल्पिकादिकने एक मंडळीनो आहार ग्रहण करवानु प्रत्याख्यान ३३, (उवहिपच्चक्खाणे) रजोहरण अने मुखवस्त्रिका सिवाय बीजी उपधिनु प्रत्याख्यान ३४, (आहारपच्चक्खाणे) सदोष आहारनु प्रत्याख्यान ३५, (कसायपच्चक्खाणे) कषाय प्रत्याख्यान ३६, (जोगपच्चक्खाणे) मन, वचन, कायाना योगनु प्रत्याख्यान ३७, (सरीरपच्चक्खाणे) समय आवे शरीरनु पण प्रत्याख्यान ३८, (सहायपच्चक्खाणे) सहाय करवानु प्रत्याख्यान ३९, (भत्तपच्चक्खाणे) भक्त प्रत्याख्यान-अनशन ग्रहण ४०, (सब्भावपच्चक्खाणे) सद्भावे करीने एटले सत्यपणे प्रत्याख्यान ४१, (पडिरूवया) प्रतिरूपता एटले स्थविरकल्पी सदृश वेषधारीपणु ४२, (वेयावच्चे) वैयावच्च ४३, (सव्वगुणसंपन्नया) ज्ञानादिक सर्वगुणे करीने संपन्नता-सहितपणु ४४ (वीअरागया) वीतरागपणु ४५, (खंती) क्षांति-क्षमा ४६, (मुत्ती) मुक्ति-निर्लोभता ४७, (मद्दवे) मार्दव-माननो त्याग ४८, (अज्जवे) आर्जवता-माया रहितपणु ४९, (भावसच्चे) भावसत्य-अंतरात्मानी शुद्धि ५०, (करणसच्चे) करणसत्य एटले प्रतिलेखनादि क्रियामा आळस रहितपणु ५१, (जोगसच्चे) योगसत्य-मन, वचन, कायाना योगनु सत्यपणु ५२, (मणगुत्तया) मनगुप्तता-मनोगुप्ति ५३, (वयगुत्तया) वचोगुप्ति ५४, (कायगुत्तया) कायगुप्तता ५५, (मणसमाधार

प्ररूप्युं छे. आ अध्ययननुं माहात्म्य कहे छे के (जं) जे आ अध्ययनने (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (सद्दहित्ता) सद्दहीने एटले शब्द, अर्थ अने ते बन्नेने सामान्यपणे अंगीकार करीने, तथा (पत्तिआइत्ता) प्रतीत्य एटले 'आ एम ज छे' एम विशेषपणे निश्चय करीने, तथा (रोअइत्ता) तेनो अभ्यास करवावडे तेने आत्माने विषे रुचावीने, तथा (फासित्ता) त्रण योगवडे स्पर्श करीने एटले मनवडे सूत्र अने अर्थना चिंतवने करीने, वचनवडे वांचवादिके करीने अने कायावडे तेना भांगा अंगीकार करवा प्रमुखे करीने–ए रीते स्पर्श करीने, तथा (पालइत्ता) परावर्तन विगेरेवडे रक्षण करीने, तथा (तीरइत्ता) तेने समाप्त करीने, तथा (किट्टइत्ता) गुरु पासे विनयपूर्वक 'आ आ प्रमाणे हुं भण्यो छु' एम निवेदन करीने, तथा (सोहइत्ता) गुरुनी पाछळ तेनो अनुवाद करवावडे शुद्ध करीने, तथा (आराहइत्ता) उत्सूत्रनी प्ररूपणाना त्यागवडे अथवा उत्सर्ग अने अपवादमां कुशळतावडे अथवा जीवन पर्यंत तेना अर्थना सेवनवडे आराधीने तथा (आणाए अणुपालइत्ता) गुरुना नियोगरूप आज्ञावडे पालन करीने (बहवे) घणा (जीवा) जीवो (सिज्झंति) सिद्ध थाय छे एटले अहीं ज आत्मानी सिद्धिने पामे छे, (बुज्झंति) घातिकर्मना क्षयवडे बोध–केवळज्ञान पामे छे, (मुच्चंति) भवोपग्राही चार कर्मना क्षयवडे मुक्त थाय छे, अने त्यारपछी (परिनिव्वायंति) समग्र कर्मरूपी दावानळनी शांतिवडे शांत थाय छे, अने तेथी करीने ज (सव्वदुक्खाणं) शरीर अने मन संबंधी सर्व दुःखोना (अंतं) अंतने (करेंति) करे छे–मुक्तिपदने पामे छे. १.

हवे शिष्यनो अनुग्रह करवा माटे संबंध कहेवा पूर्वक आ अध्ययनना अर्थने कहे छे—

अथ सम्यक्त्वपराक्रम नामनुं ओगणत्रीशमुं अध्ययन २९

अठ्ठावीशमा अध्ययनमां मोक्षमार्गगति कही, ते वीतरागपणाथी प्राप्त थाय छे, तेथी जे रीते वीतरागपणु प्राप्त थाय ते आ अध्ययनमा कहेवाय छे आ सबधथी आवेला आ अध्ययननु प्रथम सूत्र कहे छे —

सुअ मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नामज्झयणे समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइए। ज सम्म सद्दहित्ता पत्तिआइत्ता रोअइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाणमत करेति ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीसुधर्मास्वामी जबूस्वामीने कहे छे के-(सुअ मे आउस) हे आयुष्मान् शिष्य ! में सांभळ्यु छे के-(तेण भगवया) ते श्रण जगतमा प्रसिद्ध एवा भगवान श्रीमहावीरस्वामीए (एव अक्खाय) आ प्रमाणे कह्यु छे. अर्थात् (इह) आ प्रवचनने विषे (खलु) निश्चे (सम्मत्तपरक्कमे) सम्यक्त्व सते उत्तरोत्तर गुणप्राप्तिवडे कर्मरूपी शत्रुने जीतवाना सामर्थ्यरूप जीवना पराक्रमनु जेने विषे वर्णन कराय छे एवु आ सम्यक्त्व पराक्रम (नामज्झयणे) नामनु अध्ययन (समणेण) श्रमण (भगवया) भगवत (महावीरेण) श्री महावीर नामना (कासवेण) काश्यप गोत्रीए (पवेइए)

तरो तवो) आभ्यंतर तप पण करो छे. ३४.

हवे आ चारे कारणोमांथी मुक्तिमार्गने विषे कोनो कयो व्यापार छे ? ते कहे छे.—

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे । चरित्तेण न गिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥ ३५ ॥

अर्थ—(नाणेण) श्रुतादिक ज्ञानवडे (भावे) जीवादिक भावोने (जाणई) जाणे छे, (दंसणेण य) दर्शने करीने ते भावोने (सद्दहे) सद्दहे छे, (चरित्तेण) आश्रव द्वारना निरोधरूप चारित्रवडे (न गिण्हाइ) नवा कर्मने ग्रहण करता नथी अने (तवेण) तपवडे (परिसुज्झइ) पूर्वे उपार्जन करेला कर्मनो क्षय करी शुद्ध थाय छे. ३५.

आ गाथावडे शुद्ध मार्गनुं फळ मोक्ष कह्युं. हवे मोक्षनां फळभूत उत्कृष्ट गतिने कहे छे.—

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो त्ति बेमि ॥३६॥

अर्थ—(महेसिणो) महर्षिओ (संजमेण) संयमवडे (तवेण य) तथा तपवडे (पुव्वकम्माइं) पूर्वनां कर्मोनो (खवित्ता) क्षय करीने (सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा) सर्व दुःखे करीने प्रहीन एटले रहित एवा मोक्षने इच्छता सता अथवा सर्व दुःखो अने अर्थ एटले कार्यो जेनां क्षीण थया छे एवा सता (पक्कमंति) मुक्ति प्रत्ये जाय छे, (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं.

इति अष्टाविंशमध्ययनम्. २८.

होय तेओ तपस्वी थाय अने तपस्वी हता ते वैयावच्च करनारा थाय ए रीते पण छ मास थाय, त्यारपछी ते आठमाथी एक गुरु थाय अने जे गुरु थया हता ते तपस्वी थाय अने बाकीना साते वैयावच्च करनारा थाय आ रीते छ मास करे. कुल दोढ वर्ष पूरु थाय त्यारे ते सर्वे फरीथी ते ज तप करे अथवा जिनकल्प अगीकार करे अथवा तो गच्छमा प्रवेश करे आवा तपस्वीनु जे चारित्र ते परिहारविशुद्धिक कहेवाय छे आ चारित्र भरत अने ऐरावत ए बे ज क्षेत्रमां पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना ज तीर्थमा होय छे. बीजे होतु नथी ३. चोथु सूक्ष्मसपराय छे. तेमा किट्टी करवाथी सूक्ष्म कर्यो छे लोभ नामनो सपराय एटले कषाय जेने विषे ते चारित्र सूक्ष्मसपराय नामनु छे आ चारित्र क्षपकश्रेणि अने उपशमश्रेणिने विषे लोभना अतिम परमाणु ज्यारे वेदाता होय त्यारे दशमे गुणठाणे होय छे ४ तथा पाचमु यथाख्यात एटले जिनेश्वरे जे स्वरूप कह्यु छे तेने किंचित् पण ओळगाय नहीं तेवु पूर्ण शुद्ध ते यथाख्यात चारित्र एवु तेनु सार्थक नाम छे (ते ११–१२–१३–१४ गुणठाणे होय छे) ५ आ प्रमाणे ते पाचेनो विस्तरार्थ जाणवो ३२–३३

हवे तपरूपी चोथु कारण कहे छे —

तवो अ दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भितरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भितरो तवो ॥ ३४ ॥

अर्थ—(तवो अ) तप (दुविहो) बे प्रकारे (वुत्तो) कह्यो छे, (बाहिरब्भितरो तहा) बाह्य तथा आभ्यतर तेमां (बाहिरो) बाह्य तप (छव्विहो वुत्तो) छ प्रकारे कह्यो छे, तथा (एव) ए ज प्रमाणे एटले छ प्रकारनो (अब्भि

यिक एवुं सार्थक नाम छे. अर्थात् सर्व सावद्य योगनो त्याग. आ सामायिक-बे प्रकारनुं छे–इत्वर सामायिक अने यावत्काथिक सामायिक. तेमां इत्वर सामायिक भरत अने ऐरवत क्षेत्रमां पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना तीर्थमां उपस्थापना एटले वडी-दीक्षा थाय त्यां सुधी होय छे अने यावत्काथिक सामायिक ते ज ये क्षेत्रमां मध्यमना बावीश तीर्थंकरना तीर्थमां तथा महाविदेहक्षेत्रमां निरंतर होय छे, केमके त्यां उपस्थापना नहीं होवाथी जावजीव सामायिक चारित्र ज होय छे. १. बीजुं छेदोपस्थापनीय चारित्र छे. तेमां अतिचार सहित एवा साधुने अथवा अतिचार रहित छतां पण बीजा तीर्थने अंगीकार करता साधुने पूर्वना पर्यायनो छेद करवो. ते छेदे करीने सहित एवी उपस्थापना एटले महाव्रतनी आरोपणा जेने विषे होय ते चारित्र छेदोपस्थापनीय कहेवाय छे. २. त्रीजुं परिहारविशुद्धिक छे. तेमां परिहार एटले विशिष्ट तपना अंगीकारवडे गच्छनो त्याग, ते वडे शुद्धि छे जेमां ते चारित्र परिहारविशुद्धिक नामे कहेवाय छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.—नव मुनिओ गच्छनी बहार नीकळीने जिनेश्वरनी पासे अथवा जेणे प्रथम जिनेश्वरनी पासे आ तप कर्यो होय तेनी पासे आ तप अंगीकार करे छे, ते नवमां एक मुनि गुरुस्थाने रहे, चार मुनिओ आ तप करे अने बाकीना चार मुनिओ तेमनी वैयावच्च करे. ते तपस्वी मुनिओ ग्रीष्मकाळे जघन्य तप करे तो चतुर्थभक्त–उपवास करे, मध्यम करे तो छट्ठ अने उत्कृष्ट करे तो अठम करे. शीतकाळे अनुक्रमे जघन्यादिक छट्ठ, अट्ठम अने दशम (चार उपवास) करे अने वर्षाकाळमां अनुक्रमे जघन्यादिक अठम, दशम अने द्वादश—पांच उपवास करे. ते तपस्वीओ पारणाने दिवसे आचाम्ल करे अने गुरु तथा वैयावच्च करनार साधुओ हमेशां आचाम्ल करे. आ प्रमाणे छ मास तप करीने पछी जेओ वैयावच्च करनारा

करेला धर्मानुष्ठान प्रत्ये सीदाता जीवोने पाछा धर्ममां स्थिर करवा ते ६, (वच्छल्लपभावणे) वात्सल्य-धार्मिक जननी भक्ति करवी ते ७, तथा प्रभावना-तीर्थनी उन्नतिना कार्यमां प्रवर्तवु ते ८ (अट्ठ) आ आठ दर्शनना आचार छे. ३१

आ प्रमाणे ज्ञान अने दर्शनरूप मुक्तिनो मार्ग कह्यो हवे चारित्ररूप मुक्तिनो मार्ग कहे छे —

सामाइअ त्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बीअं। परिहारविसुद्धीअं, सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा। एअं चयरित्तकरं, चारित्तं होई आहिअं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(पढम) पहेलु (सामाइअ त्थ) सामायिक नामनु चारित्र छे, (बीअं) बीजु (छेओवट्ठावण) छेदोपस्थापनीय (भवे) होय छे, (परिहारविसुद्धीअं) त्रीजु परिहारविशुद्धिक, (तह) तथा चोथु (सुहुम संपरायं च) सूक्ष्मसंपराय चारित्र दशमे गुणठाणे होय छे अने (अकसाय) कषाय रहित अर्थात् क्षय करेला के उपशमावेला कषायनी अवस्थामां पाचमु (अहक्खाय) यथाख्यात नामनु चारित्र प्राप्त थाय छे, ते (छउमत्थस्स) छद्मस्थने उपशांतमोह अने क्षीणमोह ए बे गुणस्थानमां वर्तताने होय छे अने (जिणस्स वा) जिनने-केवळीने सयोगीकेवळी अने अयोगीकेवळी ए बे गुणस्थाने वर्तता होय छे (एअं) आ पांच प्रकारनु (चयरित्तकरं) चय एटले कर्मना समूहनु रिक्तकर एटले नाश करनार एवा सार्थक नामवाळु (चारित्तं) चारित्र (आहिअं होइ) तीर्थकरोए कहेलु छे

अहीं सम एटले रागद्वेष रहित चित्तना परिणाम तेने विषे आय एटले जवु-रहेवु ते समाय, अने समाय ए ज सामा-

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न होंति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमुक्कस्स निव्वाणं ॥ ३० ॥

अर्थ—(अदंसणिस्स) समकित रहित एवा पुरुषने (नाणं न) सम्यक् ज्ञान होतुं नथी, तथा (नाणेण विणा) ज्ञान विना (चरणगुणा) चरण एटले पंच महाव्रत अने गुण एटले पिंडविशुद्ध्यादिक (न होंति) होता नथी, तथा (अगुणिस्स) गुण रहितने (मोक्खो) मोक्ष–समग्र कर्मनो क्षय (नत्थि) होतो नथी, तथा (अमुक्कस्स) कर्मथी मुक्त थयेला न होय तेने (निव्वाणं) मुक्तिपदनी प्राप्ति (नत्थि) होती नथी. ३०.

आठ प्रकारना दर्शनाचारवडे ज उत्तरोत्तर गुणनी प्राप्ति थाय छे, तेथी ते समकितना आठ आचारने देखाडे छे.—

निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूहथिरीकरणे, वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥३१॥

अर्थ—(निस्संकिय) निःशंकित–जैन दर्शनने विषे देशथी अने सर्वथी शंका रहितपणुं १, (निक्कंखिय) निष्कांक्षित–अन्य अन्य दर्शननी अभिलाषानो अभाव २, (निव्वितिगिच्छा) निर्विचिकित्सा एटले फळ प्रत्ये संदेह रहितपणुं अथवा निर्विजुगुप्सा एटले साधुनी निंदानो अभाव ३, (अमूढदिट्ठी अ) अमूढ दृष्टि–ऋद्धिवाळा कुतीर्थिकने जोइने पण पोतानी दृष्टि एटले बुद्धि मोह न पामे ते ४, आ चार प्रकारनो आचार आभ्यंतर छे, हवे चार बाह्य आचारने कहे छे.—(उववूहथिरीकरणे) उपबृंहा–सम्यक्त्वादिक गुणवाळाओनी प्रशंसा करी तेमना गुणोनी वृद्धि करवी ते ५, स्थिरीकरण–स्वीकार

परमत्थसथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा यावि। वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥

अर्थ—(परमत्थसथवो वा) परम एवा अर्थ एटले जीवादिक तात्त्विक पदार्थो, तेने विषे सस्तव एटले तेना स्वरूपनो वारवार चिंतवन करवारूप परिचय, तथा (सुदिट्ठपरमत्थसेवणा) सारी रीते देख्यो छे परमार्थ जेणे एवा आचार्यादिकनु सेवन, (यावि) चशब्द छे तेथी शक्ति प्रमाण ते आचार्यादिकनी वैयावच्च, अपिशब्द समुच्चय अर्थमां छे, (वावण्णकुदंसणवज्जणा य) तथा व्यापन्नदर्शन एटले नाश पाम्यु छे सम्यग्दर्शन जेनु एवा निन्हवादिक अने कुदर्शन एटले शाक्यादिक मिथ्यादृष्टिओ, तेमनु वर्जन, ए सर्व (सम्मत्तसद्दहणा) सम्यक्त्वनु श्रद्धान छे एटले आ सर्व लिंगवडे तेनामां समकित छे एम श्रद्धा कराय छे २८

आ प्रमाणे समकितना लिंग कह्यां, हवे तेनु ज माहात्म्य देखाडे छे —

नत्थि चरित्तं सम्मत्त–विहूणं दंसणे उ भइअव्वं। सम्मत्तचरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥ २९ ॥

अर्थ—(सम्मत्तविहूण) सम्यक्त्व विना (चरित्त) चारित्र–भावचारित्र (नत्थि) होतु नथी एटले ज्यांसुधी समकित नथी त्यांसुधी चारित्र नथी (दंसणे उ) परंतु सम्यक्त्व सते (भइअव्व) भजना छे एटले चारित्र होय के न पण होय. (सम्मत्तचरित्ताइ) सम्यक्त्व अने चारित्र (जुगव) एकी साथे प्राप्त थाय छे, (व) अथवा (सम्मत्त) सम्यक्त्व (पुव्वं) प्रथम प्राप्त थाय छे २९

नवमो संक्षेपरुचि कहे छे.—

अणभिग्गहिअकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होई नायव्वो। अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ अ सेसेसु ॥२६॥

अर्थ—(अणभिग्गहिअकुदिट्ठी) जेणे सौगतादिकना मतरूपी कुदृष्टिने अंगीकार करी न होय, (पवयणे) जिनप्रवचनने विषे (अविसारओ) कुशळ न होय, (अ) तथा (सेसेसु) कपिलादिकना शास्त्रोने विषे पण (अणभिग्गहिओ) प्रेमवाळो न होय ते-तेवा जीवो चिलातिपुत्रनी जेम (संखेवरुइ होइ) संक्षेपरुचि होय छे, (त्ति) एम (नायव्वो) जाणवुं. २६.

हवे छेल्लो एटले दशमो धर्मरुचि कहे छे.—

जो अत्थिकायधम्मं, सुअधम्मं खलु चरित्तधम्मं च। सद्दहइ जिणाभिहिअं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥

अर्थ—(जो) जे पुरुष (जिणाभिहिअं) जिनेश्वरे कहेला (अत्थिकायधम्मं) अस्तिकाय एटले धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय विगेरेना धर्मने एटले गति, स्थिति, अवगाह विगेरे लक्षणने, तथा (सुअधम्मं) आगमरूप श्रुतधर्मने, तथा (खलु) निश्चे (चरित्तधम्मं च) सामायिकादिक चारित्रधर्मने (सद्दहइ) सद्दहे-श्रद्धा करे (सो) ते (धम्मरुइ त्ति) धर्मरुचि छे एम (नायव्वो) जाणवुं. अहीं धर्म एटले पर्यायो अथवा धर्म एटले श्रुतधर्मादिक, तेने विषे रुचि छे जेनी ते धर्मरुचि कहेवाय छे.

हवे कया लिंगे करीने सम्यक्त्व छे ? एम जाणवुं ? ते विषे कहे छे.—

दृष्टिवाद एटले बारमुं अंग, (अ) तथा चशब्दथी उपपातिकादिक उपांगो, आ सर्व (सुअनाण) श्रुतज्ञान (जेण) जेणे (अत्थओ) अर्थथी (दिट्ठ) जोयुं-जाण्युं होय, (सो) ते पुरुष (अभिगमरुई) अभिगमरुचि (होई) होय छे २३

सातमो विस्तारुचि कहे छे —

दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा। सव्वाहिं नयविहिहि अ, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥२४॥

अर्थ—(दव्वाण) धर्मास्तिकायादिक सर्व द्रव्योना (सव्वभावा) एकत्व, पृथक्त्व, आदि सर्व भावो-पर्यायो (सव्वपमाणेहिं) प्रत्यक्षादिक सर्व प्रमाणोए करीने (सव्वाहिं नयविहिहि अ) तथा नैगमादिक सर्व नयना प्रकारोए करीने (जस्स) जेना (उवलद्धा) जाणवामां आव्या होय-जेणे जाण्या होय, ते पुरुष (वित्थाररुइ त्ति) विस्तारुचि छे एम (नायव्वो) जाणवुं २४

आठमो क्रियारुचि कहे छे —

दंसणनाणचरित्ते, तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु। जो किरिआभावरुई, सो खलु किरिआरुई नाम ॥२५॥

अर्थ—(दंसणनाणचरित्ते) दर्शन, ज्ञान अने चारित्रने विषे, (तवविणए) तप अने विनयने विषे तथा (सच्चसमिइ-गुत्तीसु) सत्य एवा समिति अने गुप्तिने विषे (जो) जे प्राणी (किरिआभावरुई) ते दर्शनादिकना क्रियानुष्ठानने विषे भावथी रुचिवाळो होय, (सो) ते जीव (खलु) निश्चे (किरिआरुई) क्रियारुचि (नाम) नामे कहेवाय छे २५

जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं । अंगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ २१ ॥

अर्थ—(जो) जे पुरुष (सुत्तं अहिज्जंतो) सूत्रने भणतो थको (अंगेण) अंगप्रविष्ट आचारांगादिक (बाहिरेण व) अथवा उत्तराध्ययनादिक बाह्य एटले अनंगप्रविष्ट (सुएण) श्रुतवडे (सम्मत्तं) समकितने (ओगाहई उ) अवगाहन करे छे एटले पामे छे, (सो) ते पुरुष (सुत्तरुइ) सूत्ररुचि छे (त्ति) एम (नायव्वो) जाणवुं. २१.

पांचमो बीजरुचि कहे छे.—

एगेण अणेगाइं, पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं। उदए व तिल्लबिंदू, सो बीअरुइ त्ति नायव्वो ॥२२॥

अर्थ—(उदए) जळने विषे (तिल्लबिंदू व) तेलना बिंदुनी जेम (जो) जे (सम्मत्तं) सम्यक्त्ववाळो पुरुष (एगेण) एक जीवादिक पदवडे करीने (अणेगाइं) अजीवादिक अनेक (पयाइं) पदोने विषे (पसरई) प्रसरे छे, जेम जळना एक देशमां रहेलो तेलनो बिंदु समग्र जळमां प्रसरे छे, तेम एक देशमात्रथी रुचि उत्पन्न थइ होय एवो जे जीव तथाप्रकारना क्षयोपशमथी समग्र तत्त्वोने विषे रुचिवाळो थाय, (सो) ते (बीअरुइ त्ति नायव्वो) बीजरुचि छे एम जाणवुं. २२.

छठ्ठो अभिगमरुचि कहे छे.

सो होई अभिगमरुई, सुअनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं । एक्कारसअंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ अ ॥२३॥

अर्थ—(एकारसअंगाइं , आचारांगादिक अग्यार अंग, (पइण्णगं) उत्तराध्ययनादिक प्रकीर्णको, (दिट्ठिवाओ)

श्रद्धा करे ते जीव (निसग्गरुइ त्ति) निसर्गरुचि छे एम (नायव्वो) जाणवु १८

हवे बीजो भेद उपदेशरुचि कहे छे —

एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई । छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥ १९ ॥

अर्थ—(जो) जे प्राणी (परेण) बीजाए एटले (छउमत्थेण) छद्मस्थ गुरुए (जिणेण व) अथवा केवळज्ञानीए (उवइट्ठे) उपदेश आपेला (एए चेव उ) ए ज (भावे) जीवादिक पदार्थोने (सद्दहई) सद्दहे-श्रद्धा करे, ते प्राणी (उवएसरुइ त्ति) उपदेशरुचि छे एम (नायव्वो) जाणवु १९

हवे त्रीजो आज्ञारुचि कहे छे —

रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ । आणाए रोअंतो, सो खलु आणारुई नाम ॥२०॥

अर्थ—(जस्स) जेना (रागो) राग, (दोसो) द्वेष, (मोहो) मोह अने (अन्नाणं) अज्ञान (अवगयं होइ) देशथी चय थयेला होय, अने तेथी करीने (आणाए) आचार्यादिकनी आज्ञाए करीने ज (रोअंतो) कोइ पण ठेकाणे कदाग्रह विना मापतुषनी जेम जीवादिक पदार्थ उपर रुचि राखतो होय, (सो) ते प्राणी (खलु) निश्चे (आणारुई) आज्ञारुचि (नाम) नामे जाणवो २०

चोथो सूत्ररुचि कहे छे —

थाय ते ६, तथा धर्मरुचि एटले श्रुतधर्मे करीने अथवा श्रुतधर्मने विषे रुचि थाय ते १०. आ रीते दश प्रकारे समकित प्राप्त थइ शके छे. १६.

आ प्रमाणे संक्षेपथी समकितना दश भेदो कह्या, तेनो विस्तारथी अर्थ कहे छे.—

भूअत्थेणाहिगया, जीवाऽजीवा य पुण्णपावं च। सहसंमुइआ आसवे–संवरे अ रोएइ उ निस्सग्गो ॥१७॥

अर्थ—(जीवाऽजीवा य) जीव, अजीव, (पुण्णपावं च) पुण्य, पाप, (आसवसंवरे अ) आश्रव अने संवर तथा च शब्दे करीने निर्जरा बंध मोक्ष विगेरे नव तत्त्वोने जेणे (भूअत्थेण) सत्यपणाए करीने (अहिगया) जाणेला छे, तथा (सहसंमुइआ) पोतानी स्वाभाविक मतिए करीने एटले कोइना उपदेश विना जातिस्मरणादि ज्ञाने करीने (रोएइ उ) रुचाव्या छे, ते पुरुष (निसग्गो) निसर्गरुचि कहेवाय छे. १७.

ए ज अर्थने वधारे स्पष्ट करीने बतावे छे.—

जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहइ सयमेव। एमेव नन्नह त्ति अ, निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥ १८ ॥

अर्थ—(जो) जे प्राणी (जिणदिट्ठे) जिनेश्वरे कहेला (चउव्विहे) द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव, अथवा नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एवा चार प्रकारना (भावे) पदार्थोने (सयमेव) बीजाना उपदेश विना पोतानी मेळे ज (एमेव) " आ जीवादिक तत्त्व जिनेश्वरे कह्या छे ते ते ज प्रमाणे छे, (नन्नह त्ति अ) अन्यथा प्रकारे नथी." ए प्रमाणे (सद्दहइ)

तहिआण तु भावाण, सब्भावे उवएसणं । भावेण सद्दहतस्स, सम्मत्त त्ति विआहिअ ॥ १५ ॥

अर्थ—(तहिआण तु) तथ्य एटले सत्य एवा (भावाण) पदार्थोना (सब्भावे) सद्भावने कहेनार एटले सत्यपणाने कहेनार एवा (उवएसण) उपदेशने-गुरु आदिकना कथनने जे पुरुष (भावेण) भावथी (सद्दहतस्स) श्रद्धा करे ते पुरुषने (सम्मत्त त्ति) समकित दर्शन छे एम (विआहिअ) जिनेश्वरे कह्यु छे मोहनीयना चय अने उपशम विगेरेथी उत्पन्न थयेला आत्माना परिणाम विशेष ते समकित कहेवाय छे १५

आ प्रमाणे समकितनु स्वरूप कह्यु हवे तेना भेदो कहे छे —

निस्सग्गुवएसरुई, आणारुइ सुत्तवीअरुइमेव । अभिगमवित्थाररुई, किरिआसखेवधम्मरुई ॥१६॥

अर्थ—(निस्सग्गुवएसरुई) निसर्गरुचि एटले कोइना उपदेश विना स्वभावथी ज तत्त्वनी अभिलाषा थाय ते १, उपदेशरुचि एटले गुर्वादिकना उपदेशथी तत्त्वनी अभिलाषा थाय ते २, (आणारुइ) आज्ञारुचि एटले सर्वज्ञना वचने करीने तत्त्वनी रुचि थाय ते ३, (सुत्तवीअरुइमेव) सूत्ररुचि एटले आगमे करीने रुचि थाय ते ४, बीजरुचि एटले बीजनी जेम जे एक छता पण अनेक अर्थने उत्पन्न करे तेवा वचने करीने रुचि थाय ते ५, (अभिगमवित्थाररुई) अभिगमरुचि एटले विज्ञाने करीने रुचि थाय ते ६, विस्ताररुचि एटले विस्तारे करीने रुचि थाय ते ७, (किरिआसखेवधम्मरुई) क्रियारुचि एटले धर्मानुष्ठाने करीने अथवा धर्मानुष्ठानने विषे रुचि थाय ते ८, सक्षेपरुचि एटले सक्षेपे करीने अथवा सक्षेपने विषे रुचि

इत्यादि बुद्धि थवानुं कारण जे होय ते, (संजोगा य) संयोग एटले बे आंगळीओनो आ संयोग छे एम जेनाथी जणाय ते, तथा (विभागा य) विभाग एटले आ आनाथी जूदो छे एवी मतिनुं कारण, आ सर्वे (पज्जवाणं तु) पर्यायोनुं (लक्खणं) लक्षण छे. रूपादिक गुणो पण पर्यायनु लक्षण छे परंतु ते अति प्रसिद्ध होवाथी गणावेल नथी, तथा नवुं, जूनुं विगेरे पण पर्यायोनुं ज लक्षण छे ते पण उपलक्षणथी जाणी लेवा. अही ' संयोग ' अने ' विभाग ' ए बे शब्दने बहुवचनमां मूक्या छे ते बहुवचन व्यक्तिनी अपेक्षाए जाणवुं. केमके संयोग के विभाग एक वस्तुनो थइ शकतो नथी, तेनी अंदर रहेला पदार्थो एकथी वधारे छे तेथी ते अपेक्षाए बहुवचन लख्युं छे. १३.

आ प्रमाणे स्वरूपथी अने विषयथी ज्ञान बताव्युं, हवे दर्शनने कहे छे.—

जीवाऽजीवा य बंधो अ, पुण्णं पावासवो तहा । संवरो निज्जरा मोक्खो, संतेए तहिआ नव ॥ १४ ॥

अर्थ—(जीवा) जीव, (अजीवा य) धर्मास्तिकायादिक अजीव, (बंधो अ) बंध-जीव अने कर्मनो संयोग, (पुण्णं)पुण्य-शुभप्रकृतिरूप सातादिक, (पावासवो) पाप-अशुभप्रकृतिरूप मिथ्यात्वादिक, आश्रव-कर्मबंधनना हेतु हिंसादिक, (तहा) तथा (संवरो) संवर-महाव्रतादिकवडे आश्रवनो निरोध, (निज्जरा) निर्जरा-भोगववाथी अथवा तप करवाथी बांधेला कर्मनो क्षय अने (मोक्खो) सर्व कर्मनो क्षय ते मोक्ष (एए) आ (नव) नव पदार्थो (तहिआ) सत्य-तत्त्व (संति) छे. १४.

ए नव पदार्थो सत्य छे तेथी शुं ? ते कहे छे.—

वीर्य-सामर्थ्य, अने (उवओगो अ) उपयोग एटले सावधानपणु (एअ) आ ज्ञानादिक समुदाय ते (जीवस्स) जीवनु (लक्खण) लक्षण छे आ लक्षण बीजा कोइ पण द्रव्यने नहीं होवाथी आ लक्षणवडे जीव बराबर ओळखाय छे ११

हवे पुद्‌गळनु लक्षण कहे छे —

सद्दधयार उज्जोओ, पहा छायाऽऽतवेइ वा । वण्णरसगधफासा, पुग्गलाण तु लक्खण ॥ १२ ॥

अर्थ—(सद्दधयार) शब्द–ध्वनि, अधकार, (उज्जोओ) उद्योत एटले रत्नादिकनो प्रकाश, (पहा) प्रभा एटले चद्रादिकनी काति, (छाया) शीतगुणवाळी छाया, (आतव) आतप एटले तडका (इइ) ए आदिक, (वा) तथा (वण्णरसगधफासा) कृष्णादिक वर्ण, तिक्तादिक रस, सुरभि आदिक गध अने शीतादिक स्पर्श, ए (पुग्गलाण तु) पुद्‌गलोनु (लक्खण) लक्षण छे आटला लक्षणोए करीने ज पुद्‌गळ ओळखाय छे १२

द्रव्यनु लक्षण कह्यु, हवे पर्यायनु लक्षण कहे छे —

एगत्त च पुहत्त च, सखा सठाणमेव य । सजोगा य विभागा य, पज्जवाण तु लक्खण ॥१३॥

अर्थ—(एगत्त च) एकत्व एटले घटादिकना परमाणु विगेरे भिन्न भिन्न छता आ एक घडो छे एवी प्रतीतिनु कारण, (पुहत्त च) पृथक्त्व–भिन्नपणु एटले आ घट पेला घटथी जूदो छे एवी प्रतीतिनु कारण, (सखा) सख्या एटले जेनाथी एक, बे, त्रण विगेरे सख्यानी प्रतीति थाय ते, (सठाणमेव य) सस्थान एटले आ पदार्थ गोळ छे आ चोरस छे

वाय छे तेमां सहायक थवुं ते धर्मास्तिकायनुं लक्षण छे. (ठाणलक्खणो) स्थानरूप लक्षणवाळो (अहम्मो) अधर्म छे, अधर्मास्तिकायनुं लक्षण स्थिति छे, एटले के पोतानी मेळे ज गमन करवामां प्रवर्तेला जीव अने पुद्गळने गतिक्रियामां सहायभूत थाय ते धर्मास्तिकाय छे अने स्थिर रहेवाना परिणामवाळा जीव अने पुद्गळने स्थितिक्रियामां सहायभूत थाय ते अधर्मास्तिकाय छे. तथा (सव्वदव्वाणं) सर्व द्रव्योनो (भायणं) आधार (ओगाहलक्खणं) अवगाहरूप लक्षणवाळु (नहं) आकाश छे. अवगाह करवामां प्रवर्तेला जीव अने पुद्गळने जे अवकाश आपे ते आकाश कहेवाय छे. ९.

वत्तणालक्खणो[1] कालो, जीवो[2] उवओगलक्खणो[3] । नाणेणं[4] दंसणेणं[5] च, सुहेण[6] य दुहेण य ॥ १० ॥

अर्थ—(वत्तणालक्खणो) वर्तवाना लक्षणवाळो (कालो) काळ छे, काळनुं लक्षण वर्तना–होवापणुं छे, ते काळ वृक्षादिकने पुष्पादिकनी नियमित उत्पत्तिमां कारणरूप छे. तथा (उवओगलक्खणो) मतिज्ञानादिकना उपयोग लक्षणवाळो (जीवो) जीव छे एटले जीवनुं लक्षण उपयोग छे, तेथी करीने ज (नाणेणं) विशेष ग्रहण करनार एवा ज्ञाने करीने. (दंसणेणं च) सामान्य ग्रहण करनार एवा दर्शने करीने, (सुहेण य) सुखने अनुभववावडे करीने तथा (दुहेण य) दुःखने अनुभववावडे करीने ते जीव ओळखाय छे. १०.

हवे शिष्योने अत्यंत दृढ संस्कार थवा माटे कहेला लक्षणने फरीथी कहेवा पूर्वक जीवनां बीजां लक्षण कहे छे.—

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । वीरिअं उवओगो अ, एअं जीवस्स लक्खणं ॥ ११ ॥

अर्थ—(नाणं च) ज्ञान, (दंसणं चेव) दर्शन, (चरित्तं च) चारित्र, (तवो) तप, (तहा) तथा (वीरिअं)

धम्मो अहम्मो आगास, कालो पोग्गलजतवो । एस लोगु त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ ७ ॥

अर्थ—(धम्मो) धर्मास्तिकाय, (अहम्मो) अधर्मास्तिकाय, (आगास) आकाशास्तिकाय, (कालो) काळ-समया-
दिक अद्धा, (पोग्गलजतवो) पुद्गलास्तिकाय अने जीवास्तिकाय, आ छ द्रव्य छे तथा (एस) आ छ द्रव्यना स्वरूप-
वाळो ज (लोगु त्ति) आ लोक छे एम (वरदंसिहिं) केवळज्ञानी (जिणेहिं) जिनेश्वरोए (पन्नत्तो) कह्यु छे ७

हवे धर्मादिक द्रव्योने ज भेदथी कहे छे —

धम्मो अहम्मो आगास, दव्व इक्किक्कमाहिअ । अणताणि अ दव्वाणि, कालो पुग्गलजतवो ॥८॥

अर्थ—(धम्मो) धर्मास्तिकाय, (अहम्मो) अधर्मास्तिकाय, अने (आगास) आकाशास्तिकाय (दव्व) ए द्रव्यने
जिनेश्वरोए (इक्किक) एक एक ज (आहिअ) कह्या छे (कालो) काळ, (पुग्गलजतवो) पुद्गळ अने जीवो (दव्वा
णि) ए द्रव्यो (अणताणि अ) अनता कह्या छे तेमां काळने अतीत अने अनागत काळनी अपेक्षाए अनत कह्यो छे ८
(पुद्गळ द्रव्यो ने जीवो तो सर्व काळे अनता छे)

हवे छए द्रव्योना लक्षणो कहे छे —

गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायण सव्वदव्वाण, नह ओगाहलक्खण ॥ ९ ॥

अर्थ—(गइलक्खणो उ धम्मो) गतिरूप लक्षणवाळो धर्मास्तिकाय छे, एक स्थानेथी बीजे स्थाने जवु ते गति कहे-

एअं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य । पज्जवाणं च सव्वेसिं, नाणं नाणीहिं देसिअं ॥ ५ ॥

अर्थ—(एअं) आ (पंचविहं) पांच प्रकारनुं (नाणं) ज्ञान (नाणीहिं) ज्ञानीओए एटले तीर्थंकरोए (सव्वेसिं) सर्व (दव्वाण य) जीवादिक द्रव्योने (गुणाण य) रूपादिक गुणोने, अने तेना (पज्जवाणं च) नवापणुं जूनापणुं विगेरे अनुक्रमे थनारा पर्यायोने (नाणं) जाणनारुं छे एम (देसिअं) कह्युं छे. अहीं केवळज्ञाननी अपेक्षाए सर्व शब्द लख्यो छे. केमके एक केवळज्ञान ज सर्व द्रव्यादिकने जाणे छे, अने ते सिवायनां बीजां ज्ञानो तो नियमित पर्यायोने ज जाणी शके छे. ५.

ज्ञाननो विषय द्रव्यादिक छे एम कह्युं तेथी द्रव्यादिनुं लक्षण कहे छे.—

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिआ गुणा । लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिआ भवे ॥ ६ ॥

अर्थ—(गुणाणं आसओ) रूपादिक गुणोनो जे आश्रय ते (दव्वं) द्रव्य कहेवाय छे, एटले ए द्रव्यनुं लक्षण छे. (एगदव्वस्सिआ) एक द्रव्यने आश्रीने रहेला जे होय ते (गुणा) गुण कहेवाय छे, एटले ते गुणनुं लक्षण छे, (तु) तथा (उभओ अस्सिआ) द्रव्य अने गुण ए बन्नेने आश्रीने जे रहेला (भवे) होय ते (पज्जवाणं) पर्यायोनुं (लक्खणं) लक्षण छे एटले पर्यायो उभयाश्रित छे. ६.

गुणोनो आश्रय ते द्रव्य एम कह्युं, हवे द्रव्यना केटला प्रकार छे ? ते कहे छे.—

कह्यु छे. अहीं चारित्रनी अदर तपनो समावेश थाय छे, तोपण तप ज कर्मक्षयमा उत्तम कारण छे एम जणाववा माटे तपने जूदो कह्यो छे २

आ ज ज्ञानादिकनो अनुवाद करवा पूर्वक तेनु फळ बतावे छे —

नाण च दंसण चेव, चरित्त च तवो तहा । एअ मग्गमणुपत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइ ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाण च) ज्ञान, (दसण चेव) दर्शन, (चरित्त च) चारित्र, (तहा) तथा (तवो) तप, (एअ) आ चार प्रकारना (मग्ग) मार्गने (अणुपत्ता) पामेला (जीवा) जीवो (सोग्गइ) मुक्तिरूपी सद्गतिने (गच्छति) पामे छे ३

ज्ञानादिकने ज अनुक्रमे कहे छे —

तत्थ पचविह नाण, सुअ आभिणिबोहिअ । ओहिणाण च तइअ, मणनाण च केवल ॥ ४ ॥

अर्थ—(तत्थ) तेमा (नाण) ज्ञान (पचविह) पाच प्रकारनु छे ते आ प्रमाणे—(सुअ) श्रुतज्ञान, (आभिणिबोहिअ) आभिनिबोधिक–मतिज्ञान, (ओहिणाण च) तथा अवधिज्ञान (तइअ) ए त्रीजु छे, (मणनाण) मनपर्याय ज्ञान, (च) अने (केवल) केवळज्ञान श्रीनदीसूत्र विगेरेमां मतिज्ञान पहेलु अने पछी श्रुतज्ञान बीजु कह्यु छे, अने अहीं श्रुतज्ञान पहेलु कह्यु, तेनु कारण ए छे जे बाकीना सर्व ज्ञानोना स्वरूपनु ज्ञान प्राये श्रुतथी ज थइ शके छे, तेथी श्रुतज्ञाननु मुख्यपणु बताववा माटे श्रुतज्ञान पहेलु कह्यु छे ४

हवे ते ज्ञाननो विषय कहे छे —

अथ मोक्षमार्गगति नामनुं अठावीशमुं अध्ययन. २८.

प्रथमना अध्ययनमां शठतानो त्याग करी अशठतानो स्वीकार करवानुं कह्युं. हवे शठतारहित पुरुष सुखे करीने मोक्षमार्गने पामी शके छे, तेथी आ मोक्षमार्गगति नामनुं अध्ययन कहेवाय छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

मोक्खमग्गगइं तच्चं, सुणेह जिणभासिअं । चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीसुधर्मास्वामी जंबूस्वामी विगेरे शिष्योने कहे छे के—' हे मुनिओ ! (जिणभासिअं) श्रीजिनेश्वरे कहेली, (चउकारणसंजुत्तं) चार कारणोए सहित, (नाणदंसणलक्खणं) ज्ञान अने दर्शन छे लक्षण जेनुं एवी तथा (तच्चं) सत्य एवी (मोक्खमग्गगइं) मोक्षमार्गनी गतिने (सुणेह) तमे सांभळो. अहीं मोक्ष एटले समग्र कर्मनो क्षय, तेनो मार्ग ज्ञानादिक ते मोक्षमार्ग कहेवाय छे, ते मोक्षमार्गे करीने जे गति ते मोक्षमार्गगति कहेवाय छे. १.

हवे ते मोक्षमार्गनां चार कारणो कहे छे.—

णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । एस मग्गु त्ति पंणत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ २ ॥

अर्थ—(णाणं च) ज्ञान, (दंसणं चेव) दर्शन, (चरित्तं च) चारित्र, (तहा) तथा (तवो) तप, (एस) ए चार (मग्गु त्ति) मार्ग छे एम (वरदंसिहिं) श्रेष्ठ छे दर्शन जेनुं एटले केवळदर्शी एवा (जिणेहिं) तीर्थकरोए (पण्णत्तो)

अहीं कोइ शंका करे के-तेओने प्रेरणा करतां करतां पण पोतानुं आत्मकार्य पण केम साधी न शकाय ? ते उपर कहे छे —

जारिसा मम सीसा उ, तारिसा गलिगद्दहा । गलिगद्दहे चइत्ता णं, दढ पगिण्हई तवं ॥ १६ ॥

अर्थ—(जारिसा) जेवा (मम) मारा (सीसा उ) शिष्यो छे, (तारिसा) तेवा फक्त (गलिगद्दहा) गळीया गधेडा होय तो होय, ते सिवाय बीजो कोइ तेमनी उपमाने पामे तेवो नथी अहीं अत्यंत दुष्टता जणाववा माटे गर्दभ शब्द लख्यो छे ते गधेडा स्वाभाविक रीते अत्यंत प्रेरणा करवाथी ज चाले छे, तेथी तेमनी प्रेरणामां ज समग्र काळ चाल्यो जाय छे, परंतु कांइ आत्मसाधन करवानो समय रहेतो नथी आ रीते विचारीने ते गर्गाचार्य (गलिगद्दहे) गळीया गधेडा जेवा शिष्योनो (चइत्ता णं) त्याग करीने (दढ) दृढ-उग्र एवा (तवं) तपने-विहारने (पगिण्हई) ग्रहण करता हवा १६

ए ज वातने कहे छे —

मिउ मद्दवसपन्ने, गंभीरे सुसमाहिए । विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा त्ति बेमि ॥ १७ ॥

अर्थ—(मिउ) बाह्यवृत्तिथी कोमळ एटले विनयवाळा, (मद्दवसपन्ने) मनवडे पण मार्दवयुक्त, (गंभीरे) गंभीरतावाळा, (सुसमाहिए) सारा समाधिवाळा तथा (सीलभूएण) शीलने-चारित्रने पामेला एवा (अप्पणा) आत्मावडे ओळखाता (महप्पा) ते महात्मा गर्गाचार्य अविनीत शिष्योने तजीने (महिं) पृथ्वीपर (विहरइ) एकला विचरता हवा (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं १७

इति सप्तविंशमध्ययनम् २७

विट्ठि व) राजानी वेठ जेवुं (मन्नंता) मानता सता (मुहे) मुखपर (भिउडिं) भृकुटि (करिंति) करे छे—चडावे छे, अर्थात् इर्ष्याने जणावनारी बीजी पण कुचेष्टाओ करे छे. १३.

वाइआ संगहिआ चेवं, भत्तपाणेण पोसिआ । जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसोदिसं ॥ १४॥

अर्थ—(वाइआ) सूत्र भणाव्या, अर्थ भणाव्या अर्थात् सूत्रार्थ भणावीने पंडित कर्या, तथा (संगहिआ) संग्रह कर्या एटले अमारी निश्रामां राख्या, (चेव) चशब्दथी अमे पोते ज दीक्षित कर्या, तथा (भत्तपाणेण) भातपाणीवडे (पोसिआ) पुष्ट कर्या—पोष्या, तो पण ते कुशिष्यो (जायपक्खा) उत्पन्न थइ छे—आवी छे पांख जेने एवा (हंसा जहा) हंसोनी जेम (दिसोद्दिसं) सर्व दिशामां (पक्कमंति) फरे छे—पोतानी इच्छा प्रमाणे विहार करे छे. प्रथम एक एक शिष्यनी वात कहेता हता, अने अहीं बहुवचन लख्युं छे, ते आवा कुशिष्यो घणा होय छे एवुं जणाववा माटे छे. १४.

आ रीते कुशिष्यनुं स्वरूप विचार्युं. हवे तेमनाथी ज असमाधिने तथा खेदने पाम्या सता ते गर्ग आचार्ये शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

अह सारही विचिंतेइ, खलुंकेहिं समागओ । किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीअइ ॥ १५॥

अर्थ—(अह) हवे (खलुंकेहिं) गळीया वृषभनी जेवा कुशिष्योथी (समागओ) संयुक्त एवा (सारही) धर्मयानना सारथि गर्गाचार्य (विचिंतेइ) विचार करे छे के—(मज्झ) मारे (दुट्ठसीसेहिं) आवा दुष्ट शिष्योए करीने (किं) शुं फळ छे ? उलटो (मे) मारो (अप्पा) आत्मा (अवसीअइ) सीदाय छे. आ कुशिष्योने प्रेरणा करवामां व्यग्र रहेवाथी मारा आत्मकार्यनी हानि थाय छे, माटे तेमनो त्याग करी मारे उद्यत विहारे विचरवुं सारुं छे. १५.

न सा मम विआणाइ, न वि सा मज्झ दाहिइ । निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥१२॥

अर्थ—" अमुक श्राविकाने घेर जइ त्यांथी ग्लानादिकने माटे पथ्यादिक लइ आव " ए प्रमाणे कदाच ते कुशिष्यने अमे कह्यु होय, त्यारे ते एवो उत्तर आपे छे के—(सा) ते श्राविका (मम) मने (न विआणाइ) ओळखती नथी (सा) ते श्राविका (मज्झ) मने (न वि दाहिइ) पथ्यादिक आपशे पण नहीं (निग्गया) ते श्राविका तेने घेरथी क्यांइ बीजे स्थाने गयेली (होहिई) हशे एम (मन्ने) हु मानु छु (अत्थ) आ कार्यमां (अन्नो साहू) बीजो साधु (वच्चउ) जाओ– बीजाने मोकलो शु हु एक ज साधु छु के जेथी मने ज काम बतावो छो ? बीजा घणा छे, तेने मोकलो इत्यादि ते कुशिष्य बोले छे १२

पेसिआ पलिउचंति, ते परियंति समतओ । रायविट्ठिं व मन्नता, करिंति भिउडिं मुहे ॥१३॥

अर्थ—(पेसिआ) कोइ कार्यने माटे मोकल्या एवा (ते) ते कुशिष्यो (पलिउचंति) अपलाप करे छे एटले " ते कार्य केम न कर्यु ? " एम अमे तेने पूछीए त्यारे ते खोटा जवाब आपे छे के–" तमे ते काम मने क्यारे बताव्यु हतु ? " अथवा " अमे तो त्या गया हता, पण ते श्राविकाने अमे तो जोइ नहीं " इत्यादि तथा ते कुशिष्यो (समतओ) चोतरफ– सर्व दिशाओमां (परियंति) भम्या करे छे, परतु अमारी पासे उभा पण रहेता नथी " आनी पासे रहेवाथी वळी आनु कांइक काम करवु पडशे " एम धारीने छेटा छेटा फरे छे. तथा कदाचित् कांइक कार्य करवा प्रवर्ताव्या होय तो (राय

तपस्या करवामां प्रवर्तते नथी. (एगे) कोइ शिष्य (सायागारविए) सात गौरववाळो छे एटले सुखशीळीयो छे तेथी ते अप्रतिबद्ध विहारादिकमां प्रवर्ततो नथी. (एगे) कोइ शिष्य (सुचिरकोहणे) चिरकाळ सुधी क्रोधयुक्त ज रहे छे तेथी कोइपण कार्यमां प्रवर्ततो नथी. ९.

भिक्खालसीए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्धे । एगं च अणुसासम्मि, हेऊहिं कारणेहि अ ॥१०॥

अर्थ—(एगे) कोइ शिष्य (भिक्खालसीए) भिक्षा लेवा जवामां आळसु छे, तेथी गोचरीए जतो नथी, (एगे) कोइ शिष्य (ओमाणभीरुए) अपमानथी भीरु छे तेथी भिक्षाने माटे भ्रमण करता छतां पण जेवा तेवाने घेर जवा इच्छतो नथी. (थद्धे) कोइ शिष्य स्तब्ध एटले अहंकारी छे तेथी तेने तेना कदाग्रहथी नम्र करी शकातो नथी. (एगं च) अने कोइ शिष्यने (हेऊहिं) हेतुवडे (कारणेहि अ) तथा कारणोवडे (अणुसासम्मि) हुं शीखामण आपुं छुं, तोपण ते समजतो नथी, तेने हवे केवी रीते समजाववो ? १०.

सो वि अंतरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वइ । आयरिआणं तं वयणं, पडिकूलेइ अभिक्खणं ॥ ११ ॥

अर्थ—(सो वि) ते शिक्षा अपातो कुशिष्य पण (अंतरभासिल्लो) वच्चे बोलनारो एटले गुरुना वचनमां वच्चे बोलीने (दोसमेव) गुरुना दोषने ज (पकुव्वइ) करे छे—काढे छे, अने (आयरिआणं) आचार्य एवा अमारा (तं वयणं) ते शिक्षाना वचनने (अभिक्खणं) वारंवार (पडिकूलेइ) प्रतिकूळ आचरण करे छे एटले कुयुक्तिए करीने तेथी विपरीत पणे वर्ते छे. ११.

रीने दमी शकाय एवो कोइ वृषभ (जुग) धुसरीने (भजई) भांगी नांखे छे, (से वि अ) वळी ते पण उद्धत वृषभ (सुस्सुआइत्ता) फुफाडा मारी (उज्जहित्ता) गाडीने तथा स्वामीने उन्मार्गे नांखी (पलायइ) नाशी जाय छे ७

आ प्रमाणे दृष्टांतने विचारी हवे दार्ष्टांतिकने विचारे छे —

खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोइआ धम्मजाणम्मि, भज्जंति धिइदुब्बला ॥८॥

अर्थ—(खलुंका) गळीया वृषभ (जोज्जा) वाहनमां जोडया सता (जारिसा) जेवा प्रकारना होय छे, (दुस्सीसा वि) अविनीत शिष्योपण (तारिसा हु) तेवा ज होय छे केमके (धिइदुब्बला) दुर्बळ धृतिवाळा तेओ (धम्मजाणम्मि) धर्मरूपी यानमां (जोइआ) जोडया सता एटले धर्मानुष्ठानमां स्थिर कर्या सता पण (भज्जंति) संयममार्गथी भ्रष्ट थाय छे अने गुरुने क्लेशकारक थाय छे. ८

धृतिना दुर्बळपणाने ज प्रगट करे छे —

इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥

अर्थ—(अत्थ) आ कुशिष्यना अधिकारमां (एगे) मारो कोइ अविनीत शिष्य (इड्ढीगारविए) ऋद्धिगौरववाळो छे एटले " धनिक श्रावको मारे आधीन छे अने मारा वस्त्र पात्रादिक उपगरणो उत्तम छे " इत्यादिक माननारो छे, तथा (एगे) कोइ शिष्य (रसगारवे) मधुरादिक रसने विषे गौरववाळो छे तेथी ते ग्लानादिकने आहार लावी आपवामां के

अर्थ—(एगं) एक वृषभने पोताना दांतवडे (पुच्छम्मि) पूछडामां (डसइ) करडे छे अने (एगं) एकने (अभिक्खणं) वारंवार (विंधइ) वींधे छे-मारे छे, तेम करवाथी (एगो) एक वृषभ (समिलं) शमिलने-धुसरीनी खीलीने (भंजइ) भांगे छे अने (एगो) एक (उप्पहपट्ठिओ) उन्मार्गे गयेलो थाय छे-उन्मार्गे जाय छे. ४.

एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवेज्जइ । उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ॥ ५ ॥

अर्थ—(एगो) एक गळीयो वृषभ (पासेणं) डावा जमणा पडखे (पडइ) पडे छे-आळोटे छे, (निवेसइ) कोइ बेसी जाय छे, (निवज्जइ) कोइ लांबो थइने सुइ जाय छे, (उक्कुद्दइ) कोइ कूदे छे, (उप्फिडइ) कोइ फाळ मारे छे एटले ठेके छे, (सढे) कोइ शठपणुं-धूर्तपणुं करे छे, (बालगवी वए) कोइ युवान गाय तरफ दोडे छे. ५.

माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिपहं । मयलक्खेण चिट्ठाइ, वेगेण य पहावइ ॥ ६ ॥

अर्थ—(माई) मायावी एवो बीजो वृषभ तो (मुद्धेण) मस्तकवडे (पडइ) पडे छे एटले पोताने अशक्त देखाडतो माथाभर पडे छे, (कुद्धे) कोइ क्रोध पाम्यो सतो (पडिपहं) पाछे मार्गे-पाछे पगले (गच्छइ) जाय छे, (मयलक्खेण) कोइ मरेलानी जेम (चिट्ठाइ) पड्यो रहे छे, (वेगेण य) तथा कोइ वेगथी (पहावइ) दोडे छे. ६.

छिन्नाले छिंदई सेल्लिं, दुद्दंते भंजई जुगं । से वि अ सुस्सुआइत्ता, उज्जहित्ता पलायइ ॥ ७ ॥

अर्थ—(छिन्नाले) दुष्ट जातिनो कोइ वृषभ (सल्लिं) रज्जुने (छिंदई) तोडी नांखे छे, तथा (दुद्दंते) दुःखे क-

वहणे वहमाणस्स, कतार अइवत्तइ । जोए अ वहमाणस्स, ससारे अइवत्तइ ॥ २ ॥

अर्थ—(वहणे) गाडी आदिक वाहनमां (वहमाणस्स) जोडेला विनीत वृषभ अश्वादिकने हांकता एवा पुरुषनु (कतार) अरण्य (अइवत्तइ) सुखेथी पोतानी मेळे ज उल्लघन थाय छे, ते ज रीते (जोए अ) योगने विषे एटले सयमव्यापारने विषे (वहमाणस्स) जोडेला सुशिष्योने प्रवर्तावनार आचार्यादिकनो (ससारे) ससार (अइवत्तइ) पोतानी मेळे ज सुखेथी उल्लघन थाय छे कारण के शिष्योने विनयवाळा जोवाथी पोताने विशेष समाधि थाय छे २.

आ प्रमाणे पोतानी समाधिने माटे विनीत शिष्यनु स्वरूप विचारी हवे अविनीतनु स्वरूप विचारे छे —

खलुके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सइ । असमाहि च वेदेति, तोत्तओ से य भज्जइ ॥ ३ ॥

अर्थ—(उ) तु पुन (जो) जे पुरुष (खलुके) अविनीत एटले गळीया वृषभादिकने (जोएइ) रथमां जोडे छे, ते पुरुष (विहम्माणो) अविनीत वृषभादिकने वींधतो एटले मारतो मारतो (किलिस्सइ) क्लेश पामे छे–थाकी जाय छे, अने तेथी करीनेज (असमाहिं च) असमाधिने (वेदेति) वेदे छे–पामे छे, (य) तथा (से) ते हांकनार पुरुषनो (तोत्तओ) तोत्रक एटले हांकवानो परोणो, चाबक विगेरे (भज्जइ) भागी जाय छे. ३

तेथी अति क्रोध पामीने ते हांकनार पुरुष शु करे छे ? ते कहे छे —

एग डसइ पुच्छम्मि, एग विंधइऽभिक्खण । एगो भजइ समिल, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥

चारीने (चरित्ता) आचरीने-पाळीने (बहू जीवा) घणा जीवो (संसारसागरं तिण्णा) संसाररूपी सागरने तरी गया छे, तरे छे अने तरशे. (ति बेमि) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं, एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ५३.

इति षड्विंशमध्ययनम्. २६.

अथ खलुंकीय नामनुं सत्तावीशमुं अध्ययन. २७.

छव्वीशमा अध्ययनमां सामाचारी कही. ते अशठपणाए करीने ज पाळी शकाय छे, ते अशठता पण तेना विपक्षभूत शठतानो त्याग करवाथी ज प्राप्त थाय छे, तेथी आ अध्ययनमां दृष्टांत द्वारा शठतानुं स्वरूप कहे छे.—

थेरे गणधरे गग्गे, मुणी आसि विसारए । आइण्णे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥

अर्थ—(थेरे)स्थविर एटले अस्थिर जीवोने धर्मने विषे स्थिर करनार, (गणधरे) गच्छने धारण करनार, (विसारए) सर्व शास्त्रमां कुशळ, (आइण्णे) आचार्यना गुणोथी व्याप्त-सहित तथा (गणिभावम्मि) आचार्यपदने विषे रहेला (गग्गे) गर्ग नामना (मुणी) सर्वसावद्य विरतिने अंगीकार करनार मुनि (आसि)हता. ते मुनि (समाहिं)समाधिने (पडिसंधए) सांधनारा हता एटले जो कुशिष्योए पोताना चित्तनी समाधिनो भंग कर्यो होय तो तेने पाछा सांधी लेनारा हता. १.

ते आचार्य समाधिने सांधता सता शुं विचारता हता ? ते कहे छे.—

(विचिंतए) चितववु श्रीमहावीरस्वामी छ मासनो तप करीने पण विचर्या हता, तो शु हु पण तेटलो तप करवा शक्तिमान छु ? तेथी एक दिवस ओछो तप करवा शक्तिमान छु ? ए रीते बे, त्रण विगेरे यावत् २६ दिवस ओछा करी विचारवु, छेवट पांच मास, चार मास विगेरे तप करवानु चितववु, ए रीते उतरता उतरता एक मास, ओगणत्रीश दिवस, अठावीश दिवस, छेवटे एक दिवस, एकाशन, पोरसी अने छेवट नवकारसी सुधी विचारवु जे तप करवो होय ते नकी करवु. (तओ) त्यारपछी (काउस्सग्ग तु) कायोत्सर्गने (पारित्ता) पारीने (गुरु) गुरुने (वदई उ) वांदे ५१.

उपरनी गाथाना उत्तरार्धमां कहेला अर्थनो ज अनुवाद करता सता शेष सामाचारीने कहे छे —

पारिअकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरु । तव संपडिवज्जित्ता, करिज्ज सिद्धाण संथव ॥५२॥

अर्थ—(पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्गने पारीने (तओ) त्यारपछी (गुरु) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (तव) कायोत्सर्गमां चितवेला-निर्णीत करेला तपने (संपडिवज्जित्ता) अगीकार करीने (सिद्धाण) सिद्धोना (संथव) त्रण स्तुतिरूप विशाललोचन सस्तवने (करिज्ज) करे त्यारपछी ज्यां ज्यां शाश्वत अशाश्वत चैत्यो छे तेने वदना करे—सकलतीर्थ कहे ५२

हवे आ अध्ययनने समाप्त करे छे —

एसा सामायारी, समासेण वियाहिआ । ज चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा ससारसागर ति बेमि ॥५३॥

अर्थ—(एसा) आ (सामायारी) सामाचारी (समासेण) सक्षेपे करीने (विहाइआ) कही छे, (ज) जे सामा

अर्थ—त्रीजा काउसग्गमां (नाणम्मि) ज्ञानने विषे, (दंसणम्मि) दर्शनने विषे, (चरित्तम्मि) चारित्रने विषे, (तवम्मि) तपने विषे, (य) चशब्दथी वीर्यने विषे लागेला (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (राइअं च) रात्रि संबंधी (अईआरं) अतिचार (चिंतिज्ज) चिंतववा. बाकीना कायोत्सर्गोमां चतुर्विंशतिस्तवनुं चिंतवन करवानुं छे ए प्रसिद्ध ज छे, तेथी कह्युं नथी. ४८.

पारिअकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं। राइअं तु अईआरं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥४९॥

अर्थ—(पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्गने पारीने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (जहक्कमं) अनुक्रमे (राइअं तु) रात्रि संबंधी (अईआरं) अतिचारने (आलोएज्ज) आलोचे-प्रकाश करे. ४९.

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं। काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ५० ॥

अर्थ—(पडिक्कमित्तु) पडिकमीने—श्रमणसूत्र कहीने एटले अपराधथी पाछा फरीने (निस्सल्लो) शल्य रहित थइने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने एटले वंदन पूर्वक गुरुने अब्भुट्ठिओवडे खमावीने पछी फरीथी वांदीने (तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खणं) सर्व दुःखनो नाश करनार (काउस्सग्गं) कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे. ५०.

कायोत्सर्गमां रहीने शुं करे ? ते कहे छे.—

किं तवं पडिवज्जामि ?, एवं तत्थ विचिंतए। काउस्सग्गं तु पारित्ता, वंदई उ तओ गुरुं ॥ ५१ ॥

अर्थ—आजे हु (किं तवं) कयो तप (पडिवज्जामि) अंगीकार करुं ? (एवं) ए प्रमाणे (तत्थ) ते कायोत्सर्गने विषे

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (पोरिसीए) चोथी पोरसीनो (चउब्भाए) चोथो भाग पाकी रहे त्यारे (गुरु) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (कालस्स) वैरात्रिक काळने (पडिक्कमित्ता) पडिकमीने (काल तु) प्राभातिक काळने (पडिलेहए) पडिलेहे तथा काळ ग्रहण करे अहीं मध्यम क्रमनी अपेक्षाए त्रण काळ ग्रहण कह्यां छे, अन्यथा उत्सर्ग मार्गे उत्कृष्टथी चार अने जघन्यथी त्रण काळ ग्रहण छे, अने अपवाद मार्गे उत्कृष्टथी बे अने जघन्यथी एक पण काळ ग्रहण कह्यु छे आ काळग्रहणनो विधि आवश्यकनी वृत्ति थकी जाणवो. ४६.

आगए कायवुस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे । काउस्सग्ग तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खण ॥४७॥

अर्थ—(सव्वदुक्खविमोक्खणे) सर्व दुःखनो नाश करनार (कायवुस्सग्गे) कायोत्सर्गनो काळ (आगए) प्राप्त थये सते (तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खण) सर्व दुःखनो नाश करनार (काउस्सग्ग) कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे अहीं ' सर्व दुःखनो नाश करनार ' ए कायोत्सर्गनु विशेषण वारवार आप्यु छे तेनो हेतु कायोत्सर्ग मोटी निर्जरानु कारण छे एम जणाववानो छे वळी अहीं कायोत्सर्ग शब्दे करीने ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी शुद्धि माटे पण त्रण कायोत्सर्ग करवाना छे, तेमां त्रीजा कायोत्सर्गमां रात्रि सबधी अतिचारनु चिंतवन करवानु छे ४७

ते विषे ज कहे छे —

राइअ च अईआर, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो । नाणम्मि दंसणम्मि, चरित्तम्मि तवम्मि य ॥ ४८ ॥

सिद्धस्तवरूप तथा त्रण स्तुतिरूप स्तुतिमंगळ (काउं) करीने एटले नमोस्तु वर्द्धमानाय कहीने (कालं) प्रादोषिक काळने (सपडिलेहए) पडिलेहे तथा उपलक्षणथी ग्रहण करे. ४३.

पढमं पोरिसि सज्झायं बिईअं झाणं झिआयइ । तईआए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थीए ॥४४॥

अर्थ—(पढमं) पहेली (पोरिसि) पोरसीए (सज्झायं) स्वाध्याय करे, (बिइअं) बीजी पोरसीए (झाणं) धर्मध्यान (झिआयइ) ध्यावे, (तइआए) त्रीजी पोरसीए (निद्दमोक्खं तु) निद्राने छूटी मूके–निद्रा ले, (तु) तथा (चउत्थीए) चोथी पोरसीए (सज्झायं) फरीथी स्वाध्याय करे. आ गाथा प्रथम कही गया छे, छतां अहीं फरीथी लखी छे. ते वारंवार उपदेश आपवामां गुरुए प्रयास गणवो नहीं, एम जणाववा माटे लखी छे. ४४.

शी रीते चोथी पोरसीए स्वाध्याय करवो ? ते कहे छे.—

पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिआ । सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहिंतो असंजए ॥ ४५ ॥

अर्थ—(चउत्थीए) चोथी (पोरिसीए) पोरसीए (कालं तु) वैरात्रिक काळने (पडिलेहिआ) पडिलेहीने तथा ग्रहण करीने (तओ) त्यारपछी (असंजए) असंयतिओने (अबोहिंतो) नहीं जगाडतो—मौनपणे (सज्झायं तु) स्वाध्यायने (कुज्जा) करे. ४५.

पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं । पडिक्कमित्ता कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥

पडिलेहण करी त्यारथी आरभीने आ कायोत्सर्ग सुधी अनुक्रमे (देसिअ च) दिवस सबधी (अईआर) अतिचारने (चिंतिज्ज) चिंतवे ४०

पारिअकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरु । देसिअं तु अईआरं, आलोइज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥

अर्थ—(तओ) अतिचार चिंतव्या पछी (पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्गने पारी (गुरु) गुरुने (वंदित्ताण) द्वादशावर्त वदन करीने (देसिअ तु) दिवस सबधी (अईआर) चिंतवेला अतिचारने (जहक्कम) अनुक्रमे (आलोइज्ज) आलोचे—गुरु पासे प्रगट करे ४१. पछी

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरु । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४२ ॥

अर्थ—(पडिक्कमित्तु) प्रतिक्रमण करीने एटले श्रमणसूत्रने कहीने अपराधना स्थानोथी पाछा फरीने (निस्सल्लो) माया शल्यादिक शल्य रहित थइने (तओ) त्यारपछी (गुरु) गुरुने (वंदित्ताण) वदन पूर्वक अब्भुट्ठिओ खमावीने तथा वादीने (तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खण) सर्व दु खनो नाश करनार (काउस्सग्ग) कायोत्सर्गने एटले ज्ञान, दर्शन चारित्रनी शुद्धिने माटे त्रण कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे ४२

पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरु । थुइमंगलं च काउं, कालं संपडिलेहए ॥४३॥

अर्थ—(पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्ग पारीने (तओ) पछी (गुरु) गुरुने (वंदित्ताण) वादीने (थुइमगल च)

वर्णं) जीवादिक सर्व पदार्थोने प्रकाश करनार (सज्झायं च) स्वाध्यायने (कुज्जा) करे. ३७.

पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं । पडिक्कमित्ता कालस्स, सिज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी मुनि (पोरिसीए) चोथी पोरसीनो (चउब्भाए) चोथो भाग बाकी रहे त्यारे (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (कालस्स) काळनुं (पडिक्कमित्ता) प्रतिक्रमण करीने पछी (सिज्ज तु) शय्याने एटले वसतिने (पडिलेहए) पडिलेहे–पडिलेहण करे. ३८.

पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(जई) साधु (जयं) सर्व आरंभ रहित थइने (पासवणुच्चारभूमिं) प्रस्रवणभूमिने अने उच्चारभूमिने अर्थात् ते बन्नेना बार बार स्थंडिलोने (च) चशब्दथी काळभूमिना त्रण स्थंडिलने (पडिलेहिज्ज) पडिलेहे. आ प्रमाणे दिन-कृत्य कह्युं. हवे रात्रिनुं कृत्य कहे छे.—(तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खणं) सर्व दुःखने–पापने नाश करनार (काउस्सग्गं) कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे. ३९.

देसिअं च अईआरं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो । नाणे अ दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥ ४० ॥

अर्थ—ते कायोत्सर्गमां रह्यो थको साधु (नाणे अ) ज्ञानने विषे, तथा (दंसणे चेव) दर्शनने विषे, (तहेव य) तेम ज वळी (चरित्तम्मि) चारित्रने विषे (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे एटले प्रातःकाळना प्रतिक्रमणमां प्रथम मुखवस्त्रिकानी

विना ब्रह्मचर्य पळी शके नहीं ३, (पाणिदयातवहेउ) प्राणीनी दयाने कारणे एटले वर्षादिक ऋतुमां अप्कायादिक जीवोनी रचाने माटे ४, तथा उपवासादिक तपने माटे ५, तथा (सरीरवोच्छेअणट्ठाए) आयुष्यनी समाप्तिमा शरीरनो त्याग करवा माटे उचित काळे अनशन करती वखते ६, आ छ कारणे भात पाणीना गवेषणा करवी नहीं-तेनो त्याग करवो ३५

भात पाणीनी गवेषणा करतां कया विधिवडे केटला चेत्र सुधी अटन करवु ? ते कहे छे.—

अवसेस भडग गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए। परमद्धजोअणाओ, विहार विहरए मुणी ॥ ३६॥

अर्थ—(अवसेस) समग्र (भडग) उपकरण (गिज्झा) ग्रहण करीने तेने (चक्खुसा) चक्षुवडे जोइने पछी (पडिलेहए) तेनी पडिलेहण करे पछी ते सर्व उपधि लइने (पर) उत्कृष्टथी (अद्धजोअणाओ) अर्ध योजन एटले बे क्रोश प्रमाण (विहार) चेत्र सुधी (मुणी) मुनि (विहरए) विचरे एटले भातपाणीनी गवेषणा माटे पर्यटन करे ३६

आ प्रमाणे विचरी, उपाश्रयमां आवी, गुरु पासे आलोचनादिक पूर्वक भोजनादिक करी पछी शु करवु ? ते कहे छे—

चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायण। सज्झाय च तओ कुज्जा, सव्वभावविभावण ॥ ३७॥

अर्थ—(चउत्थीए) चोथी (पोरिसीए) पोरसीए (भायण) भाजन एटले पात्रांने प्रत्युपेक्षणा पूर्वक तथा उपलक्षणथी उपधिने पण प्रतिलेखना करवा पूर्वक (निक्खिवित्ताण) स्थानके मूकीने (तओ) त्यारपछी (सव्वभावविभा

माटे–धर्मध्यानने निमित्ते एटले क्षुधादिकथी दुर्बळ थयेलाने दुर्ध्याननो संभव छे तेथी धर्मध्यान थइ शकतुं नथी. ६. आ छ कारणे भातपाणीनी गवेषणा करवी. ३३.

जे कारणोए भातपाणीनी गवेषणा न करवी, ते कारणो कहे छे.—

निग्गंथो धिइमंतो, निग्गंथी वि न करिज्ज छहिं चेव। ठाणेहिं तु इमेहिं, अणतिक्कमणा य से होई ॥३४॥

अर्थ—(धिइमंतो) धृतिमान एटले धर्मना आचरण प्रत्ये स्थिरतावाळा (निग्गंथो) साधुए तथा (निग्गंथी वि) साध्वीए पण (छहिं चेव) छ कारणे (न करिज्ज) भातपाणीनी गवेषणा करवी नहीं. (य) कारण के (इमेहिं) आ (ठाणेहिं तु) स्थानोए करीने (से) ते साधु तथा साध्वीने (अणतिक्कमणा) संयमयोगनो अनतिक्रम (होई) थाय छे–संयमयोगनुं उल्लंघन थतुं नथी अर्थात् संयमयोग बराबर पळाय छे, अन्यथा तेनो अतिक्रम संभवे छे. ३४.

ते छ स्थानोने ज कहे छे.—

आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसु। पाणिदयातवहेउं, सरीरवोच्छेअणट्ठाए ॥ ३५ ॥

अर्थ—(आयंके) ज्वरादिक व्याधिने विषे–व्याधि होय त्यारे १, (उवसग्गे) दिव्यादिक उपसर्गने विषे–उपसर्ग थतो होय त्यारे अथवा व्रतभंग करवा माटे स्वजनादिके करेला उपसर्ग वखते २, (बंभचेरगुत्तीसु) ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने (तितिक्खया) सहन करवा माटे, कारण के जो आहार करवाथी मनमां विकार उत्पन्न थाय तो आहारनो त्याग कर्यो

तईआए पोरिसीए, भत्तपाण गवेसए । छण्हमन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥

अर्थ—(तइआए) त्रीजी (पोरिसीए) पोरसीए (छण्ह) छमांथी (अन्नयरागम्मि) कोइ पण एक (कारणम्मि) कारण (समुट्ठिए) प्राप्त थये सते (भत्तपाण) भात पाणीनी-आहारनी (गवेसए) गवेषणा करे-शोध कर अहीं त्रीजी पोरसीए भातपाणीनी गवेषणा कही ते उत्सर्ग मार्ग कही छ, अन्यथा स्थविरकल्पीने योग्य अवसरे ज भातपाणीनी गवेषणा करवानी छे ३२

हवे आहार करवानां छ कारणो बतावे छे —

वेअणवेआवच्चे, इरिअट्ठाए अ सजमट्ठाए । तह पाणवत्तिआए, छट्ठ पुण धम्मचिंताए ॥ ३३ ॥

अर्थ—(वेअण) क्षुधा पिपासादिक वेदनान दूर करवा माटे १, (वेआवच्चे) वैयावच्च करवा माटे, केमके क्षुधादिकथी बाधा पामेलो होय तो वैयावच्च करी शके नहीं माट २, (इरिअट्ठाए अ) ईर्यासमितिने अर्थे, क्षुधादिकथी व्याकुळ थयेलो चक्षुवडे जोइ शकतो नथी तथी तेने ईर्यासमिति साचववी दुष्कर थाय माटे ३, तथा (सजमट्ठाए) सयम पाळवान माटे, आहारादिक विना कच्छ, महाकच्छादिकनी जेम सयम पाळवु दुष्कर थाय माटे ४, (तह) तथा (पाणवत्तिआए) प्राणवृत्तिने माटे एटले प्राणना रक्षणने माटे, आयुष्य पूर्ण थये सते ज प्राणनो त्याग करवो युक्त छे, अन्यथा आत्महत्यानो दोष लागे छे, तेथी जीवित राखवा माटे ५, (छट्ठ पुण) तथा छट्ठु कारण (धम्मचिंताए) धर्मना चिंतवन

(देइ) आपे, अथवा (वाएइ) बीजाने वाचना आपे, (वा) अथवा (सयं) पोते (पडिच्छइ) आलावादिकने ग्रहण करे. २९.

पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं। पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥

अर्थ—(पडिलेहणापमत्तो) परस्पर कथादिके करीने पडिलेहणामां प्रमादी थयेलो ते पुरुष (पुढवी) पृथ्वीकाय, (आउक्काए) अप्काय, (तेऊ) तेजस्काय, (वाऊ) वायुकाय, (वणस्सइ) वनस्पतिकाय अने (तसाणं) त्रसकाय (छण्हं पि) ए छए कायनो (विराहओ) विराधक (होइ) थाय छे. प्रमादी साधु कुंभार विगेरेनी शाळामां रह्यो होय तो ते त्यां कदाच जळ भरेलो घडो विगेरे पण ढोळी नांखे, तेना जळवडे माटी, अग्नि, बीज अने कुंथु आदिकना जीवो उपद्रव पामे छे अने ज्यां अग्नि होय त्यां वायु अवश्य होय छे, तेथी छए कायनी विराधना संभवे छे, तेथी करीने पडिलेहणने वखते हिंसानुं कारण होवाथी परस्पर कथादिक करवी नहीं. ३०.

पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं। पडिलेहणा आउत्तो, छण्हं पि आराहओ होइ ॥३१॥

अर्थ—(पडिलेहणा आउत्तो) पडिलेहण करवामां आयुक्त–सावधान एटले प्रमाद रहित एवो साधु (पुढवी) पृथ्वीकाय, (आउकाए) अप्काय, (तेऊ) तेजस्काय, (वाऊ) वायुकाय, (वणस्सइ) वनस्पतिकाय अने (तसाणं) त्रसकाय (छण्हं पि) ए छए कायनो (आराहओ) आराधक (होइ) थाय छे. ३१.

अर्थ—(पडिलेहा) पडिलेहण (अणूणा) ओछी न करवी, तथा (अइरित्ता) अधिक न करवी, (तहेव य) तथा वळी (अविवच्चासा) विपर्यासवाळी एटले विपरीत न करवी अहीं अन्यून, अनतिरिक्त अने अविपर्यास ए त्रण विशेषणना शब्दोवडे आठ भांगा थाय छे, तेमां (पढम) पहेलु (पय) पद-भंगक (पसत्थ) प्रशस्त-शुद्ध छे, अने (ससाणि उ) बाकीना सात भांगा (अप्पसत्थाणि) अप्रशस्त-अशुद्ध छे त्रण विशेषणना आठ भांगा आ प्रमाणे छे-

भंग	अन्यून	अनतिरिक्त	अविपर्यास	भंग	अन्यून	अनतिरिक्त	अविपर्यास
१	१	१	१	५	१	१	०
२	०	१	१	६	०	१	०
३	१	०	१	७	१	०	०
४	०	०	१	८	०	०	०

अहीं १ अंकवाळु खानु विशेषणवाळु अने शून्यवाळु खानु विशेषण रहित जाणवु २८

आ रीते निर्दोष पडिलेहण करनारे बीजु शु तजवानु छे ? ते कहे छे —

पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा। देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥

अर्थ—जे (पडिलेहण) पडिलेहण (कुणतो) करतो सतो (मिहो कह) परस्पर कथाने (जणवयकहं वा) अथवा देशकथाने तथा उपलक्षणथी स्त्री आदिकनी कथाने (कुणइ) करे, (व) अथवा (पच्चक्खाण) बीजाने पच्चक्खाण

३, उभयवेदिका एटले बन्ने ढींचणनी बहार हाथ राखवा ते ४, तथा एकवेदिका एटले एक हाथ ढींचणनी वच्चे राखे अने बीजो हाथ ढीचणनी बहार राखे ते ५. आ छ दोषो वर्जवा योग्य छे. २६.

पसिढिलपलंबलोला, एगामोसा अणेगरूवधुणा। कुणइ पमाणि पमायं, संकिए गणणोवगं कुज्जा ॥२७॥

अर्थ—(पसिढिल) वस्त्रने शिथिलपणे ग्रहण करवुं—पकडवुं ते प्रशिथिल तथा (पलंब) बराबर सरखी रीते ग्रहण नहीं करवाथी पडिलेहण कराता वस्त्रना छेडा लांबा लटकता राखवा ते प्रलंब, तथा (लोला) पडिलेहण कराता वस्त्रने भूमिपर के हाथमां रोळवुं ते लोल, तथा (एगामोसा) एकी वखते वस्त्रना बन्ने बाजुना छेडा खेंचवा ते एकामर्शा, तथा (अणेगरूवधुणा) वस्त्रने त्रणथी वधारे वखत कंपाववुं अथवा एकी साथे अनेक वस्त्रने ग्रहण करी तेने कंपाववा ते अनेकरूप धूनना, तथा (पमाणि) प्रस्फोटनादिकनी संख्याना प्रमाणमां (पमाय) प्रमाद (कुणइ) करवो, तथा (संकिए) संख्याना प्रमाणमां शंका उत्पन्न थवाथी (गणणोवगं) हाथनी आंगळीनी रेखानो स्पर्श विगेरे करी एक, बे, त्रण संख्यारूप गणना करी शकाय तेवी रीते (कुज्जा) करवुं ते, आ सर्व दोषो वर्जवाना छे. आ बे गाथामां कहेला (६–७=१३) दोषोथी जे युक्त ते सदोषा पडिलेहणा छे, अर्थात् ते दोष रहित जे पडिलेहणा करवी ते निर्दोष छे एम सिद्ध थयुं. २७.

हवे ते पडिलेहणाने ज भांगा देखाडवावडे सदोष अने निर्दोष कहे छे—

अणूणाइरित्त पडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य। पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि उ अप्पसत्थाणि ॥ २८ ॥

करवु तेरूप छ पूर्व करवा त्यारपछी (नव खोडा) नव खोडा करवा एटले प्रस्फोटनरूप नव अखोडा करवा (पाणीपाणिविसोहण) ए रीते करवाथी हाथने विषे प्राणीओनु विशोधन थाय छे अहीं एक दृष्टि पडिलेहण, छ उर्ध्व पप्फोडा, नव अखोडा खखेरवारूप अने नव पखोडा पुजवारूप ए सर्व मळीने पचीश पडिलेहण थाय छे २५

पडिलेहणना दोषो समजावीने तेने तजवानु कहे छे.—

आभरडा समद्दा, वज्जेअव्वा य मोसली तइआ। पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइआ छट्ठा ॥२६॥

अर्थ—(आरभडा) विपरीतपणे करवु अथवा शीघ्रपणे अन्य अन्य वस्त्र ग्रहण करवां ते आरभडा नामनो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (समद्दा) वस्त्रना छेडा परस्पर भेळा करवा अथवा उपधिनी उपर बेसवु ए समर्दा नामनो दोष छे, ते (वज्जेअव्वा) वर्जवा योग्य छे, (य) तथा (मोसली) तिरछो, उचे के नीचे संघट्टो करवो ते मोसली नामनो (तइआ) त्रीजो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (पप्फोडणा) धूळथी खरडायेला वस्त्रनी जेम पडिलेहणना वस्त्रने अत्यंत झापटवु ते प्रस्फोटना नामनो (चउत्थी) चोथो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (विक्खित्ता) पडिलेहण कर्या विनाना वस्त्र उपर पडिलेहण करेलु वस्त्र मूकवु ते विक्षिप्ता नामनो पांचमो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (वेइआ) वेदिका नामनो (छट्ठा) छट्ठो दोष वर्जवा योग्य छे, ते वेदिका पांच प्रकारे छे ते आ प्रमाणे—ऊर्ध्ववेदिका एटले बे ढींचण उपर बे हाथ राखवा ते १, अधोवेदिका एटले ढींचणथी घणा नीचे हाथ राखवा ते २, तिर्यग्वेदिका एटले तिरछा हाथ राखीने पडिलेहण करवी ते

पडलाने (पडिलेहे एव) पडिलेहे एटले सवळा अने अवळा करीने मात्र तेने दृष्टिथी जुए, पण प्रस्फोटन एटले पप्फोडा करे नहीं. अहीं पडलानुं प्रकरण छतां सामान्य रीते वस्त्र शब्द लख्यो छे ते वर्षाकल्पादिकनी पडिलेहणाने विषे पण आ ज विधि जाणवो एम जणाववा माटे लख्यो छे. जोती वखते जो तेमां जंतुओने जुए तो तेने यतनापूर्वक अन्य स्थाने मूके. (तो) त्यारपछी (बिइअं) बीजी क्रिया करे, शुं करे ? (पप्फोडे) जे वस्त्र शुद्ध कर्युं तेने प्रस्फोटन करे एटले पप्फोडा करे. (तइयं च पुणो) तथा वळी त्रीजी क्रिया आ प्रमाणे करे—(पमज्जिज्जा) प्रमार्जन करे एटले के पडिलेहीने तथा प्रस्फोटन करीने पछी प्रमार्जन करे. २४.

हवे ते वस्त्रनुं प्रस्फोटन प्रमार्जन शी रीते करवुं ? ते कहे छे.—

अणच्चाविअं अवलिअं, अणाणुबंधिं अमोसलिं चेव। छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ॥२५॥

अर्थ—(अणच्चाविअं) अनर्तित एटले शरीर अथवा वस्त्र नाच करतुं न होय तेवी रीते (अवलिअं) शरीर अथवा वस्त्र वळे नहीं तेम–मरडाय नहीं तेम, (अणाणुबंधिं) अनुबंध रहित एटले आंतरा सहित अर्थात् पूर्वापरना प्रस्फोटननुं ज्ञान थाय तेवी रीते, (अमोसलिं चेव) तथा मोसलि रहित एटले तिरछा भींत विगेरेने, उंचे माळ विगेरेने अने नीचे पृथ्वी विगेरेने स्पर्श न थाय तेम वस्त्रनुं प्रस्फोटन करवुं. शी रीते ? ते कहे छे. (छप्पुरिमा) छ पुरिम–पूर्व करवा एटले आ क्रिया प्रथम करवामां आवे छे तेथी तेनुं नाम पुरिम–पूर्व कहेवाय छे अर्थात् तिरछा करेला वस्त्रने छ वार ऊर्ध्व प्रस्फोटन

भातकाळना प्रतिक्रमण माटे कायोत्सर्ग कर्या विना ज (भायण) पात्रादिक भाजनने (पडिलेहए) पडिलेहे दिवसनी चोथी पोरसीए फरीथी स्वाध्याय करवानो छे, अने काळनु प्रतिक्रमण कर्या पछी स्वाध्याय करवानो निषेध छे, तेथी काळने नहीं पडिकमीने एम कह्यु छे २२.

हवे पडिलेहणनो विधि कहे छे —

मुहपोत्तिअ पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छग । गोच्छगलइअगुलिओ, वत्थाइ पडिलेहए ॥ २३ ॥

अर्थ—प्रथम (मुहपोत्तिअ) मुहपत्तिने (पडिलेहित्ता) पडिलेहीने पछी (गाच्छग) पात्रां उपर राखवाना ऊनना वस्त्ररूप गोच्छकने (पडिलेहिज्ज) पडिलेहे त्यारपछी (गोच्छगलइअगुलिओ) अगुलिमा ग्रहण कर्यो छे गोच्छक जेणे एवो सतो एटले आंगळीओमां गोच्छकने ग्रहण करीने (वत्थाइ) झोळी उपर राखवाना वस्त्र एटले पडलाने (पडिलेहए) पडिलेहे एटले प्रमार्जे २३

आ प्रमाणे ते ज स्थितिवाळा पडलाने गोच्छकवडे प्रमार्जन करी पछी शु करे ? ते कहे छे —

उड्ढ थिरं अतुरिअ, पुव्व ता वत्थमेव पडिलेहे । तो बिइय पप्फोडे, तइअ च पुणो पमज्जिज्जा ॥२४॥

अर्थ—(पुव्व ता) पूर्वं तावत् एटले प्रथम (उड्ढ) ऊर्ध्व एटले उत्कटिक आसने बेसी तथा वस्त्र पण ऊर्ध्व एटले तिरछु राखी (थिर) दृढ रीते वस्त्रने पकडी तथा (अतुरिअ) अत्वरित एटले उतावळ कर्या विना (वत्थ) वस्त्रने एटले

अर्थ—(तम्मेव य) ते ज प्रातःकाळे अस्त थनारुं (नक्खत्ते) नक्षत्र (चउब्भागसावसेसम्मि) चोथो भाग बाकी रहेलो होय एवा (गयण) आकाशने विषे प्राप्त थये सते (वेरत्तिअं) वैरात्रिक नामना (कालं) काळने तथा (पि) अपि शब्द छे तेथी पोतपोताने समये प्रादोषिकादिक एटले प्राभातिक काळने (पडिलेहित्ता) पडिलेहीने (मुणी) मुनि काळग्रहण (कुज्जा) करे. २०.

आ प्रमाणे सामान्य रीते दिवस अने रात्रिनुं कृत्य देखाड्युं, हवे विशेषथी ते ज देखाडता प्रथम साडी सत्तर गाथावडे दिवसनुं कृत्य कहे छे.—

पुव्विल्लम्मि चउब्भागे, पडिलेहित्ताण भंडगं । गुरुं वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥२१॥

अर्थ—(पुव्विल्लम्मि) पहेलाना (चउब्भागे) चोथा भागे एटले दिवसनी पहेली पोरसीए एटले सूर्योदय वखते (भंडगं) वर्षाकल्पादिक उपधिने (पडिलेहित्ताण) पडिलेहीने पछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्तु) वांदीने (दुक्खविमोक्खणं) दुःखने–पापने नाश करनार एवा (सज्झायं) स्वाध्यायने (कुज्जा) करे. २१.

पोरसीए चउब्भागे, वंदित्ताण तओ गुरुं । अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (पोरसीए) पहेली पोरसीनो (चउब्भागे) चोथो भाग बाकी रहे त्यारे एटले पादोन-पोरसी थाय त्यारे (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदिने (कालस्स) काळने (अपडिकमित्ता) नहीं पडिकमीने एटले प्र-

शी रीते उत्तरगुणने करे ? ते कहे छे —

पढम पोरिसि सज्झाय, बिइअ झाण झिआयइ ।
तइआए निद्दमोक्ख तु, चउत्थीए भुज्जो वि सज्झाय ॥ १८ ॥

अर्थ—(पढम) पहेली (पोरिसि) पोरसीमा (सज्झाय) स्वाध्याय करे, (बिइअ) बीजी पोरसीमां (झाण) धर्मध्यान (झिआयइ) ध्यावे—करे, (तइआए) त्रीजी पोरसीमां (निद्दमोक्ख तु) निद्रानो मोक्ष करे एटले निद्राने मोकळी मूके अर्थात् निद्रा ले, तथा (चउत्थीए) चोथी पोरसीमां (भुज्जो वि) फरीथी पण (सज्झाय) स्वाध्याय करे १८

हवे रात्रिना चार भाग जाणवानो उपाय बताववा पूर्वक समग्र साधुनु कर्तव्य कहे छे —

जं नेई जया रत्तिं, नक्खत्त तम्मि नहचउब्भाए । संपत्ते विरमिज्जा, सज्झाय पओसकालम्मि ॥१९॥

अर्थ—(जया) जे काळे (जं) जे (नक्खत्त) नक्षत्र (रत्तिं) रात्रिने (नेइ) समाप्त करे, (तम्मि) ते नक्षत्र (नहचउब्भाए) आकाशना चोथा भागने (संपत्ते) पामे सते (पओसकालम्मि) प्रदोष वखते एटले रात्रिना प्रारंभमां आरभेला (सज्झाय) स्वाध्यायथी (विरमिज्जा) विराम पामे. जे नक्षत्र अस्त पामे त्यारे रात्रि पूर्ण थती होय ते नक्षत्र प्राये सूर्यना नक्षत्रथी चौदमु होय छे, ते नक्षत्र आकाशना चोथा चोथा भागने ओळंगे तेम तेम प्रहरनी गणतरी करवी. १९

तम्मेव य नक्खत्ते, गयण चउब्भागसावसेसम्मि । वेरत्तिअ पि कालं पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥२०॥

अर्थ—(जेट्ठामूले) ज्येष्ठा अने मूळ नत्तत्र जेठ शुदि पूर्णिमाने दिवसे होय छे तेथी जेठ मासमां, (आसाढसावणे) अषाढ मासमां अने श्रावण मासमां (छहिं अंगुलेहिं) छ आंगळवडे एटले पूर्वे कहेली पोरसीना प्रमाणमां छ आंगळ नांखीए त्यारे (पडिलेहा) पात्रनी पडिलेहणनो काळ एटले पादोन पोरसी थाय छे. जेमके अषाढ मासमां बे पगला छाया होय त्यारे पोरसी थाय छे अने बे पगला उपर छ आंगळ वधारीए एटली छाया होय त्यारे पादोन पोरसी थाय छे, ए रीते सर्वत्र जाणवुं. तथा (बीअतिअम्मि) बीजा त्रिकमां एटले भाद्रपद, आश्विन अने कार्तिक मासमां (अट्ठहिं) पोरसीना प्रमाणमां आठ आंगळ नांखवाथी पादोन पोरसी थाय छे, तथा (तइए) त्रीजा त्रिकमां एटले मार्गशीर्ष, पोष अने माघ मासमां (दस) पोरसीना प्रमाणमां दश आंगळ नांखवाथी पादोन पोरसी थाय छे, तथा (चउत्थे) फाल्गुन, चैत्र अने वैशाक मासरूप चोथा त्रिकमां (अट्ठहिं) पोरसीना प्रमाणमां आठ आंगळ नांखवाथी पादोन पोरसी थाय छे. १६.

आ रीते दिवसनुं कृत्य कह्युं, हवे रात्रिनुं कृत्य कहे छे.—

[3]रत्तिं पि [4]चउरो [5]भाए, [2]भिक्खू [6]कुज्जा वियक्खणो । तओ [10]उत्तरगुणे [11]कुज्जा, [8]राईभागेसु चउसु वि ॥१७॥

अर्थ—(विअक्खणो) विचत्तण एटले क्रियामां निपुण एवो (भिक्खू) साधु (रत्तिं पि) रात्रिना पण (चउरो) चार (भाए) भाग (कुज्जा) करे, (तओ) त्यारपछी (चउसु वि) चारे (राईभागेसु) रात्रिना भागने विषे (उत्तर-गुणे) उत्तरगुणने (कुज्जा) करे. १७.

(दुअगुल) बे आगळ तथा (मासेण) एक मासे (चउरगुल) चार आंगळ छाया (वड्ढए) दक्षिणायनमा वधे छे (आनि) अने (हायए) उत्तरायणमा हानि पामे छे. अहीं एक पखवाडीए बे आंगळ कह्या छे तेथी सात दिवसे एक आगळने ठेकाणे साडा सात दिवसे एक आगळ समजवु. वळी कोइ मासमा चौद दिवसनु पण पखवाडीयु होय छे, ते वखते सात दिवसे पण एक आगळनी वृद्धि हानि करवामां दोष नथी. १४

कया कया मासमा चौद दिवसनु पखवाडीयु थाय छे ? ते कहे छे —

आसाढवहुलपक्खे, भद्दवए कत्तिए अ पोसे अ । फग्गुणवइसाहेसु अ, नायव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥

अर्थ—(आसाढवहुलपक्खे) अषाढ मासना कृष्णपक्षमा, (भद्दवए) भाद्रपदना कृष्णपक्षमा, (कत्तिए अ) कार्तिकना कृष्णपक्षमा, तथा (पोसे अ) पोषना कृष्णपक्षमा, तथा (फग्गुणवइसाहेसु अ) फाल्गुनना कृष्णपक्षमा अने वैशाखना कृष्णपक्षमां (ओमरत्ताओ) न्यून रात्रिओ एटले एक एक न्यून तिथि (नायव्वा) जाणवी एटले आटला मासना कृष्णपक्षमा चौद दिवसनु पखवाडीयु होय छे १५

आ प्रमाणे पोरसीना ज्ञाननो उपाय बतावी हवे प्रथम आठमी गाथामा जे पादोन पोरसी कही हती ते जाणवानो उपाय बतावे छे —

जेट्ठामूले आसाढ–सावणे छहि अंगुलेहि पडिलेहा । अट्ठहि बीअतिअम्मि, तइए दस अट्ठहि चउत्थे ॥१६॥

इआए) त्रीजी पोरसीमां (गोअरकालं) गोचरकाळ एटले भिक्षाचर्या अने तेना उपलक्षणथी बहिर्भूमि जवा विगेरेनुं कार्य करवुं, (पुणो) फरीथी (चउत्थीए) चोथी पोरसीमां (सज्झायं) स्वाध्याय करवो. अहीं पण उपलक्षणथी पडिलेहण विगेरे क्रिया जाणी लेवी. १२.

हवे पोरसीनुं प्रमाण बतावे छे.—

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया। चित्तासोएसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥

अर्थ—(आसाढे मासे) आषाढ मासनी पूर्णिमाने दिवसे (दुपया) बे पगले पोरसी थाय छे, (पोसे मासे) पोष मासनी पूर्णिमाने दिवसे (चउप्पया) चार पगले पोरसी थाय छे, (चित्तासोएसु मासेसु) चैत्र अने आश्विन मासनी पूर्णिमाने दिवसे (तिपया) त्रण पगले (पोरसी हवइ) पोरसी थाय छे. पुरुषे पोताना दक्षिण कान सन्मुख सूर्यमंडळ राखी उभा रहेवुं, पछी ढीचण सुधीनी छाया आषाढी पूर्णिमाए ज्यारे बे पगला प्रमाण थाय त्यारे एक प्रहर थाय छे, एम सर्वत्र जाणवुं. १३.

आ प्रमाण आषाढादिक पूर्णिमानुं कह्युं, त्यारपछी आ प्रमाणे वृद्धि अने हानि करवी, ते कहे छे.—

अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं तु दुअंगुलं। वड्ढए हायए वावि, मासेणं चउरंगुलं ॥ १४ ॥

अर्थ—(सत्तरत्तेणं) सात रात्रिए एटले सात रात्रिदिवसे (अंगुलं) एक आंगळ, (पक्खेणं तु) एक पखवाडीए

(निउत्तेण) आज्ञा पामेला साधुए (सव्वदुक्खविमोक्खणे) सर्व दु खना नाशवडे ज एटले ग्लानिपणा रहित ज स्वाध्याय करवो, अथवा जेनाथी सर्व दु खनो नाश थाय छे एवा स्वाध्यायने विषे आज्ञा पामेला साधुए ग्लानिपणा रहित स्वाध्याय करवो १०

आ प्रमाणे पडिलेहण विगेरे ओघ सामाचारीनु मूळ छे तेथी ते काळे तेनु करवापणु बताव्यु तथा ते सर्व गुरुनी आज्ञाथी ज करवानु छे तेथी गुरुनु पराधीनपणु पण बताव्यु, हवे उत्सर्ग मार्गे दिवसनु कृत्य कहे छे —

दिवसस्स चउरो भाए, कुज्जा भिक्खू विअक्खणो। तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥

अर्थ—(विअक्खणो) विचक्षण एटले क्रियाने विषे कुशळ एवा (भिक्खू) साधुए (दिवसस्स) दिवसना (चउरो भाए) चार भाग (कुज्जा) करवा, (तओ) त्यारपछी (चउसु वि) ते चारे (दिणभागेसु) दिवसना भागोमां (उत्तरगुणे) स्वाध्यायादिक उत्तरगुण करवा ११

उत्तरगुणने केवी रीते करवा ? ते कहे छे —

पढम पोरिसि सज्झाय, बिइअ झाण झिआयइ। तइआए गोअरकाल, पुणो चउत्थिए सज्झाय ॥१२॥

अर्थ—(पढम) पहेली (पोरिसि) पोरसीमा (सज्झाय) वाचनादिक स्वाध्याय करवो, (बिइअ) बीजी पोरसीमां (झाण) ध्यान (झिआयइ) ध्यावु एटले करवु, आ अर्थपोरसी होवाथी अर्थना विषयनु ध्यान करवु एम समजवु, (त

आ रीते दश प्रकारनी सामाचारी कही. हवे ओघ सामाचारी कहे छे.—

पुव्विल्लम्मि चउब्भागे, आइच्चम्मि समुट्ठिए । भंडगं पडिलेहित्ता, वंदित्ता य तओ गुरुं ॥ ८ ॥
पुच्छिज्जा पंजलिउडो, किं कायव्वं मए इह। इच्छं निओइउं भंते !, वेआवच्चे व सज्झाए ॥९॥

अर्थ—(पुव्विल्लम्मि) पूर्वदिशाए (चउब्भागे) आकाशना कांइक न्यून एवा चोथा भागे (आइच्चम्मि) सूर्य (समुट्ठिए) चडे सते-प्राप्त थये सते एटले पादोन पोरसी थाय त्यारे (भंडगं) भांडकने एटले पात्रादिक उपकरणने (पडिलेहित्ता) पडिलेहीने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) आचार्यादिक गुरुने (वंदित्ता य) वांदीने (पंजलिउडो) प्रांजलिपुट एटले मस्तकपर बे हाथ जोडीने (पुच्छिज्जा) पूछे के (मए) मारे (इह) अत्यारे (किं कायव्वं) शुं करवुं ? (भंते) हे भगवान ! (वेयावच्चे व) ग्लानादिकनी वैयावच्चने विषे अथवा तो (सज्झाए) वाचनादिक स्वाध्यायने विषे (निओइउं) मारा आत्माने नियोग कराववाने-जोडी देवाने-आज्ञा अपाववाने (इच्छं) हुं इच्छुं छुं. आप मने आज्ञा आपो एम हुं इच्छुं छुं. ८-९.

आ प्रमाणे पूछीने पछी शुं करवुं ? ते कहे छे.—

वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ । सज्झाए वा निउत्तेणं, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥

अर्थ—(वेयावच्चे) ग्लानादिकनी वैयावच्चने विषे (निउत्तेणं) आज्ञा अपायेला साधुए (अगिलायओ) ग्लानिपणा रहित एटले शरीरनो श्रम विचार्या विना ज (कायव्वं) वैयावच्च करवुं, (वा) अथवा (सज्झाए) स्वाध्यायने विषे

करो ' एम कहेवु ते इच्छाकार सामाचारी कहेवाय छे ६ (अ) तथा (निंदाए) पोताना आत्मानी निंदाने विषे (मिच्छाकारो) मिथ्याकार सामाचारी कराय छे एटले पोते काइ अनाचार कर्यो होय-भूल थइ गइ होय तो तेनी निंदा करती वखते ' हा ! मैं आ मिथ्या कर्युं ' ए प्रमाणे कहेवु ते ७ तथा (पडिस्सुए) प्रतिश्रुतने विषे एटले कोइपण कार्यना अगीकारने विषे (तहक्कारो) तथाकार सामाचारी कराय छे, एटले गुरु वाचनादिक देता होय त्यारे ' आप कहो छो ते एम ज छे ' ए रीते अगीकार करवामां तथाकार कराय छे ८ ६

अब्भुट्ठाण गुरुपूआ, अच्छैणे उवसपंया । ऐव दुपचंसजुत्ता, सामाँयारी पवेईआ ॥ ७ ॥

अर्थ—(गुरुपूआ) गुरुपूजाने विषे एटले गौरव करवा लायक आचार्य, ग्लान विगेरेने योग्य आहारादिक लावी आपवाने विषे तथा विनयादिक करवाने विषे (अब्भुट्ठाण) अभ्युत्थान एटले उद्यम करवो ते अभ्युत्थान सामाचारी छे अहीं सामान्य रीते कह्यु छे तो पण अभ्युत्थान एटले निमत्रण जाणवु निर्युक्तिकारे पण अभ्युत्थानने बदले निमत्रण शब्द वापर्यो छे ९ तथा (अच्छणे) अवस्थानने विषे एटले बीजा आचार्यादिकनी पासे रहेवाने विषे (उवसपया) उपसपदा एटले ' हु आपनी पासे अमुक काळ सुधी रहीश ' ए प्रमाणे कही ज्ञानादिक गुण उपार्जन करवा माटे जे रहेवु ते उपसपदा सामाचारी छे १० (एव) आ प्रमाणे (दुपचसजुत्ता) बे पचकवडे युक्त एटले दश सख्यावाळी (सामायारी) सामाचारी (पवेइआ) कही छे ७

अब्भुट्ठाणं नवमं ९, दसमा उवसंपया १० । एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइआ ॥ ४ ॥

अर्थ—(पढमा) पहेली (आवस्सिआ नाम) आवश्यकी नामनी सामाचारी छे, (बिइआ य) अने बीजी (निसीहिआ) नैषेधिकी छे, (आपुच्छणा य) तथा आपृच्छना (तइआ) त्रीजी छे, (चउत्थी) चोथी (पडिपुच्छणा) प्रतिपृच्छना छे, (पंचमी) पांचमी (छंदणा नामं) छंदना नामनी छे, (इच्छाकारो अ) तथा इच्छाकार ए (छट्ठओ) छठ्ठी छे, (सत्तमो) सातमी (मिच्छकारो उ) मिथ्याकार छे, (तहकारो उ) तथाकार ए (अट्ठमो) आठमी छे, (अब्भुट्ठाणं) अभ्युत्थान ए (नवमं) नवमी छे, (दसमा) अने दशमी (उवसंपया) उपसंपदा छे. (एसा) आ (दसंगा) दश भंगवाळी–दश प्रकारनी (साहूणं) साधुओनी (सामायारी) सामाचारी (पवेइआ) कहेली छे.

भावार्थ—श्री जिनेश्वरोए साधुनी दश सामाचारी आ प्रमाणे कही छे.—

चारित्र लीधा पछी कारण विना गुरुना अवग्रहमां आशातनानी शंकाने लीधे रहेवुं नहीं, परंतु तेमना अवग्रहथी बहार रहेवुं–नीकळवुं, अने ते निर्गमन आवश्यकी कर्या विना थइ शकतुं नथी तेथी आवश्यकी ए पहेली सामाचारी छे १, निर्गमन कर्या पछी पोताना स्थानमां रहेवानुं छे माटे गमनादिकना निषेधरूप नैषेधिकी करवी ए बीजी सामाचारी छे २, पोताने स्थाने रहेला साधुने भिक्षाटनादिक कार्यनी प्राप्ति थाय त्यारे गुरुने पूछीने ज प्रवर्तवुं जोइए, तेथी त्रीजी आपृच्छना नामनी सामाचारी छे ३, गुरुए जबानी रजा आप्या छतां चालती वखते फरीथी गुरुने पूछवानुं छे तेथी प्रतिपृच्छना

अथ सामाचारी नामनुं छव्वीशमु अध्ययन २६

पचीशमा अध्ययनमा ब्रह्मचर्यना गुणो कह्या, ते गुणो यतिमां ज होय छे, तेवा यतिए अवश्य सामाचारी पण पाळवी जोइए, तेथी आ अध्ययनमा सामाचारीने ज बतावे छे तेनु पहेलु सूत्र आ प्रमाणे छे —

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणि । जं चरित्ता ण निग्गथा, तिण्णा ससारसागर ॥१॥

अर्थ—(सव्वदुक्खविमोक्खणिं) सर्व दु खोथी मुक्त करनारी एटले सर्व दु खोनो नाश करनारी एवी (सामायारिं) सामाचारीने एटले साधुनी क्रियाने (पवक्खामि) हु कहीश (ज) जे सामाचारीनु (चरित्ता ण) आचरण करीने (निग्गथा) साधुओ (ससारसागर) ससारसागरने (तिण्णा) तरी गया छे, उपलक्षणथी वर्तमानकाळमा तरे छे अने अनागतकाळमा तरशे १ ते सामाचारीने ज कहे छे —

पढमा आवस्सिआ नाम १, बिइआ य निसीहिआ २ ।
आपुच्छणा य तइआ ३, चउत्थी पडिपुच्छणा ४ ॥ २ ॥
पचमी छदणा नाम ५, इच्छाकारो अ छट्ठओ ६ ।
सत्तमो मिच्छकारो उ ७, तहकारो उ अट्ठमो ८ ॥ ३ ॥

एवं सो विजयघोसो, जयघोसस्स अंतिए। अणगारस्स निक्खंतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं॥ ४४॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (सो) ते (विजयघोसो) विजयघोष ब्राह्मणे (जयघोसस्स) जयघोष नामना (अणगारस्स) मुनिनी (अंतिए) समीपे (अणुत्तरं) उत्तम (धम्मं) धर्मने (सोच्चा) सांभळीने (निक्खंतो) ते मुनिनी जपासे दीक्षा ग्रहण करी. ४४.

हवे अध्ययनना अर्थने समाप्त करता सता आ बन्नेनी दीक्षानुं फळ बतावे छे.—

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य। जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं त्ति बेमि॥४५॥

अर्थ—(संजमेण) संयमवडे (तवेण य) तथा तपवडे (पुव्वकम्माइं) पूर्वना कर्मोने (खवित्ता) खपावीने (जयघोसविजयघोसा) जयघोष अने विजयघोष ए बन्ने मुनि (अणुत्तरं) सर्वोत्तम (सिद्धिं) सिद्धिने-मोक्षने (पत्ता) पाम्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ४५.

इति पञ्चविंशमध्ययनम्. २५.

(अभोगी) भोग रहित माणस (विप्पमुचई) कर्मथी मूकाय छे ४१

भोगीने कर्मलेप थाय छे अने अभोगीने लेप थतो नथी, ते उपर दृष्टान्त कहे छे —

उल्लो सुक्को अ दो छूढा, गोलया मट्टिआमया। दो वि आवडिआ कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ ४२

अर्थ—(उल्लो) आर्द्र–लीलो (सुक्को अ) अने सुको (दो) बे (मट्टिआमया) माटीना (गोलया) गोळा कोइ भींतपर (छूढा)–फेक्या, ते (दो वि) बन्ने गोळा (कुड्डे) भींत उपर (आवडिआ) पड्या, (अत्थ) तेमा–ते बन्नमा (जो उल्लो) जे आर्द्र गोळो होय (सो) ते भींत साथे (लग्गइ) लागे छे–चोंटी जाय छे ४२

हवे दार्ष्टांतिक कहे छे —

एवं लग्गति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा। विरत्ता उ न लग्गति, जहा सुक्के उ गोलए ॥४३॥

अर्थ—(एव) ए ज प्रमाणे एटले आर्द्र गोळानी जेम (दुम्मेहा) दुर्बुद्धिवाळा (जे नरा) जे मनुष्यो (कामलालसा) कामने विषे लालसावाळा थाय छे तेओ (लग्गति) ससारमा आसक्त थाय छे, चोंटी जाय छे (उ) परतु (जहा) जेम (सुक्के उ) सुका (गोलए) गोळो भींत साथे लागतो नथी–चोंटी जतो नथी तेम (विरत्ता) कामभोगथी विरक्त थयेला पुरुषो (न लग्गति) ससारने विषे आसक्त थता नथी ४३

आ प्रमाणे जयघोष मुनिए कह्यु त्यारे विजयघोष ब्राह्मणे शु कर्यु ? ते कहे छे.—

जाणनारा छो, तथा (तुब्भे) तमे ज (धम्माण) धर्मशास्त्रना (पारगा) पारगामी–पारने पामेला छो. ३८.

तुब्भे समत्था उद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य । तमणुग्गहं करेह म्हं, भिक्खेणं भिक्खउत्तमा ! ॥३९॥

अर्थ—(तुब्भे) तमे ज (परं) परने (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्माने पण (उद्धत्तुं) उद्धार करवाने (समत्था) समर्थ छो (तं) ते कारण माटे (भिक्खउत्तमा) हे उत्तम भिक्षु ! तमे (भिक्खेणं) भिक्षा ग्रहण करवावडे (म्हं) अमारा उपर (अणुग्गहं) अनुग्रह–कृपा (करेह) करो. ३९.

आ प्रमाणे ब्राह्मणे कह्युं, त्यारे मुनि बोल्या.—

न कज्जं मज्ज भिक्खेणं, खिप्पं निक्खमसू दिआ ! । मा भमिहिसि भयावत्ते, घोरे संसारसागरे ।४०।

अर्थ—(मज्ज) मारे (भिक्खेणं) भिक्षावडे (कज्जं न) कांइ पण कार्य नथी. परंतु (दिआ) हे द्विज ! (खिप्पं) शीघ्रपणे (निक्खमसु) तुं प्रव्रज्या ग्रहण कर, अने (भयावत्ते) सप्त भयरूपी आवर्तवाळा तथा (घोरे) भयंकर एवा (संसारसागरे) आ संसाररूपी सागरने विषे (मा भमिहिसि) तुं भ्रमण न कर. ४०.

उवलेओ होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई । भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥ ४१ ॥

अर्थ—(भोगेसु) भोग भोगवते सते (उवलेओ) उपलेप एटले कर्मनो लेप (होइ) थाय छे अने (अभोगी) भोग रहित पुरुष (न उवलिप्पई) कर्मथी लेपातो नथी. (भोगी) भोगी माणस (संसारे) संसारने विषे (भमइ) भमे छे अने

एव तु ससंए छिन्ने, विजयघोसे अ माहणे । समुदाय तओ त तु, जयघोस महामुणि ॥ ३६ ॥

अर्थ—(एव तु) आ प्रमाणे एटले पुर्वे कह्या प्रमाणे मुनिना वचन साभळीने (ससए) सशय (छिन्ने) छेदाये सते (तओ) त्यारपछी (विजयघोसे अ) विजयघोष नामनो (माहणे) ब्राह्मण (त तु) ते (जयघोस) जयघोष नामना (महामुणि) महामुनिने (समुदाय) समादाय–सम्यक् प्रकारे ग्रहण करीने एटले ' आ तो मारा भाइ ज छे ' एम बराबर ओळखीने ३६

शु करतो हवो ? ते कहे छे —

तुट्ठे अ विजयघोसे, इणमुदाहु कयजली । माहणत्त जहाभूअ, सुट्ठु मे उवदसिअ ॥ ३७ ॥

अर्थ—(तुट्ठे अ) प्रसन्न थयो एवो (विजयघोसे) विजयघोष ब्राह्मण (कयजली) हाथ जोडीने (इण) आ प्रमाणे (उदाहु) बोल्यो के—हे मुनि ! (जहाभूअ) यथाभूत एटले जेवु छे तेवु (माहणत्त) ब्राह्मणपणु (मे) मने तमे (सुट्ठु) सारु (उवदसिअ) देखाड्यु, तमे मने ब्राह्मणनु यथार्थ स्वरूप समजाव्यु ते बहु ठीक कर्युं ३७

तुब्भे जइआ जण्णाण, तुब्भे वेअविऊ विऊ । जोइसगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥

अर्थ—(विऊ) हे विद —तत्त्वज्ञानी मुनि ! (तुब्भे) तमे ज (जण्णाण) यज्ञने (जइआ) यष्टार —करनारा छो, (तुब्भे) तमे ज (वेअविऊ) वेदने जाणनारा छो, (तुब्भ) तमे ज (जोइसगविऊ) ज्योतिषशास्त्र अने अगविद्याना

प्रमाणे दरेकना जूदा जूदा कर्म न होय तो तेमनी जूदी जूदी जाति शी रीते कही शकाय ? माटे कर्मने आश्रीने ज जाति होइ शके छे. ३३.

वळी आ हुं मारी बुद्धिथी ज कहेतो नथी. ते उपर कहे छे.

एए पाउकरे वुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ । सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥ ३४ ॥

अर्थ—(एए) आ उपर कहेला अहिंसादिक अर्थोने (बुद्धे) तत्त्वज्ञानी श्रीवर्धमानस्वामीए (पाउकरे) प्रगट कर्या छे, के (जेहिं) जे अहिंसादिके करीने (सिणायओ) स्नातक एटले केवळी (होइ) थाय छे, तेथी करीने (सव्वकम्मविणिम्मुक्कं) जाणे सर्व कर्मथी रहित थया होय तेवा (तं) तेने (वयं) अमे (माहणं) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए. ३४.

एवं गुणसमाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा । ते समत्था उ उद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (गुणसमाउत्ता) अहिंसादिक गुणे करीने युक्त (जे) जे (दिउत्तमा) द्विजोत्तमो—ब्राह्मणो (भवंति) होय छे, (ते) तेओ ज (परं) पर प्राणीने (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्माने (उद्धत्तुं) उद्धार करवाने एटले संसारथकी तारवाने (समत्था उ) समर्थ होय छे. ३५.

आ प्रमाणे कहीने मुनि विराम पाम्या, त्यारे शुं थयुं ? ते कहे छे.—

न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो । न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥

अर्थ—(मुंडिएण) मात्र मुंडनवडे के लोचवडे ज (समणो) साधु (न वि) कहेवाय नहीं, (ओंकारेण) ओंकारादिक गायत्री मंत्रथी ज (बंभणो न) ब्राह्मण कहेवाय नहीं, (रण्णवासेण) अरण्यमां वसवा मात्रथी ज (मुणी न) मुनि कहेवाय नहीं, तथा (कुसचीरेण) दर्भमय वस्त्रवडे ज (तावसो न) तापस कहेवाय नहीं ३१

त्यारे तेओ शी रीत कहेवाय ? ते कहे छे—

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो । नाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥

अर्थ—(समयाए) शत्रु तथा मित्रपर समानपणाए करीने (समणो) श्रमण-साधु (होइ) होय छे—कहेवाय छे, (बंभचेरेण) ब्रह्मचर्यवडे करीने (बंभणो) ब्राह्मण कहेवाय छे, (नाणेण य) तथा ज्ञाने करीने (मुणी होइ) मुनि होय छे, तथा (तवेण) तपवडे करीने (होइ तावसो) तापस होय छे—कहेवाय छे ३२

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ । कम्मुणा वइसो होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३३॥

अर्थ—(कम्मुणा) क्षमा, दान, दम विगेरे कर्मवडे ज (बंभणो) ब्राह्मण (होइ) होय छे, (कम्मुणा) क्षत थकी रक्षण करवारूप कर्मे करीने ज (खत्तिओ) क्षत्रिय (होइ) होय छे, (कम्मुणा) खेती, पशुपाळ विगेरेना कर्मवडे ज (वइसो) वैश्य (होइ) होय छे, तथा (कम्मुणा) चाकरी करवारूप कर्मवडे ज (सुद्दो) शूद्र (हवइ) होय छे आ

एवा गृहस्थोनी साथे (असंसत्तं) संबंध रहित होय, (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २८.

जहित्ता पुव्वसंजोगं, नातिसंगे अ बंधवे । जो न सज्जेइ एएसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २९ ॥

अर्थ—(पुव्वसंजोगं) पूर्वसंयोगने एटले माताविगेरेना संबंधने तथा (नातिसंगे) ज्ञातिना संगने (अ) तथा (बंधवे) बंधुओने (जहित्ता) तजीने (जो) जे पाछळथी (एएसु) ते मातादिकने विषे (न सज्जइ) रागी-प्रीतिवाळो न थाय (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २९.

अहीं ते यज्ञ करनार शंका करे के-वेदनुं अध्ययन अने यज्ञ ज रक्षण करनार छे, तेथी वेदाध्ययन अने यज्ञवडे ज ब्राह्मण कहेवाय छे, पण तमे कह्यो ते ब्राह्मण न कहेवाय. आ शंकानो जवाब आपे छे.—

पसुबंधा सव्ववेआ, जट्ठं च पावकम्मुणा । न तं तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवंतिहं ॥ ३० ॥

अर्थ—(सव्ववेआ) सर्व वेदो (पसुबंधा) पशुओना विनाशने माटे तेना बंधनना हेतुरूप छे, (च) तथा (जट्ठं) यज्ञ पण (पावकम्मुणा) पापना हेतुरूप पशुवधादिक कुकर्मवडे (दुस्सीलं) दुराचारी एवा (तं) ते यज्ञ करनारने (न तायंति) रक्षण करता नथी, कारण के (इह) आ संसारमां (कम्माणि) कर्मो ज (बलवंति) बळवान छे, एटले करेलां दुष्ट कर्मो तेना करनारने बळात्कारे नरकादिकमां लइ जाय छे. कारण के जे वेद अने यज्ञमां पशुवधादिक होवाथी ते दुष्ट कर्म अति बळवान थाय छे, तेथी वेद अने यज्ञना संबंधथी ब्राह्मण थवातुं नथी. माटे अमे जे ब्राह्मणनुं स्वरूप कह्युं ते ज योग्य छे. ३०.

ब्राह्मण कहीए छीए २५

दिव्वमाणुसतेरिच्छ, जो न सेवइ मेहुण । मणसा कायवक्केण, त वय बूम माहण ॥ २६ ॥

अर्थ—(जो) जे (दिव्वमाणुसतेरिच्छ) देव सबधी, मनुष्य सबधी अने तिर्यंच सबधी (मेहुण) मैथुनने (मणसा) मनवडे, (काय) कायावडे, (वक्केण) वचनवडे (न सेवइ) सेवतो न होय (त वय) तने अमे (माहण बूम) ब्राह्मण कहीए छीए २६

जहा पउम जले जाय, नोवलिप्पइ वारिणा । एव अलित्त कामेहि, त वय बूम माहण ॥ २७ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (पउम) पद्म-कमळ (जले) जळने विषे (जाय) उत्पन्न थया छतां पण (वारिणा) जळ वडे (न उवलिप्पइ) लेपातु नथी, (एव) ए ज प्रमाणे जे प्राणी कामथी उत्पन्न थया छतां पण (कामेहिं) ते कामोनडे (अलित्त) लेपातो नथी, (त वय) तेने अमे (माहण बूम) ब्राह्मण कहीए छीए २७

अलोलुअ मुहाजीवी, अणगार अकिंचण । असंसत्त गिहत्थेसु, त वय बूम माहण ॥ २८ ॥

अर्थ—(अलोलुअ) जे आहारादिकमां लोलुपता रहित होय, (मुहाजीवी) मुधाजीवी एटले निर्दोष आहारनी भिक्षा लइने आजीविका करतो होय, पण औषध के मन्त्रादिकथी आजीविका करतो न होय, (अणगार) घर रहित होय, (अकिंचण) द्रव्यथी अने भावथी परिग्रह रहित होय तथा (गिहत्थेसु) पूर्वना परिचित के पाछळना परिचित

(पत्तनिव्वाणं) कपायरूपी अग्निना उपशमथी निर्वाणने-शीतळताने पामेला होय. (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २२.

तसे पाणे विआणित्ता, संगहेण य थावरे । जो न हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं ॥२३॥

अर्थ—(तसे) त्रस तथा (थावरे) स्थावर (पाणे) प्राणीओने (संगहेण) संग्रहवडे एटले संक्षेपवडे (य) च शब्दथी विस्तारवडे (विआणित्ता) जाणीने (जो) जे (तिविहेणं) मन, वचन अने काया ए त्रिविध करीने (न हिंसइ) तेमनी हिंसा न करे (तं) तेने (वयं) अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २३.

कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया । मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥

अर्थ—(कोहा वा) क्रोधथी (जइ वा) अथवा (हासा) हास्यथी, अथवा (लोहा वा) लोभथी (जइ वा) अथवा (भया) भयथी (जो उ) जे (मुसं) मृषावाद (न वयई) न बोले (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २४.

चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं । न गिण्हइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥

अर्थ—(चित्तमतं) द्विपदादि सचित्त (अचित्तं वा) अथवा सुवर्णादिक अचित्त (अप्पं वा) अल्प (जइ वा) अथवा (बहुं) घणी एवी (अदत्तं) अदत्त वस्तुने (जो) जे (न गिण्हइ) ग्रहण न करे (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम)

जो न सज्जइ आगतु, पव्वयंतो न सोअइ । रमए अज्जवयणम्मि, त वयं बूम माहणं ॥ २० ॥

अर्थ—(जो) जे (आगतु) स्वजनादिकना स्थान प्रत्ये आववाने (न सज्जइ) तैयार थाय नहीं. तथा आव्या पछी (पव्वयतो) त्याथी बीजे स्थाने जता (न सोअइ) शोक करे नहीं, तथा जे (अज्जवयणम्मि) आर्यना एटले तीर्थंकरना वचनने विषे (रमए) रमे-आनद पामे, (त) तेने (वय) अमे (माहण) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए २०

जायरूवं जहामट्ठं, निद्धंतमलपावग । रागद्दोसभयातीतं, त वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (आमट्ठ) तेजस्वी करवा माटे मणशीलादिकवडे घसेलु तथा (निद्धतमलपावग) अग्निवडे बाळी नाख्यो छे मेल जेनो एवु (जायरूव) सुवर्ण बाह्य तथा आभ्यतर गुणयुक्त थाय छे, तेम जे बाह्य अने आभ्यतर गुणे करीने युक्त होय, तथा (रागद्दोसभयातीत) जे राग, द्वेष अने भयथी रहित होय (त) तेने (वय) अमे (माहण) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए २१

तवस्सिअं किसं दंतं, अवचियमंससोणिअं । सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, त वयं बूम माहणं* ॥ २२ ॥

अर्थ—(तवस्सिअ) जे तपस्वी होय, तेथी करीने ज (किस) शरीरे कृश-दुर्बळ होय, (दत) इंद्रियोने दमन करनार होय, (अवचयमससोणिअ)जेना मास अने रुधिर सुकाइ गया होय, (सुव्वय) जे सारा व्रतवाळा होय, तथा जे

* आ गाथा तथा तेनी टीका ज्ञानविजयजीनी टीकावाळी छापेल प्रतमा नथी

आरण्यक, ब्रह्मांडपुराण विगेरे विद्यारूपी ब्राह्मणनी संपदाना (अजाणगा) अजाण ज छे. कारणके खरा ब्राह्मणोने तो अकिंचनपणाए करीने एटले परिग्रहरहितपणाए करीने विद्या ज संपत्तिरूप होय छे. तेने जो तेओ जाणता होय तो बृहदारण्यादिकमां कहेला दश प्रकारना धर्मने जाणता छतां केम आवो यज्ञ करे ? तथा (सज्झायतवसा) वेदना अध्ययनरूप स्वाध्याय अने उपवासादिक तपवडे करीने (गूढा) तेओ गूढ छे एटले मात्र बहारथी ज संवरवाळा छे. (इव) जेम (भासछन्ना) भस्मथी ढांकेलो (अग्गिणो) अग्नि बहारथी शीतळ देखाय छे पण अंदर तो उष्ण होय छे, तेम आ ब्राह्मणो पण बहारथी वेदाध्ययन अने उपवासादिकवडे उपशमवाळा देखाय छे, परंतु अंदर तो कषायरूपी अग्निवडे जाज्वल्यमान ज छे. तेथी तमे मानेला ब्राह्मणो स्वपरनो उद्धार करवामां समर्थ शी रीते होइ शके ? न ज होइ शके. १८.

त्यारे पात्ररूप ब्राह्मण कोण कहेवाय ? ते कहे छे.—

जो लोए बंभणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा । सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥१९॥

अर्थ—(जो) जेने कुशळ पुरुषोए (बंभणो) ब्राह्मण (वुत्तो) कह्यो छे, तथा जे (लोए) लोकनेविषे (अग्गी वा जहा) अग्निनी जेम (महिओ) पूज्यो सतो देदीप्यमान थाय छे, (तं) तेने (वयं) अमे (सया) सदा (कुसलसंदिट्ठं) कुशळ पुरुषोए कहेलो एवो (माहणं) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए. १९.

कुशळ पुरुषोए कहेला एवा ब्राह्मणनुं स्वरूप कहे छे.—

आरण्यक नामनो वेदनो ग्रंथ छे, तेमां "सत्य, तप, संतोष, क्षमा, चारित्र, आर्जव, श्रद्धा, धृति, अहिंसा अने संवर" ए दश प्रकारनो ज धर्म कह्यो छे तेने अनुसारे आ उपर कह्युं तेवुं ज अग्निहोत्र होइ शके छे तथा (जण्णट्ठी) यज्ञार्थी-संयमरूप भाव यज्ञनो अर्थी ते (वेआसां मुहं) वेदोनुं-यज्ञोनुं मुख छे, कारणके यज्ञनो अर्थी होय तो ज यज्ञ प्रवर्ते छे तथा (नक्खत्ताण) नक्षत्रोनुं (मुहं) मुख (चंदो) चंद्र छे तथा (धम्माण) धर्मोनुं (मुहं) मुख (कासवो) काश्यपगोत्री श्रीयुगादि देव ज छे केमके तेमणे ज सौथी प्रथम धर्म प्रवर्ताव्यो छे १६

हवे धर्मनुं मुख दृढ करवा माटे युगादिदेवनुं ज माहात्म्य प्रगट करे छे —

जहा चंदं गहाईआ, चिट्ठंति पंजलीउडा । वंदमाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (गहाईआ) ग्रहादिक (चंदं) चंद्रने (पंजलिउडा) हाथ जोडी (वंदमाणा) स्तुति करता, (नमंसंता) नमस्कार करता अने (उत्तमं) अत्यंत (मणहारिणो) विनीतपणाए करीने मनने हरण करता सता (चिट्ठंति) रहे छे, तेम श्रीऋषभस्वामी पासे पण देवेंद्रो विगेरे सर्वे तेवी ज रीते रहे छे १७

आ रीते चार प्रश्नोनो उत्तर कही हवे पांचमा प्रश्ननो उत्तर कहे छे.—

अजाणगा जण्णवाई, विज्जामाहणसंपया । गूढा सज्झायतवसा, भासछन्ना इवऽग्गिणो ॥ १८ ॥

अर्थ—(जण्णवाई) यज्ञवादी एटले यज्ञने कहेनारा जेमने तें पात्रपणे मानेला छे तेओ (विज्जामाहणसंपया)

वेआणं च मुहं बूहि, बूहि जण्णाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण जं मुहं ॥१४॥

अर्थ—हे मुनि ! (वेआणं च) वेदोनुं (मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो, तथा (जण्णाण) यज्ञोनुं (जं मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो, तथा (नक्खत्ताण) नक्षत्रोनुं (मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो, तथा (धम्माण) धर्मशास्त्रोनुं (जं मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो. १४.

जे समत्था समुद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य । एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहसु पुच्छिओ ॥ १५ ॥

अर्थ—(जे) जेओ (परं) बीजा प्राणीओनो (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्मानो (समुद्धत्तुं) उद्धार करवाने (समत्था) समर्थ होय ते पण मने कहो-बतावो. (एयं) आ (मे) मारा (सव्वं) सर्व (संसयं) संशयने-संशयना उत्तरने (साहू) हे साधु! (पुच्छिओ) माराथी पुछाया एवा तमे (कहसु) कहो. १५.

आ प्रमाणे ते विजयघोष ब्राह्मणे पूछ्युं त्यारे ते मुनि बोल्या के—

अग्गिहोत्तमुहा वेआ, जण्णट्ठी वेअसां मुहं । नक्खत्ताण मुहं चंदो, धम्माणं कासवो मुहं ॥ १६ ॥

अर्थ—(अग्गिहोत्तमुहा) अग्निहोत्र छे मुख जेनुं एवा (वेआ) वेदो छे एटले वेदोनुं मुख अग्निहोत्र-अग्निकारिका छे. ते अहीं आ प्रमाणे छे.—" दीक्षा लीधेलाए कर्मरूपी इंधणाने धर्मध्यानरूपी अग्निमां दृढ रीते नांखी सद्भावनारूपी घृतनी आहुति आपीने अग्निकारिका करवी. आवी अग्निकारिका वेदोनुं मुख छे. केमके दहींनुं तत्त्व जेम माखण छे तेम वेदोनुं तत्त्व

(जण्णाण) यज्ञोनु (जं मुहं) जे मुख एटले प्रधान छे तेने (न वि) तु जाणतो नथी, (जं च) तथा जे (नक्खत्ताण) नक्षत्रोनु (मुहं) मुख छे तेने पण तु जाणतो नथी, (जं च) तथा जे (धम्माण वा) धर्मोनु एटले धर्मशास्त्रोनु (मुहं) मुख छे तेने पण तु जाणतो नथी. अर्थात् वेद, यज्ञ, ज्योतिष अने धर्मशास्त्र ए चारेनु वास्तविक ज्ञान तने नथी ११

हवे पात्रनु अजाणपणु कहे छे —

जे समत्था समुद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य । न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥

अर्थ—(जे) जेओ (परं) बीजा प्राणीओनो (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्मानो (समुद्धत्तुं) उद्धार करवामां (समत्था) समर्थ छे, (ते) तेमने (तुमं) तु (न वियाणासि) जाणतो नथी (अह) जो कदाच (जाणासि) जाणतो हो (तो) तो (भण) तु कहे १२

आ प्रमाणे मुनिए कह्यु, त्यारे ते ब्राह्मणे शु कर्युं ? ते कहे छे —

तस्सक्खेवपमुक्खं च, अचयंतो तहिं दिओ । सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणिं ॥ १२ ॥

अर्थ—(तहिं) ते यज्ञपाटकमा (तस्सक्खेवपमुक्खं च) ते मुनिना आक्षेपनो-प्रश्ननो प्रमोक्ष-उत्तर आपवामां (अचयंतो) असमर्थ एवो (दिओ) ते ब्राह्मण (सपरिसो) पर्षदा सहित (पंजली होउं) नम्र थइने-हाथ जोडीने (तं महामुणिं) ते महामुनिने (पुच्छई) पूछतो हवो १३.

सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी । न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तिमट्ठगवेसओ ॥९॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां–यज्ञपाटकमां (एवं) आ प्रमाणे (जायगेण) यज्ञ करनारा विजयघोषे (पडिसिद्धो) निषेध कर्या एवा (सो) ते (महामुणी) जयघोष नामना महामुनि (न वि रुट्ठो) रोषवाळा थया नहीं, तेम ज (न वि तुट्ठो) तुष्टमान पण थया नहीं. कारण के (उत्तिमट्ठगवेसओ) ते मुनि उत्तमार्थ जे मोक्ष तेना ज गवेषक एटले अर्थी हता. ९.

त्यारे ते मुनिए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

नन्नट्ठं पाणहेउं वा, न वि निव्वाहणाय वा । तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमब्बवी ॥ १० ॥

अर्थ—(अन्नट्ठं) अन्नने माटे (वा) के (पाणहेउं) पाणीने माटे (न) नहीं, (वा) अथवा (निव्वाहणाय) वस्त्रादिकवडे पोताना निर्वाहने माटे पण (न वि) नहीं. परंतु (तेसिं) तेमना एटले ते याज्ञिकोना (विमोक्खणट्ठाए) मोक्षने माटे एटले तेमने संसारथी मुक्त करवा माटे (इमं) आ (वयणं) वचनने (अब्बवी) बोल्या. १०.

शुं बोल्या ? ते कहे छे.—

न हि जाणसि वेअमुहं, न वि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥११॥

अर्थ—(वेअमुहं) वेदना मुखने एटले वेदमां जे मुख्य–प्रधान छे तेने (न हि जाणसि) तुं जाणतो नथी, तथा

भिक्षा (न हु दाहामु) नहीं ज आपु तेथी (अन्नओ) बीजे स्थाने जइने (जायाहि) याचना करो ६

कारण के—

जे अ वेअविऊ विप्पा, जण्णट्ठा य जे दिआ । जोइसंगविऊ जे अ, जे अ धम्माण पारगा ॥७॥

अर्थ—(जे अ) जेओ (वेअविऊ) वेदने जाणनारा (विप्पा) ब्राह्मणो छे (य) तथा (जे) जेओ (दिआ) द्विज एटले संस्कारथी बीजी वार जन्मेला अने (जण्णट्ठा) यज्ञना ज प्रयोजनवाळा छे, (जे अ) तथा जेओ (जोइसंगविऊ) ज्योतिष अने शिक्षादिक अंगने जाणनारा छे, अहीं ज्योतिष शास्त्रनो अंगमां ज समावेश थाय छे, छतां ज्योतिषनु प्रधानपणु जणाववा माटे तेने जूदु कह्यु छे (जे अ) तथा जेओ (धम्माण) धर्मशास्त्रना (पारगा) पारगामी छे तथा उपलक्षणथी जेओ सर्व शास्त्रोने जाणनारा छे ७

जे समत्था समुद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य । तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू ! सव्वकामिअं ॥८॥

अर्थ—तथा (जे) जेओ (पर) बीजा जीवोने (अप्पाणमेव य) अने पोताना आत्माने (समुद्धत्तु) संसार सागरथी उद्धार करवाने (समत्था) समर्थ छे, (तेसिं) तेओने (भो भिक्खू) हे भिक्षु ! (सव्वकामिअ) जेमां अभिलाष करवा लायक सर्व वस्तुओ होय छे एटले छए रस सहित एवु (इण) आ (अन्न) अन्न (देय) देवानु छे ८

आवु तेनु वचन सांभळी मुनि केवा थया ? ते कहे छे —

(उज्जाणम्मि) उद्यानने विषे (तत्थ) त्यां (फासुए) प्रासुक-जीवरहित (सिज्जसंथारे) दर्भादिकना रचेला शय्यासंस्तारकने विषे (वासं) निवास करवाने (उवागए) आव्या. ३.

ते वखते ते नगरीमां जे हतुं अने मुनिए जे कर्युं ते कहे छे.—

अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे। नामेण विजयघोसे, जंणणं जयइ वेअवी ॥ ४ ॥

अर्थ—(अह) हवे (तेणेव कालेणं) ते ज काळे (तत्थ पुरीए) ते नगरीमां (वेअवी) वेदने जाणनार (विजयघोसे) विजयघोष (नामेण) नामनो (माहणे) ब्राह्मण (जन्नं) यज्ञने (जयइ) पूजतो हवो-करतो हवो. ४.

अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे। विजयघोसस्स जण्णम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥५॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (तत्थ) त्यां (विजयघोसस्स) विजयघोषना (जण्णम्मि) यज्ञमां (से) ते (अणगारे) जयघोष मुनि (मासक्खमणपारणे) मासखमणने पारणे (भिक्खमट्ठा) भिक्षाने अर्थे (उवट्ठिए) प्राप्त थया. ५.

त्यां तेने विजयघोषे जे कह्युं ते कहे छे.—

समुवट्ठिअं तहिं संतं, जायगो पडिसेहए। न हु दाहामु ते भिक्खं, भिक्खू ! जायाहि अन्नओ ॥६॥

अर्थ—(तहिं) त्यां (समुवट्ठिअं) प्राप्त थयेला (संतं) सता ते मुनिने (जायगो) याजक एटले यज्ञ करनार ते विजयघोष ब्राह्मणे मुनिने नहीं ओळखवाथी (पडिसेहए) निषेध कर्यो के-(भिक्खू) हे भिक्षु ! (ते) तमने हुं (भिक्खं)

आ प्रमाणे मनमा विचार करी ते गगानदीने सामे काठ गयो त्या तेणे उत्तम मुनिओने जोया तेमनी पासे जिनधर्मनी देशना साभळी तेमना कहेवाथी दीक्षा ग्रहण करीने ते जयघोष मुनि पृथ्वीपर विचरवा लाग्या

बाकीनु वृत्तात सूत्रमा ज आवे छे, तेथी ते ज कहे छे —

माहणकुलसभूओ, आसि विप्पो महायसो । जायाई जमजण्णसि, जयघोसे त्ति नामओ ॥ १ ॥

अर्थ—(माहणकुलसभूओ) ब्राह्मणना कुळमा उत्पन्न थयेलो तथा (जमजण्णसि) यम एटले पाच महाव्रतो, ते रूपी यज्ञने विषे (जायाई) वारवार यज्ञ करनार–पाच महाव्रतने पाळनार (जयघोसे त्ति नामओ) जयघोष एवा नामनो (महायसो) महा यशस्वी (विप्पो) ब्राह्मण (आसि) हतो

इदिअग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी । गामाणुगाम रीअंतो, पत्तो वाणारसीं पुरीं ॥२॥

अर्थ—(इदिअग्गामनिग्गाही) इन्द्रियोना समूहनो निग्रह करनार तेथी करीने ज (मग्गगामी) मोक्षमार्गमां गमन करनार एवा ते (महामुणी) महामुनि (गामाणुगाम) एक गामथी बीजे गाम (रीअंतो) विहार करता (वाणारसीं पुरीं) वाराणसी नगरीमां (पत्तो) आव्या २

वाणारसीए बहिआ, उज्जाणम्मि मणोरमे । फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥

अर्थ—(वाणारसीए) वाराणसी नगरीनी (बहिआ) बहार (मणोरमे) मनोहर एवा अथवा मणोरम नामना

અથ યજ્ઞિય નામનું પચીશમું અધ્યયન. ૨૫.

ચોવીશમા અધ્યયનમાં પ્રવચનની આઠ માતાઓ કહી. તે તત્ત્વથી તો બ્રહ્મચર્યના ગુણમાં રહેલાને-બ્રહ્મચર્ય ગુણવાળાને જ હોઇ શકે છે, તેથી જયઘોષ અને વિજયઘોષનું ચરિત્ર કહેવા પૂર્વક બ્રહ્મચર્યના ગુણોને આ અધ્યયનમાં બતાવે છે. તેના પ્રસ્તાવને માટે પ્રથમ જયઘોષની કથા સંક્ષેપથી કહે છે.—

જયઘોષની કથા.

વારાણસી નામની નગરીમાં કાશ્યપ ગોત્રવાળા જયઘોષ અને વિજયઘોષ નામના બે બ્રાહ્મણો સાથે જન્મેલા હતા. એકદા જયઘોષ સ્નાન કરવા માટે ગંગા કિનારે ગયો. ત્યાં એક આરડતા દેડકાને ભક્ષણ કરતો એક સર્પ તેના જોવામાં આવ્યો. તેવામાં એક કુરર પક્ષીએ આવી તે સર્પને ઉછાળી પૃથ્વીપર પછાડી તેને ખાવાનો પ્રારંભ કર્યો. તે કુરર પોતાની ચાંચથી તે સર્પના શરીરને તોડતો હતો, તો પણ તે સર્પ પેલા આરડતા દેડકાને ખાતો જ હતો-છોડતો નહોતો. આ પ્રમાણે પરસ્પરના ગ્રાસને જોઇ જયઘોષે વિચાર્યું કે-" અહો ! આ સંસારની સ્થિતિ કેવી દુઃખદાયક છે ? જે જેનાથી બળવાન હોય છે તે તેને મત્સ્યની જેમ ગળે છે, પણ સમુદ્રની જેમ કોઇ પણ પોતાની શક્તિને ગોપવતો નથી-જીરવી શકતો નથી. વળી યમરાજ તો મહા શક્તિમાન હોવાથી સર્વને ગળી જાય છે, તો આ અસાર સંસારમાં પંડિતો શી રીતે શ્રદ્ધા કરી શકે ? માત્ર એક ધર્મ જ સર્વ ઉપદ્રવોનો નાશ કરનાર છે. માટે કલ્પવૃક્ષની જેમ ઇચ્છિત વસ્તુને આપનારા તે ધર્મનો જ હું આશ્રય કરું."

एआओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे। गुत्ती निअत्तणेऽवुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥

अर्थ—(एआओ) आ उपर कहेली (पच) पांच (समिईओ) समितिओ (चरणस्स) सारी चेष्टारूप चारित्रनी (पवत्तणे य) प्रवृत्तिने विषे ज कहेली छे, अने (गुत्ती) त्रण गुप्तिओ तो (सव्वसो) सर्व एवा (असुभत्थेसु) अशुभ मनोयोगादिकथी (निअत्तणेऽवि) निवर्तनने विषे पण (उत्ता) कही छे अपि शब्द लख्यो छे माटे चारित्रनी प्रवृत्तिने विषे पण कही छे २६.

हवे आ अध्ययन समाप्त करवा पूर्वक तेमना आचरणनु फळ कहे छे —

एआओ पवयणमायाओ, जे सम्म आयरे मुणी। से खिप्प सव्वससारा, विप्पमुच्चइ पडिए त्ति बेमि ॥२७॥

अर्थ—(एआओ) आ (पवयणमायाओ) प्रवचननी माताओने (जे) जे (मुणी) साधु (सम्म) सम्यक् प्रकारे (आयरे) आचरे छे-पाळे छे, (से) ते (पडिए) पडित साधु (खिप्प) शीघ्र (सव्वससारा) समग्र ससारथी (विप्पमुच्चइ) मुक्त थाय छे (त्ति बेमि) एम हु कहु छु ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जबूस्वामीने कह्यु. २७

इति चतुर्विंशमध्ययनम् २४

करवो तेने विषे (पवत्तमाण तु) प्रवर्तता एवा (वयं) वचनने (निअत्तिज्ञ) निवर्तन करे—रोके अने शुभने विषे प्रवर्तावे. २३

हवे त्रीजी कायगुप्तिने कहे छे.

ठांणे निसीअणे चेवँ, तहेव य तुअँट्टणे । उल्लंघण पल्लंघण, इंदिआंणं च जुंजणे ॥ २४ ॥

अर्थ—(ठाणे) उभा रहेवामां, (निसीअणे) बेसवामां, (चेव) तथा (तुअट्टणे) त्वग्वर्तने एटले शयनमां, (तहेव य) तथा वळी (उल्लंघण) खाडो विगेरे ओळंगवामां, (पल्लंघण) सीधुं गमन करवामां, (इंदिआणं च) तथा इंद्रियोना (जुंजणे) व्यापारमां एटले शब्दादिक विषयोना व्यापारमां वर्तता साधु कायगुप्ति करे, ते आ प्रमाणे—२४.

संरंभसमारंभे, आरंभम्मि तहेंव य । कायं पवत्तमाणं तु, निअत्तिज्ज जयं जई ॥ २५ ॥

अर्थ—(जयं) यतनावान (जई) यति (संरंभसमारंभे) संरंभने विषे एटले यष्टि, मुष्टि आदिकथी ताडन करवाने माटे तैयार थवामां तथा समारंभने विषे एटले परिताप करनारा लत्तादिकवडे मारवामां (तहेव य) तथा (आरंभम्मि) आरंभने विषे एटले प्राणीना वधने माटे यष्टि विगेरेनो उपयोग करवामां (पवत्तमाणं तु) प्रवर्तता (कायं) शरीरने (निअत्तिज्ज) निवर्तन करे—अटकावे—रोके. २५.

समिति अने गुप्तिमां शो तफावत छे ? ते कहे छे.—

अर्थ—(जय) यतनावान् (जई) यति (सरभसमारभे) हु तेनु ध्यान करु छु अथवा करीश के जेथी ते मरे के मरशे एवा ध्यानरूप सरभने विषे तथा परनी पीडा करनारु उच्चाटनादिक सबधी ध्यानरूप समारभने विषे (तहेव य) तथा (आरभम्मि) परना प्राणने नाश करी शके तेवा अशुभ परिणामरूप आरभने विषे (पवत्तमाण तु) प्रवर्तता एवा (मण) मनने (निअत्तिज्ज) निवर्तन करे, अने शुभ सकल्पने विषे मनने प्रवर्तावे २१

हवे बीजी वचनगुप्तिने कहे छे —

सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य। चउत्थी असच्चमोसा उ, वयगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥

अर्थ—(सच्चा) सत्या १, (तहेव) तथा (मोसा य) मृषा २, तथा (सच्चामोसा) सत्यामृषा ३, (तहेव य) तथा (चउत्थी) चोथी (असच्चमोसा उ) असत्याऽमृषा ४, ए प्रमाणे (वयगुत्ती) वचनगुप्ति (चउव्विहा) चार प्रकारनी छे तेनो अर्थ मनोगुप्तिनी जेवो जाणवो २२

सरभसमारभे, आरभम्मि तहेव य। वय पवत्तमाण तु, निअत्तिज्ज जय जई ॥ २३ ॥

अर्थ—(जय) यतनावान (जई) यति (सरभसमारभे) सरभने विषे एटले परनो विनाश करवामा समर्थ एवा मत्रादिक गणवाना सकल्पने सूचवनार शब्द बोलवा तेने विषे, तथा समारभने विषे एटले परने पीडा करनार मत्रादिक गणवा तेने विषे (तहेव य) तथा (आरभम्मि) आरभने विषे एटले परनो विनाश करवाना कारणरूप मत्रादिकनो जाप

असंलोक ए बे शब्दो छे, तेना भांगानी रचना प्रथम बतावे छे, पछी तेना उपलक्षणथी दशे विशेषणोना भांगा समजी लेवा.

अणावायमसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए । आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥१६॥

अर्थ—(अणावायं असंलोए) ज्यां स्वपक्ष एटले साधु के परपक्ष एटले गृहस्थीओनी जा—आव थती न होय ते अनापात स्थंडिल कहेवाय छे, तथा ज्यां स्वपक्ष के परपक्ष दूरथी पण जोइ न शके ते असंलोक स्थंडिल कहेवाय छे. ए पहेलो भांगो थयो. १ (चेव) तथा (अणावाए) अनापात अने (संलोए) संलोक (होइ) होय छे एटले ज्यां जाव आव नथी पण संलोक छे ते अनापात संलोक स्थंडित कहेवाय छे, ए बीजो भांगो थयो. २ तथा (आवायं असंलोए) आपात अने असंलोक एटले ज्यां जाव आव होय पण संलोक न होय ते आपात असंलोक स्थंडित कहेवाय छे, ए त्रीजो भांगो. ३. (चेव) तथा (आवाए) आपात अने (संलोए) संलोक एटले ज्यां जा—आव होय अने संलोक पण होय ते आपात संलोक स्थंडिल कहेवाय छे, ए चोथो भांगो थयो. ४. १६.

हवे ते दश विशेषणो जणाववा माटे केवा स्थंडिलमां उच्चारादिक वोसराववुं ? ते कहे छे.—

अणावायमसलोए १, परस्सऽणुवघाइए २। समे ३ अज्झुसिरे ४ आवि, अचिरकालकयम्मि अ ५॥१७॥
विच्छिण्णे ६ दूरमोगाढे ७, नासन्ने ८ बिलवज्जिए ९। तसपाणबीअरहिए १०, उच्चाराईणि वोसिरे ॥१८॥

अर्थ—(परस्स) बीजानो एटले स्वपक्ष के परपक्षनो (अणावायं असंलोए) आपात–जा—आव न होय अने संलोक

ते ज विधिने कहे छे —

चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जिज्ज जयं जई। आइए निक्खिविज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥१४॥

अर्थ—(समिए) समितिवाळा अने (जय) यतनावाळा (जई) मुनिए (दुहओ वि) औधिक अने औपग्रहिक ए बन्ने प्रकारना उपधिने (सया) सदा (चक्खुसा) प्रथम चक्षुवडे (पडिलेहित्ता) पडिलेहण करीने एटले जोइने (पमज्जिज्ज) रजोहरणादिकवडे प्रमार्जन करवी अने पछी (आइए) ते उपधिने ग्रहण करवी (वा) अथवा (निक्खिविज्जा) मूकवी १४.

हवे पाचमी परिष्ठापनासमितिने कहे छे —

उच्चार पासवण, खेल सिंघाण जल्लिअ । आहार उवहि देह, अन्न वावि तहाविह ॥ १५ ॥

अर्थ—(उच्चार) उच्चार-पुरीष, (पासवण) प्रश्रवण-मूत्र, (खेल) मुखनो बळखो, (सिंघाण) नासिकानो श्लेष्म, (जल्लिअ) शरीरनो मळ, (आहार) अन्नादिक आहार, (उवहिं) बन्ने प्रकारनी उपधि, (देह) शरीर, (अन्न वावि) अथवा बीजु छाण विगेरे (तहाविह) तेवा प्रकारनु के जे परिष्ठापना एटले परठववाने लायक होय ते सर्व स्थंडिलमां वोसराववु-तजवु, ए प्रमाणे क्रियापदनो संबंध अढारमी गाथामा आवशे तेनी साथे करवो १५

अहीं जे स्थंडिलमा वोसराववानु कह्यु ते स्थंडिलना दश विशेषणो छे तेमा पहेला विशेषणमां अनापात अने

तादिक दश एषणाना दोषोने (सोहिज्ज) शोधवाना छे, तथा (परिभोगम्मि) परिभोगैषणाने विषे (चउक्कं) संयोजना, प्रमाण, अंगारधूम अने कारण ए चार बाबत (विसोहिज्ज) शोधवानी छे. अहीं अंगार दोष अने धूम दोष बन्ने जूदा लइए तो परिभोगैषणाना पांच दोषो थवाथी कुल सुडतालीश दोषो थाय छे, परंतु अहीं अंगार अने धूम ए बन्ने दोषो मोहनीयकर्ममां अंतर्गत होवाथी बन्ने मळीने एक ज दोष कह्यो छे. १२.

हवे चोथी आदाननिक्षेप समिति कहे छे.—

ओहोवहोवग्गहिअं, भंडगं दुविहं मुणी । गिण्हंतो निक्खिवंतो अ, पउंजिज्ज इमं विहिं ॥ १३ ॥

अर्थ—(ओहोवहोवग्गहिअं) अहीं अनुक्रमे ओघ, उपधि, औपग्रहिक एम त्रण शब्दो रहेला छे, तेमां मध्ये रहेलो उपधि शब्द डमरुकमणिना न्यायवडे बन्ने शब्द साथे जोडाय छे, तेथी रजोहरणादिक ओघोपधि अने दंडादिक औपग्रहिकोपधि एम (दुविहं) बे प्रकारना (भंडगं) भांडक एटले उपकरणने (गिण्हंतो) ग्रहण करता (निक्खिवंतो अ) अने मूकता एवा (मुणी) मुनिए (इमं) आ आगळ कहेवाशे ते (विहिं) विधि (पउंजिज्ज) प्रयुंजवानो छे—करवानो छे. १३.

---

१ लक्ष्मीविजयनी टीकामा ४७ दोषोनी व्याख्या विस्तारथी आपी छे, तेमा परिभोगने विषे पाच दोष न करवाना कहेला छे. एटले १६–१६–१०–५ मळी ४७ थाय छे.

गवेसणाए गहणे अ, परिभोगेसणा यं जा । आहारोवहिसेज्जाए, एए तिण्णि वि सोहए ॥११॥

अर्थ—(गवेसणाए) गायनी जेवी एषणा एटले शुद्ध आहारनु जोवु ते गवेषणा कहेवाय छे, अहीं एषणा शब्द जोडवाथी गवेषणाने विषे जे एषणा ते गवेषणैषणा एटले गायनी जेम विशुद्ध आहार जोवामा एषणा–विचार करवो ते (गहणे अ) तथा ग्रहण एटले विशुद्ध आहारनु ग्रहण, अहीं पण एषणा शब्द जोडवाथी ग्रहणने विषे जे एषणा–विचार ते ग्रहणैषणा कहेवाय छे, (य) तथा (जा) जे (परिभोगेसणा) परिभोग एटले मडळीने विषे भोजननो समय, तेने विषे जे एषणा–विचार ते परिभोगैषणा कहेवाय छे (एए तिण्णि वि) आ त्रण प्रकारनी एषणा (आहारोवहिसेज्जाए) आहार, उपधि–वस्त्र पात्रादिक अने शय्या–उपाश्रय सस्तारकादिक ए त्रणेने विषे (सोहए) शोधवानी छे अर्थात् एकला आहारने विषे ज शोधवानी छे एम नथी ११

ते एषणानी शुद्धि केवी रीते करवी ? ते कहे छे —

उग्गमुप्पायण पढमे, बीए सोहिज्ज एसण ।
परिभोगम्मि चउक्क, विसोहिज्ज जय जई ॥ १२ ॥

अर्थ—(जय) यतना करता (जई) साधुए (पढमे) पहेली गवेषणामां (उग्गमुप्पायण) आधाकर्मादिक सोळ उद्गमना अने धात्री आदि सोळ उत्पादनाना दोषोने शोधवाना छे, तथा (बीए) बीजी ग्रहणैषणामां (एसण) शकि

(तम्मुत्ती) ते ईर्याने विषे ज मूर्ति एटले व्यापार करतुं छे शरीर जेनुं एवो अने (तप्पुरक्कारे) ते ईर्याने ज आगळ करे एटले उपयोगमां मुख्यपणे अंगीकार करे एवो अर्थात् काया अने मननुं तेमां ज एकाग्रपणुं राखतो एवो (संजए) साधु (इरिअं) गतिने (रिए) करे. ८.

हवे बीजी भाषासमिति कहे छे.—

कोहे माणे अ मायाए, लोभे अ उवउत्तया । हासे भयमोहरिए, विकहासु तहेव य ॥ ९ ॥

एआइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए । असावज्जं मिअं काले, भासं भासिज्ज पण्णवं ॥ १० ॥

अर्थ—(कोहे) क्रोधने विषे, (माणे अ) मानने विषे, (मायाए) मायाने विषे, (लोभे अ) लोभने विषे, (हासे) हास्यने विषे, (भयमोहरिए) भयने विषे, मोखर्यने विषे, (तहेव य) तेम ज वळी (विकहासु) विकथाने विषे (उवउत्तया) उपयोग राखवो, (एआइं) ए (अट्ठ ठाणाइं) आठ स्थानकोने (परिवज्जित्तु) सर्वथा वर्जीने (पण्णवं) बुद्धिमान (संजए) साधुए (काले) बोलवाने वखते (असावज्जं) पाप रहित–निर्दोष अने (मिअं) परिमित एटले कार्य जेटली ज (भासं) भाषा (भासिज्ज) बोलवी. जो क्रोधादिकमां उपयोग होय तो प्राये शुभ भाषा बोलाती नथी तेथी बोलती वखते क्रोधादिकनो अवश्य त्याग करवो जोइए. ९–१०.

हवे त्रीजी एषणासमिति कहे छे.—

अर्थ—(दव्वओ) द्रव्यथी (खेत्तओ चेव) क्षेत्रथी तथा (कालओ) काळथी (तहा) तथा (भावओ) भावथी एम (चउव्विहा) चार प्रकारे (जयणा) यतना (वुत्ता) कही छे, (त) ते यतनाने (कित्तयओ) कहेता एवा (मे) मारी पासे (सुण) हे शिष्य ! तु सांभळ ६

दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं तु खेत्तओ । कालओ जाव रीएज्जा, उवउत्ते अ भावओ ॥ ७ ॥

अर्थ—(चक्खुसा) चक्षुवडे (पेहे) जे जीवादिक पदार्थने जोवा-जोइने चालवु ते (दव्वओ) द्रव्यथी यतना कहेवाय छे, (जुगमित्त तु) तथा युगप्रमाण एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्रने जोता चालवु ते (खेत्तओ) क्षेत्रथी यतना कहेवाय छे, तथा (जाव रीएज्जा) ज्यासुधी चाले त्यांसुधीना प्रमाणवाळी एटले तेटला काळना प्रमाणवाळी जे यतना ते (कालओ) काळथी यतना कहेवाय छे, (उवउत्ते अ) तथा उपयुक्त एटले सावधान एवो सतो जे चाले ते (भावओ) भावथी यतना कहेवाय छे. ७

हवे यतनाना चोथा भेद उपयोगने ज स्पष्ट रीते कहे छे —

इंदिअत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, संजए इरिअं रिए ॥८॥

अर्थ—(इंदिअत्थे) इंद्रियोना शब्दादिक विषयोने (चेव) तथा (पंचहा) पांच प्रकारना (सज्झाय) स्वाध्यायने (विवज्जित्ता) वर्जीने कारण के स्वाध्याय पण गमन करती वखते उपयोगनो विनाश करे छे तेथी स्वाध्यायने पण वर्जीने

यतना (चउकारणपरिसुद्धं) ए चार कारणे करीने शुद्ध एवी (इरिअं) इर्या एटले गति (रिए) करवी जोइए. ४.

ते आलंबनादिकनुं ज स्वरूप कहे छे.—

तत्थ आलंबणं नाणं, दंसणं चरणं तहा । काले अ दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥

अर्थ—(तत्थ) तेमां एटले ते आलंबनादिकमां (नाणं) ज्ञान, (दंसणं) दर्शन (तहा) तथा (चरणं) चारित्र, ए त्रण (आलंबण) आलंबन कहेवाय छे. कारण के ए त्रणने आश्रीने ज जिनेश्वरे गमन करवानी आज्ञा आपेली छे. तेमां ज्ञान एटले सूत्र, अर्थ अने सूत्रार्थ वगेरूप आगम, दर्शन एटले सम्यक्त्व अने चरण एटले चारित्र. 'तहा'–तथा शब्द आप्यो छे ते बे संयोगीया अने त्रण आदि संयोगीया भांगाने सूचववा माटे छे. एटले के ज्ञानादिक एक एकने अने बब्बे आदिने आश्रीने पण गमन करवानी अनुज्ञा आपेली छे. (अ) तथा (दिवसे) दिवस ए (काले) काळ(वुत्ते) कह्यो छे एटले साधुने गमन करवानो काळ दिवस कह्यो छे, पण रात्रिए ईर्यानी शुद्धि थइ शके नहीं, तेथी रात्रिनो काळ कह्यो नथी. तथा (मग्गे) मार्ग ते (उप्पहवज्जिए) उन्मार्गने वर्जीने कह्यो छे, उन्मार्गे जवाथी आत्मानी विराधना विगेरे दोषो लागे छे. माटे सारा मार्गे–राजमार्गे चालवुं. ५.

हवे यतनारूप चोथो भेद ने तेना चार प्रकार कहे छे.—

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥

ते आठेनु निगमन करे छे—समाप्ति करे छे

एआओ अट्ठ समिईओ, समासेण विआहिआ। दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥

अर्थ—(एआओ) आ (अट्ठ) आठ (समिईओ) समितिओ (समासेण) संक्षेप करीने (विआहिआ) कही छे, (जत्थ) जेने विषे (जिणक्खाय) जिनेश्वरे कहेलु (दुवालसग) द्वादशांगरूप (पवयण) प्रवचन (माय उ) समायेलुज छे अहीं समिति शब्दनो अर्थ आ प्रमाणे छे—सम्-सम्यक् एटले जिनेश्वरना वचनने अनुसारे इति एटले आत्मानी जे चेष्टा ते समिति आवा शब्दार्थ प्रमाणे गुप्तिओ पण समिति ज कही शकाय छे, तेथी अहीं आठेने समिति कही छे, छतां पांच समिति अने त्रण गुप्ति एम भेदवडे जे कहेवामा आवे छे तेनु कारण ए जे समितिओ प्रवृत्तिरूपे होय छे अने गुप्तिओ प्रवृत्ति अने निवृत्ति बन्नेरूपे होय छे एम जणाववा माटे कथचित् बन्नेनो भेद कहेवामा आवे छे आ आठ समितिओ चारित्ररूप ज छे, अने ज्ञान तथा दर्शन विना चारित्र होइ शकतु नथी, अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र ए त्रण सिवाय बीजो कोइ पण विषय द्वादशांगीमा नथी, तेथी आ आठ समितिने विषे प्रवचन समायेलु ज छे एम कह्यु ते योग्य ज छे ३

हवे प्रथम ईर्यासमितिनु स्वरूप कहे छे —

आलंबणेण कालेण मग्गेण जयणाइ अ। चउकारणपरिसुद्ध, संजए ईरिअं रिए ॥ ४ ॥

अर्थ—(संजए) साधुए (आलंबणेण) आलंबन, (कालेण) काळ, (मग्गेण) मार्ग (अ) अने (जयणाइ)

अथ प्रवचनमातृ नामनुं चोवीशमुं अध्ययन. २४.

त्रेवीशमा अध्ययनमां कह्युं के— बीजाओना मननी शंकाने केशीकुमार अने गौतमस्वामीनी जेम दूर करवी. ते शंकानुं निवारण तो भाषासमितिरूप वाग्योगे करीने थइ शके छे, अने भाषासमिति अष्टप्रवचन मातानी मध्ये आवे छे, तेथी अहीं अष्टप्रवचन मातानुं स्वरूप कहे छे.—

अट्ठपवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य । पंचेव य समीईओ, तओ गुत्तिओ आहिआ ॥ १ ॥

अर्थ—(अट्ठप्पवयणमायाओ) प्रवचननी माताओ आठ छे. (समिई) समिति (तहेव य) तथा (गुत्ती) गुप्ति. तेमां (समीईओ) समितिओ (पंचेव य) पांच ज छे अने (गुत्तिओ) गुप्तिओ (तओ) त्रण (आहिआ) कहेली छे. १.

ते आठेना नाम कहे छे.—

ईरिआ भासेसणादाणे, उच्चारे समिई इअ । मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ति अ अट्ठमा ॥ २ ॥

अर्थ—(ईरिआ) इर्या एटले गमन, (भासा) भाषा, (एसणा) एषणा एटले अन्नादिकनी गवेषणा, (आदाणे) आदान एटले पात्रादिकनुं ग्रहण, तथा (उच्चारे) उच्चारादिकनुं परिष्ठापन (इअ) ए पांच ज (समिई) समिति छे. तथा (मणगुत्ती) मनगुप्ति एटले मननी शुभ कार्यमां प्रवृत्ति अने अशुभ कार्यथी निवृत्ति, (वयगुत्ती) ए ज रीते वचनगुप्ति (अ) तथा (अट्ठमा) आठमी (कायगुत्ति) कायगुप्ति छे. २.

हवे आ अध्ययनने समाप्त करता महापुरुषना सगनु फळ कह छे —

केसिगोअमओ णिच्चं, तम्मि आसि समागमे । सुअसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥

अर्थ—(तम्मि) ते नगरीमा (णिच्च) हमेशा (केसिगोअमओ) केशीकुमार अने गौतमस्वामीनो (समागमे) समागम (आसि) थया कर्या, तेथी (सुअसीलसमुक्करिसो) श्रुत अने शीळनो एटले ज्ञान अने चारित्रनो उत्कर्ष थयो, तथा (महत्थत्थविणिच्छओ) महार्थ एटले मुक्तिना साधनपणाए करीने महा प्रयोजनवाळा ज शिक्षा अने व्रत विगेरे अर्थो तेनो निश्चय पण थयो, अर्थात् शिक्षा, व्रत अने तत्त्वो विगेरे पदार्थोनो निश्चय थयो अहीं केशीकुमार तथा गौतम स्वामीने तो अर्थनो निश्चय हतो ज पण तमना शिष्योने अर्थनिश्चय थयो एम जाणवानु छे ८८.

तोसिआ परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिया । संथुआ ते पसीअंतु, भयवं केसीगोअम त्ति बेमि ॥८९॥

अर्थ—आ रीते (तोसिआ) प्रसन्न थयेली (सव्वा) सर्व (परिसा) पर्षदा (सम्मग्ग) सन्मार्गने एटले मुक्ति मार्गने आराधवा (समुवट्ठिआ) सावधान थइ (ते) ते (भयव) पूज्य अने ज्ञानवत एवा (केसीगोअमा) केशीकुमार अने गौतमस्वामी (संथुआ) पर्षदाए स्तुति कराया सता (पसीअंतु) सत्पुरुषो उपर प्रसन्न थाओ. (त्ति बेमि) एम हु कहु छु ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जम्बूस्वामीने कह्यु ८९

इति त्रयोविंशमध्ययनम् २३

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । नमो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोदधी ! ॥८५॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) बहु सारी छे, (इमो) आ (मे संसओ) मारो संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे. (संसयातीत) हे संशय रहित ! (सव्वसुत्तमहोदधी) हे सर्व श्रुतना मोटा समुद्र ! (ते नमो) तमने नमस्कार छे. ८५.

पछी केशीकुमारे शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

एवं तु संसए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे । अभिवंदित्ता सिरसा, गोअमं तु महायसं ॥ ८६ ॥

अर्थ—(एवं तु) आ अनुक्रमे (संसए) संशय (छिन्ने) छेदाये सते एटले सर्व संशयो छेदाये सते (घोरपरक्कमे) घोर पराक्रमवाळा (केसी) केशीकुमारे (महायसं) महा यशवाळा (गोअमं तु) गौतम गणधरने (सिरसा) मस्तकवडे (अभिवंदित्ता) वंदना करीने. ८६.

पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ । पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥

अर्थ—(भावओ) भावथी (पुरिमस्स) प्रथम जिनेश्वरे मानेला–प्रथम जिनेश्वरे पण प्रवर्तावेला एवा (तत्थ सुहावहे) ते सुखकारक (पच्छिमम्मि मग्गे) छेल्ला तीर्थकरना प्रवर्तावेला मार्गमां–तीर्थमां (पंचमहव्वयधम्मं) पांच महाव्रतरूप धर्मने (पडिवज्जइ) अंगीकार कर्यो. ८७.

ठाणे अ इइ के वुत्ते? केसी गोअममब्बवी । केसीमेव बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ८२ ॥

अर्थ—आमा ते स्थान कयु ? एम प्रश्न कर्यो छे बाकी पूर्ववत् ८२

निव्वाण ति अवाह ति, सिद्धि लोगग्गमेव य । खेम सिवमणावाह, ज चरति महेसिणो ॥ ८३ ॥

अर्थ—(निव्वाण ति) सतापना अभावथी प्राणीओ शीतळ थाय जेने विषे ते निर्वाण ए प्रमाणे कहेवाय छे, (अबाह ति) बाधा नथी जेने विषे ते अबाध एवे नामे कहेवाय छे, (सिद्धि) श्रमण कर्या विना सर्व कार्यो जने विषे सिद्ध थाय ते सिद्धि एवे नामे कहेवाय छे, (लोगग्गमेव य) लोकना अग्रभागने विषे रहेल होनाथी लोकाग्र एम कहेवाय छे, (खेम) शाश्वत सुख करनार होवाथी क्षेम एम कहेवाय छे, (सिव) उपद्रव नहीं होवाथी शिव एवे नामे कहेवाय छे, तथा (अणाबाह) बाधा पीडा रहित होवाथी जे स्थान अनाबाध एवु कहवाय छे, तथा (ज) जे स्थानने विषे (महेसिणो) महर्षिओ (चरति) जाय छे अहीं ज्यां न होय त्या 'इति' शब्दनो अध्याहार राखी अर्थ करवो ८३

त ठाण सासयवास, लोअग्गम्मि दुरारुह । ज सपत्ता न सोअति, भवोहतकरा मुणी ॥ ८४ ॥

अर्थ—(त ठाण) ते स्थान (सासयवास) शाश्वत निवासवाळु तथा (लोअग्गम्मि) लोकना अग्र भागने विषे (दुरारुह) दु ख करीने चडी शकाय तेवु कह्यु छे (भवोहतकरा) भवना समूहनो अत करनारा (मुणी) मुनिओ (ज सपत्ता) जे स्थानने पाम्या सता (न सोअति) शोक करता नथी–कोइ जातनो शोक करवापणु रहेतु ज नथी ८४

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥७९॥

अर्थ—पूर्ववत्. ७९.

सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिणं। खेमं सिवमणाबाहं, ठाणं किं मन्नसी मुणी ! ॥ ८० ॥

अर्थ—(मुणी) हे गौतम मुनीश्वर ! (सारीरमाणसे) शरीर संबंधी अने मनसंबंधी (दुक्खे) दुःखोवडे (बज्झमाणाण) बाधा-पीडा पामता एवा (पाणिणं) प्राणीओने (खेमं) क्षेम-आधि व्याधि रहित, (सिवं) शिव-जरा अने उपद्रव रहित तथा (अणाबाहं) अनाबाध-शत्रु नहीं होवाथी स्वभावे करीने ज पीडा रहित एवुं (ठाणं) स्थान (किं) कयुं (मन्नसी) तमे मानो छो ? ते कहो. ८०.

गौतमस्वामी जवाब आपे छे.—

अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुहं। जत्थ नत्थि जरामच्चू, वाहिणो वेअणा तहा ॥ ८१ ॥

अर्थ—(लोगग्गम्मि) लोकना अग्रभागने विषे (दुरारुहं) दुःखे करीने चडी शकाय एवुं (एगं) एक ज (धुवं) ध्रुव-निश्चळ (ठाणं) स्थान (अत्थि) छे, के (जत्थ) ज्यां (जरामच्चू) जरा, मृत्यु, (वाहिणो) व्याधिओ (तहा) तथा (वेअणा) वेदना एटले शरीर अने मन संबंधी दुःखोनो अनुभव (नत्थि) नथी. जरा अने मृत्यु नहीं होवाथी ते स्थान शिवरूप छे, व्याधि नहीं होवाथी क्षेमरूप छे अने वेदना नहीं होवाथी अनाबाध छे. ८१.

प्राणीओ (चिट्ठति) रहेला छे तो (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकने विषे (पाणिण) प्राणीओने (को) कोण-कयो पदार्थ (उज्जोअ) उद्योतने-प्रकाशने (करिस्सति) करशे ? ७५

श्री गौतमस्वामी जवाब आपे छे —

उग्गओ निम्मलो भाणू, सव्वलोअप्पहकरो । सो करिस्सति उज्जोअ, सव्वलोअम्मि पाणिण ॥७६॥

अर्थ—(सव्वलोअप्पहकरो) सर्व लोकमां प्रकाश करनार (विमलो) निर्मळ (भाणू) सूर्य (उग्गओ) उदय पाम्यो छे, (सो) ते सूर्य (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकमां (पाणिण) प्राणीओने (उज्जोअ) उद्योत-प्रकाश (करिस्सति) करशे. ७६

भाणू अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेव बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥

अर्थ—अहीं सूर्य कोने कहो छो ? एम प्रश्न कर्यो छे. बाकी पूर्ववत् ७७

उग्गओ खीणससारो, सव्वण्णू जिणभक्खरो । सो करिस्सइ उज्जोअ, सव्वलोअम्मि पाणिण ॥ ७८ ॥

अर्थ—(खीणससारो) क्षीण थयो छे ससार जेनो तथा (सव्वण्णू) सर्व पदार्थने जाणनार एवो (जिणभक्खरो) जिनेश्वररूपी भास्कर-सूर्य (उग्गओ) उदय पाम्यो छे, (सो) ते सूर्य (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकने विषे (पाणिण) प्राणीओने (उज्जोअ) उद्योत-मोहरूपी अधकारनो नाश करी सर्व वस्तुनो प्रकाश (करिस्सइ) करशे. ७८.

नावा अ इति का वुत्ता ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ७२॥

अर्थ—पूर्ववत् जाणवो. अहीं केवी नावा ? एवो प्रश्न कर्यो छे तेथी ते साथे तरनारनो अने तरवा लायक समुद्रनो पण प्रश्न कर्यो ज छे एम जाणवुं. ७२.

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ । संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥ ७३ ॥

अर्थ—(सरीरं) शरीर रूप (नाव त्ति) नावा छे एम (आहु) कह्युं छे, कारण के आश्रवद्वारनो रोध करी ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप त्रण रत्ननी आराधना करवाथी ते शरीर ज संसारसागरने तारे छे. तथा (जीवो) जीव (नाविओ) नाविक–तरनार (वुच्चइ) कहेवाय छे. केमके ते जीव ज भवसागरने तरनार छे. तथा (संसारो) आ चार गतिरूप संसार (अण्णवो) समुद्र (वुत्तो) कह्यो छे. केमके तत्त्वथी ते संसार ज समुद्रनी जेम तरवा लायक छे. (जं) के जे संसारसागरने (महेसिणो) महर्षिओ ज (तरंति) तरे छे–तरी शके छे. ७३.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥७४॥

अर्थ—पूर्ववत्. ७४.

अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू । को करिस्सति उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ? ॥७५॥

अर्थ—(अंधयारे) प्राणीने अंध करनार अने (घोरे) घोर एवा (तमे) अंधारामां (बहू) घणा (पाणिणो)

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसयो मज्झ, त मे कहसु गोअमा ॥६९॥

अर्थ—पूर्ववत् ६९

अण्णवंसि महोहंसि, नावा विप्परिधावइ । जंसि गोअम ! मारूढो, कह पार गमिस्ससि ? ॥ ७० ॥

अर्थ—(महोहंसि) मोटा प्रवाहवाळा (अण्णवंसि) समुद्रने विषे (नावा) वहाण (विप्परिधावइ) विशेषे करीने आमतेम दोडे छे, बराबर सीधा चाली शकता नथी तो (जंसि) जे वहाणपर एटले ते वहाणपर (मारूढो) आरूढ थयेला तमे (गोअम) हे गौतम मुनि ! (पार) ते समुद्रना पारने (कह) केवी रीते (गमिस्ससि) पामशो ? ७०

गौतमस्वामी जवाब आपे छे —

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥

अर्थ—(जा उ) जे (नावा) नौका (अस्साविणी) आश्रववाळी-अदर जळ आवी शके तेवी होय छे-जेमां पाणी भरातु होय छे, (सा) ते (पारस्स) समुद्रना पारने (गामिणी) पामनारी (न) थती नथी, पण (जा) जे (नावा) नावा (निरस्साविणी) आश्रव रहित-अदर जळ न आवी शके तेवी होय छे (सा उ) ते नावा (पारस्स) समुद्रना पारने (गामिणी) पामनारी थाय छे तेथी हु आश्रव रहित नावापर आरूढ थइ समुद्रना पारने पामीश ७१

हेतुरूप (दीवं) द्वीप (कं) कोने (मन्नसी) तमे मानो छो ? ६५.

गौतमस्वामी जवाब आपे छे.—

अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ । महाउदगवेगस्स, गति तत्थ न विज्जई ॥६६॥

अर्थ—(वारिमज्झे) जळनी मध्ये (महालओ) मोटो (एगो) एक (महादीवो) महाद्वीप (अत्थि) छे. (तत्थ) तेमां (महाउदगवेगस्स) महाजळना वेगनी–प्रवाहनी (गति) गति (न विज्जई) प्रवर्तती नथी. ६६.

दीवे अ इइ के वुत्ते, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥६७॥

अर्थ—(दीवे) द्वीप कोने कहीए ? बाकीनो अर्थ पूर्ववत्. द्वीपना उपलक्षणथी ते जळमां रहेलो होवाथी जळना प्रवाहनो प्रश्न पण जाणी लेवो. ६७.

जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं । धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥ ६८ ॥

अर्थ—(जरामरणवेगेणं) जरा अने मरणरूपी जळना वेगवडे (वुज्झमाणाण) वहन कराता–तणाता (पाणिण) प्राणीओने (धम्मो) धर्म ज (पइट्ठा य) स्थिर रहेवाना हेतुरूप, (गई)गति–आधाररूप अने (उत्तमं) उत्तम (सरणं) शरणरूप (दीवो) द्वीप छे. कारण के ते धर्म ज संसाररूपी समुद्रमां द्वीपरूपे रहेलो छे. ते मुक्तिनुं कारण होवाथी जरा अने मरणरूप जळनो वेग तेने पहोंची शकतो नथी. ६८.

सर्वने हु जाणु छु अर्थात् मार्ग अने उन्मार्गना स्वरूपने हु जाणु छु (ता) तेथी (अह) हु (न नस्सामि) नाश पामतो नथी-सन्मार्गथी भ्रष्ट थतो नथी ६१.

मग्गे अ इति के वुत्ते, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥६२॥

अर्थ—(मग्गे) मार्ग (अ) अने उन्मार्ग कोने कहो छो? बाकीनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ६२

कुप्पावयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिआ । सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥

अर्थ—(कुप्पावयणपासंडी) कुप्रवचनना पाखंडीओ एटले एकांतवादी कपिलादिकना दर्शनवाळा (सव्वे) सर्व (उम्मग्गपट्ठिआ) उन्मार्गे चालनारा छे, (तु) पुन (जिणक्खाय) जिनेश्वरे कहेलो जे मार्ग ते ज (सम्मग्गं) सन्मार्ग छे, माटे (एस) आ (मग्गे हि) मार्ग ज (उत्तमे) उत्तम छे ६३

साहु गोअम! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा! ॥६४॥

अर्थ—पूर्ववत् जाणवो. ६४

महाउदगवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं । सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसी मुणी! ॥६५॥

अर्थ—(मुणी) हे गौतम मुनि! (महाउदगवेगेण) मोटा जळना प्रवाहवडे (वुज्झमाणाण) तणाता एवा (पाणिण) प्राणीओने (सरण) शरणरूप, (गई) गति एटले आधार भूमिरूप, (पइट्ठा य) अने प्रतिष्ठा एटले स्थिर रहेवाना

मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ । तं सम्मं निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथगं ॥५८॥

अर्थ—हे केशी मुनि ! (मणो) मनरूपी (साहसिओ) साहसिक अने (भीमो) भयंकर एवो (दुट्ठस्सो) दुष्ट अश्व (परिधावइ) आम तेम दोडे छे. (तं) तेने (धम्मसिक्खाइ) धर्मरूप शिक्षावडे (कंथगं) जातिवंत अश्वनी जेम (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (निगिण्हामि) हुं निग्रह करुं छे–नियममां राखुं छुं. ५८.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥५९॥

अर्थ—पूर्वनी जेम जाणवो. ५९.

कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासंति जंतुणो । अद्धाणे कह वट्टंतो, तं न नस्ससि गोअमा ! ॥६०॥

अर्थ—(लोए) लोकने विषे (कुप्पहा) कुमार्गो (बहवो) घणा छे, के (जेहिं) जे कुमार्गोए करीने (जंतुणो) प्राणीओ (नासंति) नाश पामे छे एटले सन्मार्गथी भ्रष्ट थाय छे, तो (गोअमा) हे गौतम मुनीश्वर ! (अद्धाणे) सन्मार्गमां (वट्टंतो) वर्तता एवा (तं) तमे (कह) केम (न नस्ससि) नाश पामता नथी ? भ्रष्ट थता नथी ? ६०.

जे अ मग्गेण गच्छंति, जे अ उम्मग्गपट्ठिआ । ते सव्वे विइआ मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥

अर्थ—(मुणी) हे केशी मुनि ! (जे अ) जेओ (मग्गेण) सन्मार्गे (गच्छंति) जाय छे, (जे अ) तथा जेओ (उम्मग्गपट्ठिआ) उन्मार्गे चालनारा छे, (ते सव्वे) ते सर्व प्राणीओ (मज्झं) मारा (विइआ) जाणेला छे एटले ते

अर्थ—(अय) आ प्रत्यक्ष देखातो, (साहसिओ) साहसिक एटले विचार कर्या विना ज प्रवर्ततो, (भीमो) भयकर अने (दुट्ठस्सो) दुष्ट एवो अश्व (परिधावइ) दोडे छे, के (जसि) जेना उपर (मारूढो) आरुढ थयेला एवा तमे (गोअम) हे गौतम गणधर ! (तेण) ते अश्वथी (कह) केम (न हीरसि) हरण कराता नथी-ते अश्व तमने केम उन्मार्गे लइ जतो नथी ? ५५

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या —

पहावत निगिण्हामि, सुअरस्सीसमाहित । न मे गच्छइ उम्मग्ग, मग्ग च पडिवज्जइ ॥ ५६ ॥

अर्थ—(सुअरस्सीसमाहित) श्रुतरूपी रश्मि एटले दोरडावडे बांधेला ते दुष्ट अश्वने हु (पहावत) उन्मार्गे दोडता एवाने (निगिण्हामि) पकडी राखु छु, तेथी (मे) मारो ते अश्व (उम्मग्ग) उन्मार्गे (न गच्छइ) जतो नथी, (मग्ग च) अने मार्गने एटले सन्मार्गने (पडिवज्जइ) अगीकार करे छे-सन्मार्गे चाले छे ५६

आसे अ इति के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेव बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५७ ॥

अर्थ—(आसे अ) वळी अश्व ते (के वुत्ते) कयो कह्यो छे ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअम) गौतम गणधर प्रत्ये (अब्बवी) कहेता हवा-पूछता हवा (एव बुवत तु) ए प्रमाणे कहेता एवा (केसीं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतमस्वामी (इण अब्बवी) आ प्रमाणे उत्तर कहेता हवा ५७

गौतमस्वामीने कहेता-पूछता हवा. (तओ) त्यारे (बुवंतं तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमारने (गोअमो इणं अब्बवी) गौतमस्वामी आ प्रमाणे कहेता हवा. अहीं अग्निना संबंधमां प्रश्न कर्यो, तेना उपलक्षणथी तेने बुझावनार महामेघादिक संबंधी पण प्रश्न कर्यो एम समजवुं. ५२.

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुअसीलतओ जलं। सुअधाराभिहया संता, भिन्ना हु न डहंति मे ॥५३॥

अर्थ—(कसाया) कषायो परिताप उपजावनार होवाथी तथा शोषण करनार होवाथी (अग्गिणो) अग्निओ (वुत्ता) कह्या छे, तथा (सुअसीलतओ) श्रुत एटले कषायने शमाववाना कारणभूत श्रुतने विषे रहेला उपदेशो, शीळ एटले पांच महाव्रतो अने बार प्रकारनो तप, ते (जलं) जळ कहेलुं छे. उपलक्षणथी जगतने आनंददायक एवा तीर्थकरने महामेघरूप कह्या छे, अने तेमनाथी उत्पन्न थयेला आगमने जळना प्रवाहरूप कहेलो छे. तेथी करीने (सुअधाराभिहया) श्रुतनी तथा उपलक्षणथी शीळ अने तपनी धारावडे हणायेला अने (भिन्ना हु) भेदाया (संता) सता ते अग्निओ (मे) मने (न डहंति) बाळता नथी. ५३.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥५४॥

अर्थ—पूर्वनी जेम जाणवो. ५४.

अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ । जंसि गोअम ! आरूढो, कहं तेण न हीरसि ? ॥५५॥

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोअमा ! ॥४९॥

अर्थ—प्रथमनी जेम जाणवो ४९

सपंज्जलिआ घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोअमा !। जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविआ तुमे ? ॥५०॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम गणधर ! (सपज्जलिआ) अत्यत जाज्वल्यमान अने ए ज कारणथी (घोरा) घोर-भयकर एवा (अग्गी) अग्निओ (चिट्ठइ) रहेला छे, के (जे) जे अग्निओ (सरीरत्था) शरीरमां रह्या थका (डहति) बाळे छे–परिताप उपजावे छे तेमने (तुमे) तमे (कह) केवी रीते (विज्झाविआ) बुझव्या-शांत कर्या ? ५०

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या —

महामेहप्पसूआओ, गिज्झ वारि जलोत्तम। सिंचामि सयय ते उ, सित्ता नो अ दहंति मे ॥५१॥

अर्थ—(महामेहप्पसूआओ) महामेघथकी उत्पन्न थयेला प्रवाहथी (जलोत्तम) सर्व जळमा प्रधान एवु (वारि) जळ (गिज्झ) ग्रहण करीने (ते उ) ते अग्निओने (सयय) निरतर (सिंचामि) हु छांटु छु–शांत करु छु (सित्ता) अने ते जळवडे सींच्या एवा ते अग्निओ (मे) मने (नो अ दहति) नथी ज बाळता ५१

अग्गी अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसिं बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥

अर्थ—(अग्गी अ) वळी अग्नि ते (के वुत्ते) कया कह्या छे ? (इइ) ए प्रमाणे (केसी गोअममब्बवी) केशीकुमार

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या.—

तं लतं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्तु समूलिअं । विहरामि जहानायं, मुंकोमि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥

अर्थ—(तं) ते (लतं) लताने (सव्वसो) सर्वथा (छित्ता) छेदीने तथा (समूलिअं) मूळ सहित (उद्धरित्तु) उखेडी नांखीने (जहानायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (विहरामि) हुं विचरुं छुं अने (विसभक्खणं) क्लिष्ट कर्मरूपी विषफळना भक्षणथी (मुकोमि) हुं मुक्त थयो छुं. ४६.

लया य इति का वुत्ता ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥४७॥

अर्थ—(लया य) वळी लता ते (का वुत्ता) कइ कही छे ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअमं) गौतम गणधरने (अब्बवी) कहेता हवा—पूछता हवा. (एवं) ए प्रमाणे (बुवंतं तु) कहेता एवा (केसी) केशीकुमारने (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा. ४७.

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया । तमुद्धित्तु जहानायं, विहरामि महामुणी ! ॥ ४८ ॥

अर्थ—(भवतण्हा) संसारने विषे जे तृष्णा—लोभ ते ज (भीमा) भयंकर अने (भीमफलोदया) भयंकर फळना उदयवाळी (लया) लता (वुत्ता) कहेली छे. (तं) ते लताने (जहानायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (उद्धित्तु) उखेडी नांखीने (महामुणी) हे केशी महामुनि ! (विहरामि) हुं विचरुं छुं. ४८.

रागदोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयकरा । ते छिंदित्तु जहाणाय, विहरामि जहक्कम ॥ ४३ ॥

अर्थ—(रागदोसादओ) राग अने द्वेष विगेरे (तिव्वा) तीव्र अने (भयकरा) भयकर एवा (नेहपासा) स्नेह पाशो कहेला छे, (ते) ते पाशोने (जहाणाय) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (छिंदित्तु) छेदीने (जहक्कम) यथाक्रम एटले साधुना आचारमां कहेला क्रम प्रमाणे (विहरामि) हु विचरु छु ४३

ते सांभळी केशीकुमार बोल्या —

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोअमा !॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते पण्णा) तमारी बुद्धि (साहु) घणी सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे) मारो (ससओ) सशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे वळी (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झ) मने (ससओ) सशय छे, (त मे) ते मारा सशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो-छेदो. ४४

अतोहिअयसभूआ, लया चिट्ठइ गोअमा ! । फलेइ विसभक्खीण, सा उ उद्धारिआ कह ? ॥ ४५ ॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम गणधर ! (अतोहिअयसभूआ) हृदयनी अदर उत्पन्न थयेली (लया) जे लता (चिट्ठइ) रहेली छे, तथा जे लता (विसभक्खीण) विषनी जेवा भक्षण करवा लायक एटले परिणामे दारुण एवा विष फळोने (फलेइ) फळे छे-उत्पन्न करे छे, (सा उ) ते लता तमे (कह) केवी रीते (उद्धारिआ) उखेडी नांखी ? ४५.

(बहवो) घणा (दीसंति) देखाय छे, तो (मुणी) हे गौतम मुनि! (तं) तमे (मुक्कपासो) ते पाशथी मुक्त अने (लहूभूओ) लघु एटले वायु, तेनी जेवा थया सता (कहं) केवी रीते (विहरसी) सर्वत्र अप्रतिबद्धपणे विचरो छो? ४०.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या के —

ते पासे सव्वसो छित्ता, निहंतूण उवायओ। मुक्कपासो लहूभूओ, विहरामि अहं मुणी ! ॥ ४१ ॥

अर्थ—(ते) ते (सव्वसो) सर्व (पासे) पाशोने (छित्ता) छेदीने तथा (उवायओ) सत्य भावनाना अभ्यासरूप उपायथी (निहंतूण) हणीने एटले फरीथी तेनो बंध न थाय एवी रीते तेमनो विनाश करीने (अहं) हुं (मुणी) हे केशीकुमार मुनि! (मुक्कपासो) पाशथी मुक्त अने (लहूभूओ) वायुनी जेवो लघु थयो सतो (विहरामि) विचरुं छुं. ४१.

पासा य इति के वुत्ता?, केसी गोअममब्बवी। तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥४२॥

अर्थ—(पासा य) पाशो (के वुत्ता) तमे कया कह्या? एटले तमे कोने पासला कह्या? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार मुनि (गोअमं) गौतम गणधरने (अब्बवी) कहेता हवा. (तओ) त्यारपछी (बुवंतं तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमारने (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा. ४२.

अर्थ—(एगप्पा) एक आत्मा एटले जीव के मन (अजिए) नहीं जीतायो सतो (सत्तू) शत्रुरूप छे, तथा (कसाया) चारे कषायो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे, आ रीते मन अने कषायो मळीने पाच शत्रु छे (अ) तथा (इंदिआणि) पाच इद्रियो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे आ सर्व मळीने दश शत्रु थया (ते) ते सर्व शत्रुओने (जहाणाय) शास्त्रमां कहेली नीतिवडे (जिणीत्तु) जीतीने (मुणी) हे केशीकुमार मुनि ! (अह) हु (विहरामि) विचरु छु, एटले ते शत्रुओनी मध्ये रह्या छतां पण अप्रतिबद्ध विहारे करीने हु विचरु छु ३८

आ प्रमाणे गौतमस्वामीए कह्यु त्यारे केशीकुमार फरीथी बोल्या के—

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झ, तं मे कहसु गोअमा ! ॥ ३९ ॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते पन्ना) तमारी बुद्धि (साहु) बहु सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे संसओ) मारो संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे (अन्नो वि) हजु बीजो पण (मज्झ) मने (संसओ) संशय छे, (तं मे) ते मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो-छेदो ३९

दीसंति बहवो लोए, पासबद्धा सरीरिणो । मुक्कपासो लहूभूओ, कहं तं विहरसी मुणी ? ॥४०॥

अर्थ—(लोए) लोकने विषे (पासबद्धा) पाशथी एटले रागद्वेषरूपी पाशथी बधायेला (सरीरिणो) प्राणीओ

ते शत्रुओने (तुमे) तमे (कहं) शी रीते (निज्जिआ) जीत्या ? जीती लीधा ? ते कहो. ३५.

हवे गौतमस्वामी उत्तर आपे छे.—

एगे जिए जिआ पंच, पंच जिए जिआ दस । दसहा उ जिणित्ता णं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥ ३६ ॥

अर्थ—(एगे) एक शत्रु (जिए) जीताये सते (पंच) पांचे शत्रु (जिआ) जीताया एम जाणवुं, तथा (पंच) पांच शत्रु (जिए) जीताये सते (दस) दशे शत्रु (जिआ) जीताया जाणवा. तथा (दसहा उ) दश प्रकारना शत्रुने (जिणित्ता णं) जीतीने (सव्वसत्तू) सर्व शत्रुओने (अहं) हुं (जिणामि) जीतुं छुं. ३६.

ते सांभळीने पछी—

सत्तू अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥

अर्थ—तमे १-५-१० विगेरे (सत्तू अ) शत्रुओ (के) कया (वुत्ते) कह्या छे ?-कोने कहो छो ? (इइ) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअमं) गौतमस्वामीने (अब्बवी) कहेता हवा—पूछता हवा. (तओ) त्यारपछी (बुवंतं तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसी) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) बोलता हवा—कहेता हवा. ३७.

एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदिआणि अ । ते जिणित्तु जहाणायं, विहरामि अहं मुणी ! ॥३८॥

वेष) चारित्र ज (मोक्खसब्भूअसाहणो) मोक्षनां सत्य साधनो छे, ए प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथस्वामी अने वर्धमानस्वामीनी (पइण्णा) एक सरखी प्रतिज्ञा–अगीकार (भवे उ) होय ज–छे ज भरतचक्री विगेरेने वेष विना पण केवळज्ञान उत्पन्न थयु हतु एम समळाय छे, तेथी मोक्षनु कारण तत्त्वथी तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे, पण वेष नथी तेथी वेषनी भिन्नता जोवाथी विज्ञानीओने तेमां कांइ अविश्वास थतो नथी वेष तो मात्र व्यवहार नयनी अपेक्षाए ज छे ३३

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ॥३४॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) बहु सारी छे तेथी (इमो) आ (मे) मारो (संसओ) संशय पण (छिण्णो) तमे छेद्यो छे हजु (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झ) मने (संसओ) संशय छे, (त) ते (मे) मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो ते बीजा पण मारा संशयने तमे छेदो आ प्रमाणे महाव्रत संबंधी तथा वेष संबंधी शिष्योना संशयने दूर करी हवे ते शिष्याने ज जणाववा माटे केशीकुमार पोते जाणता हता तोपण नीचनो बीजो प्रश्न करे छे ३४

अणेगाण सहस्साण, मज्झे चिट्ठसि गोयमा !। ते अ ते अभिगच्छंति, कहं ते निज्जिआ तुमे ? ॥३५॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम ! (अणेगाण) अनेक (सहस्साण) हजारो शत्रुओनी (मज्झे) मध्ये (चिट्ठसि) तमे रहो छो (ते अ) अने वळी ते शत्रुओ (ते) तमारी तरफ (अभिगच्छंति) तमने जीतवा माटे दोडे छे, छतां (ते)

तेम ज वळी.—

पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं । जत्तत्थं गहणत्थं च, लोए लिंगप्पओअणं ॥ ३२ ॥

अर्थ—(च) तथा वळी (लोगस्स) लोकना (पच्चयत्थं) विश्वासने माटे (नाणाविहविगप्पणं) नाना प्रकारना उपकरणनी कल्पना करेली छे एटले के रजोहरणादिक विविध प्रकारनां उपकरण नियमे करीने यतिओने विषे ज संभवे छे, तेथी लोकोने ते उपकरण जोइ ' आ साधु छे ' एम विश्वास आवे छे. जो ए रीते नियमित उपकरण न होय तो बीजा पण कोइ इच्छा प्रमाणे वेष धारण करीने ' अमे साधु छीए.' एम पूजावा मनावा माटे लोको पासे पोतानी प्रसिद्धि करे, अने तेम करवाथी सत्य मुनिओने विषे पण लोकनी प्रतीतिमां भंग पडे. माटे नियमित उपकरणमां फेरफार कहेल नथी. ते तो बन्नेने एक सरखा ज राखवा योग्य छे. तथा (जत्तत्थं) यात्रा एटले संयमना निर्वाहने माटे (गहणत्थं च) तथा पोताना ज्ञानने माटे पण (लोए) लोकमां (लिंगप्पओअणं) वेषनुं प्रयोजन छे. एटले ते प्रमाणे वर्षाकल्पादिक राखवामां न आवे तो वर्षाकाळमां संयमनी बाधा थाय, तेथी वेषनी जरुर छे, तेमज कदाचित् मनना परिणाम चारित्रपरथी पडी जाय तोपण ' हुं मुनि छुं. ' एम पोताने मुनिपणाना ज्ञानने माटे पण वेषनी जरुर छे. ३२.

अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भूअसाहणो । नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥

अर्थ—(अह) हवे (निच्छए) निश्चय नयना मते तो (नाणं च) ज्ञान, (दंसणं चेव) दर्शन अने (चरित्तं

शिष्यनी अपेक्षाए अतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळा–गमे तेवा प्रमाणवाळा अने जूदा जूदा रगवाळा अने उत्तर एटले घणा मूल्यवडे श्रेष्ठ एवा वस्त्रवाळो धर्म (पासेण य) श्रीपार्श्वनाथस्वामीए कहेलो छे २९

एगकज्जपवन्नाण, विसेसे किं नु कारण ? । लिंगे दुविहे मेहावी !, कहं विप्पचओ न ते ? ॥३०॥

अर्थ—(एगकज्जपवन्नाण) मोक्षरूपी एक ज कार्य साधवामा प्रवर्तेला ते बन्ने तीर्थकरोने (विसेसे) आवो विशेष–भेद करवामां (किं नु कारण) शु कारण हशे ? (मेहावी) हे बुद्धिमान ! (दुविहे) अचेलक अने सचेलक एवा बे प्रकारना (लिंगे) लिंग–वेषने विषे (ते) तमने (विप्पचओ) अविश्वास (कह) केम (न) नथी थतो ? शका केम नथी थती ? ३०

केसिमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी । विण्णाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छिअं ॥ ३१ ॥

अर्थ—(एव) ए प्रमाणे (बुवत तु) कहेता–पूछता एवा (केसिं) केशीकुमारने (गोअम) गौतम गणधर (इण) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा–उत्तर देता हवा, के—(विण्णाणेण) केवळज्ञानवडे (समागम्म) जे जेने उचित होय ते तेज प्रमाणे जाणीने ते बन्ने तीर्थकरोए (धम्मसाहण) धर्मनु साधन एटले धर्मना उपकरणने (इच्छिअ) इच्छया छे–कह्या छे पहेला अने छेल्ला तीर्थकरना साधुने जो पचवर्णना वस्त्रादिकनी अनुज्ञा आपी होत तो तेओ ऋजुजड अने वक्रजड होवाथी वस्त्रने रगवा विगेरे कार्यमां प्रवृत्ति करत• तेथी तेमने तेवी अनुज्ञा आपी नहीं अने श्रीपार्श्वनाथस्वामीना शिष्यो तो ऋजुप्राज्ञ होवाथी तेओने रगेला वस्त्रोनी पण अनुज्ञा आपी छे ३१

શિષ્યોના ઉપર અનુગ્રહ કરવાની બુદ્ધિથી જ બે પ્રકારનો ધર્મ કહ્યો છે, પણ તત્ત્વથી વિચાર કરીએ તો એ બે પ્રકારનો ધર્મ છે જ નહી—એક જ પ્રકારનો છે. અહી પ્રસંગને લીધે જ પહેલા તીર્થંકર સંબંધી વાત કહી છે. ૨૭.

તે સાંભળી કેશીકુમારે કહ્યું.—

સાહુ ગોઅમ! પણ્ણા તે, છિણ્ણો મે સંસઓ ઇમો। અન્નો વિ સંસઓ મજ્ઝં, તં મે કહસુ ગોઅમા! ॥૨૮॥

અર્થ—(ગોઅમ) હે ગૌતમ ! (તે) તમારી (પણ્ણા) બુદ્ધિ (સાહુ) ઘણી સારી છે, તેથી (ઇમો) આ (મે) મારો (સંસઓ) સંશય તો (છિણ્ણો) તમે છેદ્યો છે. વળી (અન્નો વિ) બીજો પણ (મજ્ઝં) મને (સંસઓ) સંશય છે. (તં) તેને-તેના સમાધાનને પણ (ગોઅમા) હે ગૌતમ ! તમે (મે) મને (કહસુ) કહો.

આ સર્વ કેશીકુમારનું કહેવું શિષ્યની અપેક્ષાથી છે. અર્થાત્ શિષ્યવર્ગને સમજાવવા માટે છે. કારણ કે પોતે તો ત્રણ જ્ઞાન સહિત છે તેથી તેને તો આવો સંશય હોય જ નહી. ૨૮.

અચેલગો અ જો ધમ્મો, જો ઇમો સંતરુત્તરો। દેસિઓ વદ્ધમાણેણં, પાસેણ ય મહાયસા ॥૨૯॥

અર્થ—(અ) તથા (જો) જે આ (અચેલગો) અચેલક એટલે વસ્ત્ર રહિત અર્થાત્ પ્રમાણોપેત, શ્વેત, જીર્ણપ્રાય અને અલ્પ મૂલ્યવાળું વસ્ત્ર ધારણ કરવું એવો (ધમ્મો) સાધુનો ધર્મ (મહાયસા) મોટા યશવાળા (વદ્ધમાણેણં) શ્રી વર્ધમાનસ્વામીએ (દેસિઓ) કહ્યો છે, તથા (જો ઇમો) જે આ અમારો (સંતરુત્તરો) સાંતર એટલે શ્રીમહાવીરસ્વામીના

धर्म करवानु शु कारण ?" ते उपर कहे छे —

पुरिमाण दुव्विसोज्झो उ, चरिमाण दुरणुपालओ । कप्पो मज्झिमगाण तु, सुविसोज्झो सुपालओ॥२७॥

अर्थ—(पुरिमाण) पहेला तीर्थंकरना साधुओने (कप्पो) आ साधुधर्मनो कल्प एटले आचार (दुव्विसोज्झो उ) दुर्विशोध्य एटले दु खे करीने निर्मळ करी शकाय तेवो अर्थात् जाणी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ ऋजुजड होवाथी गुरुए कह्या छता तेनो अर्थ सम्यक् प्रकारे जाणी शके नहीं परतु जो जाणे तो पछी पाळी शके खरा तथा (चरिमाण) छेल्ला तीर्थंकरना साधुओने ते कल्प (दुरणुपालओ) दु खे करीने पाळी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ कोइपण रीते जाणी शके छे, परतु वक्रजड होवाथी बराबर पाळी शकता नथी (तु) तथा (मज्झिमगाण) मध्यना बावीश तीर्थंकरोना साधुओने ते कल्प (सुविसोज्झो) सारी रीते शोधी शकाय—जाणी शकाय तेवो अने (सुपालओ) सारी रीत पाळी शकाय तेवो छे. कारण के तेओ ऋजुप्राज्ञ होवाथी सुखे करीने यथार्थपणे जाणी शके छे अने ते ज प्रमाणे पाळी पण शके छे तेथी तेओ चार महाव्रतोवाळो धर्म कह्या छता पण पाचमा व्रतने जाणवामा अने पाळवामा समर्थ छे कह्यु छे के—" स्त्रीनो परिग्रह कर्या विना तेनो भोग थइ शकतो नथी, तेथी परिग्रहनी विरतिमा मैथुननी पण विरति आवी जाय ज छे " ए प्रमाणेनी बुद्धिथी बावीश तीर्थंकरोना साधुओ जाणीने ते प्रमाणे पाळे छे आवी अपेक्षाथी श्रीपार्श्वनाथस्वामीए चार महाव्रतो कह्या अने पहेला छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ तेवा ऋजुप्राज्ञ नहीं होवाथी श्रीऋषभदेवे अने श्रीमहावीरस्वामीए पाच महाव्रतो कह्या छे. विचित्र बुद्धिवाळा

तओ केसिं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी । पण्णा समिक्खए धम्मं–तत्तं तत्तविणिच्छयं ॥ २५ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (बुवंतं तु) आ प्रमाणे बोलता एवा (केसिं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतम गणधर (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा, के (पण्णा) बुद्धि (तत्तविणिच्छयं) जीवादिक तत्त्वोनो निश्चय करनार (धम्मंतत्तं) धर्मना तत्त्वने (समिक्खए) जुए छे. अर्थात् मात्र वाक्यनुं श्रवण करवाथी ज अर्थनो निर्णय थइ शकतो नथी परंतु बुद्धिथी ज निर्णय थाय छे. २५.

तेथी करीने—

पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा य पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपण्णा उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥

अर्थ—(उ) जे कारण माटे (पुरिमा) पहेला तीर्थकरना मुनिओ (उज्जुजडा) सरळपणाए करीने ऋजु अने बोध पमाडवाने दुष्कर होवाथी जड हता, (य) तथा (पच्छिमा) छेल्ला तीर्थकरना साधुओ (वकजडा) विपरीत प्रकृति होवाथी वक्र अने पोताना कुविकल्पवडे सत्य अर्थ जाणवामां असमर्थ होवाथी जड छे, (उ) तथा (मज्झिमा) मध्यमना वावीश तीर्थकरोना साधुओ (उज्जुपण्णा) ऋजु एटले सरळ प्रकृतिवाळा अने प्राज्ञ एटले बुद्धिमान हता, (तेण) ते कारण माटे एक कार्यमां ज प्रवर्त्या छतां (धम्मे) धर्म (दुहा) बे प्रकारे (कए) कर्यो छे–कह्यो छे. २६.

अहीं केशीकुमार शंका करे के—" जो के प्रथमादिक प्रभुना मुनिओ एवा प्रकारना हता, तोपण आ रीते बे प्रकारनो

केशीकुमारने (गोअम) गौतमस्वामी (अब्बवी) कहेता हवा. (तओ) त्यारे (केसी) केशीकुमार (अणुण्णाए) गौतम स्वामीनी आज्ञाए करीने (गोअम) गौतमस्वामी प्रत्ये (इण) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा—पूछता हवा २२

केशीकुमारे गौतमस्वामीने जे पूछ्यु ते कहे छे —

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ। देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥२३॥

अर्थ—(जो) जे आ अमारो (चाउज्जामो अ) अहिंसा, अनृत, अस्तेय अने अपरिग्रह ए चार महाव्रतवाळो (धम्मो) धर्म (महामुणी) महामुनि (पासेण य) श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए (देसिओ) कह्यो छे, तथा (जो इमो) जे आ तमारो (पंचसिक्खिओ) उपरना चार तथा ब्रह्मचर्य ए पांच शिक्षावाळो एटले पाच महाव्रतरूप धर्म (वद्धमाणेण) श्री वर्धमानस्वामीए कह्यो छे २३

एगकज्जप्पवन्नाण, विसेसे किं नु कारण ?। धम्मे दुविहे मेहावी !, कहं विपच्चओ न ते ? ॥२४॥

अर्थ—तो (एगकज्जप्पवन्नाण) मोक्षरूपी एक ज कार्यने माटे प्रवर्तेला ते बन्ने जिनेश्वरोने (विसेसे) आवो विशेष —भेद करवामां (किं नु) शु (कारण) कारण हशे ? (मेहावी) हे बुद्धिमान ! (दुविहे) आ रीते बे प्रकारे (धम्मे) धर्म कहे सते (ते) तमने (विपच्चओ) अविश्वास (कह) केम (न) थतो नथी ? बन्नेनु सर्वज्ञपणु तुल्य छे, छतां आवो मतभेद केम थाय ? २४.

घणा (पासंडा) पाखंडीओ एटले अन्यदर्शनी साधुओ (समागया) आव्या. तथा (अणेगाओ) अनेक (साहस्सीओ) हजारो (गिहत्थाणं) गृहस्थीओ (समागया) आव्या. १६.

देवदानवगंधव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । अदिस्साण य भूआणं, आसि तत्थ समागमो ॥२०॥

अर्थ—तथा (देवदानवगंधव्वा) देव, दानव अने गंधर्वो, तथा (जक्खरक्खसकिन्नरा) यक्ष, राक्षस अने किन्नरो पण आव्या. (य) तथा (अदिस्साण) अदृश्य एवा (भूआणं) भूतोनो-व्यंतरोनो पण (तत्थ) त्यां (समागमो) समागम (आसि) थयो. २०.

हवे ते बन्ने मुनिओनी वातचीत केवी रीते थइ ? ते कहे छे.—

पुच्छामि ते महाभाग !, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥२१॥

अर्थ—(केसी) केशीकुमारे (गोअमं) गौतम गणधरने (अब्बवी) कह्युं के—(महाभाग) हे महा भाग्यवान ! (ते) तमने (पुच्छामि) हुं पूछुं छुं. (तओ) त्यारपछी (बुवंतं) आ प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमारने (तु) पुनः (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा. २१.

पुच्छ भंते ! जहिच्छं ते, केसी गोअममब्बवी । तओ केसी अणुण्णाए, गोअमं इणमब्बवी ॥ २२ ॥

अर्थ—(भंते) हे पूज्य ! (जहिच्छं) जेम तमारी इच्छा होय तेम (ते) तमे (पुच्छ) पूछो. ए प्रमाणे (केसी)

" तणपचग पुण भणिअं, जिणेहिं कम्मट्ठगठिमहणेहिं । साली १ वीही २ कोद्दव ३, रालय ४ रण्णे तणाइ ५ च ॥"

अर्थ—" आठे कर्मनी ग्रंथिने मथन करनारा जिनेश्वरोए पाच प्रकारना तृण कह्या छे,—शाळी १, व्रीहि २, कोद्रा ३, रालक ४ अने अरण्यना तृण ५ "

आमा प्रथमना चार भेद पराळनी जातिना छे अने पांचमो भेद तृणनो छे तेथी पचम शब्द कह्यो छे १७

ते बन्ने साथे बेठा ते वखते केवा शोभता हता ? ते कहे छे —

केसी कुमारसमणे, गोअमे अ महायसे । उभओ निसन्ना सोहंति, चंदसूरसमप्पहा ॥ १८ ॥

अर्थ—(महायसे) महा यशवाळा (केसी कुमारसमणे) केशीकुमार साधु (अ) तथा (गोअमे) गौतम (उभओ) ए बन्ने (निसन्ना) बेठा सता (चदसूरसमप्पहा) चद्र अने सूर्य जेवी कांतिवाळा (सोहंति) शोभता हता १८

तेमना समागम वखते जे थयु ते कहे छे —

समागया बहू तत्थ, पासडा कोउगा मिआ । गिहत्थाणमणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥ १९ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां तिंदुक उद्यानमा (कोउगा) कौतुकथी (मिआ) मृगनी जेवा मृग एटले अज्ञानी एवा (बहू)

अर्थ—त्यारपछी (पडिरूवण्णू) यथायोग्य विनयने जाणनार (गोअमो) गौतमस्वामी (जिट्ठं कुलं) पार्श्वनाथना संतानने प्रथम थयेल होवाथी आ मोटुं कुळ छे एम (अविक्खंतो) अपेक्षा करता-जाणता सता (सीससंघसमाउलो) शिष्योना समूह सहित (तिंदुअं) तिंदुक नामना (वणं) उद्यानमां (आगओ) आव्या. १५.

केसी कुमारसमणे, गोअमं दिस्समागयं । पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ॥ १६ ॥

अर्थ—(केसी) केशी नामना (कुमारसमणे) कुमार साधु (गोअमं) गौतमने (आगयं) आवेला (दिस्सं) जोइने (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (पडिरूवं) अतिथिने योग्य एवी (पडिवत्तिं) सेवाने (संपडिवज्जइ) सारी रीते करता हवा. १६.

ते सेवाने ज बतावे छे.—

पलालं फासुअं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि अ । गोअमस्स णिसिज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥ १७ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां तिंदुक वनमां (फासुअं) प्रासुक—अचित्त (पलालं) पराळ (अ) तथा (पंचमं) पांचमा (कुसतणाणि) कुश जातिना तृण (गोअमस्स) गौतमने (णिसिज्जाए) बेसवा माटे (खिप्पं) शीघ्रपणे (संपणामए) केशीकुमारे आप्यां. अहीं पराळना चार भेदनी अपेक्षाए तृणने पांचमुं गणाव्युं छे तेथी 'पंचम' शब्द लख्यो छे. ते विषे कह्युं छे के—

अर्थ—(अ) तथा (जो) जे (अचेलगो) अचेलक एटले वस्त्र रहित अर्थात् प्रमाणोपत, श्वेत, जीर्णप्राय अने अल्प मूल्यवाळु वस्त्र धारण करवु एवो (धम्मो) धर्म श्रीवर्धमानस्वामीए कह्यो छे, अने (जो इमो) जे आ अमारो (सतरुत्तरो) सांतर एटले श्रीमहावीरस्वामीना शिष्यनी अपेक्षाए अतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळो तथा उत्तर एटले मोटा मूल्यवडे प्रधान–श्रेष्ठ एवा वस्त्रवाळो धर्म श्रीपार्श्वनाथस्वामीए कह्यो छे तो (एगकज्ज पवन्नाण) मोक्षरूप एक ज कार्यने माटे प्रवर्तेला ते बन्ने तीर्थकरोने (विसेसे) आवो विशेष–फेरफार करवामां (किं नु कारण) शु कारण हशे ? १३

आ प्रमाणे गौतमस्वामीना साधुओने पण सशय थयो एटले बन्नेना साधुओने सशय उत्पन्न थवाथी केशी अने गौतमस्वामीए शु कर्यु ? ते कहे छे —

अह ते तत्थ सीसाण, विण्णाय पविअक्किअं । समागमे कयमई, उभओ केसिगोअमा ॥ १४ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (तत्थ) त्या श्रावस्तिनगरीमा (सीसाण) साधुओना आवा प्रकारना (पविअक्किअं) वितर्कने (विण्णाय) जाणीने (ते) ते (केसिगोअमा) केशी अने गौतम (उभओ) बन्ने जणा (समागमे) परस्पर समागम करवामां (कयमई) करी छे मति जेमणे एवा थया–परस्पर मळवानी इच्छावाळा थया १४

गोअमो पडिरूवण्णू, सीससंघसमाउले । जिट्ठं कुलमविक्खंतो, तिंदुअं वणमागओ ॥ १५ ॥

गणधरना शिष्योनो (धम्मो व) धर्म (केरिसो) केवा प्रकारनो छे ? तथा (इमा वा) आ अमारा संबंधी (आयारधम्मप्पणिही) आचार एटले वेप धारण करवारूप बाह्य क्रियानो समूह, ते रूप धर्मनी व्यवस्था केवी छे ? (सा व) अने आ गणधरना शिष्योना बाह्य आचाररूप धर्मनी व्यवस्था (केरिसी) केवी छे ? अर्थात् अमारो अने तेमनो धर्म श्रीसर्वज्ञे ज कहेलो छे, छतां ते धर्ममां अने तेना साधनोमां घणो तफावत देखाय छे, तेनुं कारण शुं हशे ? ते अमे जाणवा इच्छीए छीए. ११.

ते ज विचारने प्रगट करता सता कहे छे.—

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेणं, पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥

अर्थ—(जो) जे आ अमारो (चाउज्जामो अ) चार महाव्रतवाळो (धम्मो) धर्म (महामुणी) महामुनि (पासेण य) पार्श्वनाथस्वामीए (देसिओ) कहेलो छे, अने (जो) जे (इमो) आ गौतम गणधरना शिष्योनो (पंचसिक्खिओ) पांच शिक्षावाळो एटले पंचमहाव्रतवाळो धर्म महामुनि (वद्धमाणेणं) वर्धमानस्वामीए कहेलो छे. आ बन्ने प्रकारनो जुदो जुदो धर्म कहेवानुं शुं कारण हशे ? (आ सूत्रवडे धर्मना विषयवाळो संशय प्रगट कर्यो छे.) १२.

हवे आचारना विषयवाळो संशय प्रगट करे छे.—

अचेलगो अ जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥ १३ ॥

त्यारपछी शु थयु ? ते कहे छे —

केसी कुमारसमणे, गोअमे अ महायसे । उभओ तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिआ ॥ ९ ॥

अर्थ—(केसी) केशी नामना (कुमारसमणे) कुमार साधु (गोअमे अ) तथा गौतमस्वामी (उभओ) ए बन्ने (महायसे) मोटा यशवाळा तथा (अल्लीणा) मन, वचन अने कायगुप्तिमा लीन थयेला तथा (सुसमाहिआ) सारी समाधिवाळा सता (तत्थ) ते पोतपोताना उद्यानमां (विहरिंसु) विचरता हता ९

उभओ सिस्ससंघाण, संजयाण तवस्सिण । तत्थ चिंता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइण ॥ १० ॥

अर्थ—(तत्थ) त्या श्रावस्ति नगरीना उद्यानमां (उभओ) केशीकुमार अने गौतमस्वामी ए बन्नेना (सिस्ससंघाण) शिष्यनो समूह के जेओ (संजयाण) संयमने धारण करनारा, (तवस्सिण) तपस्वी, (गुणवंताण) गुणवान अने (ताइण) छ जीव निकायना रक्षण करनार हता तेमांथी केशीकुमारना मुनिओने (चिंता) विचार (समुप्पन्ना) उत्पन्न थयो एक बीजाने परस्पर जोवाथी हवे कहे छे तेवो विचार उत्पन्न थयो १०

शो विचार थयो ? ते कहे छे —

केरिसो वा इमो धम्मो ?, इमो धम्मो व केरिसो ? । आयारधम्मप्पणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥ ११ ॥

अर्थ—(इमो) आ अमारो (धम्मो) महाव्रतरूप धर्म (केरिसो वा) केवो छे ? अने (इमो) आ प्रत्यक्ष देखाता

विश्रुत एटले प्रसिद्ध हता. ५.

तस्स लोगप्पईवस्स, आसि सीसे महायसे । भयवं गोअमे नामं, विज्जाचरणपारगे ॥ ६ ॥

अर्थ—(लोगप्पईवस्स) लोकने विषे प्रदीप समान एवा (तस्स) ते वर्धमान स्वामीने (महायसे) मोटा यशवाळा (भयवं) भगवान (गोअमे नामं) गौतम नामना (सीसे) शिष्य (आसि) हता, ते (विज्जाचरणपारगे) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हता. ६.

बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीअंते, से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥

अर्थ—(बारसंगविऊ) द्वादशांगीने जाणनारा, (बुद्धे) तत्त्वने जाणनारा, (सीससंघसमाउले) शिष्यना समूहवडे सहित तथा (गामाणुगामं) एक गामथी बीजे गाम (रीअंते) विहार करता एवा (से वि) ते गौतमस्वामी पण (सावत्थिं) श्रावस्ति नगरी प्रत्ये (आगए) आव्या. ७.

कोट्ठगं नाम उज्जाणं, तम्मी नयरमंडले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥

अर्थ—(तम्मी) ते श्रावस्ति नगरीना (नयरमंडले) नगरना बहारना प्रदेशमां (कोट्ठगं नाम) कोष्टक नामनुं (उज्जाणं) उद्यान हतुं, (तत्थ) ते उद्यानमां (फासुए) प्रासुक एवा (सिज्जसंथारे) शय्यासंस्तारकने विषे (वासं उवागए) वासने पामता हवा—रहेता हवा. ८.

ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससघसमाउले । गामाणुगाम रीयते, सावत्थि नगरिमागए ॥ ३ ॥

अर्थ—(ओहिनाणसुए) अवधिज्ञान अने श्रुतज्ञानवडे (बुद्धे) तत्त्वना जाण अर्थात् मति, श्रुत अने अवधिज्ञान वाळा तथा (सीससघसमाउले) शिष्यना समूहवडे परिवरेला एवा ते केशीकुमार (गामाणुगाम) एक गामथी बीजे गाम (रीयते) विहार करता अनुक्रमे (सावत्थि) श्रावस्ति नामनी (नगरिं) नगरीने विषे (आगए) आव्या ३

तिंदुअ नाम उज्जाण, तम्मी नयरमडले । फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥

अर्थ—(तम्मी) त श्रावस्ति नगरीना (नयरमडले) नगर वहारना प्रदेशमां (तिंदुअ नाम) तिंदुक नामनु (उज्जाण) उद्यान हतु, (तत्थ) ते उद्यानमा (फासुए) प्रासुक एटले स्वाभाविक अने आगतुक जीवोथी रहित एवा (सिज्जसथारे) शय्यासस्तारकने विषे (वास उवागए) वासने पामता हवा-निवासस्थानने करता हवा शय्या एटले वसति-उपाश्रय, तेने विषे जे शिला फलकादिक सस्तारक, तेने विषे निवास कर्यो

आ अवसरे जे थयु ते कहे छे —

अह तेणेव कालेण, धम्मतित्थयरे जिणे । भयव वद्धमाणु त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥

अर्थ—(अह) हवे (तेणेव) ते ज (कालेण) काळे (धम्मतित्थयरे) धर्मरूपी तीर्थने करनारा (जिणे) राग द्वेषने जीतनारा (भयव) भगवान (वद्धमाणु त्ति) वर्धमान एवा नामे (सव्वलोगम्मि) सर्व लोकने विषे (विस्सुए)

लाख ने चोसठ हजार श्रावको अने त्रण लाख ने सतावीश हजार श्राविकाओनो परिवार थयो. चोराशी दिवसे न्यून एवा सीतेर वर्ष सुधी केवळी पर्याये विचरता एवा प्रभुनो ए प्रमाणे चतुर्विध संघ थयो. छेवट प्रभु तेत्रीश मुनिओ सहित संमेताद्रि पर्वतपर जइ अनशन ग्रहण करी कायोत्सर्गे रह्या. एक मासनुं अनशन पूर्ण करी कुल सो वर्षनुं आयुष्य भोगवी ते तेत्रीश साधुओ सहित भगवान भवोपग्राही चार अघाती कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या. ते वृत्तांत अवधिज्ञानथी जाणी सर्व इंद्रोए आवी भगवानना निर्वाणनो महोत्सव कर्यो.

इति श्रीपार्श्वनाथनुं संक्षिप्त चरित्र.

आ प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथनुं चरित्र कही हवे प्रस्तुत कहे छे.—

तस्स लोगप्पईवस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥

अर्थ—(लोगप्पईवस्स) लोकने विषे प्रदीप समान (तस्स) ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने (महायसे) मोटा यशवाळा अने (कुमारसमणे) कुमार अवस्थामां ज साधु थयेला एवा (केसी) केशी नामना (सीसे) शिष्य (आसि) हता, ते (विज्जाचरणपारगे) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हता. अही आ केशीकुमारने श्रीपार्श्वनाथना शिष्य कह्या, ते तेमना संतानमां थयेला जाणवा, परंतु तेमना साक्षात् शिष्य नहीं. केमके ते प्रभुना जो हस्तदीक्षित शिष्य होय तो श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थनी प्रवृत्ति थइ त्यां सुधी ते होइ शके नहीं. २.

पर्वतपर चाल " ते सांभळी कुमारे तेनु वचन अंगीकार कर्यु ते वखते शखकुमारने सर्व गुणोवडे उत्कृष्ट जोइ ' हु श्रेष्ठ वरने वरी छु ' एम विचारी यशोमती कन्या अत्यंत हर्ष पामी तेटलामां त्यां ते मणिशेखरना विद्याधर सेवको आव्या तेमांथी वे विद्याधरोने मोकली कुमारे पोताना सैन्यने पोताना नगर तरफ जवा कहेराव्यु, अने बीजा विद्याधरने मोकली पेली वृद्ध धात्रीने बोलावी ते धात्री, कन्या अने खेचर सहित शखकुमार वैताढ्य पर्वतपर गयो त्यां तेमणे शाश्वत चैत्योमा रहेला जिनेश्वरोनी प्रणामपूर्वक पूजा करी. पछी मणिशेखरे कुमारने पोताना नगरमा लइ जइ तेनी घणी भक्ति करी बीजा पण खचरोए कुमारना पराक्रमथी खुशी थइ तेने पोतपोतानी कन्याओ आपी त्यारे कुमारे तेमने कह्यु के—" आ यशोमतीने प्रथम परण्या पछी हु तमारी कन्याओने परणीश " त्यारपछी मणिशेखर विगेरे विद्याधरो पोतपोतानी कन्याओ सहित यशोमतीने अने कुमारने लइ चपानगरीए आव्या ते सर्वने आवता जाणी जितारि राजा तेमनी सन्मुख आवी महोत्सवपूर्वक तेमने पोताने घेर लइ गयो पछी त्यां शखकुमार यशोमतीने तथा बीजी विद्याधर कन्याओने हर्षथी विधिपूर्वक परण्यो अने भक्तिथी श्रीवासुपूज्यस्वामीना चैत्यनी यात्रा करी पछी सर्व विद्याधरोने विदाय करी शखकुमार केटलाक दिवस चपानगरीमां रही सर्व प्रियाओ सहित हस्तिनापुरमां आव्यो

एकदा श्रीषेण राजाए शखने राज्यपर स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी. शखराजा पण इद्रनी जेम मोटा राज्यनु पालन करवा लाग्यो केटलेक काळे श्रीषेण राजर्षिने केवळज्ञान उत्पन्न थयु एकदा विहारना क्रमथी ते फरती हस्तिना पुरमां पधार्या तेमनु आगमन सांभळी शखराजा परिवार सहित मुनीश्वरने वादवा आव्या केवळीना मुखथी धर्मदेशना

आ प्रमाणे सांभळी शंखकुमारे ते वृद्धाने कह्युं के—" हे माता ! तमे धीरज राखो. हमणां ज हुं ते खेचरने जीती कन्याने लइ आवुं छुं." एम कही वनमां भमतो भमतो कुमार प्रातःकाळ थतां एक पर्वतपर गयो. त्यां " हे मूढ ! मने शंख ज परणशे, तुं फोगट क्लेश शा माटे करे छे ?" एम विद्याधरने कहेती ते कन्याने तेणे जोइ. ते वखतेए शंखकुमारने जोयो. एटले हसीने खेचर बोल्यो के—" हे जड ! तुं जेने वरवाने इच्छे छे, ते पोते ज मरवानी इच्छाथी अहीं आव्यो छे, जो, आने तारी आशा सहित हणीने हमणां ज हुं यमराजने घेर मोकलुं छुं अने तने दर्पथी बळात्कारे मारे घेर लइ जाउं छुं." आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी शंखकुमारे तेने कह्युं के—"रे दुष्ट ! उठ, तैयार था, तारा मस्तकनी साथे तारी आ दुष्ट इच्छानुं हुं हरण करुं छुं." ते सांभळी खेचर तेनी साथे खड्गवडे युद्ध करवा लाग्यो. तेमां कुमारने दुर्जय जाणी विद्याधिष्ठित शस्त्रोनो प्रहार करवा लाग्यो. परंतु ते शस्त्रो पुण्यशाळी कुमार उपर प्रहार करवाने समर्थ थया नहीं. ए रीते युद्ध करीने थाकी गयेला विद्याधर पासेथी तेनुं ज धनुष खुंचवी लइने कुमारे तेनावडे तेने बाण मार्युं, तेथी ते मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पड्यो. ते जोइ कुमारे तेने उपचार करी सज्ज कर्यो अने फरीथी युद्ध करवानो तेने उत्साह आप्यो. त्यारे ते प्रसन्न थइने कुमार प्रत्ये बोल्यो के—" हे वीर ! अत्यार सुधी मने कोइए जीत्यो नथी, आजे तें मने जीत्यो छे, ते बहु सारुं थयुं छे, हुं तारुं पराक्रम जोइ तारो दास थयो छुं. माटे मारो आ अपराध तुं क्षमा कर."

ते सांभळी कुमारे तेने कह्युं के—" हे खेचर ! तारी भक्तिथी हुं प्रसन्न थयो छुं, तेथी तारी जे इच्छा होय ते कहे." त्यारे ते बोल्यो के—" हे पुण्यवान कुमार ! शाश्वत चैत्योने वांदवा तथा मारापर अनुग्रह करवा तुं मारी साथे वैताढ्य

" हे बुद्धिमान् ! मारी मायाना जाळने तोडनार तमे एक ज छो माटे हु तमारो दास छु मारुं सर्वस्व ग्रहण करी मारा पर प्रसन्न थाओ " पछी तेणे जेटलु धन लोकोनु लुट्यु हतु तेटलु लइ तेना स्वामीओने आपी कुमार पल्लीपतिने साथे लइ पोताना नगर तरफ चाल्यो मार्गमां रात्रि समये कोइ ठेकाणे सैन्यनो पडाव नांखी कुमार रह्यो हतो, तेवामां कोइनु रुदन सांभळी कुमार हाथमां खड्ग लइ ते शब्दने अनुसारे ते तरफ चाल्यो केटलेक दूर गयो, तेटलामां एक वृद्ध स्त्रीने रुदन करती जोइ कुमारे तेने रोवानु कारण पूछ्यु, त्यारे ते बोली के—" अगदेशमां चपा नामनी नगरी छे तेमां जितारि नामे राजा छे तेने कीत्तिमती नामनी प्रियाने विषे उत्पन्न थयेली यशोमती नामनी पुत्री छे ते समग्र कळामां कुशळ अने युवावस्थाने पामेली छे ते पोताने योग्य वर नहीं जोवाथी कोइ पण ठेकाणे रागवाळी थती नथी एकदा श्रीषेण राजाना पुत्र शखकुमारना गुणो सांभळी ' मारा पति शख ज हो ' एम तेणीए प्रतिज्ञा करी आवी तेनी प्रतिज्ञा जाणी जितारि राजा " आ पुत्री योग्य वरने विषे रागवाळी थइ छे " एम विचारी अत्यत हर्ष पाम्या. पछी एकदा मणिशेखर नामना खेचरे ते कन्यानी याचना करी त्यारे जितारि राजाए तेने उत्तर आप्यो के—" आ मारी कन्या शखकुमार सिवाय बीजा पतिने वरवा इच्छती नथी तेथी तेवी इच्छावाळी ते कन्या बीजे केम आपी शकाय ? " ते सांभळी ए खेचर क्रोध पाम्यो, एटले एकदा तेणे त कन्यानु हरण कर्युं ते वखते हु तेणीनी पासे हती तेथी तेणीनी साथे मारु पण हरण कर्युं हु ते कन्यानी धात्री छुं मार्गमां मने अहीं तजी दइने ते खेचर ते कन्याने लइने क्यांइक जतो रह्यो छे, तेथी हे वीर ! हु रुदन करु छु, के ते कन्यानु हवे शु थशे ? "

राणीए पुत्रने जन्म आप्यो, तेनुं नाम शंख राखवामां आव्युं. पांच धात्रीओवडे पालन करातो ते कुमार वृद्धि पामी अनुक्रमे सर्व कळाओमां निपुण थयो.

ए ज रीते विमळबोधनो जीव पण स्वर्गथी चवी श्रीषेण राजाना मंत्री गुणनिधिनो पुत्र मतिप्रभ नामे थयो. ते शंखकुमारनो मित्र थयो. ते बन्ने मित्रो अनुक्रमे मनोहर युवावस्थाने पाम्या.

एकदा श्रीषेण राजा पासे प्रजाजनोए आवी कह्युं के—" हे देव ! तमारा देशना सीमाडामां एक महा दुर्गम दुर्ग छे. तेमां समरकेतु नामनो पल्लीपति रहे छे, ते निरंतर अमने लुंटे छे अने हेरान करे छे. तेथी तमे अमारुं रक्षण करो. " ते सांभळी राजा तत्काळ त्यां जवा उत्सुक थया ते वखते शंखकुमारे नम्रताथी विज्ञप्ति करी के—" हे पिता ! सर्पना वचा उपर गरुडना उद्यमनी जेम ते पल्लीपति उपर तमारो आ उद्यम योग्य नथी. तेथी तेनो जय करवा माटे मने आज्ञा आपो. " ते सांभळी राजाए तेने आज्ञा आपी, एटले शंखकुमार सैन्य सहित पल्ली तरफ चाल्यो. तेने आवतो जाणी पल्लीपति दुर्गनो त्याग करी कोइ गाढ वनमां पेठो. ते जाणी बुद्धिमान कुमारे पण एक सामंतने ते दुर्गमां प्रवेश कराव्यो, अने पोते दुर्गनी बहार सैन्य सहित कोइ गुप्त स्थाने छुपाइने रह्यो. ते वात नहीं जाणता पल्लीपतिए तत्काळ आवी ते दुर्गने रुंधी लीधो, तेटलामां कुमारे पण प्रगट थइ पोताना सैन्यथी तेने घेरी लीधो. पछी दुर्गमां पेठेला सामंतना सैन्ये अंदरथी अने कुमारना सैन्ये बहारथी एम बन्ने बाजुथी मध्यमां रहेला पल्लीपतिनी उपर प्रहारो कर्या. एटले कइ दिशामां नासी जवुं ए नहीं सूझनाथी व्याकुळ थयेलो पल्लीपति पोताना कंठपर कुठार राखी कुमारने शरणे जइ हाथ जोडीने बोल्यो के—

एकदा अपराजित राजा उद्यानमां क्रीडा करवा गयो त्यां तणे मित्र अने स्त्रीओथी परिवरला कोइ महेभ्यने जोयो, तेनी पासे मनोहर संगीत थतु हतु तथा ते अर्थीओने इच्छित दान आपतो हतो तेने जोइ राजाए "आ कोण छे ?" एम पोताना सेवकोने पूछ्यु, त्यारे तेओ बोल्या के—"हे स्वामी ! आ समुद्रपाळ नामना सार्थवाहनो अनंगदेव नामनो पुत्र छे " ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के—"अहो ! मारा राज्यमां वणिको पण आवा उदार अने समृद्धि वाळा छे, तेथी मने पण धन्य छे" एम विचारी राजा पोताने घेर गयो. पछी बीजे ज दिवसे राजाना प्रासाद पासे थइने घणा मनुष्योथी वहन करातु एक शब नीकळ्यु ते जोइ राजाए 'आ कोण मरी गयु ?' एम पोताना सेवकोने पूछ्यु, त्यारे तेओ बोल्या के—"हे स्वामी ! काले ज आपे ज अनंगदेवने उद्यानमां क्रीडा करतो जोयो हतो ते ज विशूचिकाना व्याधिथी अकस्मात् मरण पाम्यो छे " ते सांभळी—"अहो ! संध्याकाळना रंगनी जेम आ विश्वमां सर्व पदार्थ अनित्य छे " एम विचारी राजा अत्यंत वैराग्य पाम्यो तेवामां प्रथम कुंडपुर नगरमां ते राजाए जे केवळीने जोया हता, ते केवळी ज्ञानथी तेने दीक्षा योग्य जाणी त्यां पधार्या. तेमनी पासे जइ धर्मदेशना सांभळी प्रतिबोध पामी अपराजित राजाए पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी प्रीतिमती अने विमळबोध सहित दीक्षा ग्रहण करी अने चिरकाळ सुधी तीव्र तप करी ते त्रणे काळधर्म पामीने अग्यारमा देवलोकमां इंद्रना सामानिक देव थया

आ ज भरतक्षेत्रमां श्रीहस्तिनापुर नामना नगरमां श्रीषेण नामे राजा हतो तेने श्रीमती नामनी राणी हती तेमनी कुक्षिमां अपराजितनो जीव अवतर्यो ते वखते राणीए स्वप्नमां शंख जेवो उज्ज्वळ पूर्ण चंद्र जोयो समय पूर्ण थये

राजाए महोत्सवपूर्वक तेने प्रीतिमती साथे परणाव्यो, अने सर्व राजाओने सत्कारपूर्वक विदाय कर्या. पछी अपराजित कुमार प्रीतिथी प्रीतिमती साथे क्रीडा करतो सुखेथी त्यां ज रह्यो.

एकदा हरिनंदी राजानो दूत त्यां आव्यो. आलिंगन करी कुमारे मातापितानी कुशळता पूछी. त्यारे दूत बोल्यो के– " हे कुमार ! मात्र देहने धारण करवाथी तेओ कुशळ छे; परंतु तमे प्रवास कर्यो त्यारथी तेमनां नेत्रोमां पाणी सुकातुं नथी. तमारुं आ वृत्तांत सांभळीने मातापिताए तमने बोलाववा माटे मने मोकल्यो छे. तो हवे तेमने तमारुं दर्शन आपी आनंद पमाडो. " ते सांभळी मातापिताने मळवा उत्सुक थयेलो कुमार तरत ज ससरानी रजा लइ प्रीतिमतीने साथे राखी मित्र सहित चाल्यो. ते कुमार प्रथम जे जे राजानी कन्याओ परण्यो हतो, ते ते राजाओ पोतपोतानी पुत्रीओने लइने हर्षथी तेनी पासे आव्या. एटले सैन्य सहित भूचर अने खेचर राजाओ अने पोतानी प्रियाओथी शोभतो ते कुमार अनुक्रमे सिंहपुर पहोंच्यो. ते वखते हरिनंदी राजा हर्षथी तेनी सन्मुख आव्यो. कुमारे तेने विनयथी नमस्कार कर्या अने राजाए तेने प्रीतिथी आलिंगन कर्युं. माताए पण ते नमता एवा कुमारने पोताना हाथवडे स्पर्श कर्यो. पछी सर्व स्त्रीओ पण सासु ससराने पगे लागी. त्यारपछी विमलबोध मित्रे राजा तथा राणी पासे कुमारनो सर्व वृत्तांत कह्यो, ते सांभळीने ते बन्ने अति हर्ष पाम्या. पछी शहेरमां प्रवेश करी कुमारे सर्व खेचर अने भूचर राजाओने सत्कार पूर्वक विदाय कर्या. अन्यदा हरिनंदी राजा अपराजित कुमारने राज्य सोंपी प्रव्रज्या ग्रहण करी तेनुं आराधन करीने मोक्षे गया. पछी अपराजित राजाए जिनेश्वरोनां चैत्यो वडे पृथ्वीने शणगारी चिरकाळ सुधी राज्यनुं पालन कर्युं.

छे माटे राजा, राजपुत्र के बीजो कोइपण आ कन्याने वादमां जीतशे ते तेनो पति थशे एम अहीं सर्वत्र आघोषणा करावो " ते सांभळी राजाए ते प्रमाणे कर्युं, त्यारे अपराजित कुमार प्रीतिमती पासे आव्यो तेने कुत्सित वेषवाळो जोया छतां पण पूर्वना प्रेमने लीधे प्रीतिमती हर्ष पामी पूर्वपक्ष बोली, एटले तरत ज अपराजिते तेनो उत्तर आप्यो ते सांभळी तत्काळ तेना कंठमां कन्याए वरमाळा आरोपण करी ते जोइ सर्व राजाओ क्रोध पामी सुभटोने युद्ध करवा माटे तैयार करवा लाग्या, अने बोल्या के—" अमे राजाओ छतां आ वाणीथी ज शूरो सामान्य मनुष्य आ कन्याने शी रीते परणी जाय ? " एम बोली तेओए युद्ध आरंभ्युं ते वखते कुमार कोइ मावतने मारी तेना हाथीपर चडी नइ युद्ध करवा लाग्यो वळी कोइ रथीने मारी तेना रथमां बेसी युद्ध करवा लाग्यो ए ज प्रमाणे ते कुमारे घणीवार अश्वस्वार थइ, पत्ति थइ, रथी थइ अने निषादी[1] थइ युद्ध करी सर्वनो पराजय कर्यो पछी " शास्त्रवडे स्त्रीथी जीताया अने शस्त्रवडे आनाथी जीताया " एम विचारी लज्जा पामेला ते सर्व राजाओ फरीथी एकत्र थइ युद्ध करवा आव्या ते वखते कुमार सोमप्रभ राजाना हाथी पर चडी गयो. तेने ते राजाए तेना तिलकादिक चिह्नोथी ओळखी हर्ष पामी कह्युं के—" हे महापराक्रमी भाणेज ! बहु सारु थयुं के में तने ओळख्यो " एम कही ते राजाए तेने आलिंगन कर्युं. पछी सोमप्रभ राजाए ते कुमारना वृत्तांत सर्वने कह्यो, ते सांभळी सर्व राजाओ युद्धथी निवृत्त थया, अने कुमारे पण पोतानुं मूळ स्वरूप प्रगट कर्युं पछी जितशत्रु

१ हाथी स्वार

के—" तने कयो पति इष्ट छे ? " त्यारे ते बोली के—" मने वादमां जे जीते, ते मारो पति थाओ. " आवी तेनी इच्छाने अंगीकार करी राजाए स्वयंवर मंडप कराव्यो, अने सर्व राजाओने दूतद्वारा बोलाव्या, तेमां पुत्रना वियोगथी दुःखी थता एक हरिनंदी राजा विना बीजा सर्व राजाओ पोतपोताना कुमारो सहित आव्या. ते सर्व मंडपमां आवी मांचाओ उपर अनुक्रमे बेठा. ते वखते दैवयोगे भ्रमण करतो अपराजित कुमार पण मित्र सहित त्यां आव्यो, अने 'आपणने कोइ ओळखो नहीं' एम धारी गुटिकाना प्रयोगथी सामान्य रूप धारण करी ते मंडपमां गयो. पछी मनोहर वस्त्रादिक धारण करी सखीओ अने दासीओथी परिवरेली प्रीतिमती कन्या जाणे के बीजी लक्ष्मी होय तेम ते मंडपमां आवी. मालती नामनी तेनी सखी आंगळीवडे राजाओ अने राजकुमारोने देखाडती बोली के—" हे सखी ! आ सर्व खेचरो तथा भूचरो तने वरवा माटे अहीं आव्या छे. तेमांथी जे तने इष्ट होय तेने तुं वर. " ते सांभळी प्रीतिमती जे जे राजा के राजकुमार उपर पोतानी दृष्टि नांखती, तेना तेना उपर कामदेव पण पोताना बाणो नांखतो हतो. पछी ते कन्याए मधुर स्वरे पूर्वपक्ष कर्यो, ते सांभळीने 'शुं आ साक्षात् सरस्वती देवी ज छे ?' एम माणसोए तर्क कर्यो. तेणीना प्रश्ननो जवाब आपवा कोइपण राजकुमार समर्थ थयो नहीं, तेथी सर्वे विलखा थइने पृथ्वी सामुं–नीचुं ज जोवा लाग्या, अने परस्पर कहेवा लाग्या के—" आ कन्याए रूपे करीने ज अमारुं मन हरी लीधुं छे, तेथी मन विना अमे शी रीते उत्तर आपी शकीए ? " त्यारपछी जितशत्रु राजाए विचार कर्यो के—" आ सर्व राजाओमां मारी पुत्रीने लायक वर नथी, तो हवे शुं थशे ? " आ प्रमाणे विचार करता राजाने जोइ एक बुद्धिमान मंत्रीए कह्युं के—"हे स्वामी ! खेद न करो. पृथ्वीपर घणां रत्नो होय

प्रहार उपर ते लगाडी तरत ज राजानु शरीर सज्ज थयु, एटले राजाए कुमारने पूछयु के—" हे भाग्यवान ! कारण विना बधुरूप तु क्याथी आवे छे ?" ते सांभळी तेना मित्रे कुमारनो वृत्तांत कह्यो, त्यारे राजाए फरीथी कह्यु के—"अहो ! तु तो मारा मित्रनो पुत्र छे घणु ज ठीक थयु के पोताने ज घेर तु आव्यो छे." एम कही राजाए पोतानी रंभा नामनी पुत्री तेने परणावी पछी त्या घणा काळ सुधी रहीने प्रथमनी जेम कुमार मित्र सहित त्यांथी नीकळी गयो

अनुक्रमे चालतां ते अपराजित कुमार मित्र सहित कुंडपुर नगरना उद्यानमां आव्यो त्या सुवर्णकमळपर बेठेला केवळीने जोइ तेमने भक्तिथी वदना करी योग्य स्थाने बेसी देशना सांभळी पछी कुमारे हाथ जोडी केवळीने पूछ्यु के—" हे भगवान् ! हु भव्य छु ? के अभव्य छु ? " मुनीश्वरे कह्यु—" तु भव्य छे, अने आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे आ भवथी पांचमे भवे तु बावीशमो तीर्थंकर थइश तथा आ तारो मित्र ते वखते तारो गणधर थशे " आ प्रमाणे सांभळी ते बन्ने मित्रोए आनद पामी चिरकाळ सुधी ते केवळीनी भक्ति करी पछी मुनिए त्यांथी विहार कर्यो त्यारे ते मित्रो ग्रामादिकमां जइ चैत्योने नमवा लाग्या

आ अवसरे जनोने आनद करनारा श्री जनानद नामना नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो तेने धारिणी नामनी राणी हती तेणीनी कुक्षिमां रत्नवतीनो जीव स्वर्गथी च्यवीने अवतर्यो. समय पूर्ण थये राणीए पुत्रीने ज म आप्यो तेनु प्रीतिमती नाम पाडयु अनुक्रमे वृद्धि पामती ते क या समग्र कळाने ग्रहण करी यौवनवयने पामी. तेणीनी पासे विद्वान पण मूर्ख जेवो लागतो हतो, तेथी ते कोइपण पुरुषनी उपर जरापण रजित थती नहोती. एकदा राजाए तेणीने पूछ्यु

पासे गया. त्यां भुवनभानुए तेने आसनपर बेसाडी पोतानी पुत्रीओ परणवानी प्रार्थना करी, परंतु तमारा वियोगना शोकथी कुमार कांइपण बोल्या नहीं. ते जाणी तमने लाववा माटे अमारा स्वामीए अमने आज्ञा करी, तेथी अमे तमने अहीं रहेला जोया ते बहु सारुं थयुं. माटे हे भाग्यवान्! क्रीडावडे वनमां महेल करीने रहेला अमारा स्वामी पासे तमे चालो." ते सांभळी मंत्रीपुत्र हर्षथी तेमनी साथे त्यां गयो. पछी कुमार ते बन्ने कन्याओने हर्षथी परण्यो, अने केटलोक काळ त्यां रह्यो.

पछी प्रथमनी जेम भुवनभानुनी रजा लइ ते बन्ने मित्रो त्यांथी नीकळी श्रीमंदिर नामना नगरमां गया. त्यां सूरकांत विद्याधरे आपेला मणिना प्रभावथी पूर्ण मनोरथवाळा ते बन्ने सुखेथी रह्या. एकदा ते नगरमां लोकोनो कोलाहळ सांभळी कुमारे 'आ शेनो कोळाहळ छे?' एम मित्रने पूछ्युं, त्यारे तेणे तपास करी कुमारने कह्युं के—"आ नगरमां सुप्रभ नामे राजा छे. तेने कोइए छळ कपटथी शस्त्रवडे प्रहार कर्यो छे. ते राजाने राज्य भोगवे तेवो एक पण पुत्र नथी. तेथी नगरना लोको शोकथी आ कोलाहळ करे छे." ते सांभळी कुमार बोल्यो के—"कोइ शत्रुए घा कर्यो हशे." एम कही कुमार दुःखी थयो होय तेम खेद करवा लाग्यो.

हवे ते सुप्रभ राजाने अनेक उपायो कर्या छतां शांति थइ नहीं. त्यारे कामलता नामनी गणिकाए एकांतमां सचिवोने कह्युं के—"आ आपणा नगरमां कोइ परदेशी पुरुष तेना मित्र सहित रहेलो छे. ते कांइपण उद्यम करतो नथी, तोपण तेना सर्व मनोरथो सिद्ध थाय छे. तेनी पासे कांइपण चमत्कारी औषध होवुं जोइए." ते सांभळी मंत्रीओ आदरपूर्वक ते कुमारने राजा पासे लइ गया. त्यां जइ दयाळु कुमारे मित्र पासेथी मणि अने मूलिका लइ मणिना जळमां मूलिकाने घसी तेना

त्यां आव्या, अने तेमना पूछवाथी मंत्रीपुत्रे तेमने सर्व वृत्तांत कह्यो ते सांभळी अमृतसेन राजा अने तेनी राणी हर्ष पाम्या अने तरत ज तेमणे पोतानी पुत्री राजकुमारने परणावी पछी कुमारना कहेवाथी राजाए सूरकांतने अभयदान आप्युं सूरकांते पण ते मणि अने मुलिका तथा वेष बदलवानी गुटिकाओ आग्रहथी राजकुमारने आपवा मांडी, परंतु ते निःस्पृह कुमारे कांइ पण लीधुं नहीं. त्यारे तेणे ते सर्व वस्तु मंत्रीपुत्रने आपी पछी कुमारे अमृतसेनने कह्युं के—" हुं मारा नगरमां जाउं त्यारे आ तमारी पुत्रीने लावजो " एम कही कुमार त्यांथी आगळ चाल्यो, अने कुमारनुं स्मरण करता ते खेचरो पोतपोताने स्थाने गया.

आगळ चालतां अपराजितकुमार एक मोटा अरण्यमां गया त्यां तृषातुर थवाथी तेने आम्रवृक्षनी नीचे बेसाडी मंत्रीपुत्र जळ लेवा गयो. थोडीवारे मंत्रीपुत्र जळ लइने पाछो आव्यो, त्यारे ते स्थाने ते कुमारने जोयो नहीं, तेथी अत्यंत शोकातुर थइ तेने चोतरफ शोधवा लाग्यो, परंतु तेनो पत्तो नहीं लागवाथी ते मंत्रीपुत्र शोकथी मूर्छा पाम्यो. थोडीवारे सावधान थइ अत्यंत विलाप करी कांइक धैर्यने पकडी ते मंत्रीपुत्र फरीथी कुमारने शोधवा लाग्यो अनुक्रमे फरतो फरतो ते नंदिपुरना उद्यानमां आवी उत्कंठापूर्वक बेठो तेटलामां त्यां बे विद्याधरोए आवी तेने कह्युं के—" हे भद्र ! अहीं भुवनभानु नामे प्रसिद्ध विद्याधरराजा छे तेने कमलिनी अने कुमुदिनी नामनी बे पुत्रीओ छे ते बन्नेनो पति तमारो मित्र अपराजित थशे एम ज्ञानीए कह्युं हतुं, तेथी तेने लाववा माटे अमने अमारा स्वामीए आज्ञा आपी एटले अमे ते अरण्यमां तमने बन्नेने जोया, तेटलामां तमे जळ लेवा दूर गया, अने अमे तमारा मित्रने हरीने अमारा स्वामी

खड्गनो प्रहार कर्यो, तेथी तत्काळ ते मूर्छित थइ पृथ्वीपर पड्यो. कुमारे तेने स्वस्थ करी फरी युद्ध करवा कह्युं, ते वखते ते खेचर बोल्यो के—"हे महाभुज ! तें मने जीती लीधो ते ठीक कर्युं छे. हे मित्र ! मारा वस्त्रनी गांठे मणि अने मूळिका बांधेली छे. तेमां मणिना जळवडे मूळिकाने घसीने मारा प्रहारपर लगाड." ते सांभळी कुमारे ते प्रमाणे कर्युं, एटले ते खेचर साजो थयो. पछी अपराजितना पूछवाथी ते विद्याधरे पोतानुं वृत्तांत आ प्रमाणे कह्युं.—

आ कन्या अमृतसेन नामना विद्याधरराजानी पुत्री छे, तेनुं नाम रत्नमाळा छे, तेने कोइ ज्ञानीए कह्युं हतुं के—"तारो भर्ता अपराजित थशे." त्यारपछी एकदा में तेना विवाह माटे प्रार्थना करी, त्यारे तेणीए मने कह्युं के—"मारा भर्तार अपराजित थशे अथवा मारा देहने अग्नि बाळशे." ते सांभळी मने तेनापर क्रोध चड्यो. हुं श्रीषेण नामना विद्याधर-राजानो सूरकांत नामनो पुत्र छुं. पछी में आने माटे थइने घणी दुःसाध्य विद्याओ साधी, अने आनी घणे प्रकारे याचना करी, परंतु तेणीए मारुं मान्य राख्युं नहीं. त्यारे 'आनी अग्निदाहनी प्रतिज्ञा पूर्ण थाओ.' एम धारीने क्रोधथी आने अहीं लावी अग्निमां नांखवा तैयार थयो, तेवामां आना अने मारा पुण्यनी प्रेरणाथी तमे अहीं आवी पहोंच्या अने माराथी आनुं रक्षण कर्युं, तेम ज स्त्रीहत्याने लीधे थती दुर्गतिथी मारुं पण रक्षण कर्युं. परंतु हे परोपकारी ! तमे कोण छो ? ते कहो." आ प्रमाणे तेना पूछवाथी मंत्रीपुत्रे ते राजकुमारनुं नाम विगेरे कह्युं. ते सांभळी रत्नमाळा चित्तमां अत्यंत आनंद पामी अने कामदेवना बाणना विषयने पामी, अर्थात् कामातुर थइ. तेवामां रत्नमाळाना मातपिता पण तेणीने शोधता शोधता

राजानो पुत्र छे ? हे वीर ! आवा पराक्रमथी तें तारा पिताने लजव्यो नथी तु आज मारो अतिथि थयो ते सारु थयु अने तने आजे में जोयो ते पण घणु सारु थयु " आ प्रमाणे कही पोताना हाथीपर कुमारने बेसाडी राजाए तेने आलिंगन कर्यु पछी मंत्रीपुत्र सहित तेने पोताने घेर लइ नइ पोतानी कनकमाला नामनी पुत्रीने तेनी साथे परणावी त्या त केटलाक दिवस सुखे रह्यो

एकदा कुमार मित्रसहित प्रयाणमां विघ्नना भयथी राजानी रजा लीधा विना ज रात्रिने समये त्याथी नीकळी गया जता जतां एक मोटा अरण्यमां ते आव्यो. तेटलामां तेणे 'हा ! हा ! आ पृथ्वी वीरपुरुष रहित ज छे' एम करुणस्वर वाळु रुदन सांभळ्यु तेथी ते वीरकुमार शब्दने अनुसारे ते तरफ गयो आगळ जतां तेणे एक जाज्वल्यमान अग्निना कुडनी पासे रहेली कोइ स्त्रीने तथा तेनी पासे खड्ग खेंचीने उभेला एक पुरुषने जोयो. ते कुमारने जोइ ते स्त्री बोली के— " जो अहीं कोइपण वीरपुरुष होय तो ते आ अधम विद्याधरथी मारु रक्षण करो " ते सांभळी कुमारे तेनी पास जइ कह्यु के—" अरे दुष्ट गर्ववाळा ! युद्धने माटे तैयार था अबळा उपर बळनो गर्व शु करे छे ? " ते सांभळी ते विद्याधर बोल्यो के—" तु पण परलोकमां आ स्त्रीनो सथवारो था " एम बोली उद्धत एवो ते युद्ध करवा तैयार थयो प्रथम ते बन्ने वीरोए चिरकाळ सुधी खड्गवडे युद्ध कर्यु पछी बाहुयुद्ध कर्यु तेमां ते विद्याधरे ते कुमारने नागपाशवडे बांध्यो, तेने कुमारे जीर्ण रज्जुने हाथीनी जेम तत्काळ तोडी नांख्या पछी विद्याधरे अपराजित उपर विद्यामन्त्रित शस्त्रोवडे घणा प्रहारो कर्या परतु पुण्यशाळी ते कुमारने ते प्रहारो कांइपण करी शक्या नहीं छेवट सूर्योदय वखते कुमारे विद्याधरना मस्तकपर

वाळा अश्वे हरण कर्युं, तेथी तेओ एक मोटा वनमां आवी पहोंच्या. त्यां अपराजित कुमारे मंत्रीपुत्रने कह्युं के-" आपणे अश्वथी हरण करेला अहीं आव्या ते ठीक थयुं, केमके आपणे पितानी आज्ञाने आधीन होवाथी तेमनी आज्ञा विना बहार जइने आपणे देशांतर जोइ शकत नहीं. अने तेओ आपणी उपरना प्रेमथी आपणने आज्ञा आपत नहीं. हवे तो आपणा मातपिता आपणा विरहने सहेजे सहन करशे ज, तेथी आपणे हवे घेर नहीं जतां पृथ्वीपर फरीने कौतुक जोशुं." ते सांभळी मंत्रीपुत्रे तेना मतने संमति आपी. तेटलामां 'रक्षण करो. रक्षण करो." एवी वाणी बोलतो एक पुरुष त्यां आव्यो. भयभीत थयेला तेने राजकुमारे 'तुं कोइथी भय पामिश नहीं.' एम कह्युं, तेटलामां त्यां हाथमां खड्ग धारण करनार केटलाक योद्धाओ आव्या. तेओ बोल्या के—" आ अमारा नगरनो चोर छे, तेने अमे हणशुं, माटे हे पथिको ! तमे अहींथी चाल्या जाओ." ते सांभळी कुमारे कह्युं के—" मारा आश्रितने हणवा इंद्र पण शक्तिमान नथी, तो बीजानी शक्ति क्यांथी होय ?" आवुं कुमारनुं वचन सांभळी ते सुभटो तेने ज मारवा दोड्या. एटले कुमारे खड्ग खेंची ते सर्वने नसाडी मूक्या. तेओए जइ पोताना स्वामी कोशळा नगरीना राजाने ते वृत्तांत कह्यो. त्यारे राजाए पोतानुं समग्र सैन्य मोकल्युं. तेनो पण कुमारे पराजय कर्यो. त्यारपछी राजा चतुरंग सैन्य सहित आव्यो, त्यारे कुमारे मंत्रीपुत्रने ते चोर सोंप्यो अने पोते युद्ध करवा तैयार थयो. पछी एक हाथीना दांतपर पग दइ तेनापर चडी तेना मावतने हणी ते कुमार भयंकर युद्ध करवा लाग्यो. ते वखते ते राजाना कोइ मंत्रीए ते कुमारने प्रथम जोयेलो होवाथी ओळखीने राजाने कह्युं. त्यारे राजाए सैन्यने युद्धथी निवारी कुमारने कह्युं के-" अहो वत्स ! शुं तुं मारा मित्र हरिनंदि

दाय करी पिता सहित पोताने घेर गयो

पछी अनंगसिंहे पोतानी पुत्री आपवा माटे पोताना मत्रीने मोकल्यो. तेणे सूरचक्री पासे जइ प्रणाम पूर्वक कह्यु के— " हे स्वामी ! आ चित्रगति अने मारा स्वामीनी पुत्री रत्नवती ए बन्ने अधिक गुणवान छे, तथी ते बन्नेना परस्पर सबध थी ते आनद पामो " ते सांभळी सूरचक्रीए ते अगीकार कर्यु पछी मोटा उत्सवथी ते बन्नेना विवाह थया चित्रगति ते स्त्रीनी साथे यथावसरे धर्म अने सांसारिक सुख भोगववा लाग्यो, एकदा सूरराजा चित्रगतिने राज्य सोंपी चारित्र ग्रहण करी अनुक्रमे मोक्षे गया

त्यारपछी आश्चर्यकारक विद्या अने बळनी समृद्धिवाळा चित्रगति राजाए चिरकाळ सुधी विद्याधरचक्रीनु पद अनुभव्यु एकदा पोताना सामत राजाना बे पुत्रो राज्यने माटे परस्पर युद्ध करीने मरण पाम्या, ते जोइ चित्रगतिने परम वैराग्य थयो तेथी पोताना पुत्रने राज्य सोंपी ते चित्रगति राजाए प्रिया सहित दमधर नामना मुनि पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी अनुक्रमे चिरकाळ सुधी विहार करी छेवट अनशनवडे काळ करी रत्नवती सहित ते चोथा देवलोकमां देव थया

पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां पद्म नामनी विजयमां सिंहपुर नामे पुर छे तेमां हरिनदी नामे राजा हतो तेने यथार्थ नामवाळी प्रियदर्शना नामनी राणी हती तेनी कुक्षिमां चित्रगतिनो जीव स्वर्गथी चवीने उतर्यो. खाणनी पृथ्वी रत्नने प्रसवे तेम तेणीए समय पूर्ण थये पुत्र प्रसव्यो, तेनु नाम राजाए अपराजित पाड्यु अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळाने ग्रहण करी युवावस्था पाम्यो तेने सचिवनो पुत्र विमलबोध नामनो मित्र हतो एकदा ते बन्ने कुमारोनु वक्रगति-

एकदा चित्रगति यात्रामहोत्सव करवा सिद्धायतनमां गयो. त्यां बीजा पण घणा विद्याधरो एकठा थया हता. ते वखते अनंगसिंह पण पोतानी कन्या रत्नवती सहित आव्यो. त्यां चित्रगति भक्तिथी जिनप्रतिमानी पूजा करी स्तुति करवा लाग्यो. ते वखते सुमित्र देव पण मित्रने जोवा माटे त्यां आव्यो अने चित्रगतिना मस्तकपर तेणे विचित्र पुष्पोनी वृष्टि करी. ते जोइ अनंगसिंहे तेने पोतानी पुत्रीनो थनार पति जाण्यो. ते वखते सुमित्र देवे पण प्रत्यक्ष थइ 'मने तुं ओळखे छे? एम चित्रगतिने पूछ्युं. त्यारे 'तमे महर्द्धिक देव छो' एम चित्रगति बोल्यो, त्यारे तेनी ओळखाणने माटे देवे पोतानुं पूर्व भवनुं स्वरूप बताव्युं. तरत ज आनंदथी तेने आलिंगन करी चित्रगतिए कह्युं के—"हे महाभाग्यवान! तमारा प्रसादथी ज मने आ धर्म प्राप्त थयो छे." देवे कह्युं—"ते वखते मारुं विष उतारी मने जीवित आपवाथी आ देवनी लक्ष्मी पण तमे ज मने आपी छे, नहीं तो ते ज वखते मारुं कुमरण थवाथी मारी आ गति क्यांथी थात ?" आ प्रमाणे परस्परना उपकारोने कहेता ते बन्नेने जोइ सूरचक्री विगेरे सर्व विद्याधरो हर्ष पाम्या.

ते वखते चित्रगति रत्नवतीना नेत्रमार्गे थइने तेणीना हृदयमां पेठो अने तेनी स्पर्धाथी ज कामदेवे पण त्यां ज पोतानुं स्थान कर्युं. कामग्रहथी व्याकुळ थयेली तेणीए तत्काळ लज्जारूपी वस्त्रनो त्याग करी विविध प्रकारनी चेष्टावडे पोतानो भाव प्रगट कर्यो. तेणीने कामातुर जोइ अनंगसिंहे विचार्युं के—"आ महा मनवाळाए मारा खड्गनी जेम आ मारी पुत्रीनुं मन पण हरण कर्युं छे, तेथी आने अहीं ज हुं मारी कन्या आपुं. फोगट काळक्षेप शा माटे करवो ? परंतु आ धर्मने स्थाने आवुं व्यावहारिक कार्य करवु योग्य नथी." ए प्रमाणे विचारी ते पोताने घेर गयो. चित्रगति पण मित्रदेवने वि-

पण जोइ शकतो नहोतो आवा गाढ अंधकारमा ते चित्रगति तत्काळ अनगसिंह पासे जइ तेना हाथमांथी ते खड्ग खुंचवी लइ तथा सुमित्रनी बहेनने लइ नतो रह्यो. पछी एक क्षणवारमां अंधकारनो नाश थयो, ते वखते अनगसिंहे पोताना हाथमां खड्गरत्न जोयु नहीं, तेम ज पासे रहेला शत्रुने पण जोयो नहीं. तेथी ते क्षणवार खेद करवा लाग्या, तेटलामां ज्ञानीनु वचन याद आववाथी ते संतुष्ट थयो अने 'आनी पधारे स्वामी शाश्वत चैत्यमां थशे' एम विचारी अनगसिंह पोताने स्थाने गयो.

चित्रगतिए सुमित्रने अखंड शीळवाळी तेनी बहेन सोंपी ते ज वखते बहेनना हरणना दु खथी विरक्त थयेला सुमित्रे पोताना पुत्रने राज्य सोंपी सुयशा नामना मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करी चित्रगति पोताने स्थाने गयो.

हवे सुमित्रराजर्षि कांइक न्यून नव पूर्वनो अभ्यास करी गुरुनी आज्ञाथी एकाकी विहार करता मगध देशमां गया त्यां कोइ गामनी बहार ते कायोत्सर्ग रह्या. तेवामां त्यां तेमनो सापत्न भाइ पद्म आव्यो तेणे मुनिने ओळखी क्रोध पामी तरत ज तेना हृदयमा तीक्ष्ण बाण मार्युं परंतु मुनिए तेनापर जरापण क्रोध नहीं करतां विचार्युं के-" मारो ज आ दोष छे के जेथी ते वखते आ मारा भाइने में राज्य आप्यु नहीं, तेथी हमणां हु आने तथा बीजा सर्व प्राणीओने खमावु छु " आ प्रमाणे विचारी अनशन ग्रहण करी ते सुमित्रराजर्षि शुभ ध्यानथी मरण पामी ब्रह्मलोक नामना पांचमा देवलोकमां इंद्रनो सामानिक देव थयो, अने पद्म ते ज रात्रे सर्पडंशथी मरण पामी तमस्तमा नामनी सातमी नरके गयो चित्रगति सुमित्रना मरणथी अत्यंत शोकातुर थयो.

आ प्रमाणे कही ते राजाए सुमित्रने राज्य सोंपी तेज केवळीनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी सुमित्र मित्रसहित पोताना नगरमां गयो, अने पोताना नाना भाइ पद्मने केटलाक गाम आप्या. परंतु ते निर्बुद्धि एकलो क्यांइ पण जतो रह्यो. पछी एकदा चित्रगति विद्याधरकुमार सुमित्रराजानी रजा लइ पोताना नगरमां गयो. परंतु मित्रनी जेम धर्मकार्यने ते कदापि विसरतो नहोतो.

एकदा सुमित्रनी बहेन के जे कलिंग देशना राजानी प्रिया हती, तेने अनंगसिंहनो पुत्र अने रत्नवतीनो भाइ कमळ हरी गयो. ते सांभळीने सुमित्र राजा व्याकुळ थयो. ते वृत्तांत विद्याधरना मुखथी चित्रगतिना जाणवामां आव्यो, त्यारे ते बोल्यो के—" मारा मित्रनी बहेनने हुं शीघ्रपणे शोधीने लइ आवीश. " पछी विद्याना प्रभावथी तेणीने कमळे हरण करी छे एम जाणी ते महा बळवान चित्रगति तत्काळ शिवमंदिर पुरमां गयो. त्यां तेणे कमळनी साथे विग्रह करी तेनो निग्रह कर्यो. ते जाणी कमळनो पिता अनंगसिंह क्रोध पामी सिंहनी जेम चित्रगति उपर धस्यो. बन्नेनुं परस्पर भयंकर युद्ध थयुं. तेमां चित्रगतिने दुर्जय जाणी अनंगसिंहे पोताना दिव्य खड्गनुं स्मरण कर्युं, एटले तरत ज ज्वाळानी श्रेणिथी व्याप्त अने शत्रुना मदनो नाश करनार देवनुं आपेलुं खड्गरत्न तेना हाथमां प्राप्त थयुं. पछी अनंगसिंहे चित्रगतिने कह्युं के—" हे मूर्ख ! शा माटे फोगट मरवा इच्छे छे ? अहींथी जतो रहे. नहीं तो आ खड्गथी हमणां ज तुं मरणने शरण थइश." ते सांभळी चित्रगति बोल्यो के–" आ लोढाना खड्गथी तुं जे मद करे छे तेज प्रगटपणे तारुं बळहीनपणुं सूचवे छे. " ए प्रमाणे कही तेणे विद्याथी तत्काळ तमस्काय जेवुं गाढ अंधकार विकुर्व्युं, तेथी कोइपण मनुष्य पोताना हाथमां रहेली वस्तुने

बाजे दिवसे सुमित्र अने चित्रगति उद्यानमां गया त्यां देवोथी परिवरेला अने सुवर्णकमळपर बठेला ते केवळीने जोया तेमने हर्षथी वदना करी ते बन्ने मित्रो तेमनी पासे बेठा सुग्रीव राजा पण ते वृत्तांत सांभळी हर्षथी परिवार अने पुरजनो सहित मुनिनी पासे आव्यो अने विधिपूर्वक केवळीने वदना करी योग्य स्थाने बेठो ते वखते जगतने हितकारक एवा मुनीश्वरे तेमने धर्मोपदेश आप्यो ते सांभळी आनंद पामेला चित्रगतिए गुरुने कह्यु के—" हे भगवान ! आ मित्रना प्रसादथी आपनी धर्मदेशना सांभळी हु प्रतिबोध पाम्यो छु, तेथी हे प्रभु ! आपनी पासे समकित सहित श्रावकधर्मने हु ग्रहण करु छु " एम कही धर्ममां वीर्यना उल्लासवाळा अने पापकर्मथी विराम पामेला ते विद्याधरकुमारे देशविरति अंगीकार करी

त्यारपछी सुग्रीव राजाए हाथ जोडी मुनीश्वरने पूछ्यु के–" हे प्रभु ! मारा पुत्रने विष आपीने ते मारी राणी क्यां गइ ? " मुनि बोल्या के—" ते अहींथी नाशीने एक अरण्यमां गइ त्यां चोरोए तेनां आभरणो उतारी लइ तेने पल्लीपतिने सोंपी पल्लीपतिए धन लइ कोइ वेपारीने वेचाती आपी कोइ वखत लाग मळवाथी वेपारी पासेथी नाशीने ते अरण्यमां गइ त्यां दावानळ वडे बळीने पहेली नरके गइ ' पापीनी सद्गति क्यांथी होय ? ' पछी पहेली नरकमांथी नीकळीने ते कोइक चंडाळनी स्त्री थशे त्यां सपत्नी साथे कजीओ थतां सपत्नीथी हणाइने त्रीजी नरकमां जशे त्यांथी नीकळीने ते तिर्यंच गतिमां अनेक दुःखो पामशे " आ प्रमाणे सांभळी वैराग्य पामेला राजाए गुरुने कह्यु के—" जेने माटे तेणीए आवु कृत्य कर्युं, ते तेणीनो पुत्र तो अहींज छे, परतु ते पोते ज नरकमां गइ तो आवा असार संसारने धिक्कार छे "

गंधनी जेम पापीनुं पाप छानुं रही शकतुं नथी.'

आ अवसरे दैवयोगे ते चित्रगति विद्याधर राजपुत्र आकाशमार्गे त्याथी नीकळ्यो. तेणे राजा अने लोकोने विलाप करता जोइ, विषनुं वृत्तांत जाणी, तेमनी पासे आवी मंत्रित जळवडे ते सुमित्रकुमारने अभिषेक कर्यो, तेथी तत्काळ सुमित्र चेतना पाम्यो अने राजादिक सर्वने शोकातुर जोइ ' आ बधुं शुं छे ? ' एम तेणे पूछ्युं, त्यारे राजाए कह्युं के—"हे वत्स ! तारी विमाताए तने विष आप्युं हतुं, ते आ निष्कारण बंधुए शमन कर्युं छे." ते सांभळी सुमित्रे ते विद्याधरकुमारने हाथ जोडी कह्युं के—" हे भाइ ! तमारुं नाम अने वंश कहीने अमारा कान पवित्र करो. कारण के तमारी जेवा उपकारीनुं नामादिक सांभळ्युं होय तो तेथी पण घणुं पुण्य प्राप्त थाय छे." ते सांभळी चित्रगतिनी साथे ज आवेला तेना मित्रे चित्रगतिनुं नाम, कुळ विगेरे कह्युं, ते सांभळी सुमित्र हर्ष पामी बोल्यो के—" अहो ! विष अने विषना आपनारे मारा उपर घणो उपकार कर्यो, के जेथी वादळा विनाना अमृतना वरसादनी जेम मने अकस्मात् तमारा दर्शन थयां. जीवितने आपनार तथा बाळमृत्युथी उत्पन्न थती दुर्गतिथी रक्षण करनार तमारो हुं शी रीते प्रत्युपकार करी शकुं ? जगतना लोको मेघनो शो प्रत्युपकार करी शके ? " आनां तेनां वचनो सांभळी चित्रगति तेना गुणोथी आनंद पाम्यो. पछी मित्रपणाने पामेला ते सुमित्र पासे विद्याधरकुमारे पोताना नगर तरफ जवानी रजा मागी. त्यारे सुमित्रे तेने कह्युं के—" हे मित्र ! सुयशा नामना केवळी भगवान विहारना क्रमथी आज काल अहीं पधारवाना छे, तेमने वंदना करीने पछी तमे जाओ, एम हुं इच्छुं छुं." आ प्रमाणे सुमित्रना कहेवाथी चित्रगति त्यां रोकायो.

तेने चद्रनी प्रभा जेवा उज्वळ गुणवाळी शशिप्रभा नामनी प्रिया हती तेणीनी कुक्षिमा धनवतीनो जीव स्वर्गथी चवीने अवतर्यो अनुक्रमे शशिप्रभाए उत्तम रूपवाळी पुत्रीने जन्म आप्यो तेना पिताए तेनु रत्नवती नाम पाड्यु अनुक्रमे वृद्धि पामती ते कन्या समग्र कळामां निपुण थइ युवावस्थाने पामी एकदा राजाए कोइ ज्ञानी मुनिने पूछ्यु के—" आ मारी पुत्रीनो पति कोण थशे ? " मुनिए कह्यु के—" हे राजा ! जे तारा हाथमांथी दिव्य खड्गने हरण करी लेशे, तथा जेना उपर नित्यचैत्यने विषे पुष्पवृष्टि थशे, ते नररत्न तमारी कन्याने परणशे " ते सांभळी राजाए विचार्यु के—" जे मारा हाथमांथी खड्गने खुचवी ले तेवो महा बळवान मारो जमाइ थशे " एम विचारीने ते पोताना मनमां घणो हर्ष पाम्यो

आ ज भरतक्षेत्रने विषे चक्रपुर नामनु नगर छे तेमां सुग्रीव नामे राजा हतो तेने यशस्विनी अने भद्रा नामनी बे राणीओ हती तेमां पहेली राणीने सुमित्र नामे पुत्र थयो, ते जनधर्ममां रक्त, गुणवान अने सज्जनोरूपी कमळोने हर्ष आपवामां सूर्यनी जेवो सज्ज–तैयार हतो बीजी राणीने पद्म नामनो पुत्र थयो, ते कपटनु घर अने गुण रहित हतो एकदा भद्राए विचार्यु के—"ज्या सुधी आ सुमित्र हयात छे, त्यां सुधी मारा पुत्रने स्वप्नमा पण राज्य मळवु दुर्लभ छे " एम विचारी तेणीए गुप्त रीते सुमित्रने उग्र विष आप्यु तेथी सुमित्र मूर्छा पाम्यो ते जोइ राजा अत्यत व्याकुळ थयो अने तत्काळ मत्रादिकवडे तेना उपाय कराववा लाग्यो. परतु कुमारने कोइपण रीते जरा पण चेतना आवी नहीं, त्यारे सर्व परिवार अने पुरना जनो सहित राजा पुत्रना गुणोने संभारी संभारीने शोक करवा लाग्यो 'आ कुमारने भद्राए विष आप्यु छे' एम लोकोना जाणवामा आव्यु, तेथी लोको तेणीनी निंदा करवा लाग्या ते जाणी भद्रा त्याथी नाशी गइ ' लमणनी

वहोराव्यां, अने धर्म शीखवा माटे मुनिने थोडा दिवस त्यां ज राख्या. मुनिए पण केटलाक दिवस त्यां रही तेमने धर्ममां दृढ करी अन्यत्र विहार कर्यो.

ते दंपती पण परस्परना प्रेमनी जेम अखंडपणे श्राद्धधर्मनुं पालन करवा लाग्या. अनुक्रमे ते धनकुमारने तेना पिताए राज्यपर स्थापन कर्यो, एटले ते धनराजा नीतिथी राज्यनुं पालन करतो श्रावकधर्मनुं सेवन करवा लाग्यो. एकदा वसुंधर नामना मुनि त्यां पधार्या. तेमने धनराजा पोतानी धनवती प्रिया सहित वांदवा गयो. विधिपूर्वक मुनिने वांदी तेमना मुखथी संसारसमुद्रने तरवामां नाव समान धर्मदेशना सांभळी ते राजा संसारथी विरक्त थयो. एटले तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पोतानी प्रिया सहित ते ज गुरुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे शास्त्रनो अभ्यास करी धनराजर्षि गीतार्थ थया. पछी आचार्यपद प्राप्त करी धर्मदेशनावडे भव्य प्राणीओनो उपकार करी छेवट अनशन ग्रहण करी ते धनराजर्षि धनवती साध्वी सहित काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां इंद्रना सामानिक देव थया.

आ ज भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तरश्रेणिने विषे सूरतेज नामनुं नगर छे. तेमां सूर नामे विद्याधर राजा हतो. तेने विद्युन्मती नामनी प्रिया हती. धननो जीव सौधर्ममांथी चवीने विद्युन्मतीनी कुक्षिमां अवतर्यो. पछी समय पूर्ण थयो त्यारे ते राणीए शुभ लक्षणवाळो पुत्र प्रसव्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनु चित्रगति नाम पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार गुरु पासेथी समग्र कळाओने ग्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो.

हवे ते ज वैताढ्य पर्वत उपर दक्षिण श्रेणिमां शिवमंदिर नामनुं नगर छे. तेमां अनंगसिंह नामनो राजा हतो.

आ ज भरतक्षेत्रमां अचलपुर नामनु पुर छे तेमां श्रीविक्रमधन नामे राजा हतो तेने धारिणी नामनी राणी हती तेमने धन नामनो पुत्र हतो ते सर्व कळाना समूहने पामीने अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते कुसुमपुरना राजा सिंहनी धनवती नामनी कन्याने परण्यो लक्ष्मीनी साथे विष्णुनी जेम ते धनवतीनी साथे क्रीडा करतो ते धनकुमार एकदा ग्रीष्म ऋतुमां मध्याह्न समये क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गयो त्यां तेणे पृथ्वीपर मूर्छित थयेला एक मुनिने जोया. ते मुनिनु तालवु तृपाथी सुकाइ गयु हतु, तपवडे तेनु शरीर अति कृश हतु, अने गुणवडे तो ते शांतरसना समुद्र हता तेमनी आवी स्थिति जोइ ते बन्ने दंपतीए तेमनी पासे जइ शीतळ उपचार करी शीघ्रपणे तेमने स्वस्थ कर्या. पछी विनयथी मुनिने वंदना करी धनकुमारे तेमने पूछ्यु के—" हे भगवान् ! आपनी आवी अवस्था केम थइ ? " मुनिए जवाब आप्यो के—" हु मुनिचंद्र नामनो साधु छु मोटा गच्छनी साथे विहार करता सार्थथी भ्रष्ट थयो, तेथी आ वनमां दिशा नहीं सूझवाथी आमतेम भ्रमण करवा लाग्यो अनुक्रमे क्षुधा अने तृपाथी पीडा पाम्यो, चालतां चालतां थाकी गयो, अने आ ग्रीष्म ऋतुना तापथी अकळाइ गयो, तेथी अहीं मूर्छा आववाथी पडी गयो हतो तेटलामां तमारा आववाथी, ने तमे करेला उपचारथी हु चेतना पाम्यो छु तेथी धर्ममां सहाय आपनारा तमने धर्मलाभ हो वळी हे महानुभाव ! जेम प्रतिमा विना देवालय शोभतु नथी, तेम धर्म विना आ मनुष्यभव शोभतो नथी, तेथी बुद्धिमान पुरुषोए निरंतर धर्ममां उद्यम करवो योग्य छे " आ प्रमाणे कहीने मुनिए ते दंपतीने पासे समकित सहित श्रावकधर्मनो उपदेश आप्यो ते सांभळी प्रतिबोध पामी ते बन्नेए ते मुनि पासे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. पछी मुनिने निमंत्रण करी पोताने घेर लइ जइ तेमने अन्न पाणी

(तासिं) ते (दोण्हं पि) बन्ने भार्याओने (अइट्ठा) अत्यंत इष्ट—वल्लभ एवा (रामकेसवा) बळराम अने केशव—कृष्ण नामना (दो पुत्ता) बे पुत्रो थया. राम अने केशव प्रथम उत्पन्न थया हता तथा श्रीनेमिनाथना विवाहादिक कार्यमां तेमनी जरुर छे तेथी तेमने प्रथम लख्या छे. २.

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए। समुद्दविजए नामं, रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥

अर्थ—(सोरियपुरम्मि) शौर्यपुर नामना (नयरे) नगरमां (महिड्ढिए) मोटी ऋद्धिवाळा अने (रायलक्खणसंजुए) राजानां लक्षणोए करीने युक्त एवा (समुद्दविजए नामं) समुद्रविजय नामना (राया) राजा (आसि) हता. अहीं वसुदेव अने समुद्रविजय साथे ज रहेता हता एवुं जणाववा माटे फरीथी शौर्यपुर लख्युं छे. ३.

तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्ते महायसे। भयवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥

अर्थ—(तस्स) ते समुद्रविजयने (सिवा नाम) शिवा नामनी (भज्जा) भार्या हती. (तीसे) ते शिवादेवीना (पुत्ते) पुत्र (भयवं) भगवान (अरिट्ठनेमि त्ति) श्रीअरिष्टनेमि एवा नामना (महायसे) महा यशवाळा, (लोगनाहे) त्रण लोकना नाथ अने (दमीसरे) मुनिओना स्वामी हता. ४. (हवे पछी थवाना होवाथी ते अपेक्षाए दमीश्वरनुं विशेषण आप्युं छे.)

अहीं प्रसंगने लीधे श्रीनेमिनाथनुं चरित्र संक्षेपथी कहे छे.—

अथ रथनेमीय नामनु बावीशमु अध्ययन २२

एकवीशमा अध्ययनमा विविक्तचर्या कही, ते धैर्यवतने सुखेथी पाळी शकाय छ, छतां कदाचित् कोइक प्रकारे मनना परिणाम धर्मथी भ्रष्ट थाय ते वखते रथनेमिनी जेम चारित्रने विषे धृति करवी, एम जणाववा माटे आ अध्ययन रच्यु छे तेनु आ प्रथम सूत्र छे —

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए । वसुदेव त्ति नामेण, रायलक्खणसजुए ॥ १ ॥

अर्थ —(सोरियपुरम्मि) शौर्यपुर नामना (नयरे) नगरमां (महिड्ढिए) मोटी ऋद्धिवाळा तथा (रायलक्खणसजुए) हाथ पगना तळीयामां चक्र, स्वस्तिक, अंकुश विगेरे अथवा औदार्य, धैर्य, गांभीर्य विगेरे राजानां लक्षणोवडे युक्त (वसुदेव त्ति नामेण) वसुदेव एवा नामे (राया) राजा (आसि) हता जो के शौर्यपुरमां समुद्रविजय विगेरे दश दशार्हो, दश भाइओ हता, तेमां वसुदेव सौथी नाना हता, तोपण वसुदेवना पुत्र कृष्ण थया छे तेथी अहीं वसुदेवनु वर्णन कर्युं छे. १

तस्स भज्जा दुवे आसि, रोहिणी देवई तहा । तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता, इट्ठा रामकेसवा ॥२॥

अर्थ—(तस्स) ते वसुदेवने (रोहिणी) रोहिणी नामनी (तहा) तथा (देवई) देवकी नामनी (दुवे) बे (भज्जा) भार्या (आसि) हती जो के वसुदेवने बहोंतेर हजार स्त्रीओ हती तोपण अहीं बेनी ज जरुर होवाथी बे ज लखी छे

(अणुत्तरेनाणधरे) सर्वोत्तम ज्ञान ज केवळज्ञान तन धारण करनारा तथा (जंसंसी) यशस्वी थया सतां (अंतलिक्खे) आकाशने विषे (सूरिए व) सूर्यनी जेम (ओभासई) प्रकाशता हवा—शोभता हवा. २३.

हवे उपसंहार—समाप्त करवा पूर्वक तेनुं ज फळ कहे छे.—

दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं, निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोहं, समुद्दपालो अपुणागमं गए त्ति बेमि ॥ २४ ॥

अर्थ—(य) तथा (दुविहं) घाती अने भवोपग्राहि—अघाती एम बे प्रकारना (पुण्णपावं) शुभ अने अशुभ प्रकृतिरूप कर्मने (खवेऊण) खपावीने—क्षय करीने (निरंगणे) निरंगन—गयुं छे अंगन एटले चालवुं जेनाथी एटले संयममां निश्चळ तथा (सव्वओ) सर्वथी एटले बाह्य अने आभ्यंतर परिग्रहथी (विप्पमुक्के) रहित एवा (समुद्दपालो) समुद्रपाळ मुनि (समुद्दं व) समुद्रनी जेवा (महाभवोहं) मोटा स्वर्गादिक भवना समूहने (तरित्ता) तरीने (अपुणागमं) जेनाथी पाछुं आववानुं नथी एवा अपुनरागमने एटले मोक्षने (गए) पाम्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. २४.

इति एकविंशमध्ययनम् ॥ २१ ॥

विवित्तलयणाणि भइज्ज ताई, निरूवलेवाई असथडाइ ।
इसीहिं चिणाई महायसेहिं, कायेण फासेज्ज परीसहाइ ॥ २२ ॥

अर्थ—(ताई) छकाय जीवनी रक्षा करनार ते समुद्रपालित मुनि (निरूवलेवाइ) द्रव्यथी छाण विगेरेना लेप रहित अने भावथी राग एटले ममतारूपी लेप रहित, तथा (असथडाइ) असस्कृत एटले शालि विगेरे बीजना मघट्टा रहित, तथा (महायसेहिं) महा यशवाळा (इसीहिं) मुनिओए (चिणाइ) सेवेलां एवां (विवित्तलयणाणि) विविक्त एटले स्त्री, पशु, पडक रहित एवां आलय एटले उपाश्रयने (भइज्ज) सेवता हवा, तथा (कायेण) कायावडे (परीसहाइ) परीषहोने (फासज्ज) स्पर्श एटले सहन करता हवा २२

त्यारपछी ते केवा थया ? ते कहे छे —

से नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तर चरिउ धम्मसचय ।
अणुत्तरेनाणधरे जससी, ओभासई सूरिइ वतलिक्खे ॥ २३ ॥

अर्थ—(नाणनाणोवगए) ज्ञान एटले श्रुतज्ञान, तेणे करीने जे ज्ञान एटले सम्यक् प्रकारे क्रियाना समूहनु जाणवु, तेणे करीने सहित अर्थात् श्रुतज्ञान अने क्रियाना ज्ञाने करीने सहित एवा (से) ते समुद्रपाळ नामना (महेसी) महर्षि (अणुत्तर) सर्वोत्तम (धम्मसचय) धर्मना समूहने एटले क्षात्यादिक दश प्रकारना चारित्रधर्मने (चरिउ) सेवीने

अर्थ—(अणुन्नए) अनुन्नत एटले अभिमान रहित अने (नावणए) नावनत एटले दीनता रहित एवा जे (महेसी) महर्षि (पूअं) पूजानो–स्तुतिनो (गरिहं च) तथा गर्हानो–निंदानो (न यावि संजए) संग न ज करे एटले स्तुति अने निंदानो प्रसंग न करे, अर्थात् साधु पोतानी स्तुति सांभळी हर्ष न करे अने निंदा सांभळी दुःख न पामे. (से) ते (संजए) साधु (उज्जु भावं) सरळताने (पडिवज्ज) अंगीकार करीने (विरए) पापथी विराम पाम्या सता (निव्वाणमग्गं) मोक्षमार्गने (उवेइ) पामे छे. २०.

वळी ते साधु केवा थइने शुं करे छे ? ते कहे छे.—

अरइरइसहे पहीणसंथवे, विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥

अर्थ—(अरइरइसहे) संयममां अरति अने असंयममां रति तेने सहन करनार एटले नाश करनार, तथा (पहीणसंथवे) नाश पाम्यो छे संस्तव एटले पूर्वनो अने पछीनो गृहस्थ साथेनो परिचय जेनो एवा, तथा (विरए) पापक्रियाथी निवृत्त थयेला, तथा (आयहिए) आतमा अने सर्व जीवोने हितकारक, तथा (पहाणवं) प्रधान एटले संयमवाळा, तथा (छिन्नसोए) नाश कर्यो छे शोक अथवा मिथ्यात्वादिक श्रोतस् जेणे एवा, ए ज कारण माटे (अममे) ममता रहित अने ए ज कारण माटे (अकिंचणे) परिग्रह रहित एवा ते साधु (परमट्ठपएहिं) परमार्थनां–मोक्षनां स्थानोने विषे (चिट्ठई) रहे छे–रहेता हवा. २१.

अर्थ—(सीतोसिणा) शीत, उष्ण, (दसमसा य) दंश, मशक, (फासा) तृणादिकना स्पर्शो, तथा (विविहा) विविध प्रकारना (आयका) व्याधिओ विगेरे सर्व परीषहो (देह) तारा शरीरने (फुसंति) स्पर्श करे छे—पीडा उपजावे छे (तत्थ) ते शीतादिक परीषहोनो स्पर्श थये सते (अकुक्कुओ) आक्रंद कर्या विना ज तारे (अहियासएज्जा) ते परीषहोने सहन करवा एम करवाथी तु (पुरेकडाइ) पूर्वे करेला (रयाइ) कर्मरूपी रजने (खवेज्ज) क्षय करी शकीश. १८

पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकंपमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥

अर्थ—(सयय) निरंतर (वियक्खणो) विचक्षण एटले तत्त्वना विचारमां तत्पर एवो (भिक्खू) साधु (राग च) रागने (तहेव) तथा (दोस) द्वेषने (मोह च) तथा मोहने (पहाय) तजीने (वाएण) वायुवडे (मेरु व्व) मेरु पर्वतनी जेम परीषहोवडे (अकंपमाणो) नहीं कंपतो सतो तथा (आयगुत्ते) काचबानी जेम आत्माने एटले इंद्रियोने गुप्त करतो सतो (परीसहे) परीषहोने (सहेज्जा) सहन करे छे १९.

अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूयं गरिहं च संजए ।
से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए, निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥ २० ॥

वळी (तत्थ) ते साधुपणाने विषे (भयभेरवा) भय उत्पन्न करवावडे करीने भयंकर अने (भीमा) अति रौद्र एवा (दिव्वा) देवसंबंधी, (मणुस्सा) मनुष्यसंबंधी (अदुवा) अथवा (तिरिच्छा) तिर्यंचसंबंधी उपसर्गो (उइंति) उदयमां आवे छे—उत्पन्न थाय छे. १६.

तथा.—

परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीदंति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥

अर्थ—(दुव्विसहा) दुःखे करीने सहन थइ शके तेवा (अणेगे) अनेक (परीसहा) परीषहो पण उत्पन्न थाय छे, के (जत्था) जे उपसर्गो अने परीषहो उत्पन्न थये सते (बहुकायरा) घणा कायर (नरा) मनुष्यो (सीदंति) सीदाय छे एटले चारित्र पाळवामां शिथिल थाय छे. (से) हवे (तत्थ) ते उपसर्ग अने परीषहोने विषे (पत्ते) प्राप्त थयेलो अथवा उपसर्गो अने परीषहो प्राप्त थये सते (भिक्खू) साधु थयेलो तुं (संगामसीसे) संग्रामना मोखरामां प्राप्त थयेला (नागराया इव) हाथीनी जेम (न वहिज्ज) व्यथा पामीश नहीं—सत्त्वथी चलायमान थइश नहीं. १७.

सीतोसिणा दंसमसा य फासा, आयंका विविहा फुसंति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइं खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥ १८ ॥

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्वं सव्वत्थऽभिरोअइज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए ॥ १५ ॥

अर्थ—(उ) तु पुनः वळी (उवेहमाणो) परना कहेला अशुभ वचननी उपेक्षा करता सता तारे (परिव्वएज्जा) विचरवु तथा (पिअ अप्पिअ) लोकोना प्रिय के अप्रिय (सव्व) सर्व वचनोने (तितिक्खएज्जा) सहन करवां, तथा (सव्व) सर्व वस्तुने विषे (सव्वत्थ) सर्व ठेकाणे (न अभिरोअइज्जा) रुचि-इच्छा करवी नहीं (यावि) तथा वळी (पूअ) लोकोनी करेली पूजाने-स्तुतिने (गरह च) अने निंदाने (संजए) संयमवाळा तारे (न) इच्छवी नहीं-तेना पर तारे रागद्वेष करवो नहीं १५

अहीं कोइने शंका थाय के-भिक्षुने पण आवो अन्यथा भाव होय ? के जेथी आत्माने आ प्रमाणे शिक्षा आपवी पडे ? ते उपर कहे छे —

अणेग छंदा मिह माणवेहिं, जे भावओ संपकरेइ भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइंति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥

अर्थ—(मिह) आ जगतने विषे (माणवेहिं) मनुष्योने (अणेग) अनेक (छंदा) अभिप्रायो-इच्छाओ थाय छे. के (जे) जे अभिप्रायोने (भिक्खू) कर्मने वश रहेलो साधु पण (भावओ) भावथी मनथी (संपकरेइ) अत्यंत करे छे

अनुकंपाना स्वभाववाळो, तथा (खंतिक्खमे) क्षांतिए करीने बीजाना दुर्वचनादिकने सहन करनार, तथा (संजय) साधुना आचारने पाळनार, तथा (बंभयारी) ब्रह्मचर्यने धारण करनार एवो (भिक्खू) भिक्षुरूप तुं हे आत्मा ! (सावज्जजोगं) सावद्य योगने (परिवज्जयंतो) वर्जतो-त्याग करतो सतो (सुसमाहिइंदिए) सारी रीते वश करी छे इंद्रियो जेणे एवो (चरेज्ज) चारित्रमार्गने विषे विचर-विहार कर. १३.

कालेण कालं विहरिज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिअ अप्पणो अ ।
सीहो व सद्देण न संतसिज्जा, वयजोग सुच्चा ण असब्भमाहु ॥ १४ ॥

अर्थ—हे आत्मा ! (कालेण) पौरुषी-पोरसी आदिक काळे (कालं) काळने उचित एवी पडिलेहणादिक क्रियाने करीने (अ) तथा (अप्पणो) पोताना (बलाबलं) बळाबळने एटले उपसर्गादिकने सहन करवापणुं अने नहीं सहन करवापणुं तेने (जाणिअ) जाणीने (रट्ठे) देशने विषे तथा उपलक्षणथी ग्रामादिकने विषे (विहरिज्ज) तुं विचर, जेम संयमयोगनी हानि न थाय तेम विहार करवो तथा (सीहो व) सिंहनी जेम (सद्देण) भयानक शब्दवडे-शब्द सांभळीने (न संतसिज्जा) त्रास पामीश नहीं, तथा (वयजोग) अशुभ एवा वचनयोगने (सुच्चा) सांभळीने पण (असब्भं) असभ्य वचन-अयोग्य वचन (ण आहु) बोलीश नहीं. १४.

त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.—

सपघने (जहित्तु) तजीने (परिआयधम्म च) पर्याय धर्मने विषे-चारित्रधर्मने विषे (अभिरोयइज्जा) तुं रुचिवाळो था, एटले के (वयाणि) मूळगुणरूपी पाच महाव्रतोने विषे, तथा (सीलाणि) पिंडविशुद्ध्यादिक उत्तरगुणोरूपी शीळने विषे, (अ) तथा (परीसहे) बावीश परीषहो सहन करवाने विषे रुचिवाळो था. ११

त्यारपछी जे करवानु छे ते कहे छे —

> अहिंस सच्च च अतेणग च, तत्तो य बंभ अपरिग्गह च ।
> पडिवज्जिआ पंच महव्वयाइ, चरिज्ज धम्म जिणदेसिअ विऊ ॥ १२ ॥

अर्थ—(अहिंस) अहिंसा, (सच च) सत्य, तथा (अतेणग च) अचौर्य, तथा (तत्तो य) त्यारपछी (बंभं) ब्रह्मचर्य, (अपरिग्गह च) तथा अपरिग्रह, ए (पच) पांच (महव्वयाइ) महाव्रतोने (पडिवज्जिआ) अंगीकार करीने हे आत्मा ! (विऊ) विद्वान एवो तु (जिणदेसिअ) जिनेश्वरे कहेला (धम्म) धर्मनु (चरिज्ज) आचरण-सेवन कर. १२

> सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, खंतिक्खमे संजयबंभयारी ।
> सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरेज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥ १३ ॥

अथ—(सव्वेहिं) सर्व (भूएहिं) प्राणीओने विषे (दयाणुकंपी) हितोपदेशरूप अने रक्षणरूप दयाए करीने

अर्थ—(तं) ते वध्यने (पासिउण) जतो जोइने (संवेगं) वैराग्य पामेलो (समुद्पालो) समुद्रपाळ (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) बोल्यो के (अहो) अहो ! (असुहाण) अशुभ (कम्माणं) कर्मोनो (इमं) आ (पावगं) अशुभ (निज्जाणं) निर्याण—अवसान एटले उदय केवो आश्चर्यकारक छे ! के जेथी आ विचारो वधने माटे आ प्रमाणे लइ जवाय छे. ९.

संवुध्धो सो तहिं भयवं, परमं संवेगमागओ । आपुच्छऽम्मापिअरो, पव्वए अणगारिअं ॥ १० ॥

अर्थ—(सो) ते समुद्रपाळ (भयवं) भगवान—पूज्य (तहिं) ते गवाक्षमां ज (संवुध्धो) बोध पाम्या सता तथा (परमं) अत्यंत (संवेगं) वैराग्यने (आगओ) पाम्या सता (अम्मापिअरो) मातापिताने (आपुच्छ) पूछीने—तेमनी रजा लइने (अणगारिअं) अनगारपणाने—चारित्रने (पव्वए) अंगीकार करता हवा. १०.

प्रव्रज्या लइने तेणे जे रीते आत्माने शिक्षा आपी तथा जे रीते प्रवृत्ति करी ते कहे छे.—

जहित्तु संगं च महाकिलेसं, महंतमोहं कसिणं भयावहं ।
परिआयधम्मं चऽभिरोयइज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे अ ॥ ११ ॥

अर्थ—ते विचारे छे के—हे आत्मा ! (महाकिलेसं) महा क्लेशकारक, तथा (महंतमोहं) महामोहवाळा, तथा (कसिणं) समग्र अथवा कृष्णलेश्यानुं कारण होवाथी कृष्ण, तथा (भयावहं) भयदायक एवा (संगं च) स्वजनादिक

अर्थ—(अ) तथा ते समुद्रपाळ (बावत्तरिं) बहोंतेर (कलाओ) कळाओने (सिक्खिए) शीख्यो सतो (नीइकोविए) नीतिमां निपुण थयो एटले लोकनीति अने धर्मनीतिमां चतुर थयो, (य) तथा (जोव्वणेण) युवावस्थाए करीने (सुरूवे) सारा रूपवाळो अने (पिअदंसणे) मनोहर दर्शनवाळो (सपन्ने) थयो ६

तस्स रूववइं भज्जं, पिआ आणेइ रूविणिं । पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुंदगो जहा ॥ ७ ॥

अर्थ—(तस्स) ते समुद्रपाळनो (पिआ) पिता (रूववइं) रूपवाळी (रूविणिं) रूपिणी नामनी (भज्जं) भार्याने—कन्याने समुद्रपाळ माटे (आणेइ) लाव्यो अने ते रूपिणी नामनी कन्या साथे समुद्रपाळने परणाव्यो पछी ते (रम्मे) मनोहर (पासाए) प्रासादने विषे (दोगुंदगो) दोगुंदक जातिना (देवो) देवनी (जहा) जेम (कीलए) इच्छा प्रमाणे तेणीनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो ७

अह अन्नया कयाइं, पासायालोअणे ठिओ । वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (अन्नया) एकदा (कयाइं) कदाचित् (पासायालोअणे) प्रासादना आलोकनमां एटले गोखमां (ठिओ) बेठेला एवा ते समुद्रपाळे (वज्झमंडणसोभागं) रातुं चंदन अने करवीरना पुष्पनी माळा विगेरे वध्यना भूषणोथी शोभावेला तथा (वज्झगं) वध्यभूमि तरफ लइ जवाता एक (वज्झं) वध्यने—चोरने (पासइ) जोयो ८

तं पासिऊण संवेगं, समुद्दपालो इणमब्बवी । अहो असुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥

अर्थ—(पिहुंडे) पिहुंड नगरमां (ववहरंतस्स) वेपार करता एवा ते पालितने तेना गुणथी रंजन थयेला कोइ (वाणिओ) वणिके (धूअरं) पोतानी पुत्री (देइ) आपी–परणावी. (अह) त्यारपछी त्यां केटलोक वखत रहीने (ससत्तं) गर्भवती थयेली (तं) तेणीने (पइगिज्झ) साथे लइ ते पालित (सदेसं) पोताना देश तरफ (पत्थिओ) चाल्यो. ३.

अह पालिअस्स घरणी, समुद्दम्मि पसवई । अह दारए तहिं जाए, समुद्दपालो त्ति नामए ॥४॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (पालिअस्स) पालितनी (घरणी) स्त्रीने (समुद्दम्मि) समुद्रने विषे ज (पसवई) प्रसव थयो. (अह) तेथी (तहिं) त्यां समुद्रमां (दारए) पुत्र (जाए) उत्पन्न थये सते (समुद्दपालो त्ति) समुद्रपाळ एवुं (नामए) तेनुं नाम पाड्युं. ४.

खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं । संवड्ढए घरे तस्स, दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥

अर्थ—(वाणिए) ते वणिक (सावए) श्रावक (खेमेण) क्षेम कुशळताथी (चंपं) चंपा नगरीमां (घरं) पोताने घेर (आगए) आवे सते (सुहोइए) सुखने उचित एवो (से) ते (दारए) बाळक–समुद्रपाळ (तस्स घरे) ते पालितने घेर (संवड्ढए) वृद्धि पामवा लाग्यो. ५.

बावत्तरिं कलाओ अ, सिक्खिए नीइकोविए । जोव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पिअदंसणे ॥ ६ ॥

अथ समुद्रपालीय नामनु एकवीशमुं अध्ययन २१

वीशमा अध्ययनमां अनाथपणु कह्यु तेनो विचार विविक्त-एकांत चर्यावडे थइ शके छे, तेथी आ एकवीशमा अध्ययनमां समुद्रपाळना दृष्टांते करीने विविक्त चर्या कहे छे —

चंपाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए। महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥

अर्थ—(चपाए) चपा नगरीमां (पालिए नाम) पालित नामनो (सावए) श्रावक एटले देशविरतिने धारण करतो (वाणिए) वणिक (आसि) हतो (सो उ) ते (महप्पणो) महात्मा (महावीरस्स) श्रीमहावीर (भगवओ) भगवानना (सीसे) शिष्य हतो महावीरस्वामीए तेने प्रतिबोध करी श्रावक कर्यो हतो तेथी तेमनो ते शिष्य कहेवाय छे १

निग्गंथे पावयणे, सावए से विकोविए। पोएण ववहरते, पिंहुड नगरमागए ॥ २ ॥

अर्थ—(निग्गंथे) साधुना एटले वीतरागना (पावयणे) सिद्धांतमां (विकोविए) अत्यंत पंडित एवो (से) ते (सावए) पालित श्रावक एकदा (पोएण) वहाणवडे (ववहरते) वेपार करतो सतो (पिहुंड) पिहुंड नामना (नगर) नगरने विषे (आगए) आव्यो चपा नगरीथी वहाणमां बेसीने वेपारने माटे पिहुंड नगरे आव्यो. २.

पिंहुडे ववहरतस्स, वाणिओ देइ धूअर। तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥

ऊससिअरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं । अभिवंदित्ता सिरसा, अतिजातो नराहिवो ॥ ५९ ॥

अर्थ—(ऊससिअरोमकूवो) मुनिना दर्शनथी तथा तेना वाक्य श्रवण करवाथी विकस्वर थया छे रोमकूप एटले रोमांच जेना एवो (नराहिवो) नराधिप एटले श्रेणिक राजा (पयाहिणं) ते मुनिने प्रदक्षिणा (काऊण य) करीने तथा (सिरसा) मस्तकवडे (अभिवंदित्ता) तेमना चरणने वांदीने (अतिजातो) अतियातः एटले पोताने स्थाने गयो. ५९.

इअरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ अ ।
विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो त्ति बेमि ॥ ६० ॥

अर्थ—(इअरो वि) श्रेणिक राजानी अपेक्षाए इतर-बीजा एटले ते महर्षि पण (गुणसमिद्धो) मुनिना सत्तावीश गुणे करीने सहित, तथा (तिगुत्तिगुत्तो) मन, वचन अने काया ए त्रण गुप्तिथी गुप्त, तथा (तिदंडविरओ अ) मन, वचन अने कायाना त्रण दंडे करीने एटले अशुभ व्यापारे करीने रहित, तथा (विहग इव) पक्षीनी जेम (विप्पमुक्को) कोइ पण ठेकाणे प्रतिबंध रहित एटले परिग्रह रहित, तथा अनुक्रमे (विगयमोहो) मोह रहित एटले मोहनीय कर्मनो क्षय करवाथी केवळज्ञानवाला थया सता (वसुहं) पृथ्वीपर (विहरइ) विचरवा लाग्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ६०.

॥ इति विंशतितममध्ययनम् ॥ २० ॥

सन करवा (इच्छामु) इच्छु छु, एटले तमे मने शिक्षा-उपदेश आपो, एम इच्छु छु हु तमारी आज्ञामां छु ५६

फरीथी विशेषे करीने क्षमा मागे छे —

पुंच्छिऊण मेए तुब्भ, झाणविग्घो उ जो कओ। निमंतिआ य भोगेहिं, 'त संव्व मरिसेह 'मे ॥५७॥

अर्थ—हे महर्षि ! (मए) में (तुब्भ) तमने (पुच्छिऊण) दीक्षा लेवानु कारण पूछीने (जो) जे (झाणविग्घो उ) तमारा ध्यानमां विघ्न (कओ) करेल छे, (य) तथा (भोगेहिं) भोगोवडे-भोग भोगववा (निमंतिआ) तमने में निमत्रण कर्युं छे, (त सव्व) ते सर्व (मे) मारा अपराधने (मरिसेह) क्षमा करो ५७,

हवे आ अध्ययनने समाप्त करतां कहे छे —

एंव थुंणित्ताण से रायसीहो,-ऽणगारसीह परमाइ भत्तिए ।
संओरोहो सपरिअणो संबधवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेअसा ॥ ५८ ॥

अर्थ—(एव) आ प्रकारे (स) ते (रायसीहो) राजाओना मध्यमां सिंह समान श्रेणिक राजा (अणगारसीह) मुनिओने विषे सिंह समान एवा ते मुनिने (परमाइ भत्तिए) उत्कृष्ट भक्तिवडे (थुणित्ताए) स्तवीने-स्तुति करीने (सओरोहो) अत'पुर सहित, तथा (सपरिअणो) परिवार सहित, तथा (सबधवो) बधुजन सहित (विमलेण चेअसा) निर्मळ चित्तवडे (धम्माणुरत्तो) धर्मने विषे अनुरक्त-रागी थयो ५८

आ प्रमाणे बोल्या के—हे महामुनि ! (जहाभूयं) यथार्थ—सत्य एवुं (अणाहत्तं) अनाथपणुं तमे (मे) मने (सुट्ठु) सारुं (उवदंसिअं) देखाड्युं छे—समजाव्युं छे. ५४.

तुब्भं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, जं भे ठिआ मग्गि जिणुत्तमाणं ॥ ५५ ॥

अर्थ—(महेसी) हे महर्षि ! (तुब्भं) तमारो (मणुस्सजम्मं) मनुष्य भव (सुलद्धं खु) सारो प्राप्त थयेलो ज छे—सफळ ज छे, (य) तथा (तुमे) तमने (लाभा) रूप, वर्ण, विद्या विगेरे लाभो (सुलद्धा) सारा प्राप्त थयेला छे, (य) तथा (तुब्भे) तमे ज (सणाहा) सनाथ—आत्माना नाथ होवाथी नाथ सहित छो, (य) तथा (सबंधवा) तमे ज ज्ञाति कुटुंबादिक बंधु सहित छो. (जं) कारण के (भे) तमे (जिणुत्तमाणं) जिनेश्वरना (मग्गि) मार्गने विषे (ठिआ) रहेला छो. ५५.

तं सि णाहो अणाहाणं, सव्वभूआण संजया । खामेमि ते महाभाग !, इच्छामु अणुसासिउं ॥ ५६ ॥

अर्थ—(संजया) हे मुनीश्वर ! (तं) तमे (अणाहाणं) नाथ रहित एवा (सव्वभूआण) त्रस अने स्थावर सर्व प्राणीओना (णाहो) नाथ (सि) छो. (महाभाग) हे महा भाग्यवान ! (ते) तमने हुं (खामेमि) खमावुं छुं. में प्रथम तमारो मारुं सनाथपणुं कहीने जे अपराध कर्यो तेनी हुं क्षमा मागुं छुं, अने (अणुसासिउं) मारा आत्माने अनुशा-

एवा (सजम) सतर प्रकारना संयमने (पालिआण) पाळीने तथा (कम्म) आठ प्रकारना कर्मने (सखनिआण) खपावीने (विउलुत्तम) विशाळ, उत्तम अने (धुव) निश्चळ एवा (ठाण) मोक्षस्थानने (उवेइ) पामे छे ५२

हवे मुनि पोतानु कहेवु समाप्त करे छे —

एवुग्गदंते वि महातवोधणे, महामुणी महापइण्णे महायसे ।
महानियंठिज्जमिणं महासुअं, से काहए महया वित्थरेण ॥ ५३ ॥

अर्थ—(एव) आ प्रमाणे (उग्गदंते वि) कर्मरूपी शत्रु प्रत्ये उग्र-भयकर, तथा दांत एटले इंद्रियो अने मनने दमन करनार, तथा (महातवोधणे) महा तपरूपी धनवाळा, तथा (महापइण्णे) महा प्रतिज्ञावाळा एटले दृढ व्रतवाळा, तथा (महायसे) महा यशवाळा एवा (से) ते (महामुणी) महामुनिए (महानियंठिज्ज) महानिर्ग्रंथीय एटले साधुओने हितकारक (इण) आ (महासुअ) उपर कहेलु महाश्रुत (महया) मोटा (वित्थरेण) विस्तारथी (काहए) कह्यु छे ५३

त्यार पछी —

तुट्ठो अ सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली । अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसिअं ॥ ५४ ॥

अर्थ—(तुट्ठो अ) तुष्टमान थयेला (सेणिओ राया) श्रेणिक राजा (कयंजली) हाथ जोडीने (इण उदाहु)

कष्ट प्राप्त थाय त्यारे शोक करे छे, पण ते स्वपरनुं रक्षण करवामां असमर्थ होवाथी अनाथ छे. ५०.

हवे जे करवा लायक छे, ते कहे छे.—

सोच्चाण मेहावि सुभासिअं ईमं, अणुसासणं नाणगुणोववेअं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानिअंठाण वए पहेणं ॥ ५१ ॥

अर्थ—(मेहावि) हे बुद्धिमान् राजा ! (सुभासिअं) सारी रीते कहेला अने (नाणगुणोववेअं) ज्ञानगुणे करीने सहित एवा (इमं) आ (अणुसासणं) उपदेशनां वचनो (सोच्चाण) सांभळीने (कुसीलाण) कुशीळीयाना (सव्वं) सर्व (मग्गं) मार्गने (जहाय) तजीने, तमे (महानिअंठाण) महा निर्ग्रंथना (पहेणं) मार्गे (वए) चालो. ५२. (आ उपदेश सर्वने माटे छे; मात्र राजा माटे नथी.)

तेम करवाथी शुं फळ थाय ? ते कहे छे.—

चरित्तमायारगुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालिआणं ।
निरासवे संखविआण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥ ५२ ॥

अर्थ—(तओ) ते महानिर्ग्रंथना मार्गे जवाथी (चरित्तमायारगुणन्निए) चारित्राचार एटले चारित्रनुं सेवन अने गुण एटले ज्ञान, शीळ विगेरे गुणो, तेणे करीने सहित, तथा (निरासवे) आश्रव रहित एवो साधु (अणुत्तरं) सर्वोत्तम

(निरट्ठिआ उ) निरर्थक ज छे (से) तेवा साधुने (इमे वि) आलोक पण नथी अने (परे वि लोए) परलोक पण (नत्थि) नथी (तत्थ) ते उभय लोकनो अभाव सते (लोए) जगतने विषे (दुहओ वि) आलोक अने परलोकना अभावने लीधे बन्ने प्रकारे (से) ते साधु (झिज्झइ) क्षीण थाय छे-सुखथी भ्रष्ट थाय छे अने आलोकमां तथा परलोकमां संपत्तिवाळा जीवोने जोइने 'बन्ने लोकथी भ्रष्ट थयेला मने धिकार छे' एम पश्चात्ताप करतो सतो विशेष क्षीण थाय छे ४९.

त्यारपछी ते जे प्रकारे पश्चात्ताप पामे छे, ते बतावे छे —

एमेवहाछंदकुसीलरूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्ठसोआ परितावमेइ ॥ ५० ॥

अर्थ—(एमेव) ए ज रीते एटले महाव्रतनी विराधनादिक प्रकारे करीने (अहाछंदकुसीलरूवे) यथाछंद एटले इच्छा प्रमाणे वर्तनार अने कुशीलरूप एटले दुष्ट शीळना स्वभाववाळो साधु (जिणुत्तमाणं) जिनेश्वरोना (मग्ग) मार्गनी (विराहित्तु) विराधना करीने (भोगरसाणुगिद्धा) भोगना-जिव्हाने स्वाद आपनार मांसना रसमां लुब्ध थयेली अने (निरट्ठसोआ) निरर्थक शोकवाळी (कुररी विवा) पक्षिणीनी जेम (परिताव एइ) पश्चात्तापने पामे छे जेम मांसमां लुब्ध थइने जेणे मुखमां मांसनी पेशी नांखी छे एवी पक्षिणी बीजा मोटा पक्षीओथी विपत्ति पामे छे त्यारे ते शोक करे छे, अने ते वखते तेने कांइपण आपत्तिनो प्रतिकार सूझतो नथी, तेम भोगरसमां लुब्ध थयेलो साधु पण आलोक अने परलोकना

ने तं अरी कंठछित्ता करोति, जं से करे अप्पणिआ दुरप्पा ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥

अर्थ—(से) तेवा पापी साधुने (अप्पणिआ) पोतानी ज (दुरप्पा) दुरात्मता–दुष्टता (जं) जे अनर्थने (करे) करे छे, (तं) तेवा अनर्थने (कंठछित्ता) कंठने छेदनार (अरी) शत्रु पण (न करोति) करी शकतो नथी. (तु) वळी (दयाविहूणो) दया रहित एवो (से) ते साधु (मच्चुमुहं) मृत्युना समयने (पत्ते) पामे छे त्यारे (पच्छाणुतावेण) पश्चात्तापे करीने (नाहिई) 'हा ! में बहु दुष्कृत कर्या !' ए प्रमाणे कदी पोतानी दुष्टताने जाणशे. केमके दुष्टता अनर्थनुं कारण छे अने पश्चात्तापनुं पण कारण छे. परंतु पछी जाणवुं काम आवशे नहीं. तेथी पहेलेथी ज तेने जाणीने तेनो त्याग करवो उचित छे. ४८.

जे कोइ मरण समये पण मोहने लीधे पोतानी दुरात्मताने जाणे नहीं, तो तेनुं शुं थाय ? ते कहे छे.—

निरट्ठिआ नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तिमट्ठं विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्झइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥

अर्थ—(जे) जे द्रव्यसाधु (उत्तिमट्ठं) उत्तमार्थे एटले अंत समयनी आराधनाने विषे पण (विवज्जासं एइ) विपर्यासने पामे छे एटले दुरात्माने पण सुंदरपणे माने छे, (तस्स) तेनी (नग्गरुई) नाग्न्यरुचि एटले चारित्रनी रुचि

(दुही) दुःखी थयो सतो (विप्परियास उवेइ) तत्त्वने विषे विपरीतपणाने पामे छे, तथा (असाहुरूवे) असाधुरूप एवो ते द्रव्यसाधु (मोण) चारित्रनी (विराहितु) विराधना करीने (नरगतिरिक्खजोणी) नरक अने तिर्यंचनी योनि प्रत्ये (सपधावइ) निरंतर दोडे छे--जाय छे. अर्थात् चारित्रनी विराधनाथी दुर्गतिनो अनुबंध-वारंवार संबंध थाय छे ४६

शी रीते चारित्रनी विराधना करे छे ? अथवा शी रीते नरक अने तिर्यग्गति प्रत्ये दोडे छे ? ते कहे छे —

उद्देसिअं कीअगडं निआगं, न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥ ४७ ॥

अर्थ—जे साधु (उद्देसिअं) औद्देशिक एटले साधुने उद्देशीने करेलो, (कीअगडं) क्रीत एटले साधुने माटे खरीद करेलो, आहृत एटले साधुनी सन्मुख आणेलो, (निआगं) नित्यक एटले हमेशां एक ज गृहस्थने घेरथी लीधेलो-एवो (किंचि) कांइ पण-कोइपण रीते (अणेसणिज्जं) अनेषणीय एटले साधुने न कल्पे एवो जे आहार तेने (न मुंचई) मूके नहीं-तजे नहीं, ते (अग्गी विवा) अग्निनी जेम (सव्वभक्खी) सर्वने भक्षण करनारो (भवित्ता) थइने (इओ) आ मनुष्य भवथी (चुओ) चव्यो थको-मरण पाम्यो थको (पावं) पाप (कट्टु) करीने, दुर्गतिमां (गच्छइ) जाय छे ४७.

जो लक्खणं सुविणं पउंजमाणे, निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥ ४५ ॥

अर्थ—(जो) जे साधु (लक्खणं) स्त्रीपुरुषना लक्षणना शास्त्रनो तथा (सुविणं) स्वप्नशास्त्रनो एटले स्वप्नना शुभाशुभ फळ कहेनारा शास्त्रनो (पउंजमाणे) उपयोग करतो होय, तथा जे साधु (निमित्तकोऊहलसंपगाढे) भूकंपादिक निमित्त कहेवुं अने कौतुक एटले पुत्रादिक थवा माटे जे स्नानादिक बताववुं, तेमां आसक्त होय, तथा जे साधु (कुहेडविज्जा-सवदारजीवी) कुहेटक विद्या एटले खोटा आश्चर्य बतावनारा मंत्र तंत्रादिकनी विद्या, ते ज कर्मबंधनो हेतु होवाथी आश्रव-द्वार कहेवाय छे, ते कुहेटक विद्यारूपी आश्रवद्वारवडे आजीविका करवाना स्वभाववाळो होय, ते साधु (तम्मि काले) ते लक्षणादिकनो उपयोग करवाथी बंधायेला कर्मना उदयकाळे एटले नरकादिकनां दुःख भोगवती वखते (सरणं) ते दुःखथी रक्षण करनार कोइ पण शरणने (न गच्छई) पामतो नथी. ४५.

आ ज अर्थने विस्तारथी कहे छे.—

तमंतमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परिआसुवेइ ।
संधावइ नरगतिरिक्खजोणी, मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥

अर्थ—(असीले) कुशीलीयो एवो (से) ते द्रव्य साधु (तमंतमेणेव उ) अत्यंत अज्ञानवडे करीने ज (सया) सदा

अर्थ—(से) साधुना आचार रहित एवो ते (कुसीललिंग) पासत्थादिक कुशीळीयाना लिंगने (धारइत्ता) धारण करीने तथा (जीविय) आजीविकाने माटे (इसिज्झय) ऋषिध्वजने एटले रजोहरणने अने मुखवस्त्रिकाने (वूहइत्ता) वृद्धि पमाडीने एटले आ वेष ज मुख्य छे एम कहीने (असजए) संयमी नहीं छतां पण (सजयलप्पमाणो) 'हुं संयमी छुं' एम बोलतो सतो (इह) आ संसारमां (चिर पि) चिरकाळ सुधी (विणिघाय) विविध प्रकारनी पीडाने (आगच्छइ) पामे छे ४३

तेनुं कारण बतावे छे —

> विसं पिवित्ता जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीअं ।
> एमेव धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेआल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥

अर्थ—(जह) जेम (कालकूड) काळकूट नामनुं (विस) विष (पिबित्ता) पीधुं सतुं प्राणने (हणाइ) हणे छे, तथा (जह) जेम (सत्थं) शस्त्र (कुग्गहीअ) खराब रीते एटले विपरीतपणे ग्रहण कर्युं सतुं पोताने ज हणे छे, (एमेव) ए ज प्रमाणे (धम्मो) धर्म पण (विसओववन्नो) शब्दादिक विषयोथी युक्त सतो आत्माने (हणाइ) हणे छे कोनी जेम ? ते कहे छे-(अविवन्नो) मंत्रादिकवडे नहीं वश करेलो (वेआल इव) वेताळ-पिशाच जेम उलटो हणनार थाय छे तेम. ४४

अर्थ—(से) ते पूर्वे कहेलो पंच समिति रहित साध्वाभास (अथिरव्वए) अस्थिर व्रतवाळो तथा (तवनिअमेहि) अनशनादिक तप अने अभिग्रहादिक नियमथी (भट्ठे) भ्रष्ट-रहित एवो सतो (चिरं पि) चिरकाळ सुधी (मुंडरुई) मात्र मुंडनने विषे ज—लोचने विषे ज रुचिवाळो (भवित्ता) थइने (चिरं पि) चिरकाळ सुधी (अप्पाणं) पोताना आत्माने (किलेसइत्ता) क्लेश पमाडीने (संपराए) संसारनो (पारए) पारगामी (न होइ हु) थतो ज नथी. ४१.

पोल्लेव मुट्ठी जह से असारे, अयंतिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेरुलिअप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥ ४२ ॥

अर्थ—(से) ते मुंडरुचिवाळो द्रव्यसाधु (पोल्लेव) पोली ज (मुट्ठी जह) मुठीनी जेम (असारे) असार छे—अंतःकरणमां धर्म नहीं होवाथी खाली मुठीनी जेवो सार रहित ज छे, तथा (कूडकहावणे वा) कूट कार्षापण-खोटा रुपीयानी जेम (अयंतिए) अनियंत्रित एटले अनादर करवा लायक-उपेक्षा करवा लायक छे. (हु) कारण के (वेरुलिअप्पगासे) वैडूर्य मणिनी जेवा प्रकाशवाळो छतां पण (राढामणी) काचमणि (जाणएसु) मणिनी परीक्षा जाणनाराओने विषे (अमहग्घए होइ) अमहार्घ्य थाय छे-मूल्यवान थतो नथी. ४२.

कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणो, विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥ ४३ ॥

अर्थ—हे राजा ! (जो) जे मनुष्य (पव्वइत्ता ण) प्रव्रज्या ग्रहण करीने पछी (पमाया) प्रमादथी (महव्वयाइ) पांच महाव्रतोने (सम्म च) सम्यक् प्रकारे (नो फासयई) सेवतो नथी, (से) ते मनुष्य (अणिग्गहप्पा) नथी वश कर्यो आत्मा जेणे एवो (य) तथा (रसेसु) मधुरादिक रसने विषे (गिद्धे) गृद्धिवाळो सतो (बंधण) संसारनां कारणरूप रागद्वेषना लक्षणवाळा कर्मबंधनने (मूलओ) मूळथी (न छिंदइ) छेदी शकतो नथी–सर्वथा प्रकारे रागद्वेषने निवारी शकतो नथी ३९

आउत्तया जस्स य नत्थि काई, ईरिआइ भासाइ तहेसणाए ।
आयाणनिक्खेव दुगंछणाए, न धीरजाय अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥

अर्थ—(जस्स य) वळी जे साधुने (इरिआइ) ईर्याने विषे एटले गमनागमननी समितिने विषे, तथा (भासाइ) भाषासमितिने विषे, (तहा एसणाए) तथा एषणा–आहार ग्रहण करवानी समितिने विषे, तथा (आयाणनिक्खेव) उपगरण आदि वस्तु लेवा अने मूकवानी समितिने विषे, तथा (दुगंछणाए) परिष्ठापनानी समितिने विषे (काई) कांइ पण (आउत्तया) उपयोग (नत्थि) नथी, ते साधु (धीरजाय) धीरयात एटले धीर पुरुषोए पामेला (मग्ग) मोक्षमार्गने (न अणुजाइ) पामतो नथी ४०.

चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनिअमेहि भट्ठे ।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होई हु संपराए ॥ ४१ ॥

कामधेनु सदृश छे. तेथी करीने प्रव्रज्याने विषे ज सदाचारीपणुं होवाथी तथा स्वपरनुं योग क्षेम करवापणुं होवाथी हुं नाथरूप थयो छुं. ३७.

फरीथी बीजे प्रकारे अनाथपणुं कहे छे.—

> इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !, तमेगचित्तो निहुओ सुणाहि ।
> नियंठधम्मं लहिआण वी जहा, सीदंति एगे बहु कायरा नरा ॥३८ ॥

अर्थ—(निवा) हे राजा ! (इमा) आ एटले हमणां हुं कहीश ते (हु) निश्चे (अन्ना वि) बीजी पण (अणाहया) अनाथता छे, (तं) तेने तमे (एगचित्तो) एकाग्र चित्तवाळा अने (निहुओ) निश्चळ एवा सता (सुणाहि) सांभळो. (जहा) ते ए के-(एगे) केटलाएक (बहु कायरा) घणा कायर (नरा) मनुष्यो (निअंठधम्मं) साधुधर्मने (लहिआण वी) पामीने पण (सीदंति) सीदाय छे—साधुना आचार पाळवामां शिथिल थाय छे. तेओ सीदाता थका पोतानुं अने परनुं रक्षण करवा समर्थ थता नथी, तेथी तेमनी आ सीदन नामनी बीजी अनाथता जाणवी. ३८.

ते ज बतावे छे.—

> जो पव्वइत्ता ण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया ।
> अणिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिंदइ बंधणं से ॥ ३९ ॥

अर्थ—(तओ) त्यार पछी एटले दीक्षा ग्रहण कर्या पछी (ह) हु (अप्पणो अ) पोतानो एटल मारो अने (परस्स य) परनो एटले बीजानो (नाहो जाओ) योग क्षेम करनारो नाथ थयो छु ए प्रमाणे (सव्वेसिं चेव) सर्व एवा ज (तसाण) त्रस (थावराण य) अने स्थावर (भूआण) प्राणीओनो हु नाथ थयो छु ३५

दीक्षा ग्रहण कर्या पछी केम नाथ थया ? पहेलां केम न थया ? ते उपर कहे छे —

अप्पा नई वेअरणी, अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥ ३६ ॥

अर्थ—हे राजा ! (अप्पा) मारो आत्मा ज (वेअरणी) नरकमां रहेली वैतरणी नामनी (नई) नदीरूप छ, (मे) मारो (अप्पा) आत्मा ज (कूडसामली) नरकमां रहेलु कूटशाल्मली नामनु वृक्ष छे, (अप्पा) मारो आत्मा ज (कामदुहा धेणू) कामदुघा गाय छे, तथा (मे) मारो (अप्पा) आत्मा ज (नदण वण) नदन वनरूप छे अर्थात् स्वर्ग नरकादिक आपनार आत्मा ज छे ३६

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिअ सुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

अर्थ—हे महाराजा ! (अप्पा) आत्मा ज (दुहाण य) दु खनो अने (सुहाण य) सुखनो (कत्ता) कर्ता-करनार अने (विकत्ता य) विकर्ता एटले नाश करनार पण छे, तथा (अप्पा) आत्मा ज (मित्त) मित्र (अमित्त च) अने अमित्र पण छे, तथा आत्मा ज (दुप्पट्ठिय) दु प्रस्थित एटले दुराचारी अने (सुपट्ठिओ) सुप्रस्थित एटले सदाचारी छे तेमां दुराचारी सतो समग्र दुःखनो हेतु होवाथी वैतरणी नदी आदि जेवो छे अने सदाचारी सतो समग्र सुखनो हेतु होवाथी

अर्थ--(जइ) जो (सइं च) एक वार हुं (इओ) आ (विउला) मोटी (वेअणा) वेदनाथी (मुच्चिज्जा) मूकाउं, तो हुं (खंतो) क्षमावाळो, (दंतो) इंद्रिय अने नोइंद्रियना दमनवाळो अने (निरारंभो) सर्व सावद्य आरंभ रहित एवो थइने (अणगारिअं) साधुपणाने-चारित्रने (पव्वए) अंगीकार करीश. के जेथी संसारनो ज नाश थवाथी कोइ वखत पण फरीने वेदना प्राप्त थशे ज नहीं. " ३२.

एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तोमि नराहिवा !। परिअत्तंतीइ राईए, वेअणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥

अर्थ—(नराहिवा) हे नराधिप ! केवळ आ प्रमाणे बोलीने ज नहीं, परंतु (एवं च) ए प्रमाणे (चिंतइत्ताणं) मनमां चिंतवन करीने (पसुत्तोमि) हुं सुइ गयो, तेवामां (राईए) रात्रि (परिअत्तंतीइ) अतिक्रमण थतां एटले जेम जेम रात्रि जवा लागी तेम तेम (मे) मारी (वेअणा) वेदना (खयं गया) क्षय पामी. ३३.

तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ता ण बंधवे । खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओ अणगारिअं ॥३४॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले वेदनानो क्षय थया पछी (कल्ले) रोग रहित थयेला में (पभायम्मि) प्रातःकाळने विषे ज (बंधवे) बांधवोने (आपुच्छित्ता ण) पूछीने एटले तेमनी रजा लइने (खंतो) क्षमावान, (दंतो) इंद्रियोना दमनवाळो अने (निरारंभो) आरंभ रहित थइ (अणगारिअं) चारित्रने (पव्वइओ) अंगीकार कर्युं. ३४.

तओ हं नाहो जाओ, अप्पणो अ परस्स य । सव्वेसिं चेव भूआणं, तसाणं थावराण य ॥ ३५ ॥

जाणता के न जाणता (अन्न) अन्न, (पाण च) पाणी, तथा (ण्हाण च) स्नान, तथा (गंधमल्लविलेवण) गंध, पुष्पमाळा अने विलेपन एमानु कांइ पण (न उवभुजइ) भोगवती नहोती, मारा दुःखथी सर्व भोगो तेणीए पण तज्या हता २९

खणं पि मे महाराय !, पासओ वि न फिट्टई। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (खण पि) एक क्षणवार पण (मे) मारी (पासओ वि) पासेथी–समीप भागथी जरा पण (न फिट्टई) दूर जती नहोती, (य) तोपण ते मन (दुक्खा) दुःखथी (न विमोएइ) मूकावी शकी नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) आ मारी अनाथता छे ३०

तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो। वेअणा अणुभविउ जे, संसारम्मि अणंतए ॥३१॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले सर्व उपायो निष्फळ थया पछी (हं) हु (एवं) आ प्रमाणे (आहंसु) बोल्यो के—(हु) निश्चे (जे) "जे (वेअणा) वेदना (अणुभविउ) अनुभववाने (दुक्खमा) दुःसह छे, ते वेदना (अणंतए) आ अनंत एवा (संसारम्मि) संसारने विषे (पुणो पुणो) वारंवार में भोगवी छे ३१.

तेथी करीने—

सइं च जइ मुच्चिज्जा, वेअणा विउला इओ। खंतो दंतो निरारंभो, पव्वए अणगारिअं ॥ ३२ ॥

भायरो मे महाराय !, सगा जिट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोअंति, एसा मज्झं अणाहया ॥२६॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जिट्ठकणिट्ठगा) मोटा अने नाना (सगा) सहोदर (मे) मारा (भायरो) भाइओ मने (दुक्खा) दुःखथी (न य विमोअंति) मूकावी शक्या नही, (एसा मज्झ अणाहया) ए मारी अनाथता छे. २६.

भइणिओ मे महाराय ! सगा जिट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोअंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जिट्ठकणिट्ठगा) मोटी अने नानी (सगा) सहोदरी (मे) मारी (भइणिओ) बहेनो मने (दुक्खा) दुःखथी (न य विमोअंति) मूकावी न शकी, (एसा मज्झ अणाहया) ए मारी अनाथता छे. २७.

भारिया मे महाराय !. अणुरत्ता अणुव्वया । अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ॥ २८ ॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (अणुरत्ता) प्रीतिवाळी अने (अणुव्वया) पतिव्रता एवी (मे) मारी (भारिया) भार्या (अंसुपुण्णेहिं) अश्रुवडे पूर्ण एवा (नयणेहिं) नेत्रोवडे (मे उरं) मारा उरःस्थळने (परिसिंचइ) सिंचती हती. परंतु ते पण मने दुःखथी मूकावी शकी नही. ए मारी अनाथता छे. २८.

अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंधमल्लविलेवणं । मए णायमणायं वा, सा बाला नोवभुंजइ ॥२९॥

अर्थ—(सा बाला) ते मारी भार्या (मए) में (णायं) जाण्युं (अणायं वा) के न जाण्युं तेम एटले मारा

स्वेदन–परसेवो आवे तेवु, अथवा अजन, वधन, लेपन अने मर्दन ए रीते शास्त्रमां कहेली चार चार प्रकारनी चिकित्सा जाणवी ए रीते गुरपरपरा प्रमाणे चिकित्सा करवा लाग्या, (य) तोपण तेओए मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोअति) मुक्त कर्यो नहीं-मुक्त करी शक्या नहीं (एसा) ए ज (मज्झ) मारी (अणाहया) अनाथता छे २३

पिआ मे सव्वसार पि, दिज्जाहि मम कारणा। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥

अर्थ—(मे) मारा (पिआ) पिताए (मम कारणा) मारे कारणे ते वैद्योने (सव्वसार पि) घरनो सर्व सार–सर्व धनादिक सार वस्तु (दिज्जाहि) आपी (य) तोपण तेणे मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोएइ) मुक्त कर्यो नहीं. (एसा) ए (मज्झ) मारी (अणाहया) अनाथता छे अर्थात् सर्वस्व आपीने पण मारा पिता मारु दुःख दूर करी शक्या नहीं, ए ज मारी अनाथता छे २४.

माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिआ*। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (पुत्तसोगदुहट्टिआ) पुत्रना शोकरूपी दुःखमां रहेली अथवा (दुहट्टिआ) दुःखे करीने पीडायेली (मे) मारी (माया वि) माता पण (दुक्खा) दुःखथी मने (न य विमोएइ) मूकावी शकी नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) ए ज मारी अनाथता छे २५

* दुहट्टिआ इति वा

(उत्तिमंगं च) मस्तकने ते (इंदासणीसमा) इंद्रना वज्र जेवी अति दाह उत्पन्न करनारी (घोरा) भयंकर एटले बीजाने पण भय उत्पन्न करनारी अने (परमदारुणा) पोताने अत्यंत दुःख उत्पन्न करनारी (वेअणा) वेदना (पीडई) पीडा करवा लागी. २१.

उवट्ठिआ मे आयरिआ. विज्जामंततिगिच्छगा । अबीआ* सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ॥ २२ ॥

अर्थ—ते वखते (मे) मने-मारी पासे (आयरिआ) आचार्यो एटले वैद्यो (उवट्ठिआ) प्राप्त थया एटले मारी चिकित्सा करवा आव्या. ते वैद्यो (विज्जामंततिगिच्छगा) विद्या अने मंत्रवडे चिकित्सा करनारा हता, तथा (अबीआ) अद्वितीय एटले तेमनी जेवा बीजा कोइ निपुण नहोता, अथवा (अधीआ) सारी रीते भणेला हता, तेथी ज (सत्थकुसला) शास्त्रने विषे कुशळ हता. तथा (मंतमूलविसारया) देव अधिष्ठित मंत्रो अने जडीबुट्टी आदि मूळीयांमां विचक्षण हता, एटले मंत्र अने मूळना गुणोने जाणनारा हता २२.

ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहिअं । न य दुक्खा विमोअंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥

अर्थ—(ते) ते वैद्यो (जहाहिअं) जेम हित थाय तेम (चाउप्पायं) चार प्रकारे (मे) मारी (तिगिच्छं) चिकित्सा (कुव्वंति) करवा लाग्या. अहीं वैद्य, औषध, रोगी अने सारवार करनार, अथवा वमन, विरेचन, मर्दन अने

* अभीआ इति वा पाठ

कौशांबी नामनी (नयरी) नगरी छे (तत्थ) तेमां (पभूअधणसचओ) घणा धननो संचय-संग्रह करनार धनसंचय नामे (मज्झ) मारो (पिआ) पिता (आसी) हतो प्राये करीने जूनां नगरोमां वसनारा लोको चतुर, धनवान, घणा अनुभवी अने विवेकी होय छे एवुं रहस्य जणाववा माटे जूना नगरने भेदनारी आ नगरी कही छे १८

पढमे वए महाराय!, अउला मे अच्छिवेअणा। अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा!॥१९॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा! (पढमे वए) पहेली वयमां एटले युवावस्थामां (मे) मने एकदा (अउला) अतुल एवी (अच्छिवेअणा) नेत्रनी पीडा (अहोत्था) थइ, तेथी (पत्थिवा) हे राजा! (सव्वगत्तेसु) मारा सर्व अवयवोने विषे (विउलो) विपुल-मोटो (दाहो) दाह थवा लाग्यो १९

सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरंतरे। आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेअणा ॥२०॥

अर्थ—(जहा) जेम कोइ (कुद्धो अरी) क्रोध पामेलो शत्रु (सरीरविवरंतरे) कर्ण, नासिका विगेरे शरीरना विवरोनी मध्ये (परमतिक्खं) अत्यंत तीक्ष्ण (सत्थं) शस्त्रने (आवीलिज्ज) गाढ रीते नांखे अने तेथी जेवी वेदना थाय (एवं) एवी असह्य (मे) मने (अच्छिवेअणा) नेत्रनी पीडा थती हती २०.

तिअं मे अंतरिच्छं च, उत्तिमंगं च पीडई। इंदासणीसमा घोरा, वेअणा परमदारुणा ॥२१॥

अर्थ—(मे) मारा (तिअं) कटिभागने, तथा (अंतरिच्छं) खान, पान, रमण विगेरे अंदरनी इच्छाने, तथा

त्यारे मुनि आ प्रमाणे बोल्या.—

ण तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा !। जहा अणाहो हवइ, सणाहो वं नराहिवा ! ॥१६॥

अर्थ—(पत्थिवा) हे राजा ! (तुमं) तमे (अणाहस्स) अनाथ शब्दना (अत्थं) अर्थने (पोत्थं च) तथा प्रोत्थानने एटले कया अभिप्रायथी में अनाथ शब्द कह्यो तेनी मूळ उत्पत्तिने (ण जाणे) तमे जाणता नथी, के (जहा) जे प्रकारे (अणाहो) अनाथ (व) के (सणाहो) सनाथ (हवइ) होय, ते प्रकारे (नराहिवा) हे नराधिप ! तमे जाणता नथी. १६.

सुणेह मे महाराय !, अव्वक्खित्तेण चेअसा। जहा अणाहो भवति, जहा मे अ पवत्तिअं ॥१७॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जहा) जे प्रकारे मनुष्य (अणाहो) अनाथ (भवति) थाय छे, (अ) अने (जहा) जे प्रकारे (मे) में ते अनाथपणुं (पवत्तिअं) प्रवर्ताव्युं एटले प्ररूप्युं- कह्युं छे, ते प्रकारे (मे) कहेता एवा मारा थकी तमे (अव्वक्खित्तेण) अव्याक्षिप्त-स्थिर (चेअसा) चित्तवडे (सुणेह) सांभळो. १७.

आ प्रमाणे कहीने पछी मुनि पोतानी कथा कहेवा लाग्या.—

कोसंबी नाम नयरी, पुराणपुरभेअणी। तत्थ आसी पिआ मज्झं, पभूअधणसंचओ ॥ १८ ॥

अर्थ—(पुराणपुरभेअणी) जूनां नगरोने भेदनारी एटले जूनां नगरोथी पण अधिक शोभावाळी (कोसंबी नाम)

(विम्हय निओ) आश्चर्य पाम्यो प्रथम ते मुनिना रूपादिक जोइने राजा आश्चर्य पाम्यो हतो, ते फरीथी आवु अपूर्व वचन सांभळी वधारे आश्चर्य पाम्यो १३.

पछी राजा आ प्रमाणे बे गाथावडे बोल्यो —

आसा हत्थी मणुस्सा मे, पुर अंतेउर च मे। भुंजामि माणुसे भोए, आणाइस्सरिअ च मे ॥१४॥

अर्थ—हे मुनि ! (मे) मारे (आसा) घणा अश्वो छे, तथा (हत्थी) हाथीओ छे, तथा (मणुस्सा) मनुष्यो-सेवको अने स्वजनादिक छे, (च) तथा (मे) मारे (पुर) नगर छे, तथा (अंतेउर) राणीओनो समूह छे, तथा हु (माणुसे) मनुष्य सबंधी (भोए) कामभोगोने (भुंजामि) भोगवु छु, (च) तथा (मे) मारे (आणाइस्सरिअ) अस्खलित शासनरूप आज्ञा अने ऐश्वर्य एटले समृद्धि-स्वामीपणु छे मारा राज्यमां कोइ पण मारी आज्ञानो भग करतु नथी १४

एरिसे संपयग्गमि, सव्वकामसमप्पिए । कह अणाहो भवइ, मा हु भंते ! मुस वए ॥ १५ ॥

अर्थ—(एरिसे) आवा प्रकारनी (सव्वकामसमप्पिए) सर्व मनवांछितने पूर्ण करनार (संपयग्गम्मि) संपदानो प्रकर्ष-मोटी समृद्धि सते (कह) केवी रीते हु (अणाहो) अनाथ (भवइ) थाउ ? कारण के हु सर्व संपत्तिनो नाथ छु (हु) तेथी करीने (भंते) हे पूज्य ! आप (मुस) मृषा (मा वए) न बोलो १५

जो व्रत अंगीकार करवामां अनाथता ज कारण होय तो—

होमि नाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया !। मित्तनाईपरिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥

अर्थ—(भयंताणं) पूज्य एवा आपनो हुं (नाहो) नाथ (होमि) थाउं. (संजया) हे मुनि ! (मित्तनाईपरिवुडो) मित्र अने ज्ञातिथी परिवर्या थका (भोगे) भोगोने (भुंजाहि) भोगवो. कारण के (माणुस्सं) मनुष्यपणुं पामवुं (खु) खरेखर (सुदुल्लहं) अत्यंत दुर्लभ छे. ११.

ते सांभळी मुनि बोल्या.—

अप्पणा वि अणाहोऽसि, सेणिआ ! मगहाहिवा !। अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥

अर्थ—(मगहाहिवा) हे मगधना अधिपति (सेणिआ) श्रेणिक राजा ! (अप्पणा वि) तमे पोते ज (अणाहोऽसि) अनाथ—नाथ रहित छो. (अप्पणा) तेथी पोते ज (अणाहो संतो) अनाथ सता (कहं) केवी रीते मारा (नाहो) नाथ (भविस्ससि) थशो ? १२.

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ । वयणं अस्सुअपुव्वं, साहुणा विम्हयं निओ ॥१३॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (साहुणा) मुनिए (अस्सुअपुव्वं) पूर्वे नहीं सांभळेला (वयणं) वचन प्रत्ये (वुत्तो) कहेवायो एवो (सो) ते (नरिंदो) श्रेणिक राजा (सुसंभंतो) अत्यंत संभ्रांत अने (सुविम्हिओ) अत्यंत विस्मित थइ

अर्थ—(अज्जो) हे आर्य ! (तरुणोऽसि) तमे युवान छो, (संजया) हे मुनि ! (भोगकालम्मि) भोग भोगववाने समये (पव्वइओ) तमे प्रव्रज्या लीधी छे, (सामण्णे) चारित्रने विषे (उवट्ठिओऽसि) उद्यमवंत थया छो (एअमट्ठं) आ अर्थने एटले आ युवावस्थामां प्रव्रज्या लेवाना कारणने (ता) प्रथम (ते) तमारी पासे (सुणामि) हुं सांभळुं— सांभळवा इच्छुं छुं अने पछी तमे बीजुं जे कहेशो ते पण सांभळीश ८.

हवे ते मुनि जवाब आपे छे.—

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जई । अणुकंपगं सुहिं वा वि, कंची नाभिसमेमहं ॥९॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (अणाहोमि) हुं अनाथ छुं (मज्झ) मारो कोइ (नाहो) नाथ (न विज्जइ) नथी. (वा) अथवा (अणुकंपगं) दयाने चिंतवनार (कंची) कोइ (सुहिं) सुहृद्-मित्रने (वि) पण (नाभिसमेमहं) हुं पाम्यो नथी आ कारणथी में प्रव्रज्या लीधी छे ९ आ प्रमाणे मुनिए कह्युं त्यारे—

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो । एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई ॥१०॥

अर्थ—(तओ) ते वखते (सो) ते (मगहाहिवो) मगध देशनो अधिपति (सेणिओ) श्रेणिक (राया) राजा (पहसिओ) हस्यो के—(एवं) आ प्रकारे (इड्ढिमंतस्स) ऋद्धिवाळा एवा (ते) तमारो (नाहो) नाथ (कहं) केम (न विज्जई) नथी ? अहीं सर्वत्र ते काळनी अपेक्षाए वर्तमानकाळ लखेलो छे. ११

ते विस्मयने ज बतावे छे.—

अहो ! वण्णो ! अहो ! रूवं !, अहो ! अज्जस्स सोमया ! ।
अहो ! खंती ! अहो ! मुत्ती !, अहो ! भोगे असंगया ! ॥ ६ ॥

अर्थ—राजा विचार करे छे के—(अहो) अहो ! आ मुनिना शरीरनो (वण्णो) वर्ण ! (अहो रूवं) अहो एनुं रूप ! (अहो) अहो ! (अज्जस्स) आ आर्यनी-पूज्यनी (सोमया) चंद्रना जेवी सौम्यता-सुंदरता ! (अहो खंती) अहो ! आनी क्षमा ! (अहो मुत्ती) अहो ! आनी मुक्ति—निर्लोभता ! (अहो भोगे असंगया) अहो ! भोगने विषे आनी निःस्पृहता ! सर्व अति आश्चर्यकारक छे. ६.

तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं । नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ॥ ७ ॥

अर्थ—एम विचारी (तस्स) ते मुनिना (पाए उ) पादने (वंदित्ता) वंदन करीने (य) तथा (पयाहिणं) प्रदक्षिणा (काऊण) करीने (नाइदूरं) अति दूर नहीं तेमज (अणासन्ने) अति समीपे नहीं एवी रीते बेसीने (पंजली) बे हाथ जोडी (पडिपुच्छइ) राजाए प्रश्न कर्यो. ७.

तरुणोऽसि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ! । उवट्ठिओऽसि सामण्णे, एअमट्ठं सुणामि ता* ॥ ८ ॥

---

* ते इति वा पाठ.

ते उद्यान केवु हतु ? ते कहे छे.—

नाणादुमलयाइण्ण, नाणापक्खिनिसेविअ । नाणाकुसुमसछन्न, उज्जाण नदणोवम ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाणादुमलयाइण्ण) विविध प्रकारना वृचो अने लताओवडे व्याप्त, (नाणापक्खिनिसेविअ) विविध पचीओए सेवेलु तथा (नाणाकुसुमसछन्न) विविध जातिना पुष्पो सहित एवु (उज्जाण) ते उद्यान (नदणोवम) नदन वननी जेवु हतु ३

तत्थ सो पासई साहु, सजय सुसमाहिअ । निसन्न रुक्खमूलम्मि, सुकुमाल सुहोइअ ॥ ४ ॥

अर्थ—(तत्थ) ते उद्यानमां (सो) ते श्रेणिक राजाए (सजय) सम्यक् प्रकारे यतना करता, (सुसमाहिअ) सारी समाधिवाळा, (रुक्खमूलम्मि) वृचना मूळमां (निसन्न) बेठेला, (सुकुमाल) अति कोमळ अने (सुहोइअ) सुखने एटले सुख भोगववाने योग्य एवा एक (साहु) साधुने (पासई) जोया ४

तस्स रूव तु पासित्ता, राइणो तम्मि सजए । अच्चत परमो आसि, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥

अर्थ—(तस्स) ते मुनिनु (रूव तु) रूप (पासित्ता) जोइने (राइणो) श्रेणिक राजाने (तम्मि सजए) ते मुनिने विषे (अच्चत) अत्यत (परमो) उत्कृष्ट (अउलो) अतुल—कोइनी उपमा न अपाय एवो (रूवविम्हओ) रूपना विषयवाळो विस्मय (आसि) थयो ५

अथ महानिर्ग्रन्थीय नामनुं वीशमुं अध्ययन. २०

ओगणीशमा अध्ययनमां निःप्रतिकर्मपणुं एटले शरीरनी सारवार न करवी एम कह्युं. ते अनाथपणा विना पाळी शकाय नहीं. तेथी आ वीशमा अध्ययनमां अनेक प्रकारनुं अनाथपणुं कहे छे. आ संबंधथी आवेला आ अध्ययननुं प्रथम सूत्र कहे छे.—

सिद्धाण नमोकिच्चा, संजयाणं च भावओ। अत्थधम्मगइं तच्चं, अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

अर्थ—(सिद्धाण) तीर्थकरादिक पंदर प्रकारना सिद्धोने (संजयाणं च) तथा संयतोने एटले आचार्य, उपाध्याय अने साधुओने (भावओ) भावथी (नमोकिच्चा) नमस्कार करीने (अत्थधम्मगइं) प्रार्थना करवा लायक धर्मनुं ज्ञान छे जेने एवी अने (तच्चं) सत्य एवी (मे) माराथी कहेवाती एवी (अणुसिट्ठिं) शिक्षाने-उपदेशने (सुणेह) तमे सांभळो. १.

आ सूत्रमां धर्मकथानुयोग होवाथी धर्मकथाना द्वारवडे ज उपदेश आपे छे.—

पभूअरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो। विहारजत्तं निज्जाओ, मंडिकुच्छिसि चेइए ॥ २ ॥

अर्थ—(पभूअरयणो) गज अश्वादिक अथवा वैडुर्यादिक घणां रत्नोवाळो (मगहाहिवो) मगध देशनो अधिपति (सेणिओ) श्रेणिक नामनो (राया) राजा एकदा (विहारजत्तं) विहार यात्राए एटले अश्वक्रीडा करवा माटे नगरथी (निज्जाओ) नीकळ्यो थको (मंडिकुच्छिसि) मंडितकुक्षि नामना (चेइए) चैत्यने विषे-वनने विषे गयो. २.

महापभावस्स महाजसस्स, मिआपुत्तस्स निसम्म भासिअं ।
तवप्पहाणं चरिअं च उत्तमं, गइप्पहाणं च तिलोअविस्सुअं ॥ ९८ ॥

अर्थ--(महापभावस्स) मोटा प्रभाववाळा, तथा (महाजसस्स) मोटा यशवाळा (मिआपुत्तस्स) मृगापुत्रना (भासिअं) संसारनुं असारपणुं विगेरे जणावनारा वचनने (निसम्म) सांभळीने (च) तथा (तवप्पहाणं) तप छे प्रधान-मुख्य जेमां एवुं तथा (उत्तमं) उत्तम एवुं, तथा (गइप्पहाणं च) मोक्षरूप गतिए करीने प्रधान एवुं, तथा (तिलोअविस्सुअं) त्रण जगतमां प्रसिद्ध एवुं (चरिअं) ते मृगापुत्रनुं चरित्र सांभळीने—९८

विआणिआ दुक्खविवड्ढणं धणं, ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेह निव्वाणगुणावहं महं ॥ ९९ ॥ त्ति बेमि ॥

अर्थ--तथा (धणं) धन (दुक्खविवड्ढणं) दुःखने वधारनार छे, (च) तथा (ममत्तबंधं) ममत्वनुं बंधन छे अने (महब्भयावहं) महा भयने वहन करनार छे एम (विआणिआ) जाणीने (सुहावहं) सुखने आपनार, (अणुत्तरं) सर्वोत्कृष्ट, (निव्वाणगुणावहं) मोक्ष प्राप्त करावनारा गुण जे अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य तेने धारण करनार थाओ तथा (महं) मोटी एवी (धम्मधुरं) धर्मधुराने (धारेह) धारण करो (त्ति बेमि) ए प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहेता हवा. ९९

इति एकोनविंशतितममध्ययनम् ॥ १९ ॥

अर्थ—(एवं) एज प्रमाणे (नाणेण) मति, श्रुत विगेरे ज्ञानवडे, (चरणेणं) यथाख्यात नामना चारित्रवडे, (दंसणेण) शुद्ध समकितवडे, (तवेण य) तथा बार प्रकारना तपवडे (अ) तथा (सुद्धाहिं) शुद्ध एटले नियाणादिक दोषरहित एवी (भावणाहि) महाव्रत संबंधी पचीश भावनावडे अथवा अनित्यादिक बार भावनावडे (अप्पयं) पोताना आत्माने (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (भावित्तु) भावीने एटले निर्मळ करीने—९५

बहुआणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिआ । मासिएण उ भत्तेणं, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥ ९६ ॥

अर्थ—(बहुआणि उ) घणा (वासाणि) वर्षो सुधी (सामण्णं) चारित्रने (अणुपालिआ) पाळीने (मासिएण उ) एक मासना (भत्तेणं) अनशनवडे (अणुत्तरं) सर्वोत्कृष्ट एवी (सिद्धिं) सिद्धिने (पत्तो) पाम्या. ९६

हवे अध्ययननो उपसंहार करतां उपदेश आपे छे.—

एवं करंति संबुद्धा, पंडिआ पविअक्खणा । विणिअट्टंति भोगेसु, मिअापुत्ते जहा मिसी ॥ ९७ ॥

अर्थ—(संबुद्धा) सम्यक् प्रकारे तत्त्वना जाण, तथा (पंडिआ) पंडित एटले हेय अने उपादेय जाणनारा, तथा (पविअक्खणा) अति विचक्षण एवा पुरुषो (एवं) उपर कह्या प्रमाणे (करंति) करे छे, तेथी (भोगेसु) भोग थकी (विणिअट्टंति) पाछा वळे छे. (जहा) जेम (मिसी) ऋषि (मिआपुत्ते) मृगापुत्र भोगथी निवृत्त थइ चारित्र ग्रहण करी मोक्षे गया तेम. ९७. बीजी रीते उपदेश आपे छे.

तथा (अनिश्राणो) नियाणा रहित थया, तथा (अबंधणो) राग द्वेषना बंधन रहित थया. ९२
तथा (अनिश्राणो) नियाणा रहित थया, तथा (अबंधणो) राग द्वेषना बंधन रहित थया. ९२

अणिस्सिओ इह लोए, परलोए अणिस्सिओ । वासीचंदणकप्पो अ, असणे अणसणे तहा ॥९३॥

अर्थ--(इह लोए) आ लोकने विषे पण (अणिस्सिओ) कोइनी निश्रा एटले सहाय रहित, तथा (परलोए) परलोकने विषे पण (अणिस्सिओ) निश्रा रहित अर्थात् आ लोकमां राज्यादिकनी अने परलोकमां स्वर्गसुखनी वांछा रहित थया. (वासीचंदणकप्पो अ) तथा वासी अने चंदनने विषे समान एटले कोइ पुरुष वांसलावडे छेदे अथवा कोइ माणस चंदनवडे पूजा करे ते बन्नेने विषे समान दृष्टिवाळा थया, (तहा) तथा (असणे) आहारने विषे अने (अणसणे) अनशनने विषे पण समान एटले आहार करवामां अने नहीं करवामां अथवा आहार मळे के न मळे तोपण ते बन्नेमां समान दृष्टिवाळा थया ९३

अप्पसत्थेहि दारेहिं, सव्वओ पिहिआसवो । अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणो ॥९४॥

अर्थ—(अप्पसत्थेहिं) अप्रशस्त एटले कर्म उपार्जन करवाना हेतुरूप हिंसादिक (दारेहिं) द्वारोथी निवृत्त थया, तेथी करीने ज (सव्वओ) चोतरफथी (पिहिआसवो) रुंध्या छे आश्रव एटले पापव्यापारो जेणे एवा थया, तथा (अज्झप्पज्झाणजोगेहिं) आत्माने विषे शुभ ध्यानना व्यापारोवडे (पसत्थदमसासणो) प्रशस्त छे दम एटले उपशम अने शासन एटले सर्वज्ञनो सिद्धांत जने एवा थया अर्थात् उपशमवाळा अने शासनना आराधक थया ९४

एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य । भावणाहि अ सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥ ९५ ॥

गुत्तो अ) त्रण गुप्तिवडे गुप्त, तथा (सब्भिंतरबाहिरए) आभ्यंतर सहित बाह्य एवा (तवोवहाणम्मि) तप संबंधी उपधानने विषे-कर्त्तव्यने विषे (उज्जुत्तो) उद्यमवंत थया. ८९.

निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो । समो अ सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु अ ॥ ९० ॥

अर्थ—तथा (निम्ममो) ममता रहित, (निरहंकारो) अहंकार रहित, (निस्संगो) बाह्य अने आभ्यतर संग रहित, (चत्त गारवो) त्रण गारव रहित, (अ) तथा (सव्वभूएसु) सर्व प्राणीओने विषे एटले (तसेसु) त्रस प्राणीओने विषे (थावरेसु अ) अने स्थावर प्राणीओने विषे (समो) समान परिणामवाळा थया. ९०.

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा । समो निंदापसंसासु, समो माणावमाणओ ॥ ९१ ॥

अर्थ—(लाभालाभे) लाभ अने अलाभने विषे, (सुहे) सुख अने (दुक्खे) दुःखने विषे, (जीविए) जीवित अने (मरणे) मरणने विषे, (तहा) तथा (निंदापसंसासु) निंदा अने प्रसंसाने विषे (समो) समान, तथा (माणावमाणओ) मान अने अपमानने विषे (समो) समान थया. ९१.

गारवेसु कसाएसु, दंडसल्लभएसु अ । निअत्तो हाससोगाओ, अनिआणो अबंधणो ॥ ९२ ॥

अर्थ—(गारवेसु) त्रण गारव थकी (निअत्तो) निवृत्त थया, तथा (कसाएसु) चार कषायथी निवृत्त थया, तथा (दंड-सल्लभएसु अ) त्रण दंड, त्रण शल्य अने सात भयथी निवृत्त थया, तथा (हाससोगाओ) हास्य अने शोकथी निवृत्त थया,

कह्यु के—(पुत्त) हे पुत्र ! (जहासुह) जेम सुख उपजे तेम (गच्छ) तु जा–मृगचर्यानु आचरण कर ८६

एव से अम्मापिअरो, अणुमाणित्ता ण बहुविह । ममत्त छिंदई ताहे, महानागु व्व कचुअ ॥८७॥

अर्थ—(एव) आ प्रमाणे (स) ते मृगापुत्र (अम्मापिअरो) मातापितानी (अणुमाणित्ता ण) अनुज्ञा लइने (ताहे) ते वखते (महानागु) मोटो सर्प (व्व) जेम (कचुअ) कांचळीनो त्याग करे तेम (बहुविह) घणा प्रकारना (ममत्त) ममत्वने (छिंदई) छेदतो हवो–त्याग करतो हवो आ गाथावडे आभ्यतर उपधिनो त्याग कर्यो ८७

हवे बाह्य उपधिनो त्याग कहे छे —

इड्ढी वित्त च मित्ते अ, पुत्त दार च नायओ । रेणुअ व पडे लग्ग, निध्धुणित्ता ण निग्गओ ।८८।

अर्थ—(पडे) वस्त्रने विषे (लग्ग) लागेली–चोंटेली (रेणुअ व) रजनी जेम (इड्ढी) समृद्धिने, (वित्त च) धनने तथा (मित्ते अ) मित्रोने तथा (पुत्त) पुत्रोने तथा (दार च) स्त्रीओने तथा (नायओ) ज्ञातिने (निध्धुणित्ता ण) तजीने (निग्गओ) ते मृगापुत्र गृह बहार नीकळ्या ८८

त्यारपछी ते मृगापुत्र केवा थया ? अने तेने केवु फळ प्राप्त थयु ? ते कहे छे —

पचमहव्वयजुत्तो, पचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो अ । सब्भितरबाहिरए, तवोवहाणम्मि उज्जुत्तो ।८९।

अर्थ—(पचमहव्वयजुत्तो) पांच महाव्रतोथी युक्त, तथा (पचहिं) पांच समितिवडे (समिओ) सहित, तथा (तिगुत्ति

तेमज वळी (नो खिंसइज्जा) खिंसा न करे एटले आहारनी प्राप्ति न थाय तो ते प्रसंगे पण पोतानी के परनी निंदा न करे. ८४.

आ प्रमाणे मृगचर्यानुं स्वरूप कहीने मृगापुत्रे जे कह्युं, तथा मातापिताए जे कह्युं, अने पछी मृगापुत्रे जे कर्युं ते हवे कहे छे.—

मिगचारिअं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं । अम्मापिईहिंऽणुण्णाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८५॥

अर्थ—(मिगचारिअं) " शरीरनी चिकित्सा न करवी ए आदि मृगचर्याने (चरिस्सामि) हुं आचरीश." ए प्रमाणे मृगापुत्रे कह्युं, त्यारे मातापिताए जवाब आप्यो के-(पुत्ता) " हे पुत्र ! (एवं) जो एवी तारी इच्छा छे तो (जहासुहं) जेम सुख उपजे तेम तुं कर." ए प्रमाणे (अम्मापिईहिं) मातापिताए (अणुण्णाओ) अनुज्ञा आपी. (तओ) त्यारे ते मृगापुत्रे (उवहिं) सर्व परिग्रहनो (जहाइ) त्याग कर्यो. ८५.

उपर कहेला अर्थने ज विस्तारथी कहे छे.—

मिअचारिअं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। तुब्भेहिं समणुण्णाओ, गच्छ पुत्त! जहासुहं ।८६।

अर्थ—मृगापुत्रे कह्युं के—हे मातापिता ! (तुब्भेहिं) तमोए (समणुण्णाओ) अनुज्ञा आप्यो एवो हुं (सव्वदुक्खविमोक्खणिं) सर्व दुःखनो नाश करनारी (मिअचारिअं) मृगचर्याने-दीक्षाने (चरिस्सामि) आचरीश." त्यारे मातापिताए

आ प्रमाणे दृष्टांत कहीने हवे बे गाथावडे उपसहार करे छे—

एवं समुट्ठिए भिक्खू, एवमेव अणेगगो। मिगचारिअं चरित्ता ण, उड्ढं पक्कमई दिसिं ॥ ८३ ॥

अर्थ—(एव) ए ज प्रमाणे (समुट्ठिते) चारित्रनी क्रिया पाळवामां उद्यमवंत थयेलो एटले मृगनी जेम रोगनी उत्पत्ति सते पण चिकित्सा नहीं करनार तथा (एवमेव) ए ज प्रमाणे एटले मृगनी जेम (अणेगगो) अनेक ठेकाणे अनियमित रीते रहेनार (भिक्खू) साधु (मिगचारिअं) मृगना जेवी चर्याने (चरित्ता ण) आचरण करीने-पाळीने सर्व कर्मनो नाश करी (उड्ढं दिसिं) ऊर्ध्व दिशा प्रत्ये एटले मोक्ष प्रत्ये (पक्कमई) जाय छे ८३

मृगचर्याने ज स्पष्ट करे छे —

जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोअरे अ।
एवं मुणी गोअरिअं पविट्ठे, नो हीलए नो वि अ खिंसइज्जा ॥ ८४ ॥

अर्थ—(जहा मिए)जेम मृग (एग) एकलो-सहाय रहित, तथा (अणेगचारी) अनियत विहार करनार, तथा (अणेगवासे) अनेक स्थाने निवास करनार (अ) तथा (धुवगोअरे) निश्चित गोचरवाळो एटले निरंतर गोचरमां ज मळेली वस्तुनो आहार करनार होय छे, (एव) एज रीते (मुणी) मुनि पण तेवा ज विशेषणवाळो (गोअरिअं) गोचरीने विषे (पविट्ठे) गयो थको (नो हीलए) कोइनी हीलना न करे एटले कदन्नादिक मळे तो ते अन्ननी के तेना आपनारनी निंदा न करे (वि अ)

को वा से ओसहं देई ?, को वा से पुच्छई सुहं ?। को वा से भत्तपाणं च, आहरित्तु पणामए ? ॥८०॥

अर्थ—(वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (ओसहं) औषध (देइ) आपे छे ? (वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (सुहं) सुख साता (पुच्छई) पूछे छे ? (वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (भत्तपाणं च) भात पाणी-आहार (आहरित्तू) लावीने (पणामए) आपे छे ? कोइ ज नहीं. ८०.

त्यारे तेनो निर्वाह शी रीते थतो हशे ? ते उपर कहे छे.—

जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोअरं। भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि अ ॥ ८१ ॥

अर्थ—(जया य)अने ज्यारे (से) ते मृग (सुही) सुखी एटले रोग रहित (होइ) होय छे-थाय छे, (तया) त्यारे (गोअरं) गायनी जेम चरवाने स्थाने (गच्छइ) जाय छे, अने त्यां (भत्तपाणस्स) भोजन पाणीने (अट्ठाए) अर्थे (वल्लराणि) लीला घासना स्थानोने (सराणि अ) तथा सरोवरोने शोधे छे. ८१.

खाइत्ता पाणिअं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि अ। मिगचारिअं चरित्ता णं, गच्छई मिअचारिअं ॥ ८२ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! ते व्याधि रहित मृग (मिगचारिअं) मृगनी चर्यावडे एटले मृगने खावा पीवानी विधिवडे (चरित्ता णं) चरीने (वल्लरेहिं) लीला घासना प्रदेशथी (सरेहि अ) तथा सरोवरथी (खाइत्ता) खाइने अने (पाणिअं पाउं) पाणी पीने (मिअचारिअं) मृगने विश्रांति लेवानी भूमि प्रत्ये (गच्छई) जाय छे. ८२.

अर्थ—(सो) ते मृगापुत्र (बिंति) कहे छे के—(अम्मापिअरो) हे माता पिता ! (एअ) आ तमे कह्यु ते (एव) ए ज प्रमाणे (जहाफुड) सत्यज छे. परंतु (अरणे) अरण्यने विषे (मिअपक्खिणं) मृग एटले पशु अने पक्षीओना (परिकम्म) प्रतिकारने एटले चिकित्साने (को कुणइ) कोण करे छे ? वनमां रहेता पशुपक्षीओ व्याधिथी पीडाय छे त्यारे तेमने कोइ पण चिकित्सा करतु नथी. ७७.

तेथी करीने—

एगभूओ अरणे वा, जहा उ चरई मिगो। एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७८ ॥

अर्थ—(जहा उ) जेम (अरणे) अरण्यने विषे (मिगो) मृग (एगभूओ) एकलो ज स्वेच्छाए करीने (चरई) विचरे छे, (एव) ए ज प्रमाणे हु पण (संजमेण) सत्तर प्रकारना संयमवडे (तवेण य) तथा बार प्रकारना तपवडे (धम्मं) चारित्र धर्मनु (चरिस्सामि) आचरण करतो विचरीश. ७८.

जया मिअस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई। अच्छंतं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छई ॥७९॥

अर्थ—(जया) ज्यारे (महारण्णम्मि) मोटा अरण्यमां (मिअस्स) मृगने (आयंको) आतंक-रोग (जायई) उत्पन्न थाय छे, (ताहे) त्यारे (रुक्खमूलम्मि) वृक्षना मूळने विषे (अच्छंत) रहेला एवा तेने (को णं) कयो वैद्य (तिगिच्छई) चिकित्सा करे छे ? ७९

वेदना (वेइआ) कनुभवी छे. (जं) जे कारण माटे (निमेसंतरामित्तं पि) निमेषतुं आंतरुं पडे तेटलो वखत पण (साया) साता (वेअणा) वेदना (नत्थि) वेदीज नथी. विषयसंबंधी सुख पण इर्ष्यादिक अनेक दुःखोवडे व्याप्त होवाथी तथा परिणामे कटुक होवाथी दुःखरूप ज छे. आ आखा प्रकरणनो अभिप्राय ए छे जे—में आवा प्रकारनां दुःखो अनुभव्यां छे, तेथी हुं तत्त्वथी सुखने योग्य के सुकुमाळ केम होइ शकुं ? जेणे आवी वेदनाओ सहन करी छे, तेने दीक्षा दुष्कर शी रीते होय ? तेथी मारे दीक्षा ग्रहण करवी ए ज योग्य छे. ७५.

आ प्रमाणे कहीने मृगापुत्र मौन रह्या. ते वखते—

तं बिंतऽम्मापिअरो, छंदेणं पुत्त ! पव्वया । नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७६ ॥

अर्थ—(अम्मापिअरो) माता पिता (तं) ते मृगापुत्रने (बिंति) कहेता हवा, के (पुत्त) हे पुत्र ! (छंदेणं) तारी इच्छा प्रमाणे (पव्वया) तुं प्रव्रज्या ग्रहण कर. (पुण) परंतु (नवरं) विशेष कहेवानुं ए छे जे—(सामण्णे) चारित्रने विषे (निप्पडिकम्मया) निःप्रतिकर्मता एटले रोगादिक उत्पन्न थया छतां पण तेनो प्रतिकार—औषधादिक उपाय करवानो नथी, ए (दुक्खं) अति दुःख छे. ७६.

आ प्रमाणे मातापिताए कह्युं, त्यारे—

सो बिंतऽम्मापिअरो !, एवमेअं जहाफुडं । परिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मिअपक्खिणं ? ॥७७॥

अर्थ—हे मातापिता ! (मए) में (नरएसु) नरकने विषे (तिव्वचंडप्पगाढाओ) तीव्र–अधिक रसवाळी, चंड–कही न शकाय तेवी उत्कट, प्रगाढ–घणी स्थितिवाळी, (घोराओ) घोर–जे सांभळवाथी पण शरीर कंपे तेवी भय आपनारी, (अइदुस्सहा) अत्यत दु:सह, तेथी करीने ज (महाभयाओ) महा भय आपनारी तथा (भीमाओ) भीम–सांभळी थकी पण भय आपनारी एवी वेदनाओ अनेकवार (वेइआ) वेदी छे–अनुभवी छे आ तीव्र विगेरे सर्व विशेषणो नरकनी वेदनानी कर्कशता सूचवनारा एक ज अर्थवाळा छे ७३

वळी ते तीव्रादिक वेदना केवी छे ? ते कहे छे—

जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेअणा । एत्तो अणंतगुणिआ, नरएसु दुक्खवेअणा ॥७४॥

अर्थ—(ताया) हे पिता ! (माणुसे लोए) आ मनुष्यलोकमां (जारिसा) जेवा प्रकारनी (वेअणा) शीतोष्णादि वेदना (दीसंति) जोवामां आवे छे, (एत्तो) तेनाथी (अणंतगुणिआ) अनंतगुणी (नरएसु) नरकने विषे (दुक्खवेअणा) दु:खनी वेदनाओ छे ७४

केवळ नरकने विषे ज में दु:खवेदना अनुभवी छे एटलुंज नहीं, परतु सर्व गतिने विषे पण अनुभवी छे ते उपर कहे छे

सव्वभवेसु असाया, वेअणा वेइआ मए । निमेसंतरमित्तं पि, जं साया नत्थि वेअणा ॥ ७५ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! (मए) में (सव्वभवेसु) सर्व त्रस अने स्थावर भवोने विषे (असाया वेअणा) असाता

करावीने पछी (समंसाइं) मारा पोताना ज मांसने (खंडाइं) ककडारूप करी (सोल्लगाणि अ) शेकी तथा (अग्गिवण्णाइं) अग्निनी जेवा वर्णवालुं करी (णेगसो अनेकवार (खाइओमि) मने खवराव्युं छे. ७०.

तुहं पिआ सुरा सीहू, मेरओ अ महूणि अ । *पाइओमि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि अ ॥७१॥

अर्थ—" (तुहं) तने (सुरा) सुरा—चंद्रहास नामनी मदिरा, तथा (सीहू) सीधु—ताड वृक्षथी बनेली मदिरा —ताडी तथा (मेरओ अ) मेरक—लोटनी बनेली मदिरा, तथा (महूणि अ) मधु—पुष्पनी बनेली मदिरा (पिआ) पूर्वभवमां बहु प्रिय हती. " ए प्रमाणे स्मरण करावीने मने परमाधामीओए (जलंतीओ) जाज्वल्यमान एटले तपावेली (वसाओ) मारी पोतानी ज चरबी (रुहिराणि अ) तथा रुधिर (पाइओमि) पायां छे. ७१.

निच्चं भीएण तत्थेणं, दुहिएणं वहिएण य । परमा दुहसंबद्धा, वेअणा वेइआ मए ॥ ७२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (निच्चं) निरंतर (भीएण) भय पामेला, (तत्थेणं) त्रास पामेला, (दुहिएणं) दुःखी थयेला (वहिएण य) तथा व्यथा पामेला एटले सर्व अंगे कंपता एवा (मए) में नरकने विषे (दुहसंबद्धा) दुःखना संबंधवाळी (परमा) उत्कृष्ट (वेअणा) वेदना (वेइआ) वेदी छे—अनुभवी छे. ७२.

तिव्वचंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा । महाभयाओ भीमाओ, नरएसुं वेइआ मए ॥ ७३ ॥

---

* ' पज्जिओमि ' इत्यपि पाठः

अर्थ—(दुमो विव) वृत्तनी जेम हु (कुहाडपरसुमाईहिं) कुहाडा अने परशु विगेरे वडे, (वड्डइहिं) परमाधामीए विकुर्वेला सुथारोथी (अणतसो) अनतीवार (कुट्टिओ) कूटायो एटले सूक्ष्म ककडा करायो छु (फालिओ) फडायो छु (छिन्नो) छेदायो छुं (तच्छिओ अ) तथा छोलायो छु. ६७

चवेडमुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पि व । ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ अ अणंतसो ॥६८॥

अर्थ—(कुमारेहिं) लुहारोए घण विगेरेवडे (अय पि व) लोढाने कुटे तेम मने परमाधामीओए (चवेडमुट्ठिमाईहिं) चपेटा एटले लात अने मुठी विगेरेवडे (अणंतसो) अनतीवार (ताडिओ) ताडना करी छे (कुट्टिओ) कुट्यो छे (भिन्नो) भेद्यो छे (चुण्णिओ अ) तथा चूर्णरूप कर्यो छे ६८

तत्ताइं तंबलोहाइं, तउआणि सीसगाणि अ । पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ॥ ६९ ॥

अर्थ—(सुभेरव) अति भयकर (आरसतो) आक्रंद करता एवा मने परमाधामीओए विकुर्वेला (तत्ताइ) तपावेला अने (कलकलंताइ) कलकल शब्द करता एटले अत्यत उकाळेला-खदखदता (तंबलोहाइ) तांबा, लोढा (तउआणि) कथीर (सीसगाणि अ) अने सीसानो रस (पाइओ) अनेकवार पायो छे. ६९

तुहं पिआइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि अ । खाइओमि समंसाइं, अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥ ७० ॥

अर्थ—" (तुह) तने (मसाइ) मास (पिआइ) बहु प्रिय हतु, " ए प्रमाणे मने परमाधामीए पूर्वभवनु स्मरण

अर्थ—हे माता पिता! (मिओ वा) मृगनी जेम (अवसो) पराधीन एवो (अहं) हुं (पासेहिं) पाशवडे तथा (कूडजालेहिं) कूट एटले कपटयुक्त जाळवडे (बहुसो) घणीवार (वाहिओ) ठगायो छुं, (बद्धरुद्धो अ) तथा बंधनवडे बंधायो छुं अने बहार जइ न शकुं तेम रुंधायो छुं (चेव) तथा (विवाइओ) विनाश करायो छुं. ६४.

गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ अ अणंतसो॥६५॥

अर्थ—(अवसो) पराधीन एवो (अहं) हुं (मच्छो वा) मत्स्यनी जेम (गलेहिं) बाडिशवडे एटले मत्स्यना गळाने वींधे तेवी मांस युक्त सोयवडे, तथा (मगरजालेहिं) परमाधामीए विकुर्वेला मघरोवडे अने तेमणे करेली तेने पकडवानी जाळवडे (अणंतसो) अनंती वार (उल्लिओ) विंधायो छुं, (फालिओ) लाकडानी जेम चीरायो छुं, (गहिओ) ग्रहण करायो छुं अने (मारिओ अ) मरायो-कुटायो छुं. ६५.

विदंसएहिं जालेहिं, लिप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो अ बद्धो अ, मारिओ अ अणंतसो।६६।

अर्थ—(सउणो विव) पक्षीनी जेम हुं (विदंसएहिं) विशेषे करीने दंश करनारा श्येनादिक पक्षीओवडे, तथा (जालेहिं) जाळवडे, तथा (लिप्पाहिं) वज्रलेपादिक लेपवडे अनुक्रमे (अणंतसो) अनंतीवार (गहिओ) ग्रहण करायो छुं (लग्गो अ) तथा लेप वडे आश्लेष करायो छुं (बद्धो अ) तथा जाळवडे बंधायो छुं अने (मारिओ अ) सर्ववडे मरायो छुं. ६६.

कुहाडपरसुमाईहिं, वड्ढइहिं दुमो विव। कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ अ अणंतसो॥६७॥

उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्त महावण । असिपत्तेहिं पडतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६१ ॥

अर्थ—(उण्हाभितत्तो) वज्रवालुकादिकना तापथी तपेलो एवो हुं (असिपत्त) खड्ग जेवा पत्रवाळा वृक्षो होवाथी असिपत्र नामना (महावण) महा वनमां (संपत्तो) छायाने माटे प्राप्त थयो-गयो, तो त्यां वृक्षोपरथी (पडतेहिं) पडता एवां (असिपत्तेहिं) खड्ग जेवां तीक्ष्ण धारवाळां पांदडांओवडे (अणेगसो) अनेक वार (छिन्नपुव्वो) पूर्वे छेदायो छु ६१.

मुग्गरेहिं मुसढीहिं, सूलेहि मुसलेहि अ । गयास भग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खमणंतसो ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भग्गगत्तेहिं) गात्रने एटले शरीरने भांगी नांखनारा (मुग्गरेहिं) मुद्गरवडे, तथा (मुसढीहि)मुसढी नामना शस्त्रवडे, तथा (सूलेहिं) त्रिशूळवडे, (अ) तथा (मुसलेहि) मुशळवडे (गयास) रक्षणनी आशा रहितपणे में (अणंतसो) अनंतीवार (दुक्ख) दुःख (पत्त) प्राप्त कर्युं छे ६२.

खुरेहिं तिक्खधाराहि, छुरिआहि कप्पणीहि अ । कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो अ अणेगसो ॥६३॥

अर्थ—(तिक्खधाराहिं) तीक्ष्ण धारवाळा (खुरेहिं) क्षुर नामना मस्तक मुंडवाना शस्त्रवडे, तथा (छुरिआहिं) छुरिकावडे, (अ) तथा (कप्पणीहि) कातरवडे (अणेगसो) अनेक वार (कप्पिओ) हु कपायो छु, तथा (फालिओ) वस्त्रनी जेम फडायो छु, तथा (छिन्नो) छेदायो छु, (अ) तथा (उक्कित्तो) चामडी दूर करवा वडे उतरडायो छु. ६३

पासेहिं कूडजालेहि, मिओ वा अवसो अहं । वाहिओ बद्धरुद्धो अ, बहुसो चेव विवाइओ ॥६४॥

हुआसणे जलंतम्मि, चिआसु महिसो विव । दड्ढो पक्को अ अवसो, पावकम्मेहिँ पाविओ ॥५८॥

अर्थ—हे मातापिता ! (पावकम्मेहिं) पाप कर्मे करीने (पाविओ) व्याप्त अथवा नरकने पामेला एवा अने (अवसो) पराधीन एवा मने (चिआसु) परमाधामीए रचेली चिताने विषे (महिसो विव) पाडानी जेम (जलंतम्मि) जाज्वल्यमान एवा (हुआसणे) अग्निमां (दड्ढो) बाळवामां आव्यो छे. (अ) अने (पक्को) रांधवामां आव्यो छे. ५८.

बला संडासतुंडेहिं, लोहतुंडेहिँ पक्खिहिं । विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धेहिँऽणंतसो ॥ ५९ ॥

अर्थ—(संडासतुंडेहिं) सांडसी जेवा मुखवाळा अने (लोहतुंडेहिं) लोढाना एटले वज्र जेवा मुखवाळा (ढंकगिद्धेहिं) परमाधामीए विकुर्वेला ढंक अने गीध (पक्खिहिं) पक्षीओए (विलवंतोऽहं) विलाप करता एवा मने (अणंतसो) अनंतीवार (बला) बळात्कारे (विलुत्तो) विविध प्रकारे छेद्यो छे. ५९.

तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेअरणिं नइं । जलं पाहं ति चिंतंतो, खुरधाराहिँ विवाइओ ॥६०॥

अर्थ—(तण्हाकिलंतो) तृषावडे व्याप्त थयेलो हुं (धावंतो) दोडतो दोडतो (वेअरणिं) वैतरणी (नइं) नदीए (पत्तो) गयो. त्यां (जलं) जळने (पाहं) हुं पीउं (ति) एम (चिंतंतो) विचार करतो हतो तेटलामां (खुरधाराहिं) क्षुरनी धारावडे (विवाइओ) हुं हणायो. वैतरणी नदीना जळना तरंगो क्षुरनी धारा जेवा छे तेथी पाणी पीवानो विचार करतां ज हुं तेनाथी छेदायो. ६०.

श्याम नामना (अ) तथा (सवलेहिं) शबल नामना परमाधामीओए (अणेगसो) अनेकवार (पाडिओ) पृथ्वीपर पाडी नांरयो छे, तथा (फालिओ) जीर्ण वस्त्रनी जेम फाड्यो छे अने (विप्फुरंतो) तडफडता एवा मने (छिन्नो) अनेक वार छेद्यो भेद्यो छे. ५५

असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लीहिं पट्टिसेहि अ। छिंन्नो भिंन्नो विभिंन्नो अं, उववण्णो पावकम्मुणा ॥५६॥

अर्थ—(पावकम्मुणा) पापकर्मे करीने (उववण्णो) नरकमां उत्पन्न थयेलो हुं (अयसिवण्णाहिं) अतसीपुष्पनी जेवा श्याम वर्णवाळा (असीहिं) खड्गोवडे, तथा (भल्लीहिं) भालाओवडे (अ) तथा (पट्टिसेहिं) पट्टिश नामना शस्त्रवडे अनेकवार (छिन्नो) छेदायो छु, तथा (भिन्नो) भेदायो छु, (अ) अने (विभिन्नो) विशेष भेदायो छु एटले सूक्ष्म ककडा करायो छुं. ५६

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजोत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५७ ॥

अर्थ—कोइ वखत परमाधामीए (जलते) अग्निवडे जाज्वल्यमान अने (समिलाजुए) धुसरी अने जोतरे करीने सहित एवा (लोहरहे) लोढाना रथने विषे (अवसो) पराधीन एवा मने (जुत्तो) जोड्यो छे पछी (तोत्तजोत्तेहिं) परोणा अने राशवडे—नासिकाए बांधेला दोरडावडे (चोइओ) मने हांकवामां आव्यो छे अने पछी (रोज्झो वा) रोझ नामना पशुनी (जह) जेम (पाडिओ) मने पाडी दीधो छे एटले लाकडी विगेरेथी कुटीने मने पृथ्वीपर पाडी दीधो छे. ५७.

(अणंतसो) अनंतीवार (छिन्नपुव्वो) पूर्वे छेदायो छुं. हुं नाशी जइ न शकुं तेटला माटे मने उंचो बांधी कंदुकुंभीमां नांखी करवतवडे लाकडानी जेम मने अनंतीवार छेद्यो छे–वेर्यो छे. ५२.

अइतिक्खकंटयाइण्णे, तुंगे सिंबलिपायवे । खेविअं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥ ५३ ॥

अर्थ—(अइतिक्खकंटयाइण्णे) अति तीक्ष्ण कांटाए करीने व्याप्त अने (तुंगे) उंचा एवा (सिंबलिपायवे) शंबलि–शाल्मलि वृक्ष उपर (पासबद्धेणं) पाशथी बंधायेला में (कड्ढोकड्ढाहिं) परमाधामीए करेला आकर्षण अने अपकर्षणवडे (दुक्करं) दुःखे सहन थइ शके तेवो (खेविअं) खेद अनुभव्यो छे एटले पूर्वे उपार्जन करेला कर्मनुं फळ भोगव्युं छे. ५३.

महाजंतेसु उच्छू व, आरसंतो सुभेरवं । पीलिओमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥ ५४ ॥

अर्थ—(सुभेरवं) अत्यंत भयानक (आरसंतो) आक्रंद करतो अने (पावकम्मो) पाप कर्मवाळो हुं (सकम्मेहिं) मारा पोताना कर्मे करीने (अणंतसो) अनंतीवार (महाजंतेसु) महा यंत्रोने विषे (उच्छू व) शेरडीनी जेम (पीलिओमि) पीलायो छुं. ५४.

कूयंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि अ । पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५५॥

अर्थ—(कूयंतो) आक्रंद करता एवा मने (कोलसुणएहिं) भुंड अने कूतराना रूपने धारण करता (सामेहिं)

ते (नरएसु) नरकोमां (अणवगुणा) अनवगुणी (असाया) असाता-दुःख उपजावनारी (सीआ) शीत (वेअणा) वेदना (मए) में (वेइआ) अनुभवी छे ४९.

कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो । हुआसणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ॥ ५० ॥

अर्थ—(कंदतो) आक्रंद करतो, (उड्ढपाओ) उंचा पगवाळो अने (अहोसिरो) नीचे मस्तकवाळो एवो हुं (कंदुकुंभीसु) लोढानी कुंभीने विषे (जलंतम्मि) देदीप्यमान (हुआसणे) अग्निमां (अणंतसो) अनंतवार (पक्कपुव्वो) पूर्वे पकावायो हतो ५०

महादवग्गिसंकासे, मरुम्मि वइरवालुए । कलंबवालुआए अ, दड्ढपुव्वो अणंतसो ॥ ५१ ॥

अर्थ—(महादवग्गिसंकासे) महा दावानळनी जेवा तथा (मरुम्मि) मरुदेशनी रेती जेवा (वइरवालुए) वज्रवालुका नदीने कांठे (अ) अने (कलंबवालुआए) कलंबवालुका नदीने कांठे (अणंतसो) अनंतीवार (दड्ढपुव्वो) हुं पूर्वे नरकमां बळ्यो छुं-भुंजायो छुं ५१

रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो । करवत्तकरकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥ ५२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (रसंतो) आक्रंद करतो (अबंधवो) बंधु रहित एवो हुं (कंदुकुंभीसु) कंदुकुंभीने विषे (उड्ढं) उंचे वृक्षनी शाखामां (बद्धो) बंधायो सतो (करवत्तकरकयाईहिं) करवत अने क्रकच नामनी नानी करवत वडे

संबंधी (भीमाओ) भयंकर (वेअणाओ) वेदनाओ (य) तथा (असइं) वारंवार (दुक्खभयाणि) दुःखने उत्पन्न करनारां भयो अथवा दुःख अने भयो (सोढाओ) सहन कर्यां छे. ४६.

जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे । मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि अ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(जरामरणकंतारे) जरा अने मरणरूपी गाढ अरण्यवाळा, तथा (चाउरंते) देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक ए चार अवयववाळा, तथा (भयागरे) भयनी खाणरूप आ संसारने विषे (मए) में (भीमाणि) भयंकर एवा (जम्माणि) जन्मो (अ) अने (मरणाणि) मरणो (सोढाणि) सहन कर्यां छे. ४७.

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणा तहिं । नरएसु वेअणा उण्हा, असाया वेइआ मए ॥४८॥

अर्थ—(इहं) आ मनुष्य लोकमां (जहा) जेवो (अगणी) अग्नि (उण्हो) उष्ण छे, (एत्तो) तेथी–ते करतां (तहिं) ते (नरएसु) नरकोने विषे (अणंतगुणा) अनंत गुणी (उण्हा) उष्ण (असाया) असाता–दुःख उपजावनारी (वेअणा) वेदना (मए) में (वेइआ) अनुभवी छे. नरकमां बादर अग्निनो अभाव छे, परंतु ते पृथ्वीनो स्पर्श ज तेवा प्रकारनो उष्ण छे. अर्थात् तेनी वेदना अग्निनी वेदना तुल्य छे. ४८.

जहा इहं इमं सीअं, एत्तोऽणंतगुणा तहिं । नरएसु वेअणा सीआ, असाया वेइआ मए ॥४९॥

अर्थ—(इहं) आ मनुष्य लोकमां (जहा) जेवुं (इमं) आ (सीअं) शीत छे, (एत्तो) तेनाथी पण (तहिं)

अर्थ—तेथी करीने (जाया) हे पुत्र ! (तुम) तु (माणुस्सए) मनुष्य सबधी (पचलक्खणए) पांच प्रकारना (भोए) भोगोने (भुज) भोगव, (तओ पच्छा) त्यारपछी (भुत्तभोगी) भोगव्या छे भोग जेणे एवो थइने एटले भोग भोगवीने (धम्म) चारित्र धर्मनु (चरिस्ससि) आचरण करजे ४४

आ प्रमाणे मातापिताए कह्यु त्यारे मृगापुत्रे तेमने जे कह्यु ते एकत्रीश गाथावडे कहे छे —

सो बिंतम्मापिअरो !, एवमेअ जहाफुडं । इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥ ४५ ॥

अर्थ—(सो) ते मृगापुत्र (बिंति) कहे छे के (अम्मापिअरो) हे मातापिता ! (एवमेअ) ए एमज छे, जेम तमे कहो छो ते तेमज छे (जहाफुड) प्रगटपणे प्रव्रज्या दुष्कर छे ए वात सत्य छे परतु (इह लोए) आ लोकने विषे (निप्पिवासस्स) तृष्णा रहित एटले नि स्पृह एवा पुरुषने (किंचि वि) कांइपण (दुक्कर) दुष्कर (नत्थि) नथी कह्यु छे के— "नि स्पृहस्य तृण जगत्" निस्पृहने आखु जगत तृण समान छे. जे स्पृहावाळो होय तेने परिग्रहनो त्याग करवो दुष्कर छे, परतु निःस्पृहने तो साधुधर्म सुकर ज छे हु नि स्पृह छु तेथी मारे साधुधर्म पाळवो सुकर छे ४५

नि स्पृह थवानु कारण कहे छे —

सारीरमाणसा चेव, वेअणाओ अणंतसो । मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि अ ॥ ४६ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (मए) में (अणतसो) अनतवार (चेव) निश्चे (सारीरमाणसा) शरीर अने मन

जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कुत्थलो। तहा दुक्करं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥ ४१ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (कुत्थलो) वस्त्रनो कोथळो (वायस्स) वायुथी (भरेउं) भरवो ते (दुक्खं) दुःखरूप एटले दुष्कर (होइ जे) छे, (तहा) तेम (कीवेणं) सत्त्व रहित प्राणीए (समणत्तणं) चारित्र (करेउं) पाळवुं ते (दुक्करं जे) दुष्कर छे. ४१.

जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करं मंदरो गिरी । तहा निहुअनीसंकं, दुक्करं समणत्तणं ॥ ४२ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (मदरो) मेरु (गिरी) पर्वत (तुलाए) त्राजवावडे (तोलेउं) तोळवो ते (दुक्करं) दुष्कर छे, (तहा) तेम (समणत्तणं) श्रमणपणुं एटले चारित्र शरीरवडे पाळवुं (निहुअनीसंकं) निश्चळपणे अने निःशंकपणे (दुक्करं) दुष्कर छे. ४२.

जहा भुजाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो । तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसायरो ॥ ४३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (रयणायरो) रत्नाकर एटले समुद्र (भुजाहिं) बे भुजावडे (तरिउं) तरवो (दुक्करं) दुष्कर छे, (तहा) तेम (अणुवसंतेणं) अनुपशांत एटले उपशमने नहीं पामेला अर्थात् कषायवाळा पुरुषे (दमसायरो) दम एटले चारित्ररूपी सागर तरवो (दुक्करं) दुष्कर छे. ४३.

भुंजे माणुस्सए भोए, पंचलक्खणए तुमं । भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४४॥

अर्थ—(चेव*) जेम (वालुआकवले) वेलुना कोळीया नीरस छे, तेम (संजमे) संयम (निरस्साए उ) नीरस-स्वाद रहित छे (चेव) तथा जेम (असिधारागमणं) खड्गनी धारपर गमन करवु दुष्कर छे, तेम (तवो) चारित्ररूपी तप (चरिउ) आचरवु, ते (दुकर) दुष्कर छे ३८

अही वेगतदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त! दुच्चरे। जवा लोहमया चेवं, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३९॥

अर्थ—(पुत्त) हे पुत्र ! (दुच्चरे) दु खे करीने आचरी शकाय तेवा (चरित्ते) चारित्रमार्गने विषे (अही व) सर्पनी जेम (एगंतदिट्ठीए) एकांत-निश्चय दृष्टिवडे चालवानु छे, जेम सर्प एकाग्र दृष्टिए चाल्यो जाय छे, आडु अवळु जोतो नथी, तेम साधुए पण मोक्ष प्रत्ये ज एकाग्र दृष्टि राखीने चारित्रमार्गमां चालवानु छे, तेथी ते चारित्रमार्ग दु खे करीने आचरी शकाय तेवो छे. (चेव) तथा जेम (लोहमया) लोहमय एटले लोढाना (जवा) जव (चावेयव्वा) चाववा ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर छे, तेम चारित्र पण पाळवु ते अति दुष्कर छे ३९

जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करं। तह दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥ ४० ॥

अर्थ—(जहा) जेम (दित्ता) देदीप्यमान एवी (अग्गिसिहा) अग्निनी ज्वाळा (पाउं) पीवी ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर (होइ) छे, (तह) तेम (तारुण्णे) युवावस्थामां (समणत्तणं) चारित्र (करेउं) पाळवु ते (दुक्करं) अति दुष्कर छे (जे) 'जे' शब्द पादपूर्ति माटे छे. ४०.

* 'च' पादपूर्त्ति माटे छे, अने 'इव' उपमाना अर्थमा छे ए ज रीते सर्वत्र जाणवु

असमर्थपणाने ज दृष्टांतवडे सिद्ध करे छे.—

जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो। गरुओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता! होई दुव्वहो ॥३६॥

अर्थ—(पुत्ता) हे पुत्र ! (जो) जे (गुणाणं तु) चारित्रना मूळ अने उत्तर गुणोनो (महब्भरो) मोटो भार छे, ते (लोहभारु व्व) लोढाना भारनी जेम (गरुओ) मोटो—अत्यंत (दुव्वहो होइ) दुर्वह छे—वहन करवो अशक्य छे, केमके ते गुणोनो भार (जावज्जीवं) जावजीव पर्यंत (अविस्सामो) विश्रांति रहित छे. जो कदाच बीजो कोइ भार वहन न करी शकाय तो ते कोइ ठेकाणे नीचे उतारी वीसामो लइ शकाय छे. परंतु चारित्रना गुणनो भार तो कदी पण उतारातो नथी. ते तो जीवित पर्यंत वहन करवानो ज छे. ३६.

आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो। बाहाहिं सागरो चेव, तरिअव्वो गुणोदही ॥३७॥

अर्थ—(आगासे) आकाशमां रहेली (गंगसोउ व्व) गंगा नदीनो प्रवाह जेम दुस्तर छे—दुःखे तरी शकाय तेवो छे तथा (पडिसोउ व्व) बीजी नदीओनो प्रतिश्रोत एटले सामो प्रवाह—सामे पूरे तरवुं ते जेम (दुत्तरो) दुस्तर होय छे, (चेव) तथा (बाहाहिं) बे हाथवडे (सागरो) समुद्र तरवो दुष्कर छे, तेम (गुणोदही) ज्ञानादिक गुणोनो समुद्र (तरिअव्वो) तरवानो छे एटले ते तरवो अति दुष्कर छे. ३७.

वालुआकवले चेव निरस्साए उ संजमे। असिधारागमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३८॥

कावोआ जा इमा वित्ती, केसलोओ अ दारुणो । दुक्खं बंभव्वयं घोरं धारेउं अ महप्पणा ॥३४॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! साधु धर्मने विषे (जा) जे (इमा) आ (कावोआ) कपोत संबंधी (वित्ती) वृत्ति छे, ते अति दुष्कर छे जेम कपोत एटले पारेवा निरंतर शंका सहित ज भक्ष्य ग्रहण करवामां प्रवर्ते छे, अने खाधा पछी कांइ पण साथे राखता नथी, ते ज प्रमाणे साधुओ पण आहारना दोषनी शंकावाळा सता ज आहार ग्रहण करवा प्रवर्ते छे, अने आहार कर्या पछी कांइ पण संचय करता नथी-राखी मूकता नथी ते (अ) तथा साधुने (केसलोओ) केशनो लोच करवो पडे छे ते (दारुणो) भयंकर छे, (अ) तथा (महप्पणा) महात्मा एटले उत्तम साधुए (घोरं) अल्प सत्त्ववाळाने भयंकर एवुं (बंभव्वयं) ब्रह्मचर्यव्रत (धारेउं) धारण करवु ते पण (दुक्खं) अति दुःखरूप छे उपर २८ मी गाथामां ब्रह्मव्रतने दुष्कर कह्यु हतुं अने अहीं फरीथी तेने ज दुष्कर कह्यु ते तेनु अति दुष्करपणु जणाववा कह्यु छे ३४

हवे ते व्रतादिकनी दुष्करतानो उपसंहार करे छे-समाप्त करे छे —

सुहोइओ तुमं पुत्ता !, सुकुमालो अ सुमज्जिओ । न हु सि पहू तुमं पुत्ता !, सामण्णमणुपालिआ ।३५।

अर्थ—(पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तु (सुहोइओ) सुखने उचित छे-सुखनो भोक्ता छे (सुकुमालो) अति सुकुमाल छे (अ) तथा (सुमज्जिओ) सारी रीते अभ्यंगनादि पूर्वक स्नान करनारो छे, तथा उपलक्षणथी सर्व अलंकारवडे अलंकृत रहेनारो छे, तेथी (पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तु (सामण्णं) चारित्रने (अणुपालिआ) पाळवाने (हु) निश्चे (पहू) समर्थ (न सि) नथी ३५

वाय छे, तेनो संचय एटले संग्रह (वज्जेअव्वो) वर्जवानो छे एटले पासे एवी कोइ चीज राखी शकाती नथी, ते पण (सुदुक्करं) अति दुष्कर छे. ३१.

आ प्रमाणे छ व्रतनी दुष्करता कही. हवे परीषहोनी दुष्करता कहे छे.—

छुहा तण्हा य सीउण्हं, दंसमसगवेअणा । अक्कोसा दुक्खसिज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३२ ॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! (छुहा) क्षुधा, (तण्हा य) तृषा, तथा (सीउण्हं) शीत, उष्ण, (दंसमसगवेअणा) दंश अने मच्छरनी वेदना सहन करवानी छे, तथा (अक्कोसा) आक्रोश एटले बीजानां दुर्वचनो (दुक्खसिज्जा य) दुःखशय्या एटले उपाश्रयनुं दुःख, तथा (तणफासा) संथाराने विषे तृणना स्पर्शनुं दुःख, (य) अने (जल्लमेव) मळनो परीषह, ए सर्व सहन करवानुं छे. ते अति दुष्कर छे. ३२.

ताल[1]णा त[2]ज्जणा चेवं[3], व[4]हबंधपरीसहा । दु[5]क्खं भि[6]क्खायरिया, जा[7]यणा य अ[8]लाभया ॥ ३३ ॥

अर्थ—(तालणा) हस्तादिवडे कोइ ताडन करे तो ते सहन करवानु छे, (तज्जणा) आंगळी आदिक वडे तर्जना करे तो ते सहन करवानी छे, (चेव) तथा (वहबंधपरीसहा) वध एटले यष्टि विगेरेना मार अने दोरडा आदिकना बंधनरूप परीषहो सहन करवाना छे, ते दुष्कर छे, वळी (भिक्खायरिया) भिक्षाचर्या करवी ते पण (दुक्खं) दुःखरूप छे तथा (जायणा य) याचना करवी अने तेमां पण (अलाभया) लाभ न थाय ते सहन करवुं अति दुष्कर छे. ३३.

ज्ञण) वर्जवानो छे तृणनी सळी जेवी चीज पण कोइना दीधा विना ग्रहण करवानी नथी तथा (अणवज्जेसणिज्जस्स) दीधेली वस्तुमां पण निर्दोष अने एषणीय वस्तुनु ज (गिण्हणा) ग्रहण करवानु छे, (अवि) ते पण (दुक्कर) दुष्कर छे २८

विरई अबंभचेरस्स, कामभोगरसण्णुणा । उग्गं महव्वयं बंभ, धारेअव्वं सुदुक्करं ॥ २९ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (कामभोगरसण्णुणा) कामभोगना रसने जाणनार एवा तारे (अबंभचेरस्स) अब्रह्मचर्यनी एटले मैथुननी (विरई) विरति करवी ते अति दुष्कर छे, तथा (उग्ग) उग्र एवु (बंभ) ब्रह्मचर्यरूप (महव्वय) महाव्रत (धारेअव्व) धारण करवानु छे, ते (सुदुक्कर) अति दुष्कर छे २९

धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणा । सव्वारंभपरिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥ ३० ॥

अर्थ—(धणधन्नपेसवग्गेसु) धन, धान्य अने नोकरवर्गने विषे (परिग्गहविवज्जणा) परिग्रहनो एटले ए सर्वनो त्याग करवानो छे, तथा (सव्वारंभपरिच्चाओ) सर्व प्रकारना आरंभनो त्याग करवानो छे, तथा (निम्ममत्त) ममता रहित पणे रहेवानु छे, ते सर्व (सुदुक्कर) अति दुष्कर छे ३०

चउव्विहे वि आहारे, राईभोअणवज्जणा । सन्निहिसंचओ चेवं, वज्जेअव्वो सुदुक्करं ॥ ३१ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! वळी (चउव्विहे वि) चारे प्रकारना (आहारे) आहारने विषे (राईभोअणवज्जणा) रात्रिभोजननु वर्जन करवानु छे, (चेव) तथा (सन्निहिसचओ) घी, गोळ विगेरे उचित काळथी वधारे वखत राखवा, ते सनिधि कहे-

अर्थ—हवे (अम्मापिअरो) माता पिता (तं) ते मृगापुत्रने (बिंति) कहेता हवा, के (पुत्त) हे पुत्र ! (सामण्णं) साधुधर्म (दुच्चरं) दुःखे आचरी शकाय तेवो छे, केमके (गुणाणं तु) गुणोना (सहस्साइं) सहस्रोने-हजारो गुणोने (भिक्खुणो) भिक्षुए (धारेअव्वाइं) धारण करवाना छे. २५.

समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे । पाणाइवायविरई, जावज्जीवाइ दुक्करं ॥ २६ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (सव्वभूएसु) सर्व जीवोने विषे (वा) अथवा (जगे) जगतमां (सत्तुमित्तेसु) शत्रु अने मित्र उपर (समया) समता धारण करवानी छे, तथा (जावज्जीवाए) जावजीव पर्यंत (पाणाइवाइविरई) प्राणातिपात-जीवहिंसानी विरति धारण करवानी छे, ते (दुक्करं) अति दुष्कर छे. २६.

निच्चकालप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं । भासिअव्वं हिअं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥ २७ ॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! (निच्चकालप्पमत्तेणं) निरंतर अप्रमत्तपणे (मुसावायविवज्जणं) मृषावादनुं पण वर्जन करवानुं छे, तथा (हिअं) जीवोने हितकारक एवुं (सच्च) सत्यवचन ज (भासिअव्वं) बोलवानुं छे, तथा (निच्चाउत्तेण) निरंतर आयुक्तपणाए करीने एटले तेवा सत्यताना उपयोगे करीने सहित रहेवानुं छे, ते (दुक्करं) दुष्कर छे. २७.

दंतसोहणमाइस्स, अदिण्णस्स विवज्जणं । अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ॥ २८ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (दंतसोहणमाइस्स) दांतने शोधवानी-खोतरवानी सळी विगेरे (अदिण्णस्स) अदत्त वस्तुने (विव-

(गच्छइ) जाय छे, तो (गच्छतो) जतो एवो (सो) ते प्राणी (अप्पकम्मे) कर्म रहित–अल्प अशुभ कर्मवाळो अने (अवेयणे) वेदना रहित एटले असातावेदनीय रहित थयो सतो (सुही होइ) सुखी थाय छे २२

जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू । सारभंडाइ नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥ २३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (गेहे) कोइ घर (पलित्तम्मि) अग्निवडे बळवा मांड्ये सते (तस्स) ते (गेहस्स) घरनो (जो) जे (पहू) स्वामी होय ते (सारभंडाइ) सारभूत एटले महा मूल्यवाळां भांडो एटले वस्त्राभरणादिक किंमती वस्तुओने (नीणेइ) बहार काढे छे, अने (असार) असार एवा भांडोने (अवउज्झइ) तजी दे छे–जता करे छे २३

एंव लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण यं । अप्पाण तारइस्सामि, तुब्भेहि अणुमन्निओ ॥ २४ ॥

अर्थ—(एव) ते ज प्रमाणे (लोए) आ लोक (जराए) जरावस्थावडे (य) तथा (मरणेण) मरणवडे (पलित्तम्मि) बळते सते एटले आकुळ व्याकुळ थये सते (तुब्भेहिं) तमारा वडे (अणुमन्निओ) आज्ञा अपायो एवो हु (अप्पाण) सारभूत मारा आत्माने (तारइस्सामि) तारीश एटले ससारमांथी बहार काढीश अने असार एवा कामभोगादिकनो त्याग करीश तेथी मने तमे आज्ञा आपो २४

हवे वीश गाथावडे मातापिता जवाब आपे छे—

त बितम्मापिअरो, सामण्ण पुत्त दुच्चर । गुणाण तु सहस्साइ, धारेअव्वाइ भिक्खुणो ॥ २५ ॥

अर्थ—(जो) जे मनुष्य (महंतं तु) मोटा–लांबा (अद्धाणं) मार्ग प्रत्ये (अपाहिज्जो) भाता विना (पवज्जई) गमन करे छे, अने तेवी रीते (गच्छंतो सो) जतो एवो ते (छुहातण्हाहिं) क्षुधा अने तृषावडे (पीडिए) पीडा पाम्यो सतो (दुही होइ) दुःखी थाय छे. १९.

एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं । गच्छंतो सो दुही होइ, वाहिरोगेहिं पीडिए ॥ २० ॥

अर्थ—(एवं) एज प्रमाणे एटले धर्मरूपी भाता विनाना मार्गे जता पुरुषनी जेम (जो) जे पुरुष (धम्मं) धर्मने (अकाऊणं) नहीं करीने (परं भवं) पर भव प्रत्ये (गच्छइ) जाय छे, तो (गच्छंतो) जतो एवो (सो) ते पुरुष (वाहिरोगेहिं) व्याधि अने रोगोवडे (पीडिए) पीडा पाम्यो सतो (दुही) दुःखी (होइ) थाय छे. २०.

अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहिज्जो पवज्जइ । गच्छंतो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २१ ॥

अर्थ—(जो) जे पुरुष (महंतं तु) मोटा–लांबा एवा (अद्धाणं) मार्ग प्रत्ये (सपाहिज्जो) भाता सहित (पवज्जइ) गति करे छे, तो (गच्छंतो सो) जतो एवो ते (छुण्हातण्हाविवज्जिओ) क्षुधा अने तृषाथी रहित एवो सतो (सुही) सुखी (होइ) थाय छे. २१.

एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परे भवं । गच्छंतो सो सुही होई, अप्पकम्मे अवेअणे ॥ २२ ॥

अर्थ—(एवं) एज प्रमाणे (धम्मं पि) धर्मने पण (काऊणं) करीने (जो) जे प्राणी (परं भवं) पर भव प्रत्ये

रोगो, तथा (मरणाणि अ) मरण पण दुःख ज छे, (अहो) अहो ! (हु) निश्चे (ससारो) संसार ज (दुक्खो) दुःखरूप छे, के (जत्थ) जे संसारमां (जतुणो) जंतुओ (कीसति) क्लेश पामे छे. १६

खित्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवे। चइत्ता णं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥ १७ ॥

अर्थ—(खित्त) क्षेत्रने, (वत्थु) वास्तु एटले घर, हाट विगेरेने, (हिरण्ण च) सुवर्णने, तथा (पुत्तदारं च) पुत्र, स्त्री विगेरेने, तथा (बंधवे) भाइ, काका विगेरे बांधवोने, तथा (इमं) आ (देहं) देहने पण (चइत्ता णं) तजीने (अवसस्स) परवश एवा (मे) मारे (गतव्व) परभवने विषे जवानु छे १७

जहा किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो। एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥ १८ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (किंपागफलाणं) किंपाकना फळखावानु (परिणाम) परिणामो (न सुंदरो) सारु नथी, (एवं) एज प्रमाणे (भुत्ताण) भोगव्या एवा (भोगाण) कामभोगनु (परिणामो) परिणाम पण (न सुंदरो) सारु नथी. किंपाकना फळो जोवामां मनोहर होय छे अने खातां अति स्वादिष्ट लागे छे, तेज रीते विषयो पण जोवामां मनोहर अने भोगवतां पण सुखकारक लागे छे, परंतु परिणामे किंपाकना फळनी जेम मरण तथा नरकादिक गतिने आपे छे १८

आ प्रमाणे भोगादिकनी असारता कही हवे बे दृष्टांतवडे पोतानो अभिप्राय प्रगट करे छे—

अद्धाणं जो महंतं तु, अपाहिज्जो पवज्जई। गच्छंतो सो दुही होइ, छुहातण्हाहि पीडिए ॥ १९ ॥

ज्वरादिक रोगो तेमनुं अथवा दुःख एटले जन्म, जरा, मृत्यु विगेरे अने क्लेशो एटले धनहानि, स्वजन-वियोग विगेरे, तेनुं (भायणं) भाजन एटले स्थान छे. १३

असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामि हं । पच्छा पुरा य चइअव्वे, फेणवुब्बुअसन्निभे ॥ १४ ॥

अर्थ—तेथी करीने हे माता पिता ! (पच्छा) भोग भोगव्या पछी (य) अथवा (पुरा) भोग भोगव्या पहेलां (चइअव्वे) त्याग करवा लायक तथा (फेणवुब्बुअसन्निभे) पाणीना फीणना परपोटा जेवा (असासए) अनित्य (सरीरम्मि) आ शरीरने विषे (हं) हुं (रइं) प्रीतिने (न उवलभामि) पामतो नथी. १४.

माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाणं आलए । जरामरणघत्थम्मि, खणं पि न रमामि हं ॥ १५ ॥

अर्थ—वळी हे माता पिता ! (वाहीरोगाण) व्याधि एटले अगाध पीडाना हेतुरूप कुष्ठादिक अने रोग एटले वात, पित्त अने कफथी उत्पन्न थता ज्वरादिक तेमना (आलए) स्थानरूप, तथा (जरामरणघत्थम्मि) जरा अने मरणवडे ग्रस्त-व्याप्त एवा आ (असारम्मि) सार रहित (माणुसत्ते) मनुष्य भवने विषे (खणं पि) क्षणवार पण (हं) हुं (न रमामि) आनंद पामतो नथी. १५.

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि अ। अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥१६॥

अर्थ—(जम्मं) जन्म थवो ते (दुक्खं) दुःख छे, (जरा) वृद्धावस्था थाय ते (दुक्खं) दुःख छे, (रोगा य)

अथवा अनुगम्युं छे, तथा उपलक्षणथी देव अने मनुष्यने विषे जे दुःख छे ते पण में सांभळ्युं छे. तेथी करीने (महण्णवामो) महार्णव थकी एटले संसाररूपी समुद्रथकी (निव्विण्णकामो) नाश पाम्यो छे अभिलाष जेनो एवो (मि) हुं थयो छुं तो (अम्मो) हे माता ! (अणुजाणह) मने अनुज्ञा आपो. (पव्वइस्सामि) हुं प्रव्रज्या ग्रहण करीश. ११

त्यार माताषिता भोग भोगववानुं कहेशे एम धारी तेनो निषेध करता कहे छे.—

अम्मताय ! मेए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा । पच्छा कडुअविवागा, अणुबंधदुहावहा ॥ १२॥

अर्थ—(अम्मताय) हे माता पिता ! (मए) में (विसफलोवमा) विषना फळनी उपमावाळा एटले विषना फळ जेवा (भोगा) कामभोगो पूर्वे (भुत्ता) भोगव्या छे ते भोगो पहेलां भोगवे समये मधुर लागे छे, परंतु (पच्छा) भोगव्या पछी (कडुअविवागा) कडुक विपाकवाळा एटले परिणामे कडवां फळ आपनारा छे, तथा (अणुबंधदुहावहा) निरंतर दुःखने वहन करनारा-आपनारा छे १२.

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं । असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥ १३ ॥

अर्थ—हे माता पिता (इमं सरीरं) आ शरीर (अणिच्चं) अनित्य छे, (असुइं) अशुचि एटले अपवित्र छे, (असुइसंभवं) अपवित्र एवा शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थनारुं छे, (असासयावासं) अनित्य निवासवाळुं एटले तेमां जीवनो निवास पण अनित्य छे, तथा (इमं) आ शरीर (दुक्खकेसाण) दुःखना हेतुरूप जे रोगो एटले

अर्थ—(जाईसरणे) जातिस्मरण ज्ञान (समुप्पणे) उत्पन्न थये सते (महिड्ढिए) महा ऋद्धिवाळो एटले राजलक्ष्मीवडे युक्त एवो (मिआपुत्ते) मृगापुत्र (पोराणिअं) पूर्वनी (जाइं) जातिने–भवने (च) तथा (पुराकडं) पूर्व भवमां करेला–पाळेला (सामण्णं) चारित्रने (सरइ) स्मरण करतो हवो. ९.

त्यारपछी तेणे शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

विसएसु अरज्जंतो, रज्जंतो संजमम्मि अ। अम्मापिअरं उवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ १० ॥

अर्थ—(विसएसु) विषयोने विषे (अरज्जंतो) रागी नहीं थतो (अ) अने (संजमम्मि) संयमने विषे (रज्जंतो) रागी थतो एवो ते मृगापुत्र (अम्मापिअरं) माता पिता पासे (उवागम्म) आवीने (इमं) आ प्रमाणे (वयणं) वचन (अब्बवी) बोल्यो. १०.

जे वचन बोल्यो, ते कहे छे.—

सुआणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विंणकामो म्हि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥ ११ ॥

अर्थ—(मे) में (पंच) पांच (महव्वयाणि) महाव्रतो पूर्व भवमां (सुआणि) सांभळ्यां छे. तथा (नरएसु) नरकने विषे (दुक्खं) जे दुःख (च) अने (तिरिक्खजोणिसु) तिर्यंच योनिने विषे पण जे दुःख ते में सांभळ्युं छे

साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे । मोह गयस्स सतस्स, जाईसरण समुप्पन्न ॥७॥

अर्थ—(तस्स) ते (साहुस्स) साधुना (दरिसणे) दर्शन थये सते (सोहणे) शोभन एटले प्रशस्त एवा (अज्झवसाणम्मि) अध्यवसायने विषे एटले मनना परिणामने विषे अर्थात् क्षायोपशमिक भावने विषे वर्तता में आवु रूप क्यां जोयु छे ? एवु चिंतवन करतां (मोह) मूर्छाने (गयस्स सतस्स) पाम्या सता ते मृगापुत्रने (जाईसरण) जातिस्मरण ज्ञान (समुप्पन्न) उत्पन्न थयु, एटले के प्रथम साधुनु दर्शन थयु, पछी मनना शुभ परिणाम थया, पछी ते सबधी ऊहा पोह करतां मूर्छा आवी अने ते मूर्छा वळी एटले जातिस्मरण ज्ञान थयु ७.

ते जातिस्मरण ज्ञान केवु होय छे ? ते कहे छे —

देवलोगचुओ सतो, माणुस्स भवमागओ । सन्निनाणे समुप्पन्ने, जातिस्सरण पुराणय ॥ ८ ॥

अर्थ—(देवलोगचुओ सतो) हु देवलोकथी चव्यो सतो (माणुस्स) मनुष्य सबधी (भव) भवने विषे (आगओ) आव्यो छु ए प्रमाणे (सन्निनाणे) सज्ञीज्ञान एटले गर्भज पचेंद्रियने थतु ज्ञान ते (समुप्पन्ने) उत्पन्न थये सते (पुराणय) पूर्वभवनु (जातिस्सरण) जातिस्मरण ज्ञान कहेवाय छे ८

जाईसरणे समुप्पण्णे, मिआपुत्ते महिड्ढिए । सरइ पोराणिअ जाइ, सामण्णं च पुराकड ॥ ९ ॥

प्रासादना गवाक्षमां (ठिओ) बेठो थको (नयरस्स) नगरना (चउक्कतिगचच्चरे) चतुष्क, त्रिक अने चत्वरोने (आलोएइ) जोतो हतो. चतुष्क एटले चार मार्ग एकठा थता होय ते स्थान, त्रिक एटले त्रण मार्ग एकठा थता होय ते स्थान अने चत्वर एटले बजार—चौटुं तेने जोतो हतो. ४.

ते वखते शुं थयुं ? ते कहे छे—

अह तत्थ अइच्छंतं, पासई समणसंजयं । तवनियमसंजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥

अर्थ—(अह) ते वखते (तत्थ) त्यां त्रिकादिक मार्गने विषे (अइच्छंतं) गमन करता, (तवनियमसंजमधरं) उपवासादि तप, द्रव्यादिकना अभिग्रहरूप नियम अने सतर प्रकारना संयमने धारण करनारा, तेथी करीने ज (सीलड्ढं) शीळ एटले अढार हजार शीलांगे करीने सहित, अने तेथी करीने ज (गुणआगरं) ज्ञानादिक गुणोनी खाणरूप एवा (समणसंजयं) संयत साधुने तेणे (पासई) जोया. ५.

तं देहइ मिआपुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ । कहं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥

अर्थ—(मिआपुत्ते) ते मृगापुत्र (अणिमिसाए उ) निमेष रहित एवी ज (दिट्ठीए) दृष्टिवडे (तं) ते मुनिने (देहइ) जोतो हवो. जोइने तेणे विचार कर्यो के (मन्ने) हुं मानुं छुं के (एरिसं) आवुं (रूवं) रूप (मए) में (पुरा) पूर्वे जन्ममां (कहं) क्यांक (दिट्ठपुव्वं) प्रथम जोयेलुं छे ? एम विचारतां तेने हर्ष थयो. ६.

पिताए तेनु नाम थळश्री पाडयु हतु, तथा (मिश्रापुत्ते त्ति) लोकमां मृगापुत्र एवा नामे (विस्सुए) प्रसिद्ध हतो, एटले लोकोए मृगा राणीनो पुत्र होवाथी तेनु मृगापुत्र नाम पाडयु हतु ते पुत्र (अम्मापिऊण) मातापिताने (दइए) अत्यंत वल्लभ हतो, तथा (जुवराया) युवराज पदवीने पामेलो हतो पिता जीवतां छतां राजने योग्य जे कुमार होय ते युवराज कहेवाय छे तथा ते कुमार (दमीसरे) दमी एटले इंद्रियोने दमन करनारा साधुओनो ईश्वर-स्वामी हतो अहीं आ कुमार साधुनो स्वामी थवानो छे माटे भावीने विषे भूतकाळनो निर्देश करीने आ विशेषण आप्यु छे, अथवा द्रव्यनिक्षेपाने आश्रीने आ विशेषण आप्यु छे २

नंदंणे सो उ पासाए, कीलैंए सैह इंत्थिहिं । देंवो दोगुंदगो चेवं, निच्चं मुइअँमाणसो ॥ ३ ॥

अर्थ—(उ) तु पुन (सो) ते कुमार (निच्च) निरंतर (मुइअमाणसो) हर्ष पाम्यु छे मन जेनु एवो सतो (नंदणे) वास्तुशास्त्रमां कहेला लक्षणवाळो होवाथी समृद्धिवाळा नंदन नामना (पासाए) प्रासादने विषे (दोगुंदगो) दोगुंदक जातिना (देवो चेव) देवोनी जेम (इत्थिहिं) स्त्रीओनी (सह) साथे (कीलए) क्रीडा करतो हतो निरंतर भोगमां ज तत्पर रहेता त्रायस्त्रिंश देवोने पण दोगुंदक कहे छे ३.

मणिरंयणकुट्टिमतले, पासांयालोअंणे ठिंओ । आंलोएइ नैंयरस्स, चउक्कंतिगचच्चरे ॥ ४ ॥

अर्थ—ते कुमार एकदा (मणिरयणकुट्टिमतले) मणि अने रत्नोथी जडेलु छे तळीयु जेनु एवा (पासायालोअणे)

(हवइ) थाय छे–सिद्धपणाने पामे छे. आ प्रमाणे उपदेश आपीने ते क्षत्रियमुनि पृथ्वीपर विचरवा लाग्या, अने संयतमुनि पण निरतिचार चारित्रनुं पालन करी मोक्षपदने पाम्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं, एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ५४.

इत्यष्टादशमध्ययनम् १८.

—✻(◎◎◎)✻—

अथ मृगापुत्रीय नामनुं ओगणीशमुं अध्ययन. १९

अढारमा अध्ययनमां भोगनी ऋद्धिनो त्याग करवानुं कह्युं. ते त्याग अप्रतिकर्मपणाथी एटले शरीरनी शुश्रूषा–सेवा न करवाथी थाय छे. तेथी आ अध्ययनमां मृगापुत्रना दृष्टांतवडे अप्रतिकर्मताने कहे छे—

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए । राया बलभद्द त्ति, मिआ तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥

अर्थ—(काणणुज्जाणसोहिए) कानन एटले मोटा वृक्षोवाळा वनो अने उद्यान एटले क्रीडा करवाना बगीचाओवडे शोभित तथा (रम्मे) मनोहर एवा (सुग्गीवे) सुग्रीव नामना (नयरे) नगरने विषे (बलभद्द त्ति) बळभद्र एवा नामनो (राया) राजा हतो. (तस्स) ते राजाने (मिआ) मृगा नामनी (अग्गमाहिसी) पट्टराणी हती. १.

तेसिं पुत्ते बलसिरी, मिआपुत्ते त्ति विस्सुए । अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

अर्थ—(तेसिं) ते बळभद्र राजा तथा मृगा राणीने (बलसिरी) बळश्री नामे (पुत्ते) पुत्र हतो, एटले तेना माता-

न ज विचरे तेथी करीने धीर पुरुषे आ जिनशासनने विषे ज दृढ चित्त करवु, ए उपदेश छे ५२

अच्चंतनिआणखमा, सच्चा मे भासिआ वई। अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥ ५३ ॥

अर्थ—जिनशासन ज आश्रय करवा लायक छे ए प्रमाणे (मे) में जे (सच्चा) सत्य (वई) वाणी (भासिआ) कही छे, ते वाणीवडे ज (अच्चंतनिआणखमा) अत्यंत निदान—कर्ममळनु शोधन, तेने विषे समर्थ एवा पूर्वना जनो (अतरिंसु) आ संसारसमुद्रने तरी गया छे, वर्तमान काळना (एगे) केटलाक जनो (तरंति) महाविदेहमां संसारसमुद्रने तरे छे, अने (अणागया) अनागत काळमां अनेक जनो (तरिस्संति) संसारसमुद्रने तरी जशे अहीं निदाननी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे—नितरां दीयते-शोध्यते पवित्रीक्रियते आत्माऽनेनेति निदानं 'दैप् शोधने' इत्यस्य रूपम् ॥ ५३ ॥

तेथी करीने—

कह धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परिआवसे। सव्वसंगविणिम्मुक्के, सिद्धे हवइ नीरए त्ति बेमि ॥५४॥

अर्थ—(धीरे) धीर एवो साधु (अहेऊहिं) अहेतुवडे एटले क्रियावादी विगेरे कुमतिओना वचननी युक्तिवडे (अत्ताणं) पोताना आत्माने (कह) केम (परिआवसे) वासित करे? एटले कुत्सित हेतुना स्थानमां केम वास करावे? न ज करावे आ रीते करवाथी शु फळ थाय? ते कहे छे—(सव्वसंगविणिम्मुक्के) द्रव्य अने भाव एम सर्व संगथी विनिर्मुक्त एटले धन धान्यादिक द्रव्य अने क्रियावादादिक भावसंगथी रहित, तथा (नीरए) कर्मरूपी रजथी रहित थयो थको (सिद्धे) सिद्ध

चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. बार वर्ष सुधी अति उग्र तप करी छेवट एक मासनुं अनशन करी पांचमा देवलोकमां ते देव थयो. त्यां दश सागरोपमनुं आयुष्य पूर्ण करी त्यांथी च्यवी वाणिज्य नामना गाममां सुदर्शन नामे श्रेष्ठ श्रेष्ठी थयो. त्यां समकित दर्शनवडे पवित्र आत्मावाळा ते सुदर्शन श्रेष्ठीए चिरकाळ सुधी श्रावकधर्मनुं पालन कर्युं.

एकदा ते गाममां श्री महावीर स्वामी समवसर्या. ते सांभळी श्रेष्ठी अत्यंत आनंद पाम्यो. पछी जिनेश्वर पासे जइ तेमने वंदना करी तेमनी पासे धर्म सांभळी प्रतिबोध पामी विरक्त थयेला सुदर्शन श्रेष्ठीए अर्थीजनोने वांछित द्रव्य आपी प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी ते श्रेष्ठीमुनि सर्व पूर्वनो अभ्यास करी उग्र तप करी प्रांते सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या.

इति महाबलर्षि कथा.

आ प्रमाणे महापुरुषोना दृष्टांतवडे ज्ञानपूर्वक क्रियानुं फळ बतावी हवे उपदेश आपे छे—

कहं धीरे अहेऊहिं, उम्मत्तो व्व महिं चरे । एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥ ५२ ॥

अर्थ—(सूरा) शूरवीर अने (दढपरक्कमा) दृढ पराक्रमवाळा (एए) आ भरतादिक महापुरुषोए (विसेसं) अन्य दर्शनो करतां जैन दर्शनमां उत्तमतारूप विशेष छे एम (आदाय) ग्रहण करीने—जाणीने तेनो ज आश्रय कर्यो छे, माटे (धीरे) धीर पुरुष (अहेऊहिं) क्रिया, अक्रिया, विनय अने अज्ञानरूप कुहेतुवडे (उम्मत्तो व्व) उन्मत्तनी जेम (कहं) केम (महिं) पृथ्वीपर (चरे) विचरे ? सत्तत्त्वनो अपलाप करी असत्प्ररूपणानुं प्रतिपादन करी पृथ्वीपर केम विचरे ?

शणगारवामां आव्यो, विकस्वर कमळनी जेवु श्वेत छत्र तेना मस्तकपर धारण करवामां आव्यु, पत्रे बाजु उछळता जळवर गोनी जेवा चपळ चामरो वींझावा लाग्या, ए रीते हजार मनुष्योए वहन करेली शिबिकामां त कुमार बेठो तेनी पाछळ बळराजा सर्व सैन्य सहित चाल्यो ते वखते भेरी विगेरे वाजिंत्रोना नादवडे मेघगर्जनानी भ्रांतिथी क्रीडामयूरो पण नृत्य करवा लाग्या " जे नवा यौवनवाळो छतां मनोहर राज्यलक्ष्मीनो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करे छे, ते आ महाबळ कुमारनो जन्म कृतार्थ छे " इत्यादिक अनेक प्रकारे सर्व लोको तेनी प्रशसा करवा लाग्या आ रीते चिंतामणिनी जेम अर्थीओने वांछित दान आपतो महाबळ कुमार नगरनी बहार नीकळी आचार्ये पवित्र करेला उद्यानमां आव्यो

पछी कुमार शिबिकामांथी नीचे उतर्यो तेने आगळ करीने राजा तथा राणी गुरुपासे जइ हाथ जोडी बोल्या के— "आ अमारो प्रिय पुत्र विरक्त थयो छे, तेथी आपनी पासे दीक्षा ग्रहण करवा आव्यो छे, तेथी अमे पण आपने शिष्यरूप भिक्षा आपीए छीए " ते सांभळी गुरुए ' बहु सारु ' एम कह्यु, एटले ते कुमारे ईशान खूणामां जइ सर्व अलकारोने जाणे विकार होय तेम दूर कर्या. ते अलकारोने ग्रहण करती प्रभावती राणी मुक्ताफळ जेवा अश्रुना बिंदुओने मूकती बोली के— " हे वत्स ! तु कदापि धर्मकार्यमां प्रमाद करीश नहीं, अने उत्तम मत्रनी जेम निरतर गुरुमहाराजनी आराधना करजे " पछी गुरुमहाराजने नमस्कार करी राणी सहित राजा पोताने घेर गया, महाबळ कुमारे जाते पोताना केशनो पचमुष्टि लोच कर्यो, अने धर्मघोष गुरुने भक्तिवडे नमस्कार करी विज्ञप्ति करी के—" हे पूज्य ! ससारसागरमां डूबता मने दीक्षारूपी नाव आपो " त्यारे सूरिमहाराजे तेने विधिपूर्वक दीक्षा आपी महा बुद्धिमान ते महाबळ मुनिए तीव्र व्रतनु पालन करतां

“ कष्टथी साधी शकाय तेवा, अज्ञानी जनोए सेवेला, दुःखना अनुबंधवाळा अने विषफळनी उपमावाळा भोगोथी शुं फळ छे ? वळी मोक्षने आपनारा आ मनुष्य भवने कयो डाह्यो माणस भोगने माटे हारी जाय ? एक कोडीने माटे रत्नने कोण गुमावे ? ” माता बोली—“ हे पुत्र ! आ वंश परंपराथी आवेला द्रव्यनो भोगवटो कर, आ पण पुण्यरूपी वृक्षनुं ज फळ छे. ” कुमारे कह्युं—“ हे माता ! जे धन क्षणवारमां गोत्रिओ, चोर अने अग्नि विगेरेने आधीन थाय छे, ते धनथी मने लोभ केम पमाडो छो ? वळी अनंत सुखने आपनारो धर्म परभवमां पण साथे आवे छे, अने धन तो तेनाथी विपरीत छे, तेनी तुल्यता शी रीते थइ शके ? ” माताए कह्युं—“ हे पुत्र ! चारित्र तो अग्निनी ज्वाळानुं पान करवा जेवुं दुष्कर छे, ते तुं सुकुमार अंगवाळो शी रीते पाळी शकीश ? ” कुमार हसीने बोल्यो—“ हे माता ! एवुं शुं बोलो छो ? कायर पुरुषोने ज व्रत दुष्कर होय छे. जे वीर पुरुषो होय ते तो प्राणनो नाश थाय तोपण पोतानी प्रतिज्ञानुं पालन करे छे. तेवा परलोकना अर्थीने ते व्रत कांइपण दुष्कर नथी. तो हे पूज्य मातुश्री ! मारापरना मोहनो त्याग करी मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो. बीजो पण कोइ धर्मनुं आचरण करवा इच्छतो होय तेने उत्साह आपवो जोइए, तो पोताना पुत्रने उत्साह आपवो तेमां शुं कहेवुं ? ” आ प्रमाणे उत्कट वैराग्यने पामेला ते कुमारने तेना माता पिता समजावी शक्या नहीं, एटले निरुपाय थइ तेने व्रत लेवानी आज्ञा आपी.

त्यारपछी ते महाबळ कुमारने तीर्थना जळवडे अभिषेक कर्यो, चंद्रिकानी जेवा चंदनना द्रव्यवडे तेना शरीरने विलेपन कर्युं, अश्वना मुखना फीण जेवा उज्वळ बे देवदुष्य वस्त्रो तेने पहेराव्यां, पगथी मस्तक पर्यंत मणिमय आभूषणोवडे तेने

करी अहीं ज रहेजो " ते सांभळी आचार्य महाराने कह्यु के—" हे राजकुमार! तमारो विचार योग्य छे माटे आ वाब तमां विलन करवो नहीं " पछी कुमारे घेर जइ मातापिताने प्रणाम करी कह्यु के—" हु धर्मघोष गुरुनी धर्मदेशना सांभळी आनद पाम्यो छु तेथी आप पूज्योनी अनुज्ञाथी हु तेमनी पासे दीक्षा लेवा इच्छु छु वहाण मळ्या पछी कयो माणस समुद्रमां डुबतो रहे ? " आ प्रमाणे कुमारनु वचन सांभळी प्रभावती राणी पृथ्वीपर मूर्छा खाइने पडी गइ पछी शीतोपचारथी सावधान थइ सती ते रुदन करती बोली के—" हे पुत्र ! अमे तारा वियोगने सहन करवा शक्तिमान नथी तेथी ज्यासुधी अमे जीवीए छीए त्यांसुधी तु गृहस्थाश्रममां ज रहे पछी दीक्षा ग्रहण करजे " कुमारे कह्यु—" आ जगतमां सर्व सयोगो स्वप्ननी जेवा क्षणिक अने असत् छे, तथा मनुष्यनु आयुष्य वायुथी हलता दर्भना अग्रभागपर रहेला जळना बिंदु जेवु चचळ छे तेथी हु नथी जाणतो के पहेलु कोण जशे ? माटे मने आजे ज प्रव्रज्या लेवानी आज्ञा आपो " माताए कह्यु—" हे वत्स ! आ तारु यौवन वयवाळु शरीर अति मनोहर अने कोमळ छे, माटे हमणां सुख भोगव अने पछी वृद्धावस्थामां दीक्षा ग्रहण करजे " कुमारे कह्यु—" हे माता ! आ शरीर रोगोथी व्याप्त छे, अशुचिथी भरेलु छे, मळथी मलिन छे, अने कारागृहनी जेवु असार छे आवा शरीरथी मनुष्यने शु सुख छे ? वळी शरीरमां शक्ति होय त्यारे ज चारित्र लेवु योग्य छे, वृद्धावस्थामा शरीर अशक्त थवाथी चारित्र बराबर पाळी शकातु नथी, अथवा ते वखते मन न होय तो पण व्रत जेवु ज छे, माटे युवावस्थामां ज दीक्षा सफळ थाय छे " प्रभावती माता बोली—" समग्र गुणना स्थानरूप आ आठ स्त्रीओनी साथे हमणां तु भोग भोगव हमणां व्रत लेवाथी शु ? " महाबळ कुमार बोल्यो—

महाबळ राजानी कथा.

आ ज भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नामना नगरने विषे अतुल बळवाळो बळ नामे राजा हतो. तेने देदीप्यमान कांतिवाळी प्रभावती नामनी राणी हती. एकदा रात्रे सुखे सुतेली ते राणीए स्वप्नमां सिंह जोयो. तत्काळ जागृत थइ हर्ष पामीने तेणीए राजाने ते स्वप्न कही तेनुं फळ पूछ्युं. राजाए कह्युं—" आ स्वप्नथी तने आपणा कुळरूपी समुद्रनो उल्लास करवामां चंद्र समान पुत्र थशे." ते सांभळी हर्ष पामेली राणीए गर्भ धारण कर्यो. अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए शुभ लक्षणोवडे संपूर्ण पुत्र प्रसव्यो. त्यारे बळराजाए हर्षथी मोटो उत्सव करी तेनुं महाबळ नाम पाड्युं. पांच धात्रीओथी लालन पालन करातो ते कुमार कळाना समूहने प्राप्त करी मनोहर युवावस्थाने पाम्यो. त्यारे राजाए तेने जाणे आठे दिशाओनी लक्ष्मी होय तेवी आठ राजकन्याओ महोत्सवथी एक दिवसे परणावी. पछी राजाए कुमारने तथा वहुओने घणी समृद्धि आपी. तेथी ते कुमार सद्गुणवडे मनोहर एवी ते आठे प्रियाओ साथे इच्छा प्रमाणे कामभोग भोगववा लाग्यो.

एकदा ते नगरना उद्यानमां पांचसो शिष्योना परिवार सहित श्री विमळनाथ तीर्थंकरनी पट्टपरंपरामां थयेला धर्मघोष नामना आचार्य महाराज पधार्या. तेमनुं आगमन सांभळी आनंद पामेलो महाबळ कुमार गुरु पासे गयो. तेमने वंदना करी कर्मरूपी मळने धोवामां जळसमान धर्मदेशना सांभळी. तेथी ते कुमार मंदभाग्यवाळा प्राणीओने दुर्लभ एवो वैराग्य पाम्यो. एटले तेणे गुरुने प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के—" हे पूज्य ! रोगी माणसने जीवाडे तेवा औषधनी जेम मने आ धर्म रुच्यो छे, तेथी हुं मारा मातापितानी रजा लइ दीक्षा लेवा माटे अहीं आवुं, त्यांसुधी आप मारापर कृपा

थयो. अहीं गुणे करीने समृद्धिवाळु राज्य कहु तेमां गुण एटले स्वामी, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग अने सैन्य-ए सप्तांग राज्य जाणवु अथवा गुण एटले कामभोग जाणवा ५०.

विजयराजानी कथा

द्वारका नगरीमां ब्रह्मराजनो पुत्र सुभद्रानी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो विजय नामनो बीजो बळदेव हतो तेनो नानो भाइ द्विपृष्ठ वासुदेव हतो ते बोंतेर लाख वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी मरण पामी नरके गयो, त्यारे विजये वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी, अनुक्रमे केवळज्ञान उत्पन्न करी पचोतेर लाख वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी विजयमुनि मोक्षपद पाम्या आ बन्नेनु देहमान सीत्तेर धनुष्य हतु

इति विजयराजकथा

तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेअसा । महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥

अर्थ—(तहेव) तथा वळी (महब्बलो) महाबळ नामना (रायरिसी) राजर्षि (सिरसा) मस्तकवडे (सिरिं) चारित्रलक्ष्मीने (आदाय) ग्रहण करी एटले माथा साटे अर्थात् जीवितनी अपेक्षा रहितपणे चारित्रलक्ष्मी ग्रहण करीने (अव्वक्खित्तेण) व्यग्रता रहित—स्थिर (चेअसा) चित्तवडे (उग्ग) उग्र (तव) तप (किच्चा) करीने त्रीजे भवे मोक्ष पाम्या (ए अध्याहार छे) ५१

महावणं) कर्मरूपी महावननो (पहणे) नाश कर्यो. ४९.

काशीराजनी कथा.

वाराणसी नगरीमां अग्निशिख नामे राजा हतो. तेने जयंती नामनी प्रिया हती. तेनी कुक्षिथी सातमो बळदेव पुत्र उत्पन्न थयो. तेनुं नंदन नाम पाड्युं. त्यारपछी ते ज राजानी शेषवती नामनी बीजी राणीथी दत्त नामनो वासुदेव पुत्र उत्पन्न थयो. अवसरे राजाए दत्तने राज्य आप्युं. तेणे नंदननी सहायथी त्रण खंड भरत साध्युं. चिरकाळ सुधी छवीश धनुषनी कायावाळा बन्ने भाइओए राज्यलक्ष्मी भोगवी. अनुक्रमे छप्पन हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी दत्त वासुदेव पांचमी नरकपृथ्वीमां गयो. तेना मरण पछी वैराग्य पामेला नंदने दीक्षा ग्रहण करी. छेवट केवळज्ञान प्राप्त करी पांसठ हजार वर्षनुं आयुष्य भोगवी नंदन मुनि मोक्षपद पाम्या.

इति काशीराजकथा.

तहेव विजओ राया, आणट्ठाकित्ति पव्वए । रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महायसो ॥ ५० ॥

अर्थ—(तहेव) तेमज वळी (आणट्ठाकित्ति) नाश पामी छे अपकीर्ति जेनी अथवा ' आणट्ठा ' एटले आर्त्तध्यान रहित अने ' कित्ति ' कीर्तिवाळो तथा (महायसो) महा यशस्वी एवो (विजओ) विजय नामनो (राया) राजा बीजो बळदेव (गुणसमिद्धं तु) गुणे करीने समृद्धिवाळा एवा पण (रज्जं) राज्यनो (पयहित्तु) त्याग करीने (पव्वए) प्रव्राजित

" हु प्रभावतीनी कुक्षिमांथी उत्पन्न थयो छु, नीतिवाळो छु अने भक्तिमान पण छु, छतां राजाए केशिने राज्य आप्यु, ते मारा पिताए विवेकी छतां योग्य कर्युं नथी "भाणेजने घरमां लाववो नहीं" एम लोकमां पण कहेवत छे ते सत्य छे. पुत्रने छोडी भाणेजने राज्य आपतां मारा पिताने केम कोइए वार्या पण नहीं ? तेम ज तेने केम अपशुकन पण थयां नहीं ? अथवा तो मारा पिता प्रभु छे तेथी तेणे पोतानी इच्छा प्रमाणे कर्युं, तो भले कर्युं, परतु हु उदायन राजानो पुत्र थइने मारे केशिनी सेवा करवी ते योग्य नथी " एम विचारी ते अभीचि नगरमांथी नीकळी चपानगरीमां पोतानी मासीना पुत्र कूणिक राजा पासे गयो. त्यां कूणिक राजाए तेनो सारो सत्कार कर्यो, तेथी ते मोटी समृद्धिने पाम्यो तेणे चिरकाळ सुधी अतिचार रहित श्राद्धधर्मनु पालन कर्युं, परतु पिताना तिरस्कारनु स्मरण थवाथी तेनापरना वैरनो तेणे त्याग कर्यो नहीं ते अभीचि घणा वर्षो सुधी श्रावकधर्मने पाळी पितापरना वैरनी आलोचना कर्या विना एक पखत्तु अनशन करी काळधर्म पाम्यो अने असुरकुमारने विषे एक पल्योपमना आयुष्यवाळो ते महर्द्धिक देव थयो त्यांथी आयुष्यने क्षय च्यवी महाविदेहमां जन्म पामी ते अभीचिनो जीव सिद्धिपदने पामशे

इति श्री उदायन राजर्षि कथा

तहेव कासीराया, सेओसच्चपरक्कमे । कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥

अर्थ—(तहेव) तेज प्रमाणे (सेओसच्चपरक्कमे) अत्यत प्रशसा करवा लायक एवा सत्यने विषे एटले चारित्रने विषे पराक्रमवाळा (कासीराया) काशी देशना नदन राजाए (कामभोगे) कामभोगनो (परिच्चज्ज) त्याग करीने (कम्म

ते दुष्टाए जवाब आप्या के—" तेने कोइनी मारफत विष अपावो." आ प्रमाणे मंत्रीओना भरमाववाथी ते मंदबुद्धिवाळा केशिए तेमनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी केशिराजाए कोइ आभिरी पासे ते राजर्षिने विषमिश्रित दहीं अपाव्युं. परंतु देवीए तेमांथी विषने हरी लीधुं अने कह्युं के—" हे मुनि ! विषमिश्रित दहीं तमने मळशे, माटे तमे दहींनो त्याग करो." त्यारे तेणे दहींनो त्याग कर्यो एटले दहीं विना तेनो व्याधि वधवा लाग्यो. तेथी मुनिए फरी दहीं लेवा मांडयुं. तेमां पण विष आव्युं, ते देवीए हरी पूर्वनी जेम दहींनो निषेध कर्यो. त्रीजीवार पण देवीए विष हरी लीधुं, अने ते मुनिनी भक्तिमां लीन थयेली होवाथी ते तेनी पाछळ ज भमवा लागी. एकदा देवी प्रमादमां रही, ते वखते मुनिए दहीं खाधुं. " जे थवानुं होय ते कोइ पण प्रकारे थाय ज छे." त्यारपछी मुनिए पोताना अंगनी व्याकुळता जोइ विषभक्षण थयानुं जाणी तत्काळ समताभावमां रही अनशन ग्रहण कर्युं. त्रीश दिवस सुधी अनशन पाळी समाधिमां रही केवळज्ञान पामी ते राजर्षि मोक्षे गया.

ते उदायन राजर्षि मुक्ति पाम्या पछी देवी तेनी पासे आवी अने मुनिने काळधर्म पाम्या जोइ ते मनमां अत्यंत क्रोध पामी. तेथी धूळनी वृष्टि करीने ते देवीए वीतभयपत्तनने स्थळरूप बनावी दीधुं. मात्र एक कुंभार के जे मुनिनो शय्यातर होवाथी निरपराधी हतो तेने ते देवी त्यांथी सिनपल्लीमां लइ गइ, ते ज मात्र एक जीवतो रह्यो. त्यां तेना नामथी ते देवीए कुंभकारकृत नामनुं नगर वसाव्युं. देवनी शक्तिथी शुं न थाय ?

अहीं जे वखते उदायन राजाए केशिने राज्यपर स्थापन कर्यो, ते वखते मनमां खेद पामेला अभीचिए विचार कर्यो के—

प्रभुनी नासिका सुधी पहोंच्युं, तेटलामां नागराज धरणेंद्रनुं आसन कंप्युं. तरत ज अवधिज्ञानथी प्रभुनो वृत्तांत जाणी ते पोतानी प्रियाओ सहित त्यां आवी प्रभुने भक्तिथी नम्यो. पछी प्रभुना बन्ने पगनी नीचे मोटा नाळवाळुं कमळ मूकी ते धरणेंद्रे पोताना शरीरवडे प्रभुनी पीठ अने बन्ने पडखां ढांकी तेमना मस्तकपर पोताना सात फणानुं छत्र कर्युं. तेथी त्यां रहेला प्रभु सुखे करीने ध्यानमां मग्न थया. ते वखते ते धरणेंद्रनी इंद्राणीओ प्रभु पासे नृत्य करवा लागी, तथा वेणु, वीणा अने मृदंग विगेरेना शब्दथी सर्व दिशाओने व्याप्त करी. आ वखते भक्ति करनारा धरणेंद्र उपर तथा द्वेष करनारा ते असुर उपर समताना निधानरूप स्वामी तो समान दृष्टिवाळा ज हता. परंतु द्वेषथी अधिकाधिक वृष्टि करता ते कठ नामना असुरने जोइ नागेंद्रने तेनापर क्रोध थयो. अने तेथी तेणे तिरस्कार सहित ते असुरने कह्युं के—" रे दुष्ट! पोताना ज उपद्रवने माटे तें आ शुं आरभ्युं छे ? हुं दयाळु प्रभुनो सेवक छुं, छतां हवे तारा अपराधने हुं सहन करीश नहीं. आ स्वामीए ते वखते तने पापमांथी मुक्त करवा माटे बळतो सर्प काढीने बताव्यो, तेमां तेमणे तारुं शुं अप्रिय कर्यु ? हे पापी! कारण विनाना जगतना मित्ररूप आ भगवाननी उपर तुं विना कारणे द्वेष करे छे, तेथी हवे तुं नथी एम समज." आवुं धरणेंद्रनुं वचन सांभळी मेघमाळीए नीचे दृष्टि करी अने ते प्रकारे धरणेंद्रथी सेवाता प्रभुने जोया. तरत ज ते भय पामी विचारवा लाग्यो के—" मारी जेटली शक्ति हती तेटली बधी पर्वतने विषे ससलानी जेम आ प्रभुने विषे निष्फळ थइ. वळी आ भगवान एक ज मुष्टिथी वज्रने पण चूर्ण करी शके तेवा बळवान छे, छतां क्षमा गुणे करीने सर्व सहन करे छे, परंतु आ नागेंद्रथी तो मारे भय राखवानो ज छे. हुं विश्वना नाथनो वैरी थयो, तेथी मारे बीजुं कोइ पण शरण छे नहीं.

एकदा श्री पार्श्वनाथ स्वामी विहारना क्रमथी नगरनी नजीक रहेला एक तापसना आश्रममां आव्या ते वखते सूर्य अस्त पाम्यो तेथी त्यां एक कुवाने कांठे रहेला वडवृक्षनी नीचे प्रभु नासिका उपर दृष्टि राखी प्रतिमाए उभा रह्या एवा अवसरे ते मेघमाळी नामनो असुर अवधिज्ञानवडे पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत जाणी तथा ते वेरनु कारण संभारी क्रोधथी धमधमतो प्रभुने उपसर्ग करवा ते स्थाने आव्यो तेणे अंकुशनी जेवा तीक्ष्ण नखवाळा, भयंकर रूपवाळा अने पुंछडाना पछाडथी पर्वतो पण कंपे एवा घणा सिंहो विकुर्व्या तेनाथी भगवान काइ पण भय पाम्या नहीं त्यारे तेणे अत्यंत भयंकर पर्वत जेवडा हाथीओ विकुर्व्या तेनाथी पण प्रभु चलायमान थया नहीं. त्यारे तेणे मोटा फुंफाडा मारता अने यमराजना हस्तदंड जेवा प्रचंड दृष्टिविष सर्पो विकुर्व्या तेमज उचा आंकडावडे स्वस्थपणानो नाश करनारा अनेक वींछीओ, आपत्तिने करनारा भल्लूक अने शूकर विगेरे श्वापदो तथा ज्वाळानी जेवा भयंकर मुखवाळा अने मुंडनी माळाने धारण करनार प्रेतोने विकुर्व्या ते सर्वे पण प्रभुने ध्यानथी चलायमान करवा समर्थ थया नहीं. "तीक्ष्ण मुखवाळी कीडीओ अने माकड विगेरे पण शुं वज्रने भेदी शके?" त्यारपछी अत्यंत क्रोध पामेला ते मेघमाळीए गर्जारव अने वीजळीवडे दिशाओमां व्यापी गयेला मेघोनी श्रेणि आकाशमां विकुर्वी. "आ मारा पूर्वभवना शत्रुने आ मेघना जळथी डुबावीने मारी नांखु" एम विचारी ते वृष्टि वरसाववा लाग्यो प्रथम मुष्टि जेवी पछी मुशळ जेवी अने पछी स्तंभ जेवी धारा वरसावीने तेणे आखी पृथ्वी एक समुद्रमय करी दीधी, ते वखते अनुक्रमे प्रभुना कंठ सुधी ते जळ पहोंच्यु. एटले प्रभु कंठ सुधी पाणीमां डूबी गया. तेथी तेमनुं मुख पद्मद्रहमां रहेला कमळनी जेम शोभवा लाग्यु पछी नेत्रलामां ने नळ

विचार्युं के—" आ पार्श्वनाथ मारा वचनथी मानशे नहीं. तेथी अश्वसेन राजा पासे ज आग्रह करी हुं आ वात तेने मनावीश." पछी स्वामीए प्रसेनजित् साथे यवन राजानी मित्राइ करावी ते यवन राजाने रजा आपी. पछी प्रभुए प्रसेनजितने रजा आपी त्यारे तेणे कह्युं के—" हे स्वामी ! मारे अश्वसेन राजाने नमवा माटे आपनी साथे आववुं छे." प्रभुए 'बहु सारुं' कह्युं एटले प्रसेनजित् राजा प्रभावतीने साथे लइ प्रभुनी साथे ज चाल्यो. अनुक्रमे वाराणसी नगरीए जइ पिताने प्रणाम करी श्रीपार्श्वनाथ पोताना महेलमां गया, त्यारे प्रभावती सहित प्रसेनजित् राजाए अश्वसेन राजा पासे जइ तेमने प्रणाम कर्या, तरत ज अश्वसेने उभा थइ तेने गाढ आलिंगन करी पूछ्युं के—" तमे कुशळ छो ? अहीं सुधी जाते केम आववुं थयुं ?" प्रसेनजिते कह्युं—" तमे जेनुं रक्षण करनार हो, तेने अकुशळ क्यांथी होय ? हे महाराजा ! हुं जाते अहीं आव्यो छुं, ते तमारी पासे कांइक याचना करवा आव्यो छुं. ते ए के—हे देव ! आ मारी प्रभावती नामनी पुत्रीने श्रीपार्श्वनाथने माटे अंगीकार करो. हे स्वामी ! आ मारी याचना तमारी पासे निष्फळ न थाओ.' अश्वसेने कह्युं के—" आ कुमार सदा भववासथी विरक्त छे, तोपण तमारी प्रसन्नता माटे बळात्कारे पण तेने परणावीश." एम कही अश्वसेन राजा तेने साथे लइ श्रीपार्श्वकुमार पासे गया. अने कह्युं के—" हे वत्स ! आ राजानी आ पुत्रीने तुं परण. हे दाक्षिण्यना समुद्र ! जो के तुं बाल्यावस्थाथी ज संसारने विषे विरक्त छे, तोपण आ मारुं वचन तारे मानवुं पडशे." आ प्रमाणे पिताना अति आग्रहथी पार्श्वनाथे भोगफळ कर्मने भोगववा माटे प्रभावतीनुं पाणिग्रहण कर्युं. पछी क्रीडापर्वत, नदी, वाव अने उद्यानादिकमां प्रभावतीनी साथे क्रीडा करता प्रभुए केटलाक दिवसो निर्गमन कर्या.

पार्श्वनाथनो आश्रय करो, तेमनी पासे तमारा अपराधनी क्षमा मागो अने तेमनी आज्ञा अंगीकार करो जो आलोक अने परलोक संबंधी सुखनी इच्छा होय तो तमारे आ कार्य करवु उचित छे " आवु मंत्रीनु वचन सांभळी यवनराजा बोल्यो के–" हे मंत्री ! तमे मने ठीक बोध कर्यो " एम कही पोताना कंठपर परशु राखी परिवार सहित ते यवनराजा श्रीपार्श्वप्रभु पासे गयो त्यां प्रतिहार द्वारा रजा लइ सभामां जइ प्रभुने नमस्कार कर्यां प्रभुए तेना कंठपरथी कुठार मूकावी दीधो, त्यारे फरीथी नमस्कार करी यवन राजा बोल्यो के–" हे नाथ ! तमे सर्वने सहन करनार छो, तेथी मारो आ अपराध क्षमा करो, मने भय पामेलाने अभयदान आपो अने मारापर प्रसन्न थइ मारी लक्ष्मीने ग्रहण करो " श्रीपार्श्वनाथे कह्यु के–" हे कुशळ राजा ! तमारु कल्याण थाओ, तमारु राज्य तमे भोगवो, भय पामशो नहीं अने फरीथी आवु कार्य करशो नहीं " आ प्रमाणे भगवानना वचनने तेणे अंगीकार कर्यो, एटले जिनेश्वरे तेनु बहुमान कर्युं ते वखते तरत ज कुशस्थळ पुरनो रोध दूर थयो पछी प्रभुनी आज्ञाथी ते पुरुषोत्तमे पुरमां जइ प्रसेनजित् राजाने ते वार्ता कही प्रसन्न कर्यो

त्यारपछी भेटनी जेम प्रभावती कन्याने साथे लइ प्रसेनजित् राजा प्रभु पासे आव्या अने तेमने विज्ञप्ति करी के—" हे जगत्पति ! जेम तमे अहीं आवीने मारापर अनुग्रह कर्यो तेम आ मारी पुत्रीनु पाणिग्रहण करी मारापर अनुग्रह करो आ मारी पुत्री तमारापर चिरकाळथी रागवाळी छे ते बीजा वरने इच्छती नथी, वळी स्वभावथी ज तमे कृपाळु छो माटे आनापर विशेष कृपावान थाओ " ते सांभळी स्वामी बोल्या के—" हे राजा ! हु मारा पितानी आज्ञाथी तमारु रक्षण करवा आव्यो छु, पण तमारी पुत्रीने परणवा आव्यो नथी, तेथी आ वार्ता फरी करशो नहीं " ते सांभळी प्रसेनजिते

पोताना शरीरनुं रक्षण करे. तुं दूत छे तेथी तने जीवतो मूकुं छुं. अरे ! तुं पण जलदी अहींथी जतो रहे." ते सांभळी दूते फरीथी कह्युं के-" हे राजा ! अमारा स्वामी दयाळु छे, तेथी कुशस्थळना राजानी जेम तारुं पण रक्षण इच्छे छे, अने तेथी करीने ज मने तारी पासे बोध करवा मोकल्यो छे, तो हे जड ! बोध पाम, अने अमारा स्वामीने इंद्रो पण जीती शके तेम नथी, एम तुं नक्की जाण. जेम सिंहनी साथे हरण, सूर्यनी साथे अंधकार, अग्निनी साथे पतंगीयुं, समुद्रनी साथे कीडी, गरुडनी साथे सर्प, वज्रनी साथे पर्वत अने हाथीनी साथे घेटो युद्ध करवा शक्तिमान नथी, तेम तुं पण श्रीपार्श्वनी साथे युद्ध करवा शक्तिमान नथी. तेथी हे यवन ! तुं तेमनी आज्ञा अंगीकार कर." आ प्रमाणे दूत बोल्यो त्यारे यवनना सैनिको तेनी साथे विपरीतपणे बोलवा लाग्या अने तेने मारवा तैयार थया. तेवामां तेना मंत्रीए कह्युं के-" अरे मूढ सैनिको ! तमे श्रीपार्श्वप्रभुना दूतने मारवा इच्छो छो ते तो पोताना ज स्वामीने गळे पकडी अनर्थरूपी कुवामां नांखवा जेवुं करो छो. इंद्रो पण जेनी आज्ञाने मस्तकपर मुगटनी जेम चडावे छे, तेना दूतने मारवो ते तो दूर रहो; परन्तु तेनी हीलना पण दुःख आपनारी छे." आ प्रमाणे कही ते सुभटोने निवारी पछी मंत्रीए सामवचनथी ते दूतने कह्युं के-" हे भद्र ! आमनो आ एक अपराध तमे माफ करजो अने प्रभुने आ वात कहेशो नहीं. श्रीपार्श्वप्रभुना चरणकमळने वांदवा माटे अमे हमणां ज आवीए छीए." आ प्रमाणे समजावी ते दूतने मंत्रीए विदाय कर्यो. पछी पोताना स्वामीना हितने इच्छता मंत्रीए राजाने कह्युं के-" हे देव ! भविष्यनो विचार कर्या विना सिंहनी केशवाळीने खेंचवा जेवुं आवुं विपरीत परिणामवाळु कार्य केम करो छो ? इंद्रो पण जे पार्श्वप्रभुना पत्तिओ छे तेनी साथे तमारुं युद्ध शी रीते होइ शके ? तेथी हजु पण कंठपर कुठार धारण करीने तमे

" कुशस्थळना राजानु रक्षण करवा अने यवनराजाने जीतवा जवु छे. " ते सांभळी पार्श्वकुमारे कह्यु के—" घासने विषे परशुनी जेम ते मनुष्यरूपी कीटने विषे सुरासुरने जीतनारा आपे आ उद्यम करवो योग्य नथी, तेथी आप मने ज आज्ञा आपो अने आप आ महेलने ज शोभावो. हु पण तेना गर्वनो नाश करी शकीश " ते सांभळी पुत्रनु बळ त्रण जगत करतां पण अधिक छे एम जाणता राजाए तेनु वचन अंगीकार कर्यु अने सैन्य सहित तेने जवानी रजा आपी.

श्रीपार्श्वकुमार सैन्य सहित चाल्या, त्यारे पहेला प्रयाणमां ज इद्रना सारथि मातलिए आवी रथमांथी उतरी प्रभुने नमस्कार करी विनति करी के—" हे प्रभु ! क्रीडावडे पण संग्राममां उद्यमवत थयेला आपने जाणीने शक्रइद्रे भक्तिथी आ रथ आपने माटे मोकल्यो छे, तेनो स्वीकार करो " ते सांभळी विविध प्रकारनां शस्त्रोथी भरेला अने पृथ्वीने नहीं स्पर्श करता ते रथ उपर आरूढ थइ सूर्यनी जेम प्रभु आकाशमार्गे चाल्या पाछळ पृथ्वीपर चाली आवती सेनापरनी कृपाने लीधे नाना प्रयाणोवडे चालता प्रभु अनुक्रमे केटलेक दिवसे कुशस्थळ नगर पासे आवी पहोंच्या त्या एक उद्यानमां देवोए करेला प्रासादमा प्रभु सुखेथी रह्या पछी प्रभुए एक दूत यवनराजा पासे मोकल्यो तेणे जइ यवनराजाने कह्यु के—" हे राजा ! श्रीपार्श्वनाथ तमने आज्ञा करे छे क–आ प्रसेनजित् राजा अमारा पिताने शरणे रह्या छे, तेथी तेना नगरनो रोध मूकी द्यो कारण के पिता पोते ज अहीं आवता हता, तेमने आ कारणथी ज निषेध करीने हु अहीं आव्यो छु, तेथी जो तमने सुखनी इच्छा होय तो तमे तमारे स्थाने जता रहो " आवु दूतनु वचन सांभळी क्रोध पामेलो यवन बोल्यो के–" रे दूत ! तु आ शु बोले छे ? मारी पासे अश्वसेन के पार्श्व कइ गणतरीमां छे ? तो ते पार्श्व ज पोताने स्थाने जाय अने

परवश थयेली ते कांइपण जाणती नहोती, मात्र जेम योगिनी परब्रह्मनुं ध्यान करे तेम एक श्रीपार्श्वनुं ज मनमां ध्यान करवा लागी. सखीओना मुखथी तेने श्रीपार्श्वने विषे प्रीतिवाळी जाणी तेना मातापिता हर्ष पाम्या अने "पुत्रीनो राग योग्य स्थाने छे" एम कहेवा लाग्या. पछी तेना मातापिता बोल्या के—"आ पुत्रीने श्रीपार्श्व पासे स्वयंवरा तरीके मोकलीने आपणे तेने आनंद पमाडशुं." आ वृत्तांत अनेक देशोना अधिपति यवन नामना महा बळवान राजाए पोतानी सभामां पोताना चरपुरुषोना मुखथी सांभळ्यो. ते वखते ते बोल्यो के—"ते प्रसेनजित् राजा मने मूकीने पार्श्वकुमारने पोतानी पुत्री केम आपशे? जो ते पोते ज मने नहीं आपे तो हुं बळात्कारे तेने ग्रहण करीश." आ प्रमाणे कहीने तत्काळ पवननी जेना वेगवाळा ते यवन राजाए सैन्य सहित आवी कुशस्थळने चोतरफथी रुंध्युं छे. तेथी रात्रिना प्रारंभमां बीडाइ गयेला कमळमां भ्रमरनी जेम कोइपण मनुष्यनो नगरमां प्रवेश के निर्गम थइ शकतो नथी. आ वृत्तांत आपने जणाववा माटे पुरुषोत्तम नामना मने मंत्रीपुत्रने प्रसेनजित् राजाए मोकल्यो छे, ते हुं रात्रिने समये गुप्त रीते नगर बहार नीकळी अहीं आव्यो छुं. तो हवे जे करवा लायक होय ते आप करो. प्रसेनजित् राजा आपने शरणे छे."

आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी अश्वसेन राजानां नेत्रो क्रोधथी रक्त थयां अने ते दुष्ट यवन राजाने शिक्षा करवा माटे तेणे तत्काळ प्रयाणनी भेरी वगडावी. ते भेरीनो शब्द सांभळी 'आ अकस्मात् शुं छे?' एम विचार करता श्रीपार्श्वकुमारे पिता पासे आवी कह्युं के—"हे पिता! देवो के असुरो मध्ये कया बळवाने आपनो अपराध कर्यो छे के जेथी आपने पोताने आ प्रयास करवो पडे छे?" ते सांभळी अश्वसेन राजाए ते आवेला पुरुषने आंगळीवडे देखाडी कह्युं के—

कठनी सुंदरता मेळववामां पांचजन्य शंख पण योग्य नथी, तेना स्तननी लक्ष्मी ग्रहण करवामां सुवर्णनो कळश पण चतुर नथी, तेनी भुजलतानी लक्ष्मी मेळववा कमळनु नाळ पण समर्थ नथी, तेना हस्तनी कांतिना लेशने पण पल्लवो पामी शकता नथी, तेनी कटिनी शोभा ग्रहण करवामां वज्र पण मूर्ख छे, तेनी नाभिनु सदृशपणु शीखवामां आवर्त पण समर्थ नथी, तेना जघननी तुलना करवामां रेतीवाळो नदीनो कांठो पण शक्तिमान नथी, तेना साथळनी सुंदरता मेळववामां रंभा पण अटकी जाय छे, मृगलीनी जंघा पण तेनी जंघानी शोभा ग्रहण करवामां सफळ उद्यमवाळी नथी, तेना चरणकमळनी लक्ष्मीने अरविंद पण पामी शके तेम नथी, सुवर्ण पण तेना शरीरनी कांतिना कोइपण अंशने पामतु नथी अने तेना लावण्य गुणने जोइ अप्सराओ पण रसवाळी थती नथी. आवी मनोहर ते कन्याने जोइ योग्य वरनी प्राप्ति माटे तेना पिताए घणा कुमारो शोध्या, परंतु कोइ पण तेने योग्य मळ्यो नथी एकदा ते प्रभावती सखीओ साथे उद्यानमां गइ हती त्यां किन्नरीओथी गवातु आ गीत तेणीना सांभळवामां आव्यु के—“रूप, लावण्य अने तेजवडे देवोनो पण तिरस्कार करनार अश्वसेन राजाना पुत्र श्रीपार्श्वकुमार चिरकाळ सुधी जय पामो” आवा अर्थवाळु गीत सांभळी ते प्रभावती श्रीपार्श्वकुमारपर प्रीतिवाळी थइ तेथी ते लज्जा अने क्रीडानो त्याग करी मात्र ते गीतने ज वारंवार सांभळवा लागी ते जोइ तेनी सखीओए तेने श्रीपार्श्वने विषे रागवाळी जाणी केमके पाणीमां रहेला तेलनी जेम रागीमां रहेलो राग छानो रही शकतो नथी पछी ते किन्नरीओ गइ त्यारे ते प्रभावती तेमनी सन्मुख आकाशमां जोइ ज रही ते रडते सखीओ तेने महा महेनते घेर लइ गइ परंतु तेने कोइपण ठेकाणे सुख प्राप्त थयु नहीं कामदेवरूपी अपस्मारना व्याधिथी

ते स्वप्नतुं फळ कह्युं के-" हे देवी ! आ महा स्वप्नोथी तमारो पुत्र जगत्पति थशे." ते सांभळी हर्ष पामेली वामादेवीए सुखेथी गर्भ धारण कर्यो, अने काळ संपूर्ण थये श्याम कांतिवाळा तथा सर्पना चिन्हवाळा मनोहर पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते आसनकंपथी प्रभुनो जन्म जाणीने छप्पन दिक्कुमारीओए आवी सूतिकर्म कर्युं, अने शक्र इंद्र विगेरे सर्व इंद्रोए अवधिज्ञानथी प्रभुनो जन्म जाणी मेरुपर्वतपर लइ जइ प्रभुनो जन्मोत्सव कर्यो. पछी जाणे अमृतनुं पान कर्युं होय तेम आनंद पामेला अश्वसेन राजाए कारागृहमांथी केदीने मुक्त करी पुत्रजन्मनो महोत्सव कर्यो. प्रभु गर्भमां हता त्यारे तेनी माताए अंधारी रात्रिमां पण पोतानी पासे थइने जता सर्पने जोइ तत्काळ ते वात पतिने कही हती, तेनुं स्मरण करी अश्वसेन राजाए ते पुत्रनुं पार्श्व नाम पाड्युं. इंद्रे आदेश करेली पांच धात्रीओथी पालन कराता प्रभु बाळकनुं रूप धारण करीने आवेला देवोनी साथे क्रीडा करवा लाग्या. इंद्रे अंगुठामां मूकेला अमृतनुं पान करता प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामी यौवनवयने पाम्या. ते वखते प्रभुनुं शरीर नव हाथनुं थयुं.

एकदा अश्वसेन राजा सभामां बेठा हता, ते वखते द्वारपाळनी रजाथी कोइ पुरुषे सभामां आवी राजाने कह्युं के—" हे स्वामी ! आ भरतक्षेत्रमां कुशस्थळ नामनुं नगर छे. तेमां प्रसेनजित् नामे राजा छे. तेने प्रभावती नामनी युवावस्थाने पामेली मनोहर पुत्री छे. खरेखर विधाताए आखा जगतनो सार लइने ज तेने बनावी लागे छे. कारण के चंद्र तेना मुखना दासपणाने पामे छे, मृग तेणीना नेत्रोनो दास छे, मयूर तेना केशपाशनो दास छे, अने अमृतरस तेना वाक्यरसनो दास छे, आरिसो तेना कपोळनी शोभाने पामतो नथी, सुवर्णकंद तेना अधरनी उपमा पामता नथी, तेना

नगरीनी जेवी ते नगरीनी चोतरफ जाणे चैत्ररथ नामनु वन आवीने रह्यु होय तेम मनोहर उद्यान रहेलु छे ते नगरीना किल्लाने विशाळ अने मोटा माणिक्यरत्नना कांगराओ छे, ते जाणे दिशारूपी लक्ष्मीना प्रयास विनाना नित्यना आदर्श होय तेवा शोभे छे. ते नगरीमां रहेला चैत्योना शिखरो उपर रहेला सुवर्णना कळशोने अतिथिनी जेम आवेला जाणी सूर्य पोताना किरणोवडे पूजे छे ते नगरीमां धनिकना मनोहर महेलो जाणे पुण्यना उदयथी पामवा लायक देवोना विमानो होय तेवा शोभे छे देवताओ भोजनने माटे ज्यारे मागे छे त्यारे ज सुधा (अमृत) ने पामे छे, परंतु आ नगरीना सर्व गृहो तो प्राये करीने सुधा (चूना) थी लींपायेला ज छे ए आश्चर्य छे ते नगरीमां दुकानोनी श्रेणि अगणित करीयाणाना समूहवडे सांकडी छतां पण कुत्रिकापणनी श्रेणिनी जेम विशाळ होय तेम शोभे छे. विश्वने उल्लंघन करे तेवी ते नगरीनी लक्ष्मी जोइने पंडितो मानता हता के–" रोहणाचळ पर्वत उपर हवे मात्र पथ्थर ज रह्या हशे अने समुद्रमां केवळ जळ ज रह्यु हशे "

ते नगरीमां कार्तिकस्वामीनी जेवा पराक्रमवाळा अश्वसेन नामे राजा हता, ते जाणे के इंद्रे आवीने पृथ्वीपर वास कर्यो होय तेम शोभता हता ते राजाने वामा नामनी राणी हती ते गुणना समूहवडे सुंदर, शीलादिक गुणवडे शोभती अने अश्वसेन राजाने तेना प्राण करतां पण अधिक प्रिय हती एकदा सुवर्णबाहुनो जीव त्रण ज्ञान सहित प्राणत नामना दशमा देवलोकथी चवी वामादेवीनी कुक्षीमां अवतर्यो ते वखते सुखे सुतेली ते मनोहर मुखवाळीए हस्ती विगेरे चौद महा स्वप्नोने पोताना मुखमां प्रवेश करता जोया पछी तत्काळ जागेली तेणीने अनुक्रमे इंद्रे, राजाए अने पछी ज्योतिषीओए

स्थानकोना सेवनवडे तेमणे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं. एकदा विहारना क्रमे क्षीरवन नामनी अटवीमां क्षीरमहागिरि नामना पर्वतपर चडी सूर्यनी सन्मुख दृष्टि राखी तेओ कायोत्सर्गे रह्या. ते अवसरे कुरंगकनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज वनमां सिंह थयो हतो, ते दैवयोगे भमतो भमतो त्यां आवी चडयो. अने ते मुनींद्रने जोइ पूर्वना वैरने लीधे तेनापर अत्यंत क्रोध पामी ते राक्षसनी जेम तेमना तरफ दोडयो. ते सिंहने आवतो जोइ मुनीश्वरे तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं. तेवामां ते सिंह मोटी फाळ मारी मुनिना शरीरपर पडयो, एटले ते मुनि काळधर्म पामी दशमा देवलोकमां महाप्रभ नामना विमानने विषे वीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देव थया.

ते सिंह पण मरीने चोथी नरकमां नारकीपणे उत्पन्न थयो. त्यां दश सागरोपम सुधी विविध प्रकारनी वेदनाओने अनुभवी त्यांथी नीकळी चिरकाळ सुधी तिर्यंचनी योनिमां भ्रमण करी ते सिंहनो जीव कोइक गाममां ब्राह्मणनो पुत्र थयो. तेनो जन्म थया पछी तरत ज तेना मातापिता विगेरे सर्व मरण पाम्या. तेने कठ नामे बोलावी लोकोए दयाथी तेने उछेरी मोटो कर्यो. ते अत्यंत दरिद्री युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे माणसोनी निंदाने सांभळतो ते महा कष्टथी भोजन पण पामवा लाग्यो. एकदा दानभोगादिक करता धनिकोने जोइ तेने विचार थयो के–" आ लोकोए पूर्वजन्ममां दुष्कर तप कर्यो हशे, कारण के बीज विना अन्नप्राप्ति न थाय तेम तप विना लक्ष्मी प्राप्त थाय नहीं. तेथी हुं पण तप करुं." एम विचारी वैराग्य पामेला कठे तापसनी दीक्षा ग्रहण करी अने कंदादिकनुं भोजन करी ते पंचाग्नि आदिक अज्ञानकष्ट करवा लाग्यो.

आ ज भरतक्षेत्रमां वाराणसी नामनी नगरी छे. ते नित्यसखीनी जेम पासे रहेली गंगानदीवडे सेवाय छे. अलका

विमानमां बेठो ते वखत पद्मा पण मामानी तथा मातानी रजा लइ पतिनी पाछळ चाली पछी पद्मोत्तर पद्मा सहित ते राजाने तत्काळ वैताढय पर्वतपर पोताना नगरमां लइ गयो. त्यां दिव्य रत्नना प्रासादमा ते सुवर्णबाहु राजाने उतारो आपीने सेवकनी जेम स्नान भोजनादिकवडे तेनो योग्य सत्कार कर्यो पछी सुवर्णबाहुए त्या रही पोताना पुण्यप्रभावथी बन्ने श्रेणिनु साम्राज्य प्राप्त कर्युं अने घणी विद्याधर कन्याओनु पाणिग्रहण कर्युं पछी पद्मा विगेरे प्रियाओ सहित ते राजा पोताना नगरमां आव्यो. त्या अनुक्रमे चक्रादिक रत्नो उत्पन्न थयां, तेनाथी छ खंड साधी सुवर्णबाहु राजा चक्रवर्ती थया अने छ खंडनु चिरकाळ राज्य कर्युं

एकदा सुवर्णबाहु राजा पोतानी प्रियाओ सहित प्रासादनी उपर क्रीडा करता हता, ते वखते आकाशमां देवोने जता आवता जोइ राजा विस्मय पाम्या माणसोने पूछवाथी जगन्नाथ तीर्थंकरनु आगमन सांभळी चक्रीए त्यां जइ जिनेश्वरने वांदी तेमना मुखथी मोहनो नाश करनारी देशना सांभळी पछी चक्रवर्ती पोताने स्थाने आव्या अने धर्मचक्री पण भव्य प्राणीओने प्रबोध करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या एकदा जिनेश्वरनी पासे आवेला देवोने संभारता चक्रवर्तीने विचार थयो के—" आवा देवो में पूर्वे क्यांइ पण जोया छे " आ प्रमाणे उहापोह करतां तेमने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु अने तेणे पोताना पूर्वभवो जोया तेथी मोक्षरूपी वृक्षना बीज समान वैराग्य तेमने प्राप्त थयो एटले दीक्षा लेवानी इच्छाथी तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन कर्यो, तेवामां ते ज जगन्नाथ तीर्थंकर विहार करता करता त्या ज पधार्या. तेमनी पासे सुवर्णबाहु चक्रीए दीक्षा ग्रहण करी ते अनुक्रमे गीतार्थ थइ दुस्तप तप करवा लाग्या तेमा जिनसेवा आदिक

जेथी अहीं लावी आनो मने संगम कराव्यो. " पछी राजाए तेणीने पूछ्युं के—" हे भद्रे ! कुळपति क्यां छे ? तेमने जोवा माटे हुं अत्यंत उत्सुक छुं. " सखीए कह्युं के—" अहीं आवेला साधुए आजे अहींथी विहार कर्यो छे, तेमनी साथे गया छे, थोडेक दूर सुधी जइ तेने वांदी हमणां पाछा आवशे. " आम वात चाले छे एटलामां अश्वना पगलांने अनुसरी राजानुं सैन्य आश्रम पासे आवी पहोंच्युं. ते जोइ ते बन्ने कन्याओए ' आ सुवर्णबाहु राजा पोते ज छे ' एम जाणी लीधुं. पछी ' कुळपतिना आवतां सुधी आ पद्मानी शी अवस्था थशे ? ' एम शंका करती, सखी तेणीने महाकष्टथी आश्रममां लइ गइ. पछी ते नदा नामनी तेनी सखीए आश्रममां आवेला गालवमुनिने तथा रत्नावळीने आनंदथी सुवर्णबाहु राजानी सर्व वात कही बतावी. ते सांभळी हर्ष पामेला गालवमुनि रत्नावळी, पद्मा अने नंदा सहित राजानी पासे आव्या. राजाए पण मुनिनुं बहुमान कर्युं. पछी मुनिए राजाने कह्युं के—" हे राजा ! ज्ञानीए आ पद्माना पति तमने कह्या छे, तेथी आ मारी भाणेजने तमे परणो. " ते सांभळी अत्यंत हर्ष पामेला राजाए गांधर्वविधिथी तेणीनुं पाणिग्रहण कर्युं.

ते वखते त्यां विमानोवडे आकाशने आच्छादन करतो पद्मोत्तर नामनो विद्याधर राजा के जे पद्मानो सापत्न भाइ थतो हतो, ते आव्यो. रत्नावळीना कहेवाथी तेणे सुवर्णबाहु राजाने नमस्कार करी कह्युं के—" हे देव ! तमारो वृत्तांत सांभळीने हुं तमारी सेवा करवा आव्यो छुं. हे स्वामी ! तमे जाते पधारीने वेताढ्य पर्वतपर रहेला मारा रत्नपुर नगरने पवित्र करो. " आवुं तेनुं वचन अंगीकार करी रत्नावळी अने कुळपतिनी रजा लइ राजा परिवार सहित तेना

उपद्रव करे छे ? " एम बोलतो राजा तत्काळ प्रगट थयो तेने अकस्मात् आवेलो जोइ ते बन्ने स्त्रीओ घणवार तो क्षोभ पामी. पछी धीरजने धारण करी सखी बोली के—" सुवर्णबाहु रक्षण करते सते तापसोने उपद्रव करवा कोइ पण समर्थ नथी परंतु आ मारी मुग्धा सखी पोतानी पासे आवता भ्रमरने जोइ भय पामीने 'म रु रक्षण कर, रक्षण कर,' एम बोली छे हे महापुरुष ! कामदेवना जेवा रूपवाळा तमे कोण छो ? ते कहो." ते सांभळी राजाए पोते ज पोतानी ओळखाण आपवी अयोग्य धारी कह्यु के—" हु सुवर्णबाहुनो वशवर्ती सेवक छु, अने राजानी आज्ञाथी आश्रमनो उपद्रव दूर करवा आव्यो छु परंतु हे भद्रे ! आ कमळना सरखा नेत्रवाळी कन्या अनुचित काम करवावडे क्लेश केम पामे छ ? " त्यारे सखीए कह्यु के—" आ रत्नपुरना राजा विद्याधरेंद्रनी प्रिया रत्नावळीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली पद्मा नामनी कन्या छे. आ कन्यानो जन्म थयो, ते ज वखते तेना पिता मरण पाम्या त्यारे तेना पुत्रो राज्यने माटे परस्पर युद्ध करवा लाग्या ते वखते रत्नावळी राणी आ बाळाने लइ अहीं पोताना भाइ गालव नामना कुळपतिनी पासे आवीने रही छे तेथी तापसोए लालन पालन करातो आ कन्या अहीं ज वृद्धि पामीने अनुक्रमे युवावस्थाने पामी छे अहीं मुनि कन्याओना सहवासथी ते आ ज कर्म करतां शीखेली छे एकदा कोइ ज्ञानी साधु महाराज अहीं आव्या हता तेने कुळपतिए 'आ कन्यानो वर कोण थशे ?' एम पूछ्यु त्यारे साधुए कह्यु के—" सुवर्णबाहु नामना चक्रवर्ती अश्वथी हरण कराइने जाते ज अहीं आवी आ कन्याने परणशे "

आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळी सुवर्णबाहु राजाए हर्ष पामी विचार्यु के—" आ अश्वे मारा उपर उपकार कर्यो, क

सुदर्शना नामनी प्रिया हती. एकदा वज्रनाभनो जीव ग्रैवेयकथी चवी चौद महा स्वप्नोथी सूचित तेमनो पुत्र थयो. तेनुं नाम सुवर्णबाहु पाडयुं. ते अनुक्रमे वृद्धि पामी पूर्वभवना अभ्यासथी समग्र कळाओ ग्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो. त्यारे राजाए तेने राज्यपर स्थापन करी पोते दीक्षा ग्रहण करी. पछी सुवर्णबाहु राजा दया सहित पृथ्वीनुं रक्षण करवा लाग्यो. एकदा राजा अश्वक्रीडा करवा नगर बहार गयो. त्यां विपरीत शिक्षावाळो अश्व तेने हरण करी दूर वनमां लइ गयो. त्यां एक सरोवर जोइ तृषातुर थयेलो अश्व पोतानी मेळे ज उभो रह्यो. एटले राजाए अश्वपरथी उतरी ते अश्वने नवरावी पाणी पाइ पोते पण स्नान करी जळपान कर्युं. पछी ते सरोवरने कांठे क्षणवार विश्राम लइ आगळ चालतां राजाए एक तपोवन जोयुं. तेमां प्रवेश करतां राजानुं जमणुं नेत्र फरक्युं, त्यारे तेणे विचार्युं के—" अहीं मने कांइक लाभ थवो जोइए." एम विचारी आगळ चालतां राजाए त्यां वृक्षोने पाणी पाती एक मनोहर मुनिकन्याने तेनी सखी साथे जोइ. तेथी वृक्षने आंतरे उभो रही तेणीने एकदृष्टिए जोतो राजा विचार करवा लाग्यो के—" आ कन्याने विधाताए पोताना सर्व प्रयत्नथी रची जणाय छे. आ कन्या विकारोनो तो उपाध्याय छे, अप्सराओमां पण आवुं रूप नथी, परंतु आवुं आ रूप क्यां ? अने आवुं नीच जातिने उचित कर्म क्यां ? " ए प्रमाणे राजा विचार करतो हतो, तेवामां तेणीना श्वासना सुगंधमां मोह पामेलो कोइ भ्रमर तेणीनी पासे फरवा लाग्यो. ते वखते तेणीए भय पामी सखीने कह्युं के—" हे सखी ! आ भ्रमरथी मारुं रक्षण कर, रक्षण कर." ते सांभळी सखीए हास्यथी कह्युं के—" सुवर्णबाहु विना कोण तारुं रक्षण करवा समर्थ छे ? " ते सांभळी अवसर जोइ " सुवर्णबाहु पृथ्वीनुं रक्षण करते सते तमने कोण

२८

जीव स्वर्गथी चवी वज्रनाभ नामे तेमनो पुत्र थयो. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार सर्व कळाओने ग्रहण करी पवित्र यौवनवयने पाम्यो. त्यारे तेने राज्य सोंपी वज्रवीर्ये दीक्षा ग्रहण करी पछी वज्रनाभ राजाए चिरकाळ सुधी राज्यनु पालन कर्युं. एकदा वैराग्य पामी चक्रायुध नामना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी वज्रनाभे क्षेमकर नामना तीर्थंकर पासे दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे तीव्र तपस्या करता अने परीषहोने सहन करता ते मुनि आकाशगमनादिक अनेक लब्धिओ पाम्या गुरुनी आज्ञाथी एकाकी विहार करता ते मुनि एकदा आकाशमार्गे सुकच्छ नामना विजयमा गया त्यां विहारना क्रमथी एकदा भयकर अरण्यमां रहेला ज्वलनाद्रि नामना पर्वतपर गया तेटलामां सूर्य अस्त पाम्यो तेथी ते पर्वतनी कोइ गुफामां ते मुनि कायोत्सर्गे रह्या प्रातःकाळे सूर्योदय थयो त्यारे इर्यासमिति पूर्वक विहार करवा लाग्या आवा अवसरे ते सर्पनो जीव नरकमांथी उधरी भवमां अटन करी ते ज गिरिनी पासे कुरगक नामे भिल्ल थयो ते एकदा मृगयाने माटे नीकळ्यो, तेवामां ते ज मुनिने तेणे प्रथम जोया तेथी 'आ अपशुकन थया' एम धारी पूर्वभवना वेरने लीधे तेणे ते मुनिने तीक्ष्ण बाण मार्युं तरत ज ते महामुनि 'नमोऽर्हद्भ्यः' एम बोलता बाणना प्रहारथी पीडा पामी पृथ्वीपर बेसी गया अने तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं पछी सर्व जीवोने खमावी शुभध्यानथी काळधर्म पामी ते मुनि मध्यम ग्रैवेयकमां ललिताग नामे देव थया अहीं एक ज प्रहारथी मरण पामेला मुनिने जोइ कुरगक भिल्ल पोताने महाबळवान मानी आनद पाम्यो. अन्यदा ते भिल्ल पण मरण पामी सातमी नरकमां रौरव नामना नरकावासमां नारकी थयो

आ ज जबूद्वीपना पूर्व महाविदेहने विषे पुराणपुर नामनु नगर छे तेमां कुलिशबाहु नामे राजा हतो तेने

विद्युद्गति नामनो विद्याधर राजा हतो. तेने कनकनी जेवी कांतिवाळी कनकतिलका नामनी राणी हती. एकदा ते मरुभूति हाथीनो जीव आठमा स्वर्गमांथी चवी तेमनो पुत्र थयो. तेनुं नाम किरणवेग पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळाओमां निपुण थइ यौवनवयने पाम्यो. एकदा तेना पिताए तेने राज्यपर स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी, एटले ते किरणवेग राजा न्यायथी राज्यनुं प्रतिपालन करवा लाग्यो. एकदा सुरगुरु नामना गुरुना मुखथी धर्मदेशना सांभळी किरणवेग राजाए प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे गीतार्थ थइ एकाकी विहारनो अभिग्रह धारण करी ते मुनि आकाश-मार्गे पुष्करार्ध द्वीपमां गया. त्यां कनकगिरि नामना पर्वतनी पासे कायोत्सर्गे रह्या.

अहीं कुक्कुट सर्पनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज कनकगिरि पर्वतना वनमां अतिविषवाळो सर्प थयो. तेणे पर्वतनी पासे भमतां ध्यानमां रहेला ते मुनिने जोया. तेथी पूर्वभवना वेरथी क्रोध पामी ते मुनिना सर्व अंगोपर डंख मार्या. ते वखते ते किरणवेग मुनिए अनशन ग्रहण करी विचार्युं के—"आ सर्प मारा असातावेदनी कर्मनो क्षय करावनार होवाथी मारो मित्ररूप छे." इत्यादि शुभ भावना भावी काळधर्म पामी बारमा अच्युत देवलोकना जंबूद्रुमावर्त नामना विमानमां बावीश सागरोपमना आयुष्यवाळा श्रेष्ठ देव थया. पेलो सर्प पण ते पर्वत पासे भमतो हतो, तेवामां दावानळ लागवाथी तेमां बळी जइ मरण पामी फरीथी पांचमी नरकमां उत्कृष्ट स्थितिवाळो नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहक्षेत्रने विषे सुगंधि नामनी विजयमां शुभंकरा नामनी नगरी छे. तेमां महापराक्रमी वज्रवीर्य नामे राजा हतो, तेने जाणे बीजी लक्ष्मी ज होय तेवी लक्ष्मीवती नामनी प्रिया हती. एकदा किरणवेग मुनिनो

प्रमाणे मुनिनु वचन सांभळी ते हाथीने जातिस्मरण ज्ञान थयु, तेथी तेणे पोतानी सुंढ उंची करी मस्तक पृथ्वीपर नमावी मुनिने नमस्कार कर्यो पछी मुनिए कहेला श्रावकधर्मने अंगीकार करी शांत थयेलो हाथी पोताने स्थाने गयो आ अति अद्भुत देखाव जोइ प्रथम नासी गयेला सार्थजनो पाछा आवी, मुनिने नमी श्रावकधर्म पाम्या अने सार्थपति पण जिनधर्ममां अतिदृढ थयो पछी अष्टापद तीर्थे जइ देवोने वांदी राजर्षिए अन्यत्र विहार कर्यो ते हाथी पण मुनिनी जेम इर्यासमितिपूर्वक चालतो, षष्ठादिक तप करतो, सुकां पांदडां विगेरेथी पारणु करतो, सूर्यना किरणोथी तपेलु सरोवरनु पाणी पीतो अने हाथणीओ साथे क्रीडानो त्याग करी शुभ भावना भावतो रहेवा लाग्यो

अहीं कमठ तापस पोताना भाइने हणीने शांत थयो नहीं तेथी आर्तध्यानथी मरण पामी विंध्याचळनी अटवीमां ज कुक्कुट जातिनो उत्कट सर्प थयो एकदा वनमां भमतां तेणे मरुभूति हाथीने सूर्यना तापथी तपेलु जळ पीवा माटे सरोवरमां प्रवेश करतो जोयो ते वखते ते हाथी दैवयोगे तेना पंकमां खुंची गयो, तेथी ते जरा पण आगळ पाछळ चाली शक्यो नहीं. ते जोइ ते सर्प उडी तेना कुंभस्थळ उपर डंश कर्यो, तेना विषनो आवेश थवाथी पोतानो अंतसमय जाणी ते हाथीए तत्काळ अनशन ग्रहण कर्यु अने ते वेदनाने सहन करतो तथा पंचनमस्कारनु ध्यान करतो मरण पामी सत्तर सागरोपमना जघन्य आयुष्यवाळो सहस्रार नामना आठमा देवलोकमां देव थयो अनुक्रमे कुक्कुट नाग पण मरीने पांचमी नरकमां सत्तर सागरोपमना उत्कृष्ट आयुष्यवाळो नारकी थयो

आ ज जंबूद्वीपमां पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकच्छ नामना विजयमां वैताढ्य पर्वत उपर तिलका नामनी नगरी छे तेमां

गयां–नाश पाम्यां, ते ज रीते आ जगतना सर्व पदार्थो विनश्वर छे, तेमां प्रीति करवी फोगट छे." आ प्रमाणे विचारतां ज राजाने अवधिज्ञान प्राप्त थयुं. तरत ज तेणे पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी सद्गुरुनी पासे चारित्र अंगीकार कर्युं. अनुक्रमे ते राजर्षि श्रुतना पारगामी थइ विहार करता एकदा सागरदत्त नामना सार्थवाहनी साथे अष्टापद पर्वत तरफ चाल्या. तेमने नमस्कार करी सार्थवाहे पूछयुं के—"हे प्रभु ! आपने क्यां जवुं छे ?" राजर्षि बोल्या के—"अमारे तीर्थयात्रा करवा जवुं छे." फरीथी सार्थवाहे पूछयुं के—"आपनो कयो धर्म छे ?" त्यारे मुनिए तेने विस्तार सहित जैनधर्म कह्यो. ते सांभळी सार्थवाहे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. अनुक्रमे चालतो ते सार्थ ज्यां मरुभूति हाथी रहेतो हतो ते अटवीमां पहोंच्यो अने त्यां भोजननो अवसर थवाथी एक सरोवरने कांठे पडाव नांख्यो. तेवामां ते मरुभूति हाथी पोतानी घणी हाथणीओ सहित ते तळावमां पाणी पीवा आव्यो. त्यां पाणी पी हाथणीओ साथे क्रीडा करी तळावनी पाळपर चड्यो. त्यांथी चारे दिशा तरफ दृष्टि नांखता तेणे ते सार्थ जोयो. तरत ज क्रोधथी यमराजनी जेम ते हाथी सार्थने हणवा तेनी तरफ दोड्यो, तेने आवतो जोइ भय पामेलो सार्थ तत्काळ नाठो. ते वखते राजर्षिए अवधिज्ञानथी तेने बोध करवा लायक जाणी तेना आववाना मार्गमां ज पर्वतनी जेम स्थिर उभा रही कायोत्सर्ग कर्यो. ते हाथी पण दोडतो तेनी पासे आव्यो, पण मुनिने जोइ शांत थइ गयो अने तेमनी पासे उभो रह्यो. ते वखते राजर्षिए कायोत्सर्ग पारी तेनो उपकार करवा माटे कह्युं के—"हे हाथी ! तारा मरुभूतिना भवने केम संभारतो नथी ? हे बुद्धिमान् ! मने–अरविंद राजाने शुं तुं ओळखतो नथी ? अने पूर्व भवमां अंगीकार करेला श्रावकधर्मने शुं तुं भूली गयो ?" आ

कर्या विना शीघ्रपणे त्याथी नीकळी गयो पछी काइक विचार करी मरुभूतिए ते सर्व वृत्तांत अरविंद राजा पासे जइने कह्यो राजाए पण क्रोध पामी कमठने नगर बहार काढी मूकवा माटे आरक्षकोने हुकम कर्यो एटले आरक्षकोए तेने गधेडापर बेसाडी चोतरफ फेरवी विडंबनापूर्वक नगरमांथी काढी मूक्यो तेवी विडंबनाथी वैराग्य पामी वनमां जइ ते कमठ तापसव्रत ग्रहण करी उग्र बाळतप करवा लाग्यो आ वृत्तांत जाणी पश्चात्ताप पामेला मरुभूतिए विचार कर्यो के—" मने धिक्कार छे के में राजानी पासे परनु छिद्र उघाडु करी मोटाभाइने विडंबना पमाडी. ' परनु दुश्चरित्र प्रगट करवु नहीं ' ए नीतिनु वचन पण क्रोधथी अंध थयेला मने स्मरणमा रह्यु नहीं, तो हजु पण मोटाभाइ पासे जइ आ मारा अपराधने हु खमावु. " एम विचारी वनमां जइ ते मोटाभाइना पगमा पड्यो ते वखते ते दुष्ट बुद्धिवाळा अने दुष्कर्ममां ज तत्पर एवा कमठे विचार्यु के—" आणे जे मारी विडंबना करी छे ते मने मृत्यु करतां पण अधिक दुःखकारक छे " एम विचारी महाक्रोधथी एक मोटी शिला उपाडी नानाभाइना मस्तकपर मारी, तेथी तत्काळ ते मरुभूति मरण पामी आर्तध्यानने लीधे विंध्याचळनी अटवीमां यूथनो स्वामी हाथी थयो

एकदा अरविंद राजा पोतानी प्रियाओ साथे शरदऋतुमा अगाशीने विषे क्रीडा करतो हतो ते वखते आकाशमां वादळां चडी आव्यां. ते साथे इंद्रधनुष, गर्जना अने वीजळीना चमकारा पण थवा लाग्या. ते सर्व जोइ " अहो ! आ अतीव रमणीय छे " एम राजाए तेनी प्रशंसा करी. थोडीवारमा ते वादळां सर्व आकाशमा व्यापी गयां अने पाछां तरत ज वायुना झपाटाथी वीखराइ गयां. ते जोइ राजाए विचार्यु के—" जेम आ वादळां क्षणवारमां देखाइने वीखराइ

पदे स्थापन कर्यो. मरुभूति व्रत लेवानी इच्छाथी विषयोथी विमुख थइ अत्यंत धर्मकर्ममां तत्पर थयो.

एकदा नवा यौवनवाळी अने मनोहर आकृतिवाळी नानाभाइनी प्रिया वसुंधराने जोइ कमठ तेणीनापर आसक्त थयो. तेथी स्वभावथी ज परस्त्रीमां लंपट एवो ते कमठ कामदेवरूपी वृक्षना दोहद समान मधुर वचनोवडे तेणीनी साथे वातो करवा लाग्यो. एकदा तेणे तेणीने कह्युं के—" हे मुग्धा ! भोग विना फोगट आ युवावस्थाने केम गुमावे छे ? जो मारो नानो भाइ सत्त्व रहित होवाथी तने सेवतो नथी, तो हे मनोहर ! मारी साथे क्रीडा कर. " एम कही पोताना उत्संगमां तेणीने आदरपूर्वक बेसाडी, एटले प्रथमथी ज भोगने इच्छती वसुंधराए तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी ते बन्ने विवेक, मर्यादा अने लज्जानो त्याग करी एकांतमां पशुक्रिया सेववा लाग्या. केटलेक काळे कमठनी स्त्री वरुणाए तेमनो आ अनाचार जाणी इर्ष्याने लीधे ते सर्व वृत्तांत मरुभूतिने कह्यो. ते सांभळी " असंभवित वातने प्रत्यक्ष जोया विना सत्य केम मानवी ? " एम मनमां विचार करतो मरुभूति कमठ पासे जइ बोल्यो के—" हे भाइ ! हुं कांइ कार्यने माटे परगाम जाउं छुं. " एम कही गाम बहार जइ भिक्षुकनो वेष लइ रात्रिए घेर आवी स्वर फेरवीने कमठने कह्युं के—" हुं दूर देशथी आवुं छुं, मने रात्रिवासो रहेवा माटे कांइक स्थान आपो. " ते सांभळी परमार्थने नहीं जाणता कमठे तेने पोताना घरनी पासेना एक ओरडामां रहेवानुं कह्युं, एटले ते बन्ने कामांधनी दुष्ट चेष्टा जोवानी इच्छाथी ते तेमां खोटी निद्राए सुतो. पछी " मरुभूति बहारगाम गयो छे " एम धारी वसुंधरा अने कमठ निःशंकपणे क्रीडा करवा लाग्या. ते मरुभूतिए साक्षात् जोयुं. आवो तेमनो दुराचार जोवाने असमर्थ छतां लोकापवादथी भय पामतो मरुभूति तेनो प्रतिकार

अथ केशिगौतमीय नामनुं त्रेवीशमु अध्ययन २३

कोइक प्रकारे चारित्रनी शिथिळता थाय तो रथनेमिनी जेम धर्ममां ज धृति करवी, एम बावीशमा अध्ययनमां कह्यु हवे बीजाना मननी शका पण केशी अने गौतमनी जेम दूर करवी एम आ अध्ययनमां कहेवाशे ते विषेनु आ प्रथम सूत्र छे.—

जिणे पासि त्ति नामेण, अरहा लोगपूइए । सबुद्धप्पा य सव्वण्णू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥

अर्थ—(जिणे) रागद्वेषने जीतनार (पासि त्ति) पार्श्व एवा (नामेण) नामना (अरहा) पूजाने लायक तीर्थंकर, ए ज कारण माटे (लोगपूइए) लोकोए पूजेला तथा (सबुद्धप्पा य) तत्त्वना ज्ञानवाळा, तथा (सव्वण्णू) सर्वज्ञ, तथा (धम्मतित्थयरे) धर्मतीर्थने करनारा तथा (जिणे) सर्व कर्मने जीतनारा हता १

अहीं प्रसगे प्राप्त थयेलु श्रीपार्श्वनाथनु संक्षिप्त चरित्र कहे छे

आ ज भरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामनु नगर छे तेमां अरविंद नामे राजा हतो. तेने सकल शास्त्रनो पारगामी अने जिनधर्ममां तत्पर विश्वभूति नामे पुरोहित हतो, तेने अनुद्धरा नामनी भार्या हती ते पुरोहितने कमठ अने मरुभूति नामना बे पुत्रो हता ते बन्नेने अनुक्रमे वरुणा अने वसुधरा नामनी भार्याओ हती एकदा विश्वभूति पुरोहित बन्ने पुत्रो उपर घरनो भार स्थापन करी अनशन ग्रहण करी स्वर्गे गयो. तेनी भार्या अनुद्धरा पण पतिना वियोगथी शोक अने तप वडे शरीरनु शोषण करी मृत्यु पामी बन्ने भाइओए मातापितानी उत्तरक्रिया करी. पछी राजाए मोटा पुत्र कमठने पुरोहित

त्तम एवा (सिद्धिं) सिद्धिस्थानने (पत्ता) पाम्या. ४९.

एवं करिंति संबुद्धा, पंडिआ पविअक्खणा। विणिअट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमु त्ति बेमि ॥५०॥

अर्थ—(संबुद्धा) सम्यक् प्रकारे बोधवाळा, (पंडिआ) तत्त्वबुद्धिवाळा अने (पविअक्खणा) विवेकी एवा पुरुषो (एवं) आ प्रमाणे (करिंति) करे छे, तथा (से) ते (पुरिसुत्तमो) पुरुषोमां उत्तम एवा रथनेमिनी (जहा) जेम (भोगेसु) भोग थकी (विणिअट्टंति) पाछा फरे छे. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं, एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ५०

अहीं भगवान नेमिनाथ पण पृथ्वीतळपर विहार करता सता जेम कमळोने सूर्य विकस्वर करे तेम भव्य प्राणीओने प्रतिबोध करता हता. ते दश धनुष उंचा हता, तेने शंखनुं चिन्ह (लंछन) हतुं, मेघ जेवा श्याम हता, दश प्रकारना धर्मनो उपदेश आपी दश दिशाओने पवित्र करता हता. तेना परिवारमां अढार हजार साधु, चाळीश हजार साध्वीओ, एक लाख ने ओगणोतेर हजार श्रावको तथा त्रण लाख छत्रीश हजार श्राविकाओ हती. ते प्रभु केवळज्ञान थया पछी चोपन दिवस ओछा एवा सातसो वर्ष सुधी पृथ्वीपर विचर्या. छेवट उज्जयंत गिरि उपर पांचसो छत्रीश साधुओ सहित अनशन ग्रहण कर्युं. कुल एक हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी ते साधुओ सहित एक मासे अरिष्टनेमि प्रभु निर्वाणपदने पाम्या. ते वखते समग्र परिवार सहित देवेंद्रोए आवी तेमनो निर्वाण उत्सव कर्यो. इति श्रीअरिष्टनेमिजिन चरितम्.

॥ इति द्वाविंशमध्ययनम् ॥ २२.

अनो वेषमात्र धारण करवाथी-द्रव्यधर्मनो न पाळक होवाथी मात्र उदरपूर्तिना फळने ज भोगवनार थइश, परंतु भावधर्मनुं फळ जे मोक्ष तेनो भोक्ता थइश नहीं. ४६

आ प्रमाणे राजीमतीए कह्युं, त्यारे रथनेमिए शुं कर्युं ? ते कहे छे —

तीसे सो वयणं सोचा, संजयाइ सुभासिअं । अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (अकुसेण) अंकुशवडे (नागो) हाथी मार्गमां आवे छे, तेम (तीसे) ते (संजयाइ) राजीमती साध्वीनुं (सुभासिअं) सुभाषित (वयणं) वचन (सोचा) सांभळीने (सो) ते रथनेमि (धम्मे) धर्ममार्गमां (संपडिवाइओ) स्थिर थयो. ४७.

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ । सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥ ४८ ॥

अर्थ—(मणगुत्तो) मनवडे गुप्त एटले मनगुप्तिवाळो, (वयगुत्तो) वचनवडे गुप्त एटले वचनगुप्तिवाळो, (कायगुत्तो) कायावडे गुप्त एटले कायगुप्तिवाळो तथा (जिइंदिओ) जितेंद्रिय अने (दढव्वओ) व्रतने विषे दृढ थइने (जावज्जीव) जीवित पर्यंत (निच्चलं) निश्चळ एवा (सामण्णं) चारित्रने (फासे) पाळवा लाग्यो ४८

उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दुण्णि वि केवली । सव्वं कम्मं खवित्ता णं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४९॥

अर्थ—(उग्गं) उग्र (तवं) तप (चरित्ताणं) करीने (दुण्णि वि) राजीमती अने रथनेमि ए बन्ने (केवली) केवळज्ञानी (जाया) थया अने अनुक्रमे (सव्वं) सर्व (कम्मं) कर्मने (खवित्ता णं) खपावीने (अणुत्तरं) सर्वो

(अंधगवरिहणो) अंधकवृष्णिना कुळमां (सि) उत्पन्न थयेलो छे, तेथी आपणा (कुले) कुळमां आपणे (गंधणा)
गंधन जातिना सर्पतुल्य (मा होमो) न थइए. गंधन जातिना सर्पो वमेला विषने मंत्रथी आकर्षण कराय त्यारे अग्निपा-
तना भयथी पाछुं चूसी ले छे, परंतु अगंधन जातिना सर्प तो अग्निमां प्रवेश करे छे पण वमेलुं विष पाछुं चूसी लेता नथी.
तेथी करीने (निहुओ) व्रतमां स्थिर थइने तुं (संजमं) संयमनुं (चर) आचरण कर—सेवन कर. ४४.

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारीओ । वायाविद्धु व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४५॥

अर्थ—हे साधु ! (जा जा) जे जे (नारीओ) स्त्रीओने (दिच्छसि) तुं जोइश अने जोइने तेने विषे (जइ) जो (तं) तुं
(भावं) अभिलाषाने (काहिसि) करीश, तो (वायाविद्धो) वायुथी प्रेरायेली (हडो) हड नामनी वनस्पति एटले
शेवाळनी (व्व) जेम तुं (अट्ठिअप्पा) अस्थिर चित्तवाळो (भविस्ससि) थइ जइश. ४५.

गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो । एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४६॥

अर्थ—(जहा) जेम (गोवालो) गोवाळ-पारकी गायोने पगार लइने चारनार (वा) अथवा (भंडवालो) पगार
लइने कोइना करीयाणानुं रक्षण करनार (तद्दव्वणिस्सरो) ते द्रव्य एटले गाय अथवा करीयाणानो अनीश्वर छे-स्वामी
नथी. (एवं) ए ज प्रमाणे (तं पि) तुं पण (सामण्णस्स) चारित्रनो (अणिस्सरो) अनीश्वर (भविस्ससि) थइश.
गोवाळ के भांडपालक जेम गायनो के भांडनो स्वामी नहीं होवाथी तेना फळने भोगवनार थतो नथी, तेम तुं पण चारि-

पक्खंदे जलिअं जोइ, धूमकेउ दुरासय। नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ४२ ॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (अगधण) अगधन नामना (कुले) कुळमां (जाया) उत्पन्न थयेला सर्पो (जलिअ) जाज्वल्यमान अने (दुरासय) दु सह एवी (धूमकेउ) अग्निनी (जोइ) ज्वाळाने विषे (पक्खदे) प्रवेश करे छे, परतु (वतय) वमेलु विष (मोत्तु) खावाने–पाछु चूसी लेवाने (न इच्छति) इच्छता नथी. ४२

धीरत्थु तेजसो कामी, जो तं जीविअकारणा। वंतं इच्छसि आवेउं, सेअं ते मरणं भवे ॥४३॥

अर्थ—(कामी) हे कामांध ! (ते जसो) तारा यशने (धीरत्थु) धिक्कार हो अथवा (अजसोकामी) हे अपयशनी इच्छावाळा ! (ते) तने धिक्कार छे, के (जो) जे (त) तु (जीविअकारणा) असयमरूप जीवितने कारणे (वंत) वमेलाने (आवेउ) फरीथी पीवाने (इच्छसि) इच्छे छे जे भोगने तजी दीक्षा ग्रहण करी, ते ज भोगने फरी भोगववा इच्छे छे तेथी करीने (ते) तारु (मरण) पडित मरण (सेअ) श्रेयस्कर (भवे) छे अर्थात् असयम जीविते जीववा करतां पडित मरणे मरवु सारु छे, परंतु वमेला भोगोने फरीथी भोगववानी इच्छा करवी सारी नथी निंद्य वस्तुने जाणी तेनो त्याग कर्यो होय, तो तेने पडितो फरीथी ग्रहण करता नथी ४५.

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो। मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४५॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (अह च) हु (भोगरायस्स) भोगराजनी एटले उग्रसेन राजानी पुत्री छुं, (त च) अने तु

अर्थ—(भग्गुज्जोअपराइअं) संयमने विषे जेनो उद्यम भग्न थयो छे एवा तथा स्त्रीपरीषहथी पराजय पामेला एवा (तं) ते (रहनेमि) रथनेमिने (दट्ठूण) जोइने (असंभंता) " आ मारापर बळात्कार करी शकशे नहीं. " एम धारी भय रहित थयेली (राईमई) राजीमती (तहिं) ते गुफामां ज (अप्पाणं) पोताना शरीरने (संवरे) ढांकती हवी एटले लूगडां पहेरी लेती हवी. ३९.

अह सो रायवरकन्ना, सुट्ठिआ निअमव्वए । जाइं कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वए ॥ ४० ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (निअमव्वए) शौच, संतोष, स्वाध्याय अने तपरूपी नियमने विषे तथा पंच महाव्रतने विषे (सुट्ठिआ) स्थिर रहेली (सा) ते (रायवरकन्ना) राजानी श्रेष्ठ कन्या—राजीमती (जाइं) जाति एटले माताना वंशने, (कुलं च) कुळ एटले पिताना वंशने (सीलं च) तथा शीळने (रक्खमाणी) रक्षण करती सती (तयं) ते वखते (वए) आ प्रमाणे बोली. ४०.

जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएणं नलकूबरो । तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (जइ) जो तुं (रूवेण) रूपे करीने (वेसमणो) वैश्रमण—कुबेर जेवो (सि) होय, अथवा जो तुं (ललिएणं) विलासवाळी चेष्टाए करीने (नलकूबरो) नळकुबर देव जेवो होय, अथवा (जइ) जो तुं (सक्खं) साक्षात् (पुरंदरो) इंद्र जेवो (सि) होय, (तहा वि) तो पण हुं (ते) तने (न इच्छामि) इच्छती नथी. ४१.

२७

(उदाहरे) बोल्यो. ३६

रहनेमी अहं भद्दे, सुरूवे चारुभासिणि । मम भयाहि सुतणू, न ते पीला भविस्सइ ॥ ३७ ॥

अर्थ—(भद्दे) हे भद्रे ! (सुरूवे) हे सारा रूपवाळी ! (चारुभासिणि) हे मनोहर वचनवाळी ! (अहं) हुं (रहनेमी) रथनेमि छु (सुतणू) हे सुंदर शरीरवाळी ! (मम) मने (भयाहि) भज-पतिपणे अंगीकार कर तेम करवाथी (ते) तने (पीला) पीडा (न भविस्सइ) थशे नहीं तु पीडानी शंकाथी कंपे छे, पण विषयसेवा कांइ पीडाने माटे थती नथी, परंतु सुखने माटे थाय छे ३७

एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं । भुत्तभोगी तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥

अर्थ—हे राजीमती ! (एहि) आव (ता) प्रथम आपणे (भोए) भोगोने (भुंजिमो) भोगवीए (खु) खरेखर (माणुस्सं) मनुष्यपणु (सुदुल्लहं) अति दुर्लभ छे (तओ) ते कारण माटे (भुत्तभोगी) भोग भोगवीने (पच्छा) पछीथी आपणे (जिणमग्गं) जिनेश्वरना मार्गने चारित्रने (चरिस्सिमो) आचरशु प्रथम भोगसुख भोगवीए अने पछी दीक्षा लइए, तो पछी भोगसुखनी इच्छा रहेती नथी माटे हमणां प्रथम भोगसुख भोगववु सारु छे ३८

ते सांभळी राजीमतीए शु कर्यु ? ते कहे छे —

दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोअपराइअं । राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥ ३९ ॥

जेवी रीते जन्म पामी हती तेवी एटले वस्त्र रहित थइ. (त्ति) एवा स्वरूपवाळी तेणीने (पासिआ) जोइने प्रथमथी त्यां रहेलो (रहनेमी) रथनेमि (भग्गचित्तो) भग्नचित्तवाळो एटले चारित्रथी भ्रष्ट परिणामवाळो थयो (अ) अने (पच्छा) त्यारपछी (तीइ वि) ते राजीमतीए पण (दिट्ठो) तेने जोयो. प्रवेश करती वखते अंधारी जग्यामां कांइ पण देखी शकातुं नथी, तेथी तेणीए प्रथमथी त्यां रहेला रथनेमिने जोयो नहोतो. जो कदाच प्रथम प्रवेश करती वेळाए ज जोयो होत तो ज्यारे बीजी साध्वीओ जूदा जूदा स्थानमां गइ तेम ते पण बीजे जात; एकली अहीं प्रवेश करत नहीं. ३४.

भीआ य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं । बाहाहिं काउं संगोफं, वेवमाणी निसीअइ ॥ ३५ ॥

अर्थ—(य) तथा (सा) ते राजीमती (तहिं) त्यां (एगंते) एकांतमां रहेला (तयं) ते (संजयं) रथनेमि साधुने (दट्ठुं) जोइने (भीआ) भय पामी. 'कदाच आ मारा शीळनो भंग करशे' एम धारी भयथी (वेवमाणी) कंपती सती (बाहाहिं) पोताना बे बाहुवडे (संगोफं) परस्पर गुंथवुं-गोपववुं (काउं) करीने एटले पोताना स्तनपर बे बाहुवडे परस्पर मर्कटबंध करीने (निसीअइ) तेने बळात्कारे पण आलिंगन नहीं करवा देवा माटे नीचे बेसी गइ. ३५.

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ । भीअं पवेइअं दट्ठुं, इमं वक्कमुदाहरे ॥ ३६ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (सो वि) ते पण (रायपुत्तो) राजपुत्र (समुद्दविजयंगओ) समुद्रविजयनो अंगज रथनेमि (भीअं) भय पामेली अने (पवेइअं) कंपती एवी तेणीने (दट्ठुं) जोइ (इमं) आ प्रमाणे (वक्कं) वचनने

(जिइंदिय) जेणे इंद्रियो जीती छे एवी (ण) ते राजीमतीने (भणइ) कह्यु के–(कण्णे) हे कन्या ! (घोर) भयंकर एवा आ (संसारसायर) संसारसागरने तुं (लहुं लहुं) शीघ्र शीघ्र (तर) तरी जा ३१

सा पव्वइआ सती, पव्वावेसी तहिं बहु । सयण परिअण चेव, सीलवंता बहुस्सुआ ॥ ३२ ॥

अर्थ—(सीलवंता) शीळवती अने (बहुस्सुआ) घणा श्रुतज्ञानवाळी (सा) ते राजीमतीए (पव्वइआ सती) दीक्षा ग्रहण करी सती एटले दीक्षा लीधा पछी (तहिं) ते द्वारका नगरीमां (बहु) घणी (सयण) स्वजननी स्त्रीओने (परिअण चेव) तथा परिजननी स्त्रीओने (पव्वावेसी) दीक्षा अपावी ३२

गिरिं च रेवयं जंती, वासेणोल्ला उ अंतरा । वासंते अंधयारम्मि, अंतो लयणस्स सा ठिआ ॥३३॥

अर्थ—एकदा प्रभुने वांदवा माटे (रेवयं) रैवतक नामना (गिरिं च) गिरि तरफ (जंती) जती (अंतरा) मार्गमां (वासंते) वरसाद वरसते सते अने (अंधयारम्मि) चोतरफ अंधकार थये सते (वासेण उल्ला) वरसादवडे आर्द्र थयेली एटले भींजायेला सर्व वस्त्रवाळी (सा) ते राजीमती (लयणस्स अंतो) एक गुफा मध्ये (ठिआ) रही अथवा अंधकारवाळी गुफामां जइने रही ३३

चीवराइं विसारंती, जहाजाय त्ति पासिआ । रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो अ तीइ वि ॥३४॥

अर्थ—ते गुफामां (चीवराइं) वस्त्रोने (विसारंती) सुकववा माटे प्रसारती एवी राजीमती ते वखते (जहाजाय)

धर्मदेशना प्रारंभी. ते वखते उद्यानपालकना मुखथी प्रभुने ज्ञान उत्पन्न थयुं जाणी बळभद्र, श्रीकृष्ण, राजीमती, दशार्ह विगेरे यादवो अने बीजा सर्व मनुष्यो रैवतक पर्वत पर जइ प्रभुने वांदी यथायोग्य स्थाने बेसी धर्मदेशना सांभळवा लाग्या. धर्मदेशना सांभळी प्रतिबोध पामेला घणा राजाओए, अन्य जनोए अने स्त्रीओए प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी अने केटलाके श्रावकनां व्रतो अंगीकार कर्या. दीक्षा लीधेला मुनिओमांथी वरदत्त विगेरे अढार गणधरो थया. तेमणे स्वामी पासेथी त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी. त्यारपछी रथनेमिए पण वैराग्य पामी स्वामी पासे प्रव्रज्या लीधी, तथा राजीमतीए पण घणी कन्याओ सहित दीक्षा लीधी.

ते ज वात सूत्रकार पण कहे छे.—

अह सा भमरसंनिभे, कुच्चफणगपसाहिए । सयमेव लुंचई केसे, धिइमंता ववस्सिआ ॥ ३० ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (धिइमंता) धैर्यवाळी अने (ववस्सिआ) चारित्रधर्म प्रत्ये उद्यमवाळी (सा) ते राजीमतीए (भमरसंनिभे) भ्रमर जेवा श्याम अने (कुच्चफणगपसाहिए) कूर्च एटले कांचकी अने फणक एटले दांतीयावडे संस्कार करेला (केसे) केशोनो (सयमेव) पोते ज (लुंचई) लोच कर्यो. ३०.

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदिअं । संसारसायरं घोरं, तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥ ३१ ॥

अर्थ—(वासुदेवो) वासुदेव (य) तथा बळभद्र विगेरे सर्वेए (लुत्तकेसं) जेणे केशनो लोच कर्यो छे, अने

थवानी छु, तेथी आ तमारी प्रार्थना नकामी छे " आ प्रमाणे तेणीए निषेध कर्या छतां रथनेमिए तेणीने विषे स्पृहानो त्याग कर्यो नहीं तेथी फरीथी एकदा एकांतमां तेणे सती राजीमतीने कह्यु के—" हे मृगाक्षी! शुष्क कायवाळा भमरीनी जेम तु राग रहित नेमिने विषे आसक्त थइने शामाटे फोगट तारा आत्माने संताप पमाडे छे? जो तु मारो स्वीकार करे तो हु जन्म पर्यंत तारो दास थइने रहु माटे तु मारी साथे भोग भोगव भोग विना मनुष्यनो जन्म निष्फळ छे एम पंडितो कहे छे " आ प्रमाणे तेनु वचन सांभळी तेने बोध करवा राजीमतीए प्रथम दूधनु पान करी पछी मदनफळ (मींढोळ) सुंघीने एक थाळमां तेनु वमन करी तेने कह्यु के—" आ दूध तमे पीओ " रथनेमिए कह्यु—" शु हु श्वान छु? के जेथी वमननु पान करु? " त्यारे हसीने राजीमतीए कह्यु—" शु तमे एटलु समजो छो? " ते बोल्यो—एक बाळक पण आ वात समजी शके छे, तो हु केम न समजु? " ते सांभळी राजीमती बोली के—" तो नेमिनाथे वमेली मने तमे भोगववा इच्छो छो, तेथी तमे श्वान तुल्य ज छो " आ प्रमाणे तेणीनु वचन सांभळी रथनेमि तेणीनी इच्छानो त्याग करी पोताने घेर गया, अने ते सती पण उग्र तप करवा लागी.

आ तरफ श्रीनेमिनाथ छद्मस्थ अवस्थाए चोपन दिवस सुधी अन्य अन्य ग्रामादिकमां विचरी फरीथी रैवताचळ पर्वत पर आव्या त्यां प्रभु अठ्ठम तप करी ध्यानमां मग्न थया ते वखते तेमने केवळज्ञान प्राप्त थयु तरत ज आसन कंपवाथी सर्व इन्द्रो देवो सहित उत्सव करवा त्यां आव्या देवोए मनोहर समवसरण रच्यु तेने विषे चार मूर्तिवाळा प्रभुए बेसी

१ एक बाजु पोते ने त्रण बाजु त्रण प्रतिबिंब देवकृत होय छे

दीक्षा (सोऊण) सांभळीने (नीहासा य) हास्य रहित तथा (निराणंदा) आनंद रहित थइ सती (सोगेण उ) शोके करीने (समुच्छया) व्याप्त थइ. २८.

राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीविअं। जा हं तेण परिच्चत्ता, सेअं पव्वइउं मम ॥ २९ ॥

अर्थ— त्यारपछी (राईमई) राजीमती (विचिंतेइ) चिंतववा लागी, के—(मम) मारा (जीविअं) जीवितने (धिरत्थु) धिक्कार हो, के (जा) जे (हं) हुं (तेण) ते नेमिनाथवडे (परिच्चत्ता) त्याग कराइ छुं. तेथी हवे (मम) मारे (पव्वइउं) प्रव्रज्या लेवी ते ज (सेअं) कल्याणकारक छे के जेथी अन्य जन्ममां पण आवुं दुःख प्राप्त न थाय. तेम ज 'सतीओ पतिने अनुसरे छे.' ए वचन पण सत्य थाय. २९.

अहीं श्री अरिष्टनेमिनो भाइ रथनेमि राजीमतीने विषे आसक्त थवाथी हमेशां तेणीने फळ, पुष्प अने अलंकार विगेरे मोकलतो हतो. परंतु राजीमती तो पोताना मनमां एम समजती के—" आ रथनेमि पोताना भाइना स्नेहथी आ सर्व मने मोकलावे छे." एम धारी ते सर्व अंगीकार करती हती. रथनेमि तो ते वस्तु ग्रहण करवाथी राजीमतीने पोतानी उपर रागवाळी ज मानतो हतो. " कामी जनोने कमळानी व्याधिवाळानी जेम सर्व विपरीत ज भासे छे." एकदा रथनेमिए राजीमतीने कह्युं के—" हे सुंदर नेत्रवाळी ! तुं खेद पामीश नहीं. जो कदाच राग रहित नेमीए तारो त्याग कर्यो, तेथी शुं थयुं ? परंतु हवे तुं मने पतिरूपे अंगीकार कर, अने तारुं यौवन कृतार्थ कर. मालतीने भ्रमरनी जेम हुं तारी अत्यंत इच्छा करुं छुं " ते सांभळी राजीमती बोली—" जो के नेमिनाथे मारो त्याग कर्यो छे, तोपण हुं तेनी शिष्या

कर्यो छे एवा तथा (जिइंदिअ) जेणे इंद्रियोने जीती छे एवा (णं) ते नेमिनाथने (भणइ) कहेता हवा के-(दमीसरा) हे मुनीश्वर ! (त) तमे (इच्छिअमणोरहं) वांछित मनोरथने (तुरिअं) शीघ्रपणे (पावेसू) पामो २५

नाणेण दंसणेण च, चरित्तेण तवेण य । खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि अ ॥ २६ ॥
एवं ते रामकेसवा, दसारा य बहुजणा । अरिट्ठनेमिं वंदित्ता, अइगया बारगाउरिं ॥ २७ ॥

अर्थ—वळी हे स्वामी ! (नाणेण) ज्ञानवडे, (दंसणेण च) दर्शनवडे, (चरित्तेण) चारित्रवडे, (तवेण य) तपवडे, (खंतीए) क्षमावडे, तथा (मुत्तीए) मुक्तिवडे एटले निर्लोभतावडे (वड्ढमाणो) वृद्धि पामनारा (भवाहि अ) तमे थाओ २६ (एवं) ए प्रकारे कही (ते) ते (रामकेसवा) बळराम, वासुदेव, (दसारा य) दशार्हो तथा (बहु जणा) बीजा घणा जनो (अरिट्ठनेमिं) श्रीअरिष्टनेमिने (वंदित्ता) वांदीने (बारगाउरिं) द्वारका नगरीमां (अइगया) पेठा-आव्या २७

ते वखते प्रभुना संगमनी आशा नष्ट थवाथी राजीमती केवी थइ ? ते कहे छे —

सोऊण रायवरकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छया ॥२८॥

अर्थ—(रायवरकन्ना) उग्रसेन राजानी श्रेष्ठ कन्या (सा) ते राजीमती (जिणस्स उ) जिनेश्वरनी (पव्वज्जं)

रत्नपर (समारूढो) आरूढ थयेला (भयवं) भगवान (वारयाओ) द्वारका नगरीथी (निक्खमिअ) नीकळीने (रेवयथम्मि) रैवतकपर्वतपर (ठिओ) रह्या-गया. २२.

उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तिमाओ सीआओ। साहस्सीइ परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥२३॥

अर्थ--त्यां (उज्जाणं) सहस्राम्रवन नामना उद्यानमां (संपत्तो) प्रभु प्राप्त थया. त्यां (उत्तिमाओ) उत्तम (सीआओ) शिबिकाथकी (ओइण्णो) नीचे उतर्या. (अह) पछी (साहस्सीइ) हजार प्रधान पुरुषोथी (परिवुडो) परिवर्या सता (चित्ताहिं) चित्रा नक्षत्रमां प्रभु (निक्खमई उ) दीक्षा ग्रहण करता हवा-पंच महाव्रत उचरता हवा. आ प्रभुना पांचे कल्याणको चित्रा नक्षत्रमां ज थया छे. २३.

अह सो सुगंधगंधिए, तुरिअं मउअकुंचिए। सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥

अर्थ--(अह) त्यारपछी (समाहिओ) सर्व सावद्य योगनो त्याग करवाथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने विषे समाधिवाळा (सो) ते प्रभुए (सुगंधगंधिए) स्वभावथी ज सुरभि गंधवाळा तथा (मउअकुंचिए) कोमळ अने कुटिल एवा (केसे) केशोनो (पचमुट्ठीहिं) पांच मुठीनडे (सयमेव) पोते ज (तुरिअं) शीघ्र (लुंचई) लोच कर्यो. २४.

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदिअं। इच्छिअमणोरहं तुरिअं, पावेसू तं दमीसरा! ॥ २५ ॥

अर्थ--(वासुदेवो) वासुदेव (य) तथा बळभद्र अने समुद्रविजय विगेरे यादवो (लुत्तकेसं) जेणे केशनो लोच

बोली के—" हे सखीओ ! आज मने स्वप्न आव्युं हतुं तेमां कोइ पुरुष ऐरावण हाथीपर चडीने मारे घेर आव्यो, अने तत्काळ पाछो फरी मेरुपर्वतपर चडी गयो त्यां रहीने ते लोकोने चार अमृतफळ देवा लाग्यो तेनी पासे में पण फळनी याचना करी त्यारे मने पण ते फळ आप्या " ते सांभळी सखीओए कह्यु—" हे सखी ! तुं खेद न कर. हे पाप रहित ! तारा विघ्नो नाश पाम्या आ स्वप्न जो के प्रारंभमां कडुक लागे छे, परंतु तेनुं परिणाम अति शुभ छे " त्यारपछी राजीमती एक नेमिनाथनुं ज ध्यान करती घरमां रही प्रभु पण व्रत लेवा तैयार थया

पछी जे प्रकारे प्रभुए दीक्षा ग्रहण करी, ते सूत्रकार ज कहे छे.—

मणपरिणामो अ कओ, देवा य जहोइअ समोइण्णा। सव्विड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ।२१।

अर्थ—(मणपरिणामो अ) श्री अरिष्टनेमिए व्रत लेवा माटे मननो परिणाम (कओ) कर्यो एटले (देवा य) चार निकायना देवो (जहोइअ) उचितता प्रमाणे (सव्विड्ढीए) सर्व ऋद्धि सहित तथा (सपरिसा) पोतपोताना परिवार सहित (तस्स) ते नेमिनाथनो (निक्खमणं) दीक्षानो उत्सव (काउं जे) करवा माटे (समोइण्णा) स्वर्गथी उतर्या २१

देवमणुस्सपरिवुडो, सीआरयणं तओ समारूढो। निक्खमिअ बारगाओ, रेवययम्मि ठिओ भयवं॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (देवमणुस्सपरिवुडो) देवो अने मनुष्योथी परिवरेला अने (सीआरयणं) शिबिका

तो विवाहनो स्वीकार करी मारी विडंबना शामाटे करी ? अथवा तो मारो ज दोष छे के जेथी दुर्लभ एवा पण तमारे विषे में राग कर्यो. कागडी हंसने विषे जे राग करे तेमां कागडीनो ज दोष छे. हे नाथ ! तमे मारो स्वीकार करीने मने मूकी दीधी, तेथी मारुं रूप, कळाकुशळता, लावण्य, यौवन अने कुळ विगेरे सर्व निष्फळ थयुं. हे कांत ! तमारा वियोगनी व्यथाथी जाणे मारा प्राण नीकळी जता होय, जाणे मारुं हृदय फाटी जतुं होय अने जाणे मारुं शरीर बळी जतुं होय एवी हुं थइ छुं. हे स्वामी ! तमे जे प्रकारे पशुओने विषे दयाळु थया, ते ज रीते मारापर दयाळु थाओ. तमारी जेवा महात्माने पंक्तिभेद करवो योग्य नथी. हे प्रभु ! तमारे विषे रागी थयेली मने एक ज वार दृष्टिवडे अने वाणीवडे प्रसन्न करो. स्वाद कर्या विना मीठा के कडवा फळने कोण जाणी शके ? अथवा तो सिद्धिरूपी वधुने वरवा उत्सुक थयेला तमारा मनने इंद्राणी पण हरण करी शकती नथी, तो हुं मनुष्यरूपी कीटिका तो कइ गणतरीमां होउं ? "

आ प्रमाणे विलाप करती राजीमतीने सखीओए कह्युं के—" हे सखी ! रोइश नहीं. ते नीरस अने महा कठोर छे, तेने जवा दे. बीजा घणा यदुकुमारो मनोहर रूपवाळा छे, तेमांथी कोइ योग्यने वरजे. " ते सांभळी पोताना कान बे हाथवडे ढांकी दइने राजीमती बोली के—" हे सखीओ ! तमे सामान्य जनने उचित एवुं पण उत्तमने अनुचित एवुं वचन केम बोलो छो ? जो कदाच रात्रिए सूर्यनो उदय थाय, के अग्नि शीतळ थाय, तोपण श्रीनेमिने मूकीने बीजा वरने हुं नहीं वरुं. जो विवाहने विषे मारा हाथपर नेमिनो हाथ नथी थयो तो दीक्षा ग्रहण करती वखते मारा मस्तकपर तेनो हाथ थशे. " ते सांभळी सखीओ बोली के—" हे शुभ आशयवाळी ! तारो आ विचार अति उत्तम छे. " पछी ते सती

रात्रिनी जेम पति विना स्त्री शोभती नथी तेथी तु विवाह करीने अमने वहुनु मुख देखाड, अने अमारी आ प्रथम प्रार्थना सफळ कर." ते सांभळी भगवान् बोल्या के—"हे पूज्यो! आवो आग्रह तमे मूकी द्यो प्रियजनने हितकार्यमां ज प्रेरणा करवी योग्य छे जे स्त्रीनु पाणिपीडन ज प्राणीपीडनरूप छे, अने जेनामां आसक्त थयेला प्राणी तत्काळ दुर्गतिने पामे छे, तेवी स्त्रीओनो संग मारी जेवा मुमुक्षुने योग्य नथी कारण के पंडित पुरुषो परलोकना हितने माटे ज यत्न करे छे, परतु मात्र प्रारंभमां ज सुंदर अने परिणामे दारुण एवा कार्यने माटे यत्न करता नथी" आ प्रमाणे भगवान् कहेता हता, ते ज वखते आसन कंपवाथी योग्य अवसर जाणीने लोकांतिक देवोए त्यां आवी भगवानने 'तीर्थ प्रवर्तावो' एम कह्यु तथा ते देवोए समुद्रविजय विगेरे सर्वेने कह्यु के—" तमे सर्व पुण्यवंतो आवा हर्षने स्थाने खेद केम करो छो? आ भगवान् दीक्षा ग्रहण करी केवळज्ञान पामी चिरकाळ सुधी तीर्थने प्रवर्तावी त्रण जगतने आनंद आपवाना छे." आ प्रमाणे देवोनु वचन सांभळी सर्वे खुशी थया पछी घेर जइ भगवान सांवत्सरिक दान देवा लाग्या

अहीं श्रीनेमिकुमारने पाछा वळेला जोइ राजीमती अत्यंत शोकातुर थइ मूर्च्छा पामीने पृथ्वीपर पडी गइ तेने तेनी सखीओए शीतळ उपचार करी चेतना पमाडी, त्यारे ते जाणे दु खना उद्गार काढती होय तेम विलाप करवा लागी के—"हे नाथ! कांइपण दोष विना अकस्मात् आपने विषे रक्त एवी जे हु तेनो त्याग करी तमे क्यां गया? तमारी जेवाने भक्तजननी उपेक्षा करवी योग्य नथी महापुरुषो पोताना आश्रित जन सदोष होय तोपण तेने तजता नथी चंद्र कदापि कलकने तजतो नथी, अने समुद्र वडवानळने तजतो नथी एम छतां पण हे प्रभु 'जो तमारे मने तजवी हती,

पूर्वभवोमां परलोक भीरुपणानो घणो अभ्यास होवाथी अहीं आ प्रमाणे—' मने परलोकमां कल्याणकारक नहीं थाय ' एम कह्युं छे. अन्यथा भगवान चरम देहधारी अने अतिशय ज्ञानवाळा होवाथी आवो विचार थाय ज नहीं. १९.

त्यारपछी जिनेश्वरनो अभिप्राय जाणीने सारथिए ते सर्वे जीवोने पांजरामांथी अने वाडाओमांथी छोडाव्या, ते वखते प्रभुए हर्ष पामीने जे कर्युं ते कहे छे.—

सो कुंडलाण जुअलं, सुत्तगं च महायसो । आहरणाणि अ सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥

अर्थ—(महायसो) मोटा यशवाळा (सो) ते प्रभुए (कुंडलाण) कुंडळनुं (जुअलं) युगल–बे कुंडळो (सुत्तगं च) तथा कटिसूत्र–कंदोरो (अ) तथा (सव्वाणि) सर्वे बीजां अंगोपांगनां (आहरणाणि) आभूषणो (सारहिस्स) सारथिने (पणामए) आप्यां–प्रीतिदान कर्यां. २०.

त्यारपछी करुणारसना समुद्ररूप अने समग्र जीवोना हितकारक प्रभु वक्र ग्रहनी जेम तत्काळ त्यांथी पाछा वळ्या. ते वखते शिवाराणी अने समुद्रविजय राजा प्रभुनी पासे आवी मेघनी जेम नेत्रमांथी अश्रुनी धाराने मूकता सता बोल्या के —" हे वत्स ! अंगीकार करेला विवाहनो त्याग करवाथी अमारा हर्षरूपी वृक्षने तुं केम मूळथी उखेडी नांखे छे ? अने आ कृष्णादिक यादवोने केम खेद पमाडे छे ? आ कृष्णे तारे माटे उग्रसेन राजा पासे जाते जइने तेनी पुत्री मागी लीधी छे, ते हवे शी रीते तेने पोतानुं मुख देखाडी शकशे ? जीवतां मरेला जेवी राजीमती कन्यानुं पण हवे शुं थशे ? चंद्र विना

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो । तुब्भं विवाहकज्जम्मि, भुंजावेउ बहुं जणं ॥१७॥

अर्थ—(अह) हवे (तओ) त्यारपछी (सारही) सारथिए (भणइ) कह्यु के (एए) आ (भद्दा उ) उत्तम जातिना ज (पाणिणो) प्राणीओने (तुब्भ) तमारा (विवाहकज्जम्मि) विवाहना कार्यमां (बहु जणं) घणा जनोने एटले यादवोने (भुंजावेउ) खवराववा माटे रुंध्या छे १७

आ प्रमाणे सारथिए कह्यु, त्यारे प्रभुए शु कर्युं ? ते कहे छे —

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणविणासणं । चिंतेइ से महापण्णे, साणुक्कोसे जिएहि उ ॥ १८ ॥

अर्थ—(बहुपाणविणासणं) घणा प्राणीओने विनाश करनारु (तस्स) ते सारथिनु (वयणं) वचन (सोऊण) सांभळीने (महापण्णे) महा बुद्धिमान अने (जिएहि उ) जीवोने विषे (साणुक्कोसे) करुणावाळा (से) ते भगवान (चिंतेइ) विचार करवा लाग्या अथवा (जिए हिओ) एवो पाठ राखी जीवने विषे हितकारक एवा प्रभु विचारवा लाग्या एम अर्थ करवो १८

जंइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिआ । न मे एअं तु निस्सेसं, परलोए भविस्सइ ॥१९॥

अर्थ—(जइ) जो (मज्झ) मारा (कारणा) कारणथी (एए) आ (सुबहू) घणा (जिआ) जीवो (हम्मंति) हणाशे, तो (एअं तु) आ जीवहिंसा (मे) मने (परलोए) परलोकमां (निस्सेसं) कल्याणकारक (न भविस्सइ) नहीं थाय

वाडाओवडे (पंजरेहिं च) अने पांजराओवडे एटले वाडाओमां अने पांजराओमां (सन्निरुद्धे) रुंधेला एटले पूरेला, एज कारणथी (सुदुक्खिए) अत्यंत दुःखी थतां अने (भयदुए) भयथी त्रास पामेला एवा (पाणे) प्राणीओने (दिस्स) जोइने. १४

जीविअंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खिअव्वए । पासित्ता से महापण्णे, सारहिं पडिपुच्छइ ॥ १५ ॥

अर्थ—(जीविअंतं तु) जीवितना अंतने एटले मरण अवस्थाने (संपत्ते) पामेला, तथा (मंसट्ठा) मांसने माटे एटले प्राणीओने खावाथी खानारनां शरीरमां मांसनी पुष्टी थाय छे एटला माटे (भक्खिअव्वए) अविवेकी जनोए भक्षण करवा लायक एवा ते प्राणीओने (पासित्ता) जोइने एटले हृदयमां धारण करीने (महापण्णे से) महा बुद्धिमान एटले अवधिज्ञानवाळा ते भगवान (सारहिं) सारथिने एटले महावतने (पडिपुच्छइ) पूछता हवा. १५.

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे अ अच्छहिं ॥ १६ ॥

अर्थ—(कस्स अट्ठा) शाने अर्थे एटले शा कारणथी (एए सव्वे) आ सर्वे (सुहेसिणो) सुखना अभिलाषी-सुखने इच्छनारा (इमे पाणा) आ प्राणीओ (वाडेहिं) वाडाओवडे (पंजरेहिं च) अने पांजराओवडे (सन्निरुद्धे अ) रुंध्या सता (अच्छहिं) रहेला छे ? १६.

आ प्रमाणे भगवाने पूछयुं त्यारे—

(जुत्तीए) दीप्तिवडे करीने शोभता एवा (वण्हिपुगवो) यादवोने विषे श्रेष्ठ एवा नेमिकुमार (निग्गच्छो) पोताना (भवणाओ) घरथकी (निज्जाओ) नीकल्या अने मडपना समीप देशमां आव्या १३

ते वखते पोताना घरनी बारीमां बेठेली राजीमती कन्या नेमिकुमारने आवता जोइ वचनथी न कही शकाय तेवा आनदने पामी आ प्रमाणे विचारवा लागी के—" शु आ ते अश्विनीकुमार छे ? के सूर्य छे ? के कामदेव छे ? के इद्र छे ? के मनुष्यना देहनो आश्रय करीने आवेलो मारा ज पुण्यनो समूह छे ? जे बुद्धिमान विधाताए आ मारा पतिने बनाव्या छे, ते महात्मानो हु शो प्रत्युपकार करी शकीश ?" आ रीते विचारतां तेणीने श्रीनेमिना दर्शनथी उत्पन्न थयेला हर्षवडे " हु कोण छु ? आ शु थाय छे ? आ कयो समय छे ? अने हु क्यां रहेली छु ? " इत्यादिक काइपण खबर रही नहीं तेटलामां राजीमतीनु जमणु नेत्र फरक्यु, तेथी मनमां उद्वेग पामी तेणीए तरत ज ते वात पोतानी सखीओने कही त्यारे सखीओ बोली के—" हे मोटा आशयवाळी ! तारु पाप हणाइ जाओ आटली पृथ्वी सुधी आवेला आ नेमिकुमार हवे पाछा नहीं वळे " राजीमती अधीरी थइने बोली के—" हु मारा भाग्यपरथी जाणु छु के—आ मारा नाथ अहीं सुधी आव्या छे, तोपण ते पाछा ज जशे अने मारु पाणिग्रहण करशे नहीं. "

आ अवसरे जे थयु ते सूत्रकार ज बतावे छे.—

अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयदुए । वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥

अर्थ—(अह) हवे (सो) ते अरिष्टनेमि (तत्थ) त्यां एटले मडपनी समीपे (निज्जतो) गया सता (वाडेहिं)

मत्तं च गंधहत्थिं, वासुदेवस्स जिट्ठगं । आरूढो सोहई अहिअं, सिरे चूडामणी जहा ॥ १० ॥

अर्थ—(वासुदेवस्स) वासुदेवना (जिट्ठगं) अत्यंत प्रशस्त (मत्तं च) अने मदोन्मत्त एवा (गंधहत्थिं) गंधहस्ती उपर (आरूढो) आरुढ थयेला ते नेमिकुमार (सिरे) मस्तकपर (चूडामणी) चूडामणि–मुकुट(जहा) जेम शोभे तेम (अहिअं) अधिक (सोहई) शोभवा लाग्या. १०.

अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि अ सोहिओ । दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (ऊसिएण) माथे धारण करेला (छत्तेण) छत्रवडे (चामराहि अ) तथा वीझाता एवा चामरो वडे (सोहिओ) शोभता (य) तथा (दसारचक्केण) समुद्रविजयादिक दश दशार्होना समूहोवडे (सो) ते नेमिकुमार (सव्वओ) चोतरफथी (परिवारिओ) परिवरेला. ११.

चउरंगिणीए सेणाए, रइआए जहक्कमं । तुडिआणं सन्निनाएणं, दिव्वेणं गयणंफुसे ॥ १२ ॥

अर्थ—(जहक्कमं) अनुक्रमे (रइआए) गोठवेली (चउरंगिणीए) चतुरंगी (सेणाए) सेनावडे, तथा (दिव्वेणं) दिव्य अने (गयणंफुसे) आकाशने स्पर्श करता एवा (तुडिआणं) वाजिंत्रोना (सन्निनाएणं) गाढ शब्दवडे जणाता–

एआरिसीए इड्ढीए, जुत्तीए उत्तमाएँ अ । निअगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥

अर्थ—तथा (एआरिसीए) आवा प्रकारनी उपर कही तेवी (इड्ढीए) समृद्धिए करीने (अ) तथा (उत्तमाए) उत्तम एवी

छे एम आप जाणनो हे स्वामी! आपनी जे इच्छा होय ते कहो " कृष्णे कह्यु के—" हे राजा! मारा भाइ नेमीकुमारने आ तमारी राजीमती पुत्री आपो " आ प्रमाणे हरिए राजीमतीनी याचना करी ते जाणी पोताने धन्य मानता उग्रसेन राजाए जे कह्यु, ते सुत्रकार ज कहे छे —

अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढिअं। इहागच्छउ कुमारो, जा से कन्नं दलामहं ॥ ८ ॥

अर्थ—(अह) याचना कर्या पछी (तीसे) ते राजीमतीना (जणओ) पिताए (महिड्ढिअ) मोटी ऋद्धिवाळा (वासुदेव) वासुदेवने (आह) कह्यु के-(कुमारो) नेमिकुमार (इह आगच्छउ) अहीं आवे, (जा) जेथी (से) तेने (अह) हु (कन्न) मारी कन्या (दलामि) आपु ८

आ प्रमाणे उग्रसेन राजाए कह्यु, एटले बन्ने कळमां वर्धापन थयां, अने जोशीए बतावेलु विवाहनु लग्न नजीक आव्यु, ते वखते जे थयु, ते कहे छे —

सव्वोसहिहिं ण्हविओ, कयकोउअमंगलो। दिव्वजुअलपरिहिओ, भूसणेहि विभूसिओ ॥ ९ ॥

अर्थ—(सव्वोसहिहिं) सर्व औपधिओए करीने (ण्हविओ) नेमिकुमारने स्नान कराव्यु-अभिषेक कर्यो तथा (कय कोउअमंगलो) कौतुक अने मगळ करवामां आव्यु तथा (दिव्वजुअलपरिहिओ) मनोहर बे देवदूष्य वस्त्र धारण कराव्या, तथा (भूसणेहिं) आभूषणो वडे (विभूसिओ) विभूषित कर्या ९ पछी

शके तेम जन्मथी आरंभीने स्वेच्छाए फरनारा तमे पण वधूनो निर्वाह करी शको तेम नहीं होय, तेथी ज विवाहने अंगीकार करता नथी एम हुं धारुं छुं. जो ए ज कारण होय तो ते पण अयुक्त छे. केमके तमारा भाइ वासुदेव जेम अमारो (१६ हजारनो) निर्वाह करे छे, तेम तेनो पण निर्वाह करशे. समग्र पृथ्वीनो भार धारण करनार शेषनागने कांइ लतानो भार वधी जतो नथी. वळी निर्वाणनी प्राप्ति नहीं थवाना भयथी जो भोगनो त्याग करता हो, तो ते पण खोटुं छे. केमके ऋषभादिक जिनेश्वरो भोग भोगवीने पण सिद्ध थया छे. धृष्टपणाथी मुंगा थयेला तमे जवाब आपो के न आपो; परंतु विवाह अंगीकार कर्या विना अमाराथी तमे छुटी शकशो नहीं."

आ प्रमाणे ते कृष्णनी प्रियाओ प्रार्थना करती हती, ते वखते बळराम अने कृष्ण विगेरेए आवीने ते ज प्रमाणे प्रार्थना करी. बंधुओए मनोहर वचनो वडे अत्यंत आग्रह कर्यो, त्यारे भाविभावने विचारता स्वामीए विवाहनी संमति आपी तेथी हर्ष पामता वासुदेवे समुद्रविजय पासे जइ ते वृत्तांत कह्यो, एटले ते पण अत्यंत हर्षित थया, अने तेणे कृष्णने कह्युं के—" हे महा बुद्धिमान ! तुं ज नेमिकुमार माटे योग्य कन्यानी शोध कर." त्यारे वासुदेव पोते योग्य कन्यानी शोध करवा लाग्या, तटलामां सत्यभामाए तेने कह्युं के—" हे प्रिय ! कमळना सरखा नेत्रवाळी मारी बेन राजीमती ज नेमिकुमारने योग्य छे." ते सांभळी श्रीकृष्ण हर्ष पामी पोते ज उग्रसेन राजाने घेर गया. वासुदेवने पोताने घेर आवेला जोइ उग्रसेन हर्ष पामी, उभा थइ, आसन आपी हाथ जोडीने बोल्या के—" आजे स्वामीए जाते अहीं आववानो प्रयास शा माटे कर्यो ? पोताना सेवकने मोकली मने ज केम न बोलाव्यो ? आ मारुं घर, धन, शरीर अने पुत्री विगेरे सर्व आपनुं ज

पोतानी प्रियाओने ते कार्य माटे आज्ञा करी ते वखते विश्वना जनोने उत्सवना कारणरूप वसंतोत्सव पण प्रवर्ततो हतो, तेथी सत्यभामा विगेरे स्त्रीओ उद्यानमां क्रीडा करवा गइ, तमनी साथे विष्णुना आग्रहथी श्रीनेमिनाथ पण कामविकार रहित ज ते स्त्रीओनी साथे ऋतुने उचित एवी क्रीडावडे रमवा लाग्या वसंतऋतु वीत्या पछी ग्रीष्मऋतु आव्यो त्यारे पण वासुदेवना आग्रहथी भगवान तेनी प्रियाओनी साथे क्रीडापर्वत उपर क्रीडा करवा लाग्या त्या विश्वना अलंकाररूप निर्विकार जगद्गुरु श्रीनेमिनाथ कृष्णना आग्रहथी जळक्रीडादिक क्रीडा करवा लाग्या पछी एकदा वासुदेवनी प्रियाए अवसर जोइ प्रीति, नम्रता अने हास्य सहित नेमिकुमारने कह्यु के—" हे दियर ! तमारु रूप इंद्रथी पण अधिक छे, तमारु शरीर सदा आरोग्य अने सौभाग्यादिक गुणे करीने युक्त छे, अने आ तमारी युवावस्था इंद्राणीने पण कामातुर बनावे तेवी छे, तो योग्य कन्याने परणीने ते सर्व सफळ करो आ तमारु रूपादिक सर्व भोग विना अवकेशि वृक्षनी जेम निष्फळ छे केमके स्त्री विना भोग शा कामना ? स्त्री ज भोगनु स्थान छे, स्त्री विना स्नानादिक शरीरनी शुश्रूषा थती नथी, स्त्री रहित एवा पुरुषने निर्धननी जेम मनवांछित भोजन क्यांथी मळे ? जेम खाण विना रत्न न होय तेम स्त्री विना पुत्र पण होता नथी भिक्षुकना धननी जेम स्त्री रहितना अन्नने अतिथि पण खातो नथी युवति विना युवाननी रात्रि पण शी रीते जाय ? जुओ, चक्रवाकनी रात्रि चक्रवाकी विना वर्ष जेवडी थाय छे योग्य स्त्रीना संयोग विना कोइपण पुरुष शोभतो नथी जुओ, रात्रि विनाना चंद्रने कांति क्यांथी होय ? तेथी हे गुणसागर ! कोइपण कन्यानु पाणिग्रहण करी दशार्हादिक सर्व यादवोनु मनवांछित पूर्ण करो जन्मथी ज आरंभीने स्वच्छंदपणे फरनारा सांढ जेम गाडीनी धुसरी वहन न करी

के—" हे भाइ ! तमे खोटी शंका न करो. पूर्वना तीर्थंकरोए आ आपणा भाइनो वृत्तांत एवो कह्यो छे के—यादववंशरूपी समुद्रनो उल्लास करवामां चंद्र समान बावीशमा तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि राज्यलक्ष्मीने भोगव्या विना ज दीक्षा ग्रहण करशे. वळी अत्यारे पण समुद्रविजय विगेरे सर्वे तेने घणी प्रार्थना करे छे, तोपण ते बुद्धिमान एक कन्याने पण परणता नथी, तो ते श्रीनेमि शुं आ राज्यने ग्रहण करे ?" आ प्रमाणे बळरामे कह्या छतां हरिना हृदयमांथी शंका गइ नहीं.

एकदा श्रीनेमिकुमार उद्यानमां क्रीडा करवा गया हता. कृष्ण साथे हता. त्यां कृष्ण वासुदेवे तेने कह्युं के—" हे भाइ ! आपणे आपणा बळनी परीक्षा करवा माटे द्वंद्वयुद्ध करीए." नेमिकुमारे कह्युं के—" सामान्य माणसने उचित एवुं द्वंद्वयुद्ध आपणे करवुं योग्य नथी. परंतु बळनी परीक्षा तो मात्र बाहु वाळवाथी पण थइ शके छे." आवुं तेनुं वचन अंगीकार करी हरिए पोतानो बाहु लांबो कर्यो. तेने प्रभुए कमळना नाळनी जेम तत्काळ नमावी दीधो अने पोतानो वज्र जेवो बाहु लांबो कर्यो. तेने वाळवा माटे वासुदेवे पोतानुं सर्व बळ वापर्युं, तोपण ते शाखापर लटकेला बाळकनी जेम ते हाथपर टींगाइ गया. ते वखते हरिए विचार कर्यो के—" जेने राज्य लेवानी इच्छा होय, ते आटलुं बधुं बळ छतां आटलो विलंब करे ज नहीं " एम विचारी राज्यना अपहारनी चिंता दूर करी वासुदेव पोताने घेर गया.

एकदा समुद्रविजये श्रीकृष्णने कह्युं के—" सर्वे कुमारो पोतपोतानी स्त्रीओ साथे क्रीडा करे छे, पण नेमिकुमार तो ते सर्वथी विलक्षण छे, तेथी अमने अत्यंत खेद थाय छे. तो हे वत्स ! कोइपण उपायथी आ नेमिकुमार विवाह करे एवुं कर." आवुं समुद्रविजयनुं वचन अंगीकार करी श्रीकृष्णे कामदेवना दिव्य शस्त्ररूप सत्यभामा अने रुक्मिणी विगेरे

तेथी आने ग्रहण करवानो आग्रह मूकी दो " ते सांभळी प्रभुए कांइक हसी ते धनुष पोताना हाथमां लीधु, अने तरत नेतरनी सोटीनी जेम अनायासे न वाळीने तेनापर प्रत्यचा चडावी पछी इन्द्रधनुष जेवा ते धनुषवडे शोभता मेघ जेवा ते नेमिनाथे तेनो टकार करी तेनी गर्जनावडे समग्र विश्व पूरी दीधु पछी धनुषने मूकी कांतिवडे देदीप्यमान चक्रने हाथमां लइ कुंभारना चक्रनी जेम तेने आंगळीना अग्रभागवडे भमाडयु पछी चक्रनो त्याग करी जेने ग्रहण करतां वासुदेवने पण घणो प्रयास थतो हतो एवी गदाने प्रभुए लाकडीनी जेम ग्रहण करीने फेरवी. पछी तेने पण तजी प्रभुए पांचजन्य नामनो शंख लइ पोताना मुख पासे राख्यो, ते वखते ते शंख विकस्वर काळा कमळनी पासे रहेला राजहंसनी जेम शोभवा लाग्यो पछी स्वामीए ते शंख वगाडयो, तेना शब्दथी समग्र विश्व बधिर थइ गयु, सर्व पर्वतो कंपवा लाग्या, पृथ्वी पण चळाचळ थइ, समुद्रो क्षोभ पाम्या अने वीरो मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पडया घणु कहेवाथी शु ? ते शब्दथी देवो पण त्रास पाम्या. सिंहना नादथी हाथीनी जेम ते शंखनादथी वासुदेवे पण क्षोभ पामी विचार कर्यो के—" कया बळवाने आ शंख वगाडयो ? हु ज्यारे शंख वगाडु छु त्यारे सामान्य मनुष्यो ज क्षोभ पामे छे, परतु आ नादवडे तो मने पण अत्यत क्षोभ थयो छे तो शु इद्र, चक्रवर्ती के बीजो कोइ वासुदेव आव्यो छे ? जो एम ज होय तो हु आ राज्यनु रक्षण शी रीते करी शकीश ? " आ प्रमाणे सभामा बेठेला वासुदेव विचार करता हता, तेटलामां आयुधशाळाना रक्षकोए आवी सर्व वृत्तांत कह्यो ते सांभळी शंकाथी आकुळ व्याकुळ थयेला विष्णुए बळरामने कह्यु के—" जेनी क्रीडाथी पण आ प्रमाणे आखा विश्वने क्षोभ थयो, ते अरिष्टनेमि आपणु राज्य ग्रहण करे, तो तेने कोण निषेध करी शके ? " ते सांभळी बळदेव बोल्या